दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

५
५

४
५
विषय स
लेखक.....
शीर्षक.......

दिनांक

गु
कृपया पुस्तक
म

Previ
influ
activ
Conti
lated
obtai
30 00
incub
for 6
stopp
fied
for t
The r
the m
pool
on th
acids
signi
mycin
genta
latio
an ef
The r
the m
gastr

(1) N
&

(2) S

(3) V
&
X

evious in
fluence o
tivity of
ntinuing
ted singl
tained by
000 cell
cubated w
r 60 min.
opped by
ed and de
r the inc
e reactio
e mucosa
ol curves
the endo
ids. Pur
gnificant
cin and a
ntamycin
tion of t
effect b
e results
e maligna
stric muc

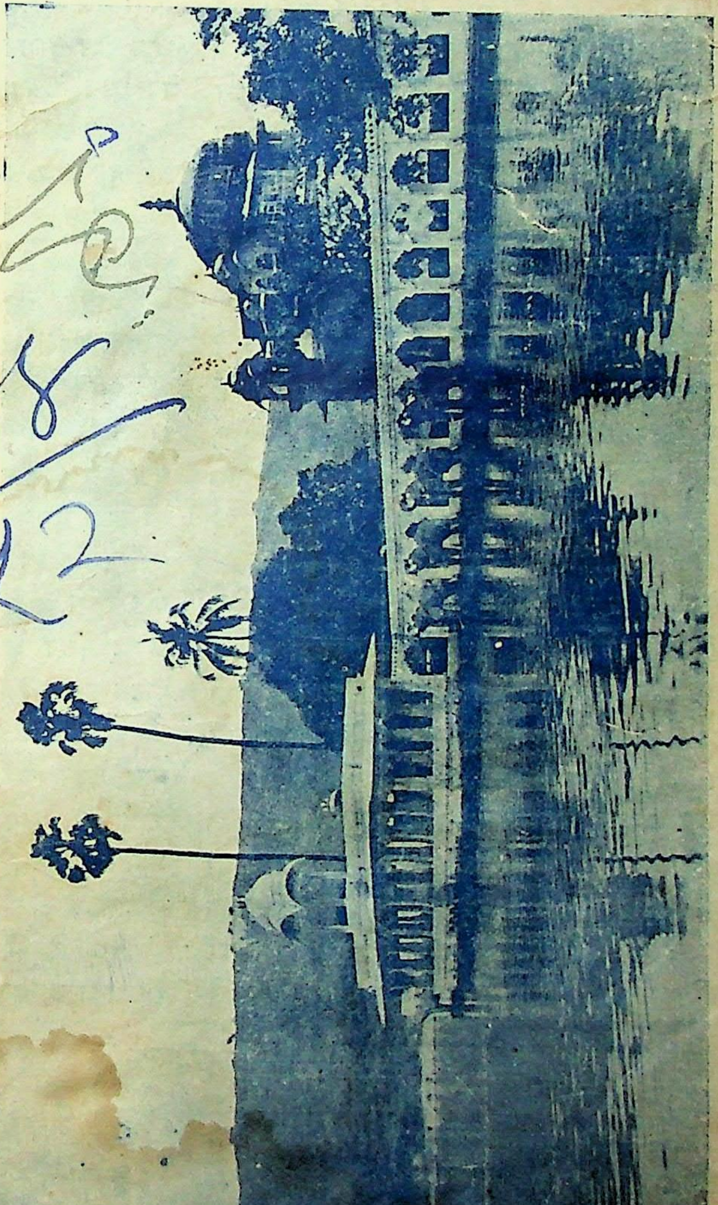
) Neth, R
& Vazqu

) Süss, R

) Vazquez
& Monro
XXXIV.

देशी राज्य

"भूगोल"



भारतवर्ष के प्राचीन राज्य, उदयपुर का जगमन्दिर

परन्तु
और निज.
नुसार हैव
ो निजाम

सम्पादकीय

किसी [illegible] में देशी [illegible] था।
जब यहाँ
दो भागों
ब्रिटिश शा
तक देशी
वर्ष में एक
वे छिन्न भि
शासन में
सहायता वे
करद राज
को कर
कुछ विजि
आधिपत्य
अथवा पू
सम्राराज्य
बन गये
कुशलता और [illegible]
विपत्ती के दग़ाबाज़ नौकरों को भी मिला लेते हैं। कभी कभी ऐसे लोग भी राजा या नवाब बना दिये गये।

इस प्रकार भारतवर्ष में कई प्रकार के देशी राज्य हैं कुछ राज्य बहुत पुराने और प्रतिष्ठित हैं। कुछ नये राज्यों की नींव विश्वासघात और देशद्रोह पर पड़ी है। कुछ राज्य बहुत बड़े हैं। वे जन संख्या, क्षेत्रफल और प्राकृतिक सम्पत्ति में योरुप के कई स्वतंत्र राज्यों से बड़े हैं। कुछ इतने छोटे हैं कि साधारण ज़मींदारी से भी कम हैं।

हैसियत के अनुसार देशी राज्यों के अधिकार अलग अलग हैं। कुछ राज्य प्राणदंड के मुक़दमें तय कर सकते हैं। कुछ राज्यों को साधारण नागरिक से अधिक अधिकार प्राप्त नहीं हैं। कुछ राज्यों की विदेशी और भीतरी नीति का नियन्त्रण करने के बदले उन्हें रुपया भी दिया जाता है। सभी राज्य प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश राज्य के आधीन हैं। जिन राज्यों के साथ अँग्रेज़ों ने बराबरी की सन्धि की, उन्हें भी इस समय ब्रिटेन की पूरी आधीनता स्वीकार करनी पड़ती है। अक्सर गोरे प्रधान मन्त्री, रेज़ीडेण्ट या पोलिटिकल एजेण्ट को राजा साहब या नवाब साहब से अधिक अधिकार होता है। इस बात को वहाँ की
। प्रधान बातों में राज्य का
होता है। जहाँ इससे भिन्न
, वहीं गद्दी बदल दी जा
दिया जाता है। इस प्रका
एक प्रकार से सार हीन
फौज में एक अजब तमा
वश्य देना पड़ता है। इ
उपयोगी विभागों को पै
न फौज का नियन्त्रण वास्तव
हता है। वर्तमान लड़ाई में
राज्यों ने यह फौज ब्रिटिश स
यह सब कुछ ईमानदारी के
दि कोई राजा या नवाब ब्रिटेन
इस फौज को नहीं रोक स
की सब हटा ली जाय और दे
न देना पड़े तो बहुत से उ
राज्य बड़े प्रसन्न हों।

प्रस्तुत अङ्क में दो प्रकार की पृष्ट संख्या है भाग में राज्यों का विस्तृत वर्णन है। यह संख्या अधिक हो गई है। दूसरे भाग में अनुक्रमणिका राज्यों की सूची और संक्षिप्त परिचय है। कई उस अंक को हम उतना सर्वाङ्गपूर्ण न बना सके जै की उत्कट इच्छा थी। अगले संस्करण में इन त्रुटि करने का पूरा प्रयत्न किया जावेगा। आशा पाठकों से इस कार्य में पूरी सहायता मिलेगी। के प्रकाशित करने में अत्यन्त देरी होगई। इ पाठक क्षमा करें।

हमने प्रायः सभी देशी राज्यों से कुछ आवश्यक प्राप्त करने के लिये प्रार्थना की थी। और फार्म भी भरने के लिये भेजा था। नैपाल से प्रार्थना की गई थी। लेकिन स्वाधीन और नैपाल से उत्तर मिला कि वह स्वतन्त्र है के देशी राज्यों की गणना से बाहर है। अतः में नैपाल का समावेश नहीं किया गया।

विषय-सूची

(शेष सूची कवर के ती

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

❁ देशी राज्य-अङ्क ❁

वर्ष १६] भाद्रपद सं० १९९६, सितम्बर १९३९ [अङ्क १-५

हैदराबाद की प्रगति

(लेखक—श्री जनप्रिय)

हैदराबाद का क्षेत्रफल ८२६९८ वर्गमील है जो इंगलैंड और स्काटलैंड के संयुक्त क्षेत्रफल से भी एक हजार वर्गमील अधिक बड़ा है। इस प्रकार निज़ाम हैदराबाद भारतवर्षीय देशी राज्यों में बड़ा ही नहीं, बल्कि एक महान राज्य है।

हैदराबाद की जनसंख्या लगभग १॥ करोड़ है, जो योरुप के हालैंड और बेल्जियम की जनसंख्या के बराबर है और डेनमार्क, नार्वे, तथा स्वीडन की जनसंख्या के योग से भी कहीं अधिक है। इस [illegible] १२९ कस्बे तथा २१६०३७ गांव हैं।

परन्तु [illegible] और निज[illegible] सरकार [illegible] [illegible]नुसार हैदराबाद नरेश [illegible] निजाम आफ हैदराब[illegible]ी उत्तरी सीमा पर ताप्ती, कल- [illegible] दक्षिण में कृष्णा और तुंगभद्रा, [illegible] करती हुई प्रवाहित हो रही हैं। पूर्व में वर्धा और गोदावरी उसकी पूर्वीय सीमा का निर्देश करती हैं। बम्बई प्रांत, धारवाड़, शोलापुर, अहमदनगर आदि जिलों द्वारा पश्चिमीय रेखा निर्धारित होती है। इसमें दक्षिणी पठार भी सम्मिलित है। जो समुद्री सतह से १८०० फुट ऊँचा है। प्रमुख पर्वत-श्रेणियों में बालाघाट, सह्याद्रि, गैवलगढ़, तथा नदियों में तुंगभद्रा, पूर्णा, पैनगंगा, मंजिरा, भनेर, भीमा, मूसी, मुनेर प्रसिद्ध हैं। जिनसे कई छोटे छोटे नाले तथा धारायें प्रवाहित हुई हैं। निज़ाम सागर, उस्मान सागर और हिमायत सागर, आदि कई झीलें और तालाब इन्हीं नदियों के स्रोत हैं और उनके द्वारा सिंचाई या आबपाशी में कृषकों को बड़ी सुविधायें प्राप्त हो गई हैं।

दक्षिण भारत में हैदराबाद राज्य की स्थिति बड़ी सुदृढ़ है। प्राकृतिक एवं व्यापारिक प्रचुर साधनों, उत्तरोत्तर बढ़ती हुई जनसंख्या, उपजाऊ तथा भव्य भूमि, महत्वपूर्ण खनिज पदार्थों, बड़ी नदियों और सुविस्तृत वनस्पतियों, उसकी प्राचीन ऐतिहासिक कहानियों, वहां के बड़े बड़े राजाओं की गाथाओं ने और स्वयं प्रकृति देवी और यहां की विभूति ने रियासत के लिए एक अद्वितीय स्थान, तथा वहां के राजाओं के लिए शक्ति एवं अधिकार का वैभवशाली स्वरूप निश्चित कर लिया है। इसके ऐश्वर्य तथा भाग्य पर आज भी योरुप के बड़े बड़े राज्य ईर्ष्या कर सकते हैं। परन्तु यहां काश्मीर की कोमलता तथा कमनीयता, मैसूर की ममता, गोंडल की गरिमा तथा पटियाला की प्रियता की रूप रेखा नहीं है। यहां के सौन्दर्य में 'अपनापन' है, विभूति में विशेषता तथा महानता में अभिमान है।

[इसी राज्य में गोलकुंडा की हीरे की खान में विश्वविख्यात सात आश्चर्यजनक वस्तुओं में से एक कोहनूर हीरा भी प्राप्त हुआ था। इसके अतिरिक्त इसी भूमि में स्वर्ण राशि, कोयला, लोहा, तांबा, मेगनेट, रक्त मणि इत्यादि धातुयें विद्यमान हैं। यहां लकड़ी के बड़े भारी घने जंगल हैं तथा कागज के निर्माण में जो कच्ची सामग्री नितान्त आवश्यक है वह भी इन जंगलों में अधिकतर पाई जाती है, जिसके उपयोग के लिए एक विशाल कागज-फैक्टरी का संगठन अर्धसरकारी रूप से किया गया है।

इतिहास

बौद्धधर्म के उत्थान-काल में दक्षिण के भूमिखंड पर अशोक का प्रभुत्व था। फिर ईसा की प्रथम सदी के प्रारंभ में सत्कर्ण तथा आधुभृत्य उल्लेखनीय थे। इसके बाद, क्रमशः क्षत्रप, गुप्तवंश, वल्लभी, चालुक्य वंश, होयाशल, यादवादि वंशों के राजाओं का तब तक अधिकार रहा जबतक १३वीं सदी के राजनैतिक क्षेत्र में मुसलमानों का आना नहीं हुआ था। अलाउद्दीन के शासनकाल में दक्षिण प्रान्त का एक विशेष भाग दिल्ली के आधीन था। जब विजयनगर और बहमनी वंशों ने प्रधानता प्राप्त की तब हैदराबाद का अधिक भाग बहमनी राज्य के अधिकार में था। परन्तु जब बहमनी राज्य अपनी हीनावस्था में कई भागों में विभाजित होगया तो गोलकुन्डा का उसपर अधिकार होगया और यह प्रभुत्व औरंगजेब के समय तक स्थापित रहा। शहंशाह औरंगजेब ने जो दक्षिण को जीतने वाला दिल्ली का प्रथम अधिपति था पूर्ण प्रभुत्व की सुदृढ़ स्थापना की और प्रबन्ध के लिए इस प्रान्त को एक सूबेदार के अधीनस्थ कर दिया।

मीर क़मरुद्दीन १४ वर्ष की अवस्था में अपने पिता की मृत्यु के बाद सेनापति नियुक्त हुये और "चिनकालेह खाँ" की उपाधि--औरंगजेब द्वारा प्राप्त कर ली। फर्रुखसियर के सिंहासनरूढ़ होने पर वह दक्षिण में सूबेदार घोषित किये गये और उन्होंने "निजामुलमुल्क बहादुर फतेहजंग" की उपाधि धारण कर एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। इन्होंने सन् १७१२ से १७४८ तक राज्य किया। उन्हीं की १०वीं पीढ़ी में आजके हैदराबाद के वर्तमान नरेश है।

सार्वभौमसत्ता से संबंध

"यदि निजाम गया तो सब गया"* यह वाक्य बंबई के गवर्नर ने सन् १८५७ के ग़दर के अवसर पर हैदराबाद की संतोषप्रद परिस्थिति की महत्ता प्रदर्शित करते हुये तत्कालीन हैदराबाद के रेजीडेन्ट के एक पत्र में लिखा था। लगभग १६० वर्षों से निजाम तथा ब्रिटिश सरकार में एक अटूट और पारस्परिक सम्बन्ध रहा है। जब जब ब्रिटेन को किसी विकट परिस्थिति का सामना करना पड़ा है तब तब उसने हैदराबाद को सदा अपने मित्र के रूप में सहायक होते पाया है। जिस भांति सन् ५७ के गदर में निजाम नवाब अफज़ल उद्दौला ने ब्रिटिश सरकार की दिल खोलकर सहायता की थी उसी प्रकार सन् १९१४ के महायुद्ध में भी (जब ब्रिटेन को अपने जीवन-काल में सब से भयानक विकट समय का सामना करना पड़ा था) आज के वर्तमान नरेश निजाम नवाब उस्मान अली खाँ बहादुर ने भी वास्तविक मित्रता का उदाहरण पेश किया था और इसी मित्रता के [illegible] उपलक्ष में महायुद्ध की समाप्ति के पश्चा[illegible] सम्राट पंचमजार्ज ने इनकी "हि[illegible] की अनुपम उपाधि से और [illegible]

* If the Nizam goes, all [illegible]

सरकार के विश्वासपात्र मित्र" (Faithful ally of the British Government) नामक खानदानी खिताब को स्थिरता प्रमाणित की और इस ऐतिहासिक उपाधि की यथार्थवादिता तथा सत्यता पर अपने निजी प्रशंसात्मक विचार प्रकट किये।

बरार की कथा

सन् १८५३ में निज़ाम सरकार के साथ अंग्रेजों की संधि हुई जिसके अनुसार कुछ प्रान्त ब्रिटिश सरकार को मिल गये। परन्तु ब्रिटिश सरकार की दृष्टि बरार की उपजाऊ भूमि पर थी, इसका क्षेत्रफल १७८९ वर्गमील है तथा २४ लाख के लगभग आबादी है। बरार की भूमि उपजाऊ है। यहां कपास की खेती अच्छी होती है। इसके अतिरिक्त कोयला आदि वस्तुओं की पैदावार के कारण अच्छी आय है।

२० वीं सदी के प्रारंभिक काल में हैदराबाद की गद्दी पर भूतपूर्व निजाम थे उस समय भारत के गवर्नर जनरल लार्ड कर्ज़न नये आये थे। लार्ड कर्ज़न उन गवर्नर जनरलों में से थे जिन्होंने भारत में ब्रिटिश हुकूमत की नींव दृढ़ की है। उनका व्यक्तित्व भी बहुत ऊँचा था। उन्होंने भारत में पदार्पण करते ही बरार को अपने अधिकार में करने का निश्चय किया।

निजाम सरकार से भेंटें आरम्भ हुईं। और निजाम सरकार से बृटिश सरकार पहले ही से सहायक सेना को वेतन न देने के कारण जो कर्ज बढ़ गया था उसे मांगती थी। ब्रिटिश सरकार ने कर्ज के बदले में यह कहा कि आप अपना बरार हमें ब्याज पर सौंप दें और उसकी शासन व्यवस्था भी हम करेंगे। इसके बदले आप के कर्ज से भी मुक्त किये जाते हैं। बल्कि ब्रिटिश सरकार प्रति वर्ष २५ लाख रुपये देगी। निजाम सरकार ने उक्त संधि स्वीकार की और १९०२ में निजाम सरकार की छत्र छाया में शासित बरार ब्रिटिश प्रान्त में शामिल कर लिया गया।

परन्तु २० अक्टूबर १९३६ को भारत सरकार और निजाम सरकार में जो नूतन संधि हुई है उसके अनुसार हैदराबाद नरेश को हिज-एकजाल्टेड हाइनेस दी निजाम आफ हैदराबाद एण्ड बरार तथा युवराज को हिज़ हाइनेस प्रिन्स आफ बरार की नूतन उपाधियें प्राप्त हुई हैं तथा इसके अतिरिक्त उन शर्तों के साथ यह भी शर्त है कि निजाम सरकार अपना दरबार बरार में कर सकेगी, उपाधियां दे सकेगी और बरार में निजाम सरकार की पताका यूनियन जैक के साथ फहरायेगी। निजाम सरकार का एक एजेन्ट मध्यप्रान्त-बरार की राजधानी नागपुर में रहा करेगा जो समय समय पर निजाम सरकार संबंधी दृष्टि-बिन्दु रक्खेगा। इस प्रकार १६ शर्तों में यह समझौता होकर बरार पर फिर से निजाम सरकार का आधिपत्य होगया। लेकिन बरार के लोग निजाम राज्य में फिर से जाना पसन्द नहीं करते हैं।

प्राचीन और आधुनिक दर्शनीय स्थान

जिस प्रकार क्षेत्रफल और जनसंख्या में निजाम राज्य एक महाराज्य के रूप में दृष्टिगोचर होता है उसी प्रकार पुरातत्व, कला और दार्शनिकता में संसार में अपना अद्वितीय स्थान रखता है। एलोरा और एजन्टा की गुफायें आज भी प्राचीन शिल्प-कला का मस्तक ऊँचा किये हुये इसी राज्य के प्राङ्गण में विद्यमान हैं।

एजन्टा देखने में एक साधारण ग्राम है परन्तु यहीं पर विश्वविख्यात ३० गुफायें एक चट्टान के दक्षिणी किनारे पर खुदी हुई हैं। सब से पुरानी गुफाओं के विषय में कहा जाता है कि वह तीसरी सदी में निर्मित हुई थीं और उनमें से अधिकतर १५०० वर्ष पूर्व निर्मित की गई थी। दीवार, छत और खम्भे लगभग सभी गुफाओं के रंगे हुये हैं और यह रंग ऐसा है कि आज भी नया दिखाई देता है मानो इसी रात को कारीगरों ने इसे रंगा हो। इसके अतिरिक्त १३ गुफायें ऐसी भी हैं जिनमें कहीं कहीं रंग नहीं है। १,२,९,१०,१६,१७ नम्बर को गुफाओं में अधिक चित्ताकर्षक और सुन्दर कला का दिग्दर्शन होता है। इस आश्चर्यजनक रंगाई में जो आश्चर्यजनक सामग्री काम में लाई गई है, उसमें सफेद, काला, लाल, पीला आदि रंग विशेष उल्लेखनीय है। यहां पर बौद्ध और जैन संस्कृति का अस्तित्व दिखाई देता है। और उनके वैभव-काल की झांकी आज भी इस प्राङ्गण में गूंज उठती है।

इसके अतिरिक्त अल्लोरा की गुफायें, आलमपुर का मन्दिर, इटागी का मन्दिर, नागनाथ मन्दिर, परपनी मन्दिर इत्यादि कई मन्दिर पूर्व काल की झांकी लिए हुए आज भी विद्यमान हैं और कला की दृष्टि से अपना विशेष स्थान रखते हैं तथा दर्शनार्थियों का हृदय मोह लेते हैं।

हजरतबन्दा नवाब की दरगाह, गुलबर्गा, औरंगजेब की बीबी का मकबरा, औरंगाबाद, कुतुबशाही मसजिद, गोलकुन्डा, अहमदशाह, वहमनी का मकबरा, बीदर तथा गोलकुन्डा का किला भी कम दर्शनीय स्थान नहीं है। इसमें मुस्लिम वैभव-काल की चित्ताकर्षक कला का दिग्दर्शन होता है।

हैदराबाद तो अपनी जनसंख्या १,६५,००,००० के कारण भारतवर्ष में अपना चौथा स्थान रखता है और इसके साथ साथ आधुनिक भवन-निर्माण कला में नयी दिल्ली का प्रतिद्वन्दी दिखाई पड़ता है। बागआम, अजायबघर, हाइकोर्ट, उस्मानिया अस्पताल, यूनानी दवाखाना, स्टेट लायब्रेरी, फलकनुमा सिटी कालेज, राज्यभवन आदि हैदराबाद की प्रख्यात और दर्शनीय इमारतों में से हैं। यहां की चौड़ी चौड़ी सड़कें और आधुनिक बंगले हैदराबाद की शोभा को बढ़ा रहे हैं।

चार मीनार जो कि भारतवर्ष ही नहीं संसार में भी अपना सानी नहीं रखता, हैदराबाद के गर्भ में चार बड़ी सड़कों और बाजारों के सङ्गम पर अपना विशाल मस्तक ऊंचा किये हुये अब भी संसार को अपने विशाल वैभव, सुख और सम्पत्ति का अहवान करता है। संभव है इसी कारण यहां के सिक्के पर इसकी छाप दिखाई देती है। इसे मुहम्मद कुलीकुतुब शाह सन् १५९० में बनाया था। जिसकी चौड़ाई और लम्बाई प्रत्येक की १०० फुट और ऊंचाई १८० फुट है।

औद्योगिक तथा वैज्ञानिक प्रगति

अब तक तो आपने हैदराबाद के भूतकाल और पुरातत्व, प्राकृतिक रचना पर ही दृष्टिपात किया है। अब हम हैदराबाद की वर्तमान शासन-पद्धति का का सिंहावलोकन करते हैं। यह बात नहीं है कि यहाँ की शासन-पद्धति सर्वथा निर्दोष है। इस राज्य ने उनको दूर करने का प्रयत्न किया है। आज हैदराबाद की परिवर्तनशीलता शासन के प्रत्येक अंग में दृष्टिगोचर होने की आशा है। शिक्षा, जनस्वास्थ्य, कृषि आदि विभाग कुछ प्रगतिशील हैं, राजस्व और न्याय विभाग में बहुत कुछ परिवर्तन होने के कारण उनमें कुछ उन्नति हो गई है। इसी प्रकार आंतरिक उन्नति जैसे रेल आदि, बहुत ही सुदृढ़ है। शासन सुधार की नई बातों में रेल तथा सड़क, गमनागमन का सहयोग और संबंध स्टेट ब्राडकास्टिंग (रेडियो) और हवाई जहाज का शिक्षण का पुनर्सङ्गठन, हैदराबाद म्यूनिसिपल कमेटी का विधान, निर्वाचित और उत्तरदायी प्रणाली जिला म्यूनिसिपैलिटियों का पुनः संघठन, ग्राम-सुधार के लिए केन्द्रीय समिति की स्थापना आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। ऋण देकर दास बनाने की प्रचलित प्रणाली के विरुद्ध कानून, निजाम सागर इलाके में शुगर फैक्ट्री (चीनी मिल) की स्थापना, सोने की खानों का अनुसंधान, औद्योगिक और कृषि जीवी प्रजा के लिए साहुकारी जांच, हिन्दू विवाह रजिस्टर्ड कराने की प्रथा का श्री गणेश, हिन्दुओं को विधवा विवाह की आज्ञा आदि बातें यह बताती हैं कि राज्य किस ओर बढ़ रहा है।

वैधानिक प्रगति :—

शासन सुधार के संबंध में निजाम सरकार ने गैर सरकारी सदस्यों की बहुमत कमेटी नियुक्त की है जो विविध स्वार्थों के साथ सरकार और जनता का अधिक सम्पर्क बढ़ाने की उपायों की खोज करेगी और अपनी रिपोर्ट देगी।

अनिवार्य शिक्षा, प्रेस रेगुलेशनादि कानूनों के शीघ्र ही पेश होने तथा मातृभाषा द्वारा शिक्षा देने की घोषणा हो चुकी है। उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में भी मातृभाषा द्वारा शिक्षा देने पर विचार हो रहा है। सरकार के मंत्रियों की एक कमेटी बनाई जा रही है जो नौकरी के भरती के नियमादि पर विचार करेगी।

गत वर्षगांठ पर वर्तमान हैदराबाद नरेश [illegible]जा को संदेश देते हुये कहा था कि, "[illegible]जा पर तलवार के द्वारा शासन करने की मेरी इच्छा नहीं है, मैं तो उनके हृदय पर राज्य करना चाहता हूँ और प्रजा को संतुष्ट तथा सुखी बनाना ही मेरी एकमात्र आकांक्षा है।

आर्थिक प्रणाली :—

अर्थ ही सारी उन्नति का स्रोत है अतः इस ओर भी ध्यान दिया गया है। यों तो गत १६ वर्षों से पूर्ण व्यवस्थित कार्य है और भिन्न भिन्न विभागों को त्रिवार्षिक बजट के आधार पर उनके वार्षिक व्यय के अनुमानानुसार व्यय के लिए धन दिया जाता है। इससे व्यर्थ का अपव्यय बच जाता है। और इस प्रकार ठीक प्रकार से उन्नत विचारों से प्रारंभ की गई उन्नति की योजनाओं के लिए पर्याप्त सुविधाएँ मिल जाती हैं। यदि ३ वर्ष के पश्चात् रुपया बच जाता है, तो उसमें से कुछ सुरक्षित कोष में और शेष राष्ट्र-निर्माण कार्य में व्यय होता है।

सुरक्षित कोष :—

इस प्रकार बचे हुये धन से गत वर्षों में बहुत बड़ी धनराशि जमा हो गई और अन्य उपयोगी कार्यों के लिए सुरक्षित कर दी गई है। इस तरह अकालफण्ड, औद्योगिक ट्रस्टफण्ड, उस्मानिया सिक्का स्थायी करण और पेपर करेंसी रिजर्व काफी बढ़ गये हैं। जिससे उनके द्वारा आवश्यकतायें पूरी हो सकें। अकालफण्ड में राजस्व विभाग से प्रतिवर्ष १५ लाख रु० सहायता रूप मिलती है। और अब वह २८५-२ है। यह न केवल अकाल में ही परन्तु 'जलकष्ट वाले गावों में, कुओं के निर्माण में खर्च होते हैं, कूप निर्माण विभाग ने अब तक २० लाख रुपया खर्च किया है और १५०० कुएँ रायचूर में तथा २०० गुलबर्गा में बनाये हैं। गुलबर्गा में २५० और बन रहे हैं।

औद्योगिक पूंजी :—

औद्योगिक ट्रस्ट फंडके पास इस समय ९६-३९ लाख रुपया है। और इसमें से उद्योग धन्धों में रुपया लगभग जाता है। इस वर्ष निजाम शुगर फैक्टरी को ७॥ लाख रुपये के शेयर लिये गये हैं। विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि नई त्रिवार्षिक योजना के अनुसार १ करोड़ ९० लाख नवभवन निर्माण, एक करोड़ सड़क निर्माण, ८ लाख गुलबर्गा जल व्यवस्था, ५ लाख कस्बों की म्यु[illegible]पल्टी, और ८ लाख स्वर्ण अनुसंधान के लिए है। सोने की महँगाी में यह आशा है कि सोने की खान का कार्य उत्तम ढंग से चलेगा और इससे राज्य की आय बढ़ेगी। रायचूर जिले में जहाँ कि प्रायः अकाल पड़ा करता है, वहाँ की जनता को रोटी भी मिलेगी।

गत वर्षों में राज्य की आय १ करोड़ बढ़ गई है और इस वर्ष व्यय के बजट में एक करोड़ ४४ लाख स्वीकृत किया गया है। जिसमें ९५ लाख विश्वविद्यालय और पुलिस के भवनों पर ११ लाख निजामसागर इलाके की नहरों को विस्तृत करने में, और १ करोड़ से भी अधिक रेलवे लाइन में वृद्धि के लिए स्वीकृत किया गया है।

रेलवे विभाग : —

यहाँ का रेलवे विभाग भारत के अन्य देशी राज्यों में अपना विशेष स्थान रखता है। इसका विस्तार १६६४ मील है और इसमें से केवल ३७१ मील की रेलवे या तो भारत सरकार की है या प्राइवेट कम्पनियों की है। यह रेलवे निकटवर्ती प्रांतों से संबंधित है। ६९९ मील ब्राडगेज और ६५९ मील मीटरगेज इस प्रकार १३४७ मील में रेलवे विभाग कुशलता से कार्य संचालन कर रहा है। यह रेलवे राज्य की सीमाओं पर या सीमाओं के समीप स्थित पांच जंक्शनों से संबंधित है। इससे व्यापार के आयात-निर्यात में महान सुविधायें प्राप्त होती हैं और इससे उत्तरी और दक्षिणी भारतवर्ष तथा पूर्वी और पश्चिमी तटों के संबंध स्थापित करने को सुविधाजनक मार्ग मिलता है। फीडर और ब्रांच लाइनें बढ़ाने पर विचार हो रहा है। जब से निजाम सरकार ने निजाम स्टेट रेलवे कम्पनी से चार्ज लिया है तब से कई ब्रांच लाइनें बनाई गई हैं। मार्च ३८ तक निजाम सरकार ने रेलवे विभाग पर १५ करोड़ ९ लाख रुपया व्यय किया है और ३१ मार्च १९३८ तक रेलवे विभाग की आय २ करोड़ ४५ लाख और मुनाफा १ करोड़ २९ लाख था।

रेल तथा रोड संगठन :—

स्टेट ने रेल को सड़क से जोड़ने का प्रशंसनीय कार्य किया है। १९३२ में २७ बसों से यह कार्य प्रारंभ हुआ और बढ़ते बढ़ते मार्च १९३८ के अन्त में ३५८ बसें हो गई। जो ४०१७ मील लम्बे क्षेत्र में जाती हैं। इस योजना से व्यक्तिगत लाभ नष्ट होकर जन हितैषी सार्वजनिक कोष में वृद्धि हुई है।

मोटर, बसें सुन्दर सुविधा जनक, नियमित और सस्ती हैं।

एयर सर्विस :—

सब प्रकार के यातायात में तीव्र प्रगति हो रही है। एक ही तंत्र के अन्तर्गत 'एयर सर्विस' (हवाई जहाज़ का आवागमन) जारी किया जा रहा है। हैदराबाद में एयरोड्रोम स्थापित हो चुका है, शिक्षक तथा स्थल स्टाफ नियुक्त हो चुका है। वायुयानिक मशीनें खरीदी जा रही हैं। अन्य एयरोड्रोम भी खोजे जाने का विचार चल रहा है।

लगान में छूट :—

रेलवे की आय के अतिरिक्त राज्य की आय के साधनों में मुख्यतः जमीन का लगान, करोड़ गिर आबकारी और जंगलात हैं। पिछले चार वर्षों में लगान की आय ३ करोड़ ६५ लाख के लगभग रही है। इस बीच में कोई लगान वृद्धि नहीं हुई है बल्कि सरकार ने उल्टी फसल की खराबी आदि के कारण ५० लाख वार्षिक माफी दी है। इस लिए कुल मांग २ करोड़ ९८ लाख और ३ करोड़ २४ लाख के बीच रही है। उक्त साधारण छूट के अलावा हिज़ इग्ज़ाल्टेड हाइनेस निजाम की रजत जयन्ती के उपलक्ष में ४० लाख बकाया लगान की रकम छूट में दे दी गई।

अन्य दिक्कत के कारण जिलों में ८ करोड़ २४ लाख की लगान में मुल्तवी दी गई और सड़कों, जरात, सुधारादि के लिये अकाल फण्ड से ३७ लाख रुपये के करीब सहायता दी गई।

किसानों को सुविधायें : —

किसानों के ऋण के सम्बन्ध में जांच के लिए एक स्पेशल अफसर नियुक्त किया गया है। जो उनकी स्थायी सुविधायें देने के उपाय सु झायेगा। यह रिपो र्ट कान्सिलियेशन मनीलेण्डर्स और लैण्डमार्टगेज बैंड्स के मसविदे के साथ प्रकाशित हुई है जिसपर विचार हो रहा है। लैण्डएलीनेशन रेगुलेशन कुछ जिलों में लागू किया गया है ताकि व्यापक रूप से लागू किया जा सके। इसी प्रकार रिकार्ड आफ टाइ-ट्स का तरीका भी जारी किया गया है।

शराब बन्दी :—

नये आबकारी तरीके के अनुसार १९३६ से ३७ तक शराब के दुकानों की संख्या २४५५२ से घटकर १११२८ रह गई है। शराब तथा अफीम का खर्च कम हो गया है। परन्तु आबकारी की आय १९३२-३३ से १ करोड़ ८० लाख के बजाय २ करोड़ से अधिक हो गई है। शराब बन्दी को और जोर से लागू करने के लिये हिज़ इग्ज़ाल्टेड हायनेस ने १९३५ में एक मद्य पान निषेध मंडल स्थापित किया और तब से राज्य भर में इस दिशा में अत्यधिक प्रचार हुआ। और शराब तथा अन्य मादक द्रव्यों के इस्तेमाल में काफी कमी हुई है।

कृषि-विभाग का कार्य :—

इस विभाग ने खोज और प्रयोग दोनों तरफ काफी ध्यान दिया है। कृषि के लिये नये तरीके जारी किये गये हैं। एक स्वतंत्र एग्रीकल्चरल (कृषि) विभाग थापित किया गया है और परीक्षा के तौर पर रायचूर और वारंगल में फल और सब्जी के नये बगीचे लगाये गये हैं। वारंगल में भी एक फार्म खोला गया और परमनी में भी मुर्गी पालने का एक फार्म स्थापित किया गया। अब तो इम्पीरियल एग्रीकल्चरल रिसर्च के सहयोग से कृषिसुधार में बहुत उन्नति हुई है। गन्ना, कपास आदि की किस्म बहुत अच्छी हो गई है। ग्रांटइन एड डिमानट्रेशन फार्मस कृषकों की जमीन पर प्लाटों के प्रदर्शन द्वारा खेतों की उन्नति का कार्य हो रहा है। ऐसे फार्मों की संख्या १९३३ से ४ से ३७ में १४ और प्रदर्शन प्लाटों की ९६७ से २६४९ हो गई है। इस आन्दोलन के फलस्वरूप ३ साल में ३१३२२ एकड़ से बढ़कर ११५३४० एकड़ में यह प्रयोग हो रहे हैं।

खनिज पदार्थ :—

हैदराबाद खनिज सम्पत्ति में बहुत सम्पन्न है। इनमें कोयला सबमें प्रमुख है। सिंगरेनी, तेंदुर और सास्टी में ३ कम्पनियाँ इसका कार्य करती हैं, चौथी और खुलने वाली है। ३९ से ४२ ल[illegible]टन तक कोयले की उत्पत्ति होती है। इससे सरकार को ८॥ लाख का मुनाफा मिलता है। और भी खाने हैं, जैसे सोना, तांबा, संगमरमर, चुनखड़ी और काला शीशा।

औद्योगित प्रगति :—

राज्य के भिन्न भिन्न भागों में छोटे बड़े बहुत से उद्योग धन्धे क़ायम हैं। नांदेड़ में उस्मानिया मिल है जिसमें २४७०० स्पिन्डलस और ४६९ लूम्स हैं— २४०० मजदूर काम करते हैं और कम्पनी का प्राप्त मूलधन ५० लाख रुपया है। सन् ३८ में इसमें लगभग ५१ लाख पौंड सूत तथा ४१ लाख पौंड के लगभग कपड़ा तैयार हुआ जिसमें राज्य में १७५०० रुई गढ़ाने खपीं। वारंगल में आजमशाही मिल्स १९३४ में स्थापित हुई, इसमें १९५०० स्पिन्डलस और ४२४ लूम्स हैं। मिल में २४०० मजदूर काम करते हैं और इसका प्राप्त मूलधन १९ लाख रुपये हैं। इसमें लगभग १९८०० गांठ रुई खपी और लगभग ३० लाख पौंड कपड़ा तैयार हुआ। ये दोनों मिलें सरकार द्वारा संचालित हैं।

शाहाबाद सिमेन्ट फेक्ट्री अपने ढंग की निराली है। जिसमें १४०००० टन पोर्टलेएड सीमेन्ट तैयार होता है। यह सीमेन्ट स्टेट के बाहर प्रसिद्ध रेलवे कम्पनियों और पबलिक वर्क्स डिपार्टमेन्टों ने भी खरीदा है। यह अभी हाल में एसोसियेटेड सीमेन्ट कम्पनीज़ में सम्मिलत हो गई है। इसके अतिरिक्त और बहुत सी जिनिंग और प्रेसिंग मिल्स हैं। सिगरेट, दियासलाई, चावल, तेल, बाट इत्यादि की बहुत सी फेक्टरियाँ हैं। निजाम सागर इलाके में बोधान में भी एक बहुत बड़ी शुगर फैक्टरी स्थापित हुई है। इसमें ३५ लाख शेयर केपिटल रक्खा गया है और अधिकांश शेयर्स निज़ाम सरकार के ही हैं। एक पल्प और पेपर मिल खोलने का कार्य भी समाप्ति पर है। और भी बहुत से घरेलू उद्योग-धन्धे प्रचलित हैं। स्टेट को अपने बीडी, तार, वारंगल गलीचे, करीम नगर सिल्वर वर्क्स निर्मल टाय इन्सीट्यूट पेठन के गोल्डकेस वर्क्स और औरंगाबाद के हिमरूविविंग के लिये अभिमान है। इसके अतिरिक्त यहाँ पर एनामेल बटनों का कार्य महत्वपूर्ण है जो भारतवर्ष में कहीं नहीं होता। यहाँ १०-१२ बटन फैक्टरियाँ हैं जिसमें प्रकाश बटन फैक्ट्री विशेष उल्लेखनीय है।

ग्राम सुधार :—

ग्राम-सुधार का कार्य व्यवस्थित रूप से चलाने के लिये राज्य ने एक उपयुक्त योजना बनाई है। उसके लिये सेन्ट्रल बोर्ड स्थापित किया गया है। जिसके साथ जिलों और तालुकों की शाखायें संयुक्त हैं। जिसके सदस्य सरकारी और गैरसरकारी मेम्बर हैं इस कार्य चुने हुये परिवारों का सहयोग प्राप्त किया जायगा। ग्राम-स्कूल अध्यापक और ग्राम-पटेल इसके संचालक होंगे। आशा है कि इसके द्वारा कृषि-कार्य, पशुओं की नस्ल सुधार और घरेलू उद्योग धन्धों की उन्नति, शिक्षा सुधार, जन स्वास्थ्य और सार्वजनिक सेवा के अन्य कार्यों में सहयोग मिलेगा। निजाम सागर इलाके के ८५ गाँवों में ग्राम-सुधार का कार्य पहले से ही आरम्भ हो गया है। इसके अतिरिक्त राज्य के १०४ तालुकों में हर तालुके से एक या एक से अधिक ग्राम इस कार्य के लिये चुने गये हैं। आर्थिक संकट के कारण सहयोगिता के आंदोलन में शिथिलता आई है, लेकिन इन संस्थाओं की संख्या जो पहले ५०० थी अब ३००० है इनमें से एक डुमिनियन बैंक है, सेन्ट्रल बैंक द्वारा संचालित और ३९ बैंकें हैं। २४३५ कृषि संस्थायें हैं, और ४७४ गैर कृषि संस्थायें, इन संस्थाओं की पूंजी २ करोड़ २५ लाख से २ करोड़ ४६ लाख हो गई है। यह आंदोलन स्वावलम्बी है।

शिक्षा का पुनर्संगठन :—

शिक्षितों की बेकारी दूर करने और उन्हें आज की आर्थिक कठिनाइयों का सामना करने के योग्य बनाने की दृष्टि से शिक्षा का पुनर्निर्माण करने के लिये एक उपयुक्त योजना बनाई गई है। इसके अनुसार शिक्षा कार्य ४ भागों में नियुक्त होगा। प्राथमिक ५ वर्ष तक, सैकण्डरी ४ वर्ष तक, इसमें साधारण व्यापक ज्ञान दिया जायगा जो उच्च शिक्षा की आधार-शिला होगी। उच्च और औद्योगिक शिक्षण के लिये भी पाठ्यक्रम होगा और उन्हें युनिवर्सिटी, क्लेरिकल ट्रेनिंग, एग्रीकल्चर ट्रेनिंग और औद्योगिक ट्रेनिंग की शिक्षा दी जायगी। अन्त में युनिवर्सिटी का कार्यक्रम होगा। सैकण्डरी और हाई स्कूल शिक्षा-संचालनार्थ एक शिक्षा-मंडल होगा। अनिवार्य शिक्षा राज्य भर में प्रचलित की जायगी। अब भी मातृभाषा, तेलंगी, मराठी, कनाड़ी और हिन्दुस्तानी में मुफ्त शिक्षा

दी जाती है। स्कूल और छात्रों की संख्या काफी बढ़ गई है। पब्लिक स्कूल ४७६४ से ५१३१ हो गये हैं, छात्र भी ३८१०१८ हो गये हैं और शिक्षा कार्य पर ९० लाख खर्च होता है। कन्या शिक्षा पर भी ध्यान दिया जाता है ७६६ कन्या संस्थायें हैं और ५६००० छात्रायें हैं, एक प्रथम श्रेणी का महिला-कालेज भी है। सारे स्कूलों में शारीरिक शिक्षा अनिवार्य है। राज्य ने निरक्षरता निवारण का भी प्रयत्न किया है—व्यक्त लोगों के लिये शहर और जिलों में कई स्कूल खोले गये हैं। सार्वजनिक स्कूलों से जाति-बन्धन हटा दिया गया है। और दलित जातियों के लिये भी पृथक स्कूल खोले गये हैं।

शिक्षा के सम्बन्ध में हैदराबादी प्रजा की सबसे बड़ी शिकायत यह है कि शिक्षा का माध्यम उर्दू है जो वहाँ की जनता की मातृभाषा नहीं है। उर्दू माध्यम के होने से शासकों को सुविधा अवश्य है लेकिन इससे वहाँ की शिक्षा के विकास में बाधा पड़ती है।

उच्च शिक्षा :—

उच्च शिक्षा के लिये लगभग २० वर्ष पूर्व उसमानिया यूनिवर्सिटी स्थापित की गई जिसने सब ओर काफी उन्नति की है। इस विश्वविद्यालय में सब विषयों की शिक्षा का माध्यम हिन्दुस्तानी उर्दू है जो राज्य की भाषा है। अङ्गरेजी सब श्रेणियों में अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है। यूनीवर्सिटी में, आर्ट्स, थियालौजी, विज्ञान, ला, इञ्जीनियरिंग, मेडीसिन, पैडागाजी की शिक्षा दी जाती है। इसके अतिरिक्त बियालौजी, जूऑलौजी और जियालौजी के भी विभाग खोले हैं। अर्थशास्त्र के लिये प्रथक स्कूल हैं। फ्रेंच, जर्मन, संस्कृत, अरबी के शिक्षण की भी कालेज के समय के बाद व्यवस्था है। विश्वविद्यालय और उससे सम्बन्धित कालेजों में १८६८ विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। १९३३ से यह संख्या ५०० अधिक है। इसकी व्यापकता बिना किसी जाति भेद के सर्वविदित है और इसकी उपाधियाँ ब्रिटिश भारत और विदेशी विश्वविद्यालयों द्वारा मान्य है। अभी लंदन और केम्ब्रिज ने भी इन्हें मान्य किया है। अनुवाद विभाग ने इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, दर्शन, गणित, विज्ञान, इञ्जीनियरिंग, ला और मेडीसिन की लगभग २९० पुस्तकों का अनुवाद किया है। युनिवर्सिटी इस समय आदिक मेला बिल्डिंग में है। लेकिन यह शीघ्र ही अपने भवन में चली जायगी जो १॥ करोड़ की लागत से बहुत भव्य बन रही है।

ब्राडकास्टिंग महकमा :—

शिक्षा की सहायता और मनोरंजन के लिये सरकार ने खारू नगर और औरङ्गाबाद में ब्राडकास्टिङ्ग स्टेशन बनाये हैं। ट्रांसमिशन पर सरकार का अधिकार होने से ब्राडकास्ट रिसीवर (रेडियो लगाने वाले) पर लायसेंस फीस लगाने के लिए क़ानून बनाया जा रहा है। गुलबर्गा और वारङ्गल में भी दो स्टेशन बनेंगे। अभी तक हैदराबाद स्टेशन से ब्राडकास्टिङ्ग, हिन्दुस्तानी और इंगलिश में होता है, लेकिन देहाती स्टेशनों पर हिन्दुस्तानी और उस इलाके की मातृभाषा में होगा।

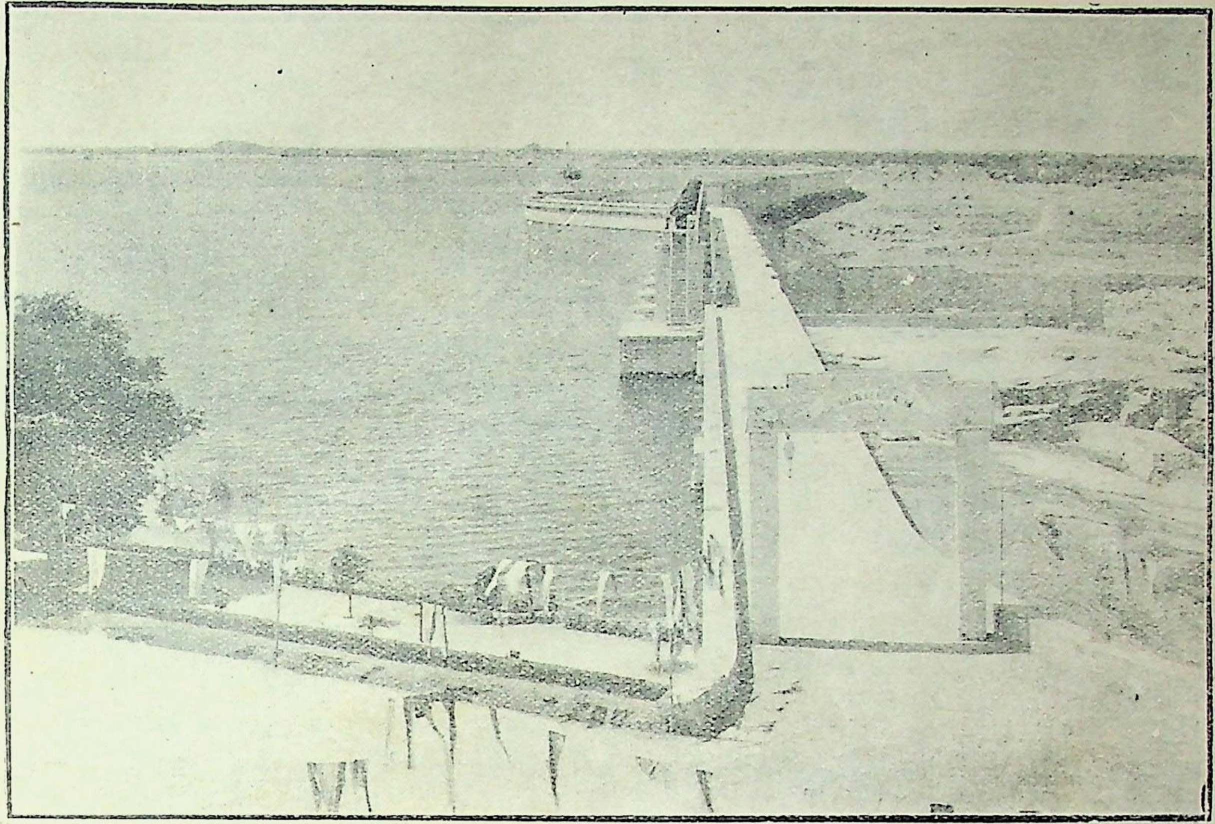
सूचना विभाग, प्रेस और प्रकाशन विभाग को संयुक्त करके काफी सङ्गठित और व्यवस्थित कर दिया गया है। यह न केवल झूठी खबरों का प्रतिवाद करता है और सही खबर देता है बल्कि सरकार और प्रेस के बीच सम्बन्ध करने में सहायक होता है। बहुत शीघ्र ही एक प्रेस क़ानून बनाया जायगा ताकि स्थानीय (मुक़ामी) प्रेस की उन्नति हो सके। इस समय राज्य में ७० समाचार-पत्र और मासिक पत्र इत्यादि प्रकाशित होते हैं।

जन स्वास्थ्य :—

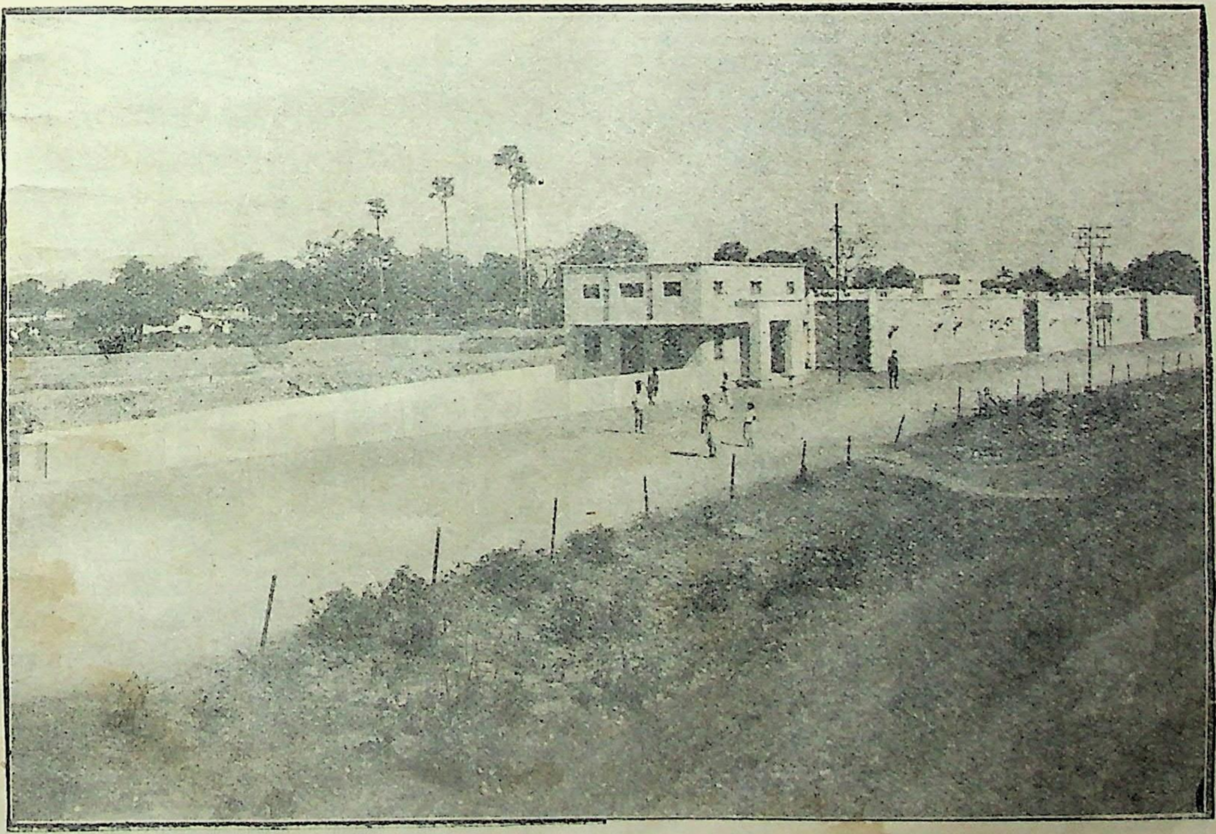
मेडिकल डिपार्टमेंट का बजट पहले २७ लाख था अब लगभग ३१ लाख है। यहाँ १४८ एलोपैथिक औषधालय, १४२ यूनानी तथा अन्य औषधालय, और १५ सफरी दवाखाने राज्यके १५ जिलों के लिये है। एक सिनेमाकार भी स्वास्थ्य सम्बन्धी प्रचार करने के लिये फिल्में दिखाती हुई घूमती है। नई स्वास्थ्य योजना ने ताल्लुका, कस्बा, हेडक्वार्टरों के स्वास्थ्य बहुत लाभ पहुँचाया है।

पी. डबल्यू. डी. :—

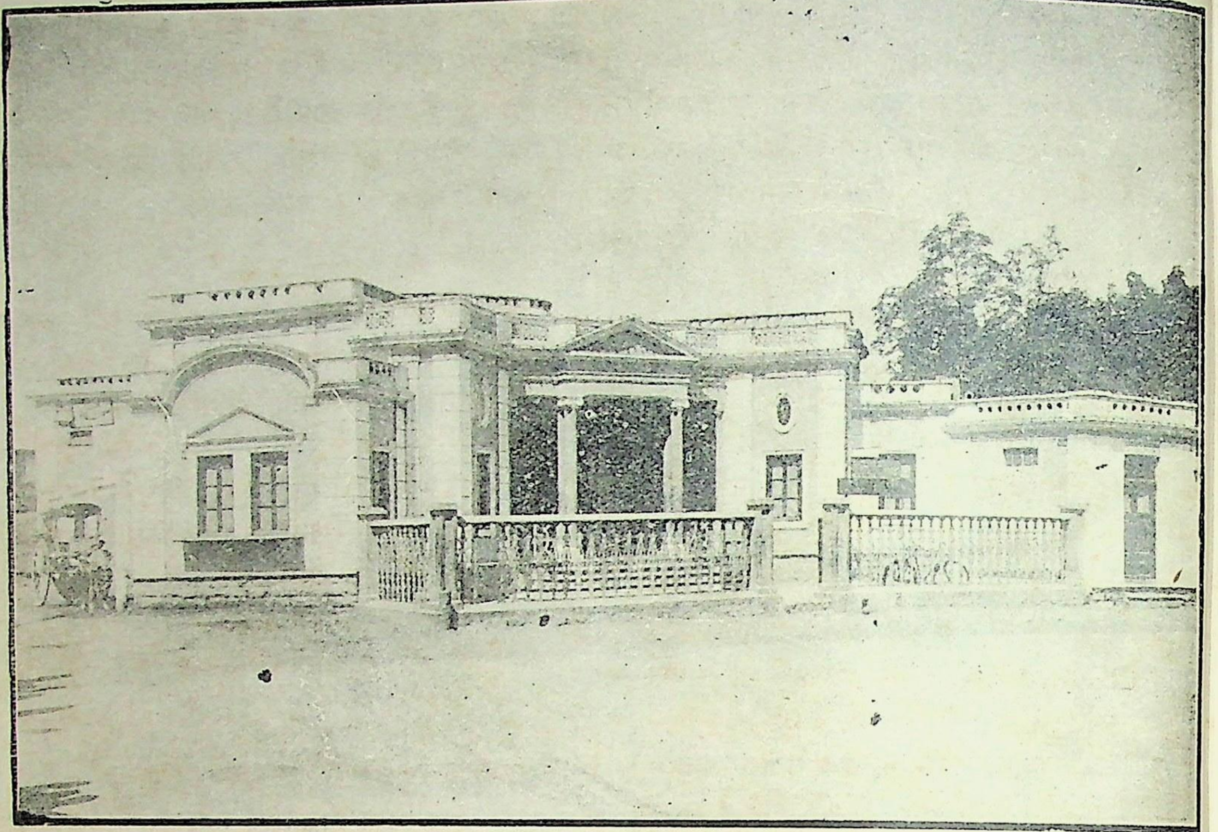
भीतरी व्यावहारिक अर्थात् निर्यात में उन्नति होने में सुविधा पहुँचाने के लिए १९३३ से अब तक नई



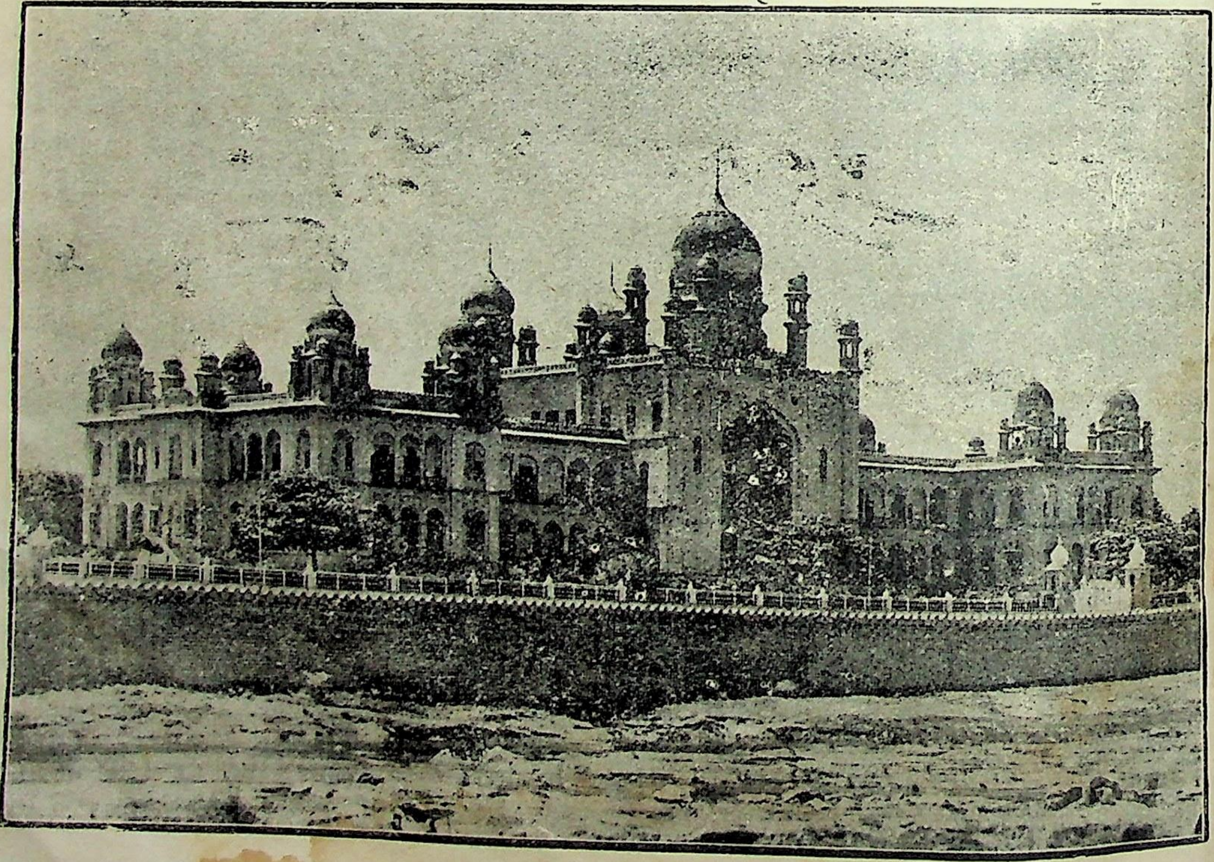
निज़ाम सागर



[illegible] कालेज



चिल्लड़ वेलफेयर सेन्टर



हाई-कोर्ट

५८० मील सड़क बनाई गई और अब उनकी लम्बाई ४९७० मील है। सड़कें बनाने के अतिरिक्त इस विभाग ने राज्य में बड़े बड़े जलाशय बनाये गये हैं। निजाम सागर अब तक राज्य भर में से आबपाशी का सबसे बड़ा स्थान है जिसमें लगभग ४५ करोड़ रुपया व्यय हुआ है और जिसे स्थानीय इंजीनियरों ने ही बनाया है इसमें से ९६५ मील लम्बी नहरें निकली हैं जो २७५००० एकड़ जमीन में आबयाबी करती है। भारतवर्ष में यह दूसरे श्रेणी का जलाशय है।

ड्रेनेज सिस्टम :—

ड्रेनेज वर्क्स (गंदा पानी मोरियों द्वारा निकालने का महकमा) पर सरकार ने १ करोड़ ५ लाख रुपया अब तक व्यय किया है। यह बिल्कुल नया ही तरीका है क्योंकि इसमें सारा बरसाती पानी भी निकल जाता है। भारत में यह सबसे बड़ी योजना है। इसपर अभी २५ लाख रुपया और होगा। इसके अतिरिक्त २७ मील लम्बी सड़क कंक्रीट की बनी है जिनपर २८ लाख रुपया खर्च हुआ है। सिटी इम्प्रूवमेंट बोर्ड शहर की घनी बस्तियों को साफ करके गरीब और साधारण स्थिति वालों के लिये स्वास्थ्यकर मकान बना रहा है। पार्क, खेल के मैदान, बच्चों के खेल कूद और सैर सपाटे के लिए काफी संख्या में बनाये गये हैं। नई और चौड़ी सड़क बनाई गई हैं जिनपर धूल का भय नहीं है। बोर्ड ने एक सेन्ट्रल मार्केट, काटेज इन्डस्ट्रीज़ सेल्स डिपो० भी बनाया है।

१९३६ में म्युनिसिपल पावर रेगुलेशन को मंजूरी मिली जो तत्काल ही ७ बड़े जिला स्थानों में गैर सरकारी बहुमत वाले सदस्यों के साथ शुरू हुई। जिला बोर्डों के सदस्यों ने कृषि जीवी लोगों का काफी प्रतिनिधित्व रहे इसपर काफी ध्यान दिया है। लोकल-फण्ड से बाजार सुधार, कसाई खाने, सड़कें, स्कूल और कुएँ बनाने का कार्य होता है। जिले का जल-विभाग पी. डब्ल्यू. डी. के एक स्पेशल इञ्जीनियर के आधीन होता है। गत ५ वर्षों में जालना, औरङ्गाबाद, लातूर, रायपुर और नांदेड़ में वाटर वर्क्स बने हैं। हैदराबाद म्युनिसिपल एक्ट के अनुसार सिटी म्युनिसिपैलिटी की व्यवस्था में सुधार हुआ है। और उसमें बम्बई म्यू० कारपोरेशन की तरह निर्वाचित सदस्यों का बहुमत है। जिन्हें शासन और टैक्स के बहुत से अधिकार प्राप्त हैं। और इसके फलस्वरूप उसने बिजली की रोशनी, सफाई और जनसेवा के कार्य में बहुत काफी उन्नति की है।

सामाजिक क़ानून :—

स्टेट लेजिस्लेटिव एसेम्बली ने जिसमें मनोनीत और निर्वाचित सदस्य हैं, शासन सम्बन्धी कानूनों के अतिरिक्त, उपयोगी, सामाजिक क़ानून भी पास किये हैं। इनमें हैदराबाद चिल्ड्रेन्स प्रोटेक्शन एक्ट, हिन्दू विडोज रीमैरिज एक्ट (विधवा विवाह) और हैदराबाद पारसी सकसेशन एक्ट विशेष उल्लेखनीय हैं। लेजिस्लेटिव कौंसिल की वृद्धि का प्रश्न विचाराधीन है और इस सम्बन्ध में गैर सरकारी बहुमत सदस्यों की एक कमेटी सम्मति के लिए नियत की जा चुकी है।

न्याय विभाग :—

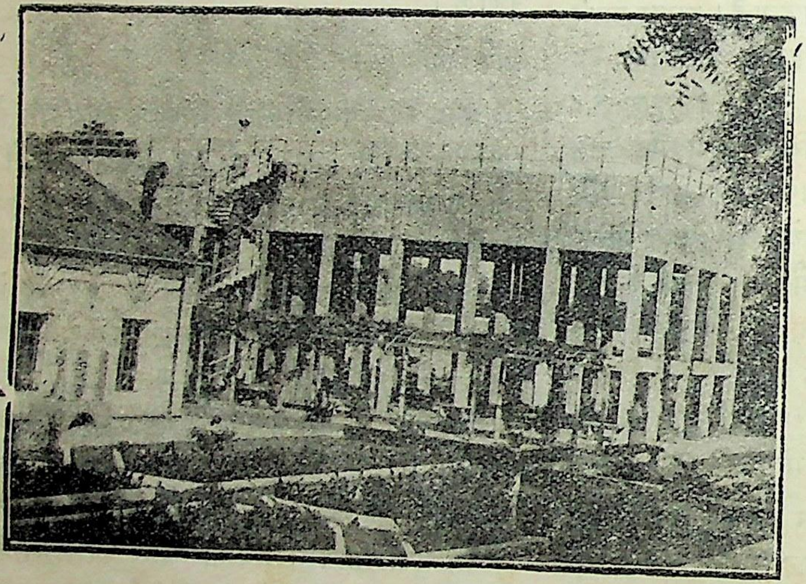
शीघ्र न्याय मिलने का कार्य खूब व्यवस्थित है। हाईकोर्ट जो कि स्वतन्त्र है, आधीन अदालतों के साथ अपना कार्य उत्तमता से कर रहा है। बार और बैंच की योग्यता का माप दण्ड बढ़ा दिया गया है। १९३६ में दीवानी अदालतों में ४४२१८ मुकदमें पेश थे जिसमें से ७८ फीसदी उसी साल फैसल हो गये। इसी तरह फौजदारी के लगभग ९७ फीसदी मुकदमे फैसले हुए। १५ साल पूर्व ही यहां शासन-विभाग से न्याय विभाग पृथक कर दिया गया था जिससे जनता का विश्वास बहुत बढ़ गया है। और अब तो नये सुधार होने से दीवानी और फौजदारी केसों के शीघ्र निर्णय में सहायता पहुँची है।

नवीन वैधानिक सुधार :—

निजाम साहब की ओर से नवीन सुधारों की घोषणा की गई है उसके द्वारा जनता को विशेष अधिकार प्रदान किये गये हैं। धारा सभा स्थापित की गई है जिसमें जनता द्वारा चुने हुए सदस्यों का बहुमत है तथा ५२ विषयों पर धारा सभा को वाद-विवाद और नियमादि बनाने का अधिकार दिया गया है। ग्राम पंचायतें आदि को विस्तृत



काटेज इन्डस्ट्रीज सेलस डिपो



नान्देड़ वाटर वर्क्स

बनाया गया है। सार्वजनिक सभायें और समाचार पत्रों को विशेष स्वतन्त्रता दी गई है। यह सब निजाम राज्य की चौमुखी उन्नति, प्रगतिशीलता तथा जन-प्रियता का उत्कृष्ट प्रमाण है। और इस अवसर पर निजाम साहब ने जनता से सहयोग की अपील सद्भावना के साथ की है। इससे हैदराबाद राज्य के इतिहास में नवीन अध्याय का श्रीगणेश हुआ है। राज्य की प्रजा ने भी इन सुधारों का हर्ष से स्वागत किया है।*

---

* लेखक ने हैदराबाद के सत्याग्रह और धार्मिक बन्धनों का ज़िक्र शायद जान बूझकर इसलिये छोड़ दिया कि शीघ्र ही वहाँ सारी प्रजा को धार्मिक स्वतन्त्रता मिल जावे। हर्ष का विषय है कि निज़ाम सरकार ने सत्याग्रही लोगों की माँगें स्वीकार कर लीं। इससे सरकार हिन्दू जनता में सम्मानपूर्वक समझौता हो गया और सत्याग्रह बन्द कर दिया गया। —सम्पादक

ग्वालियर राज्य

मध्य भारत एजेन्सी में ग्वालियर राज्य सबसे अधिक बड़ा है। इस राज्य का क्षेत्रफल २६०४१ वर्ग मील है। वास्तव में यह राज्य दो भागों में बँटा हुआ है। उत्तरी भाग को ग्वालियर और दक्षिणी भाग को मालवा कहते हैं। उत्तरी भाग के प्रदेश बिल्कुल एक दूसरे से मिले हुये हैं। इन सब का क्षेत्रफल १७०२० वर्ग मील है। इस भाग के उत्तर, पूर्व और उत्तर पश्चिम में चम्बल नदी है। यह नदी इस राज्य से आगरा और इटावा जिलों तथा धौलपुर, करौली और जयपुर राज्यों से अलग करती है। इस राज्य के पूर्व में जालौन, झांसी और सागर जिले हैं। इसके दक्षिण में भोपाल, खिल्चीपुर, राजगढ़ और टोंक (सिरोंज) राज्य हैं।

मालवा का क्षेत्रफल केवल ८०२१ वर्ग मील है। यह दूर दूर बिखरे हुये कई भागों से बना है। इन भागों के बीच बीच में दूसरी रियासतें आ गई हैं।

इस राज्य में तीन प्राकृतिक विभाग हैं।

(१) मैदान का प्रायः समतल प्रदेश ग्वालियर शहर के उत्तर-पूर्व और पश्चिम में स्थित है। ग्वालियर राज्य के गिर्द, तोंवरगढ़, भिंड और शिवपूर जिले मैदान में ही स्थित हैं। इस प्रदेश की उँचाई समुद्रतल से ५०० और ९०० फुट के बीच में है।

(२) पठार—ग्वालियर शहर के ८० मील दक्षिण में जमीन एकदम ऊँची होने लगती है। अन्त में मालवा का पठार आ जाता है। इस पठार की औसत उँचाई १५०० फुट है। इस प्रदेश का क्षेत्रफल १७८५६ वर्ग मील है। वास्तव में ग्वालियर राज्य की ७० फी सदी जमीन पठार में ही स्थित है।

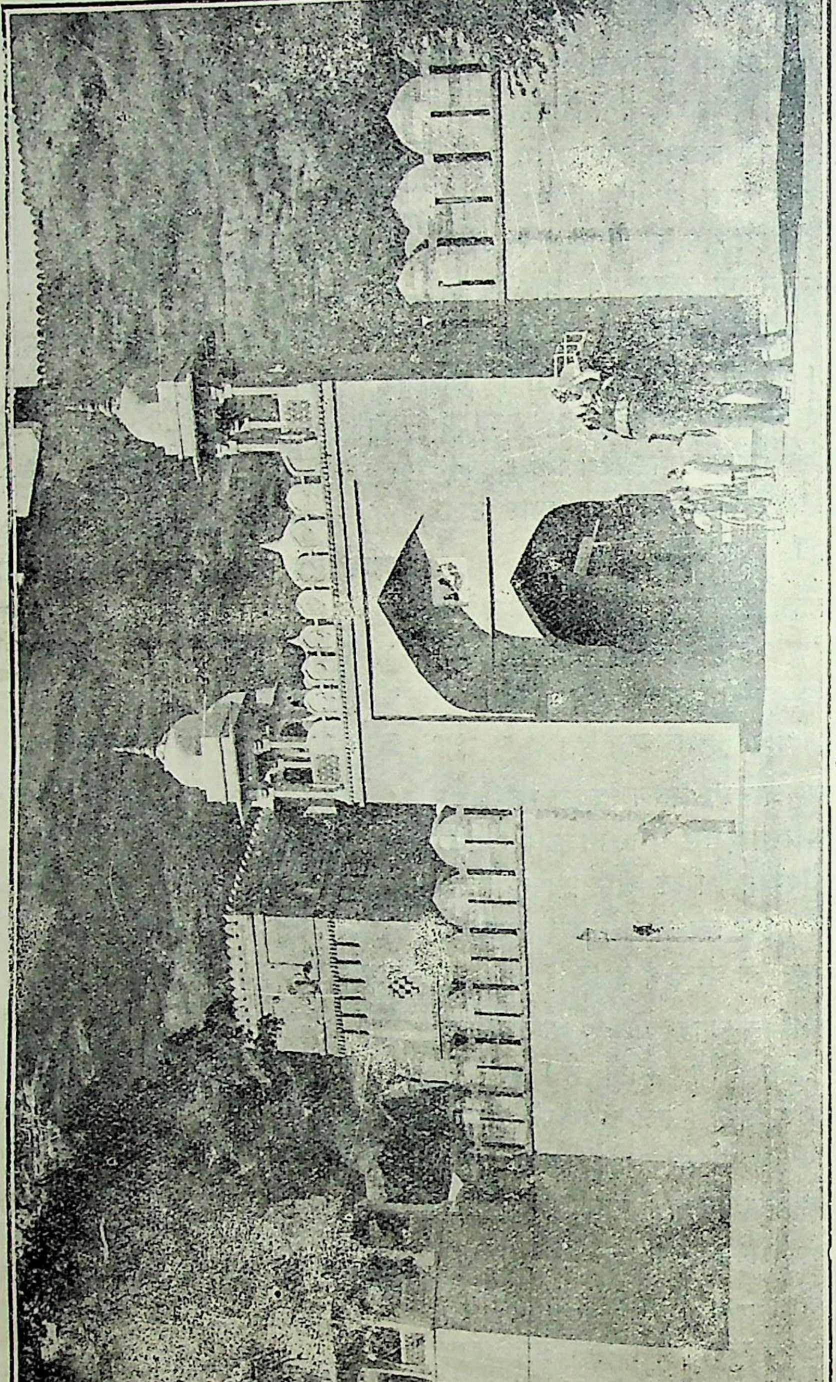
(३) पहाड़ी भाग—अमझेरा जिले में हैं। इस की औसत उँचाई १८०० फुट है वैसे यहाँ ऊँचे पहाड़ और नीची घाटियाँ भी हैं। वे अधिकतर जंगल से ढके हुए हैं। पहाड़ी भाग का क्षेत्रफल केवल १३०१ वर्ग मील है। विन्ध्याचल पर्वत की दो शाखायें ग्वालियर राज्य को पार करती हैं। एक शाखा भिलसा से उत्तर की ओर चल कर राज्य के मध्य भाग को पार करती हुई ग्वालियर शहर तक आती है। दूसरी पर्वत शाखा उज्जैन और नीमच जिलों में होकर पहली शाखा के समानान्तर चलती है। नर्मदा के उत्तर में विन्ध्याचल की प्रधान श्रेणी राज्य का जल-विभाजक बनाती है। प्रायः सभी नदियां उत्तर की ओर बहती हैं। चम्बल नदी इन सब में अधिक प्रसिद्ध है। कीली, सिन्ध, क्षिप्रा, पश्चिमी पार्वती इसकी सहायक नदियां हैं। बेतवा, सिन्ध और इसकी सहायक पूर्वी पार्वती कुवारी दूसरी नदियाँ हैं।

भौगर्भिक रचना के अनुसार ग्वालियर राज्य चार भागों में बटा हुआ है। पहले भाग में ग्वालियर खास है। यहां विन्ध्या की कई श्रेणियाँ उत्तर से दक्षिण को जाती हैं। उत्तरी भाग में वे उत्तर-पूर्व की ओर मुड़ कर चम्बल नदी की समानान्तर हो जाती हैं। चार प्रधान श्रेणियों के ऊपर बलुआ पत्थर की भारी भारी तहें जमी हुई हैं। चौथी श्रेणी के आगे चम्बल के समीप कछारी मिट्टी से ढकी हुई है। इस कछारी मिट्टी के नीचे सिरबू चट्टानें छिपी हुई हैं। चम्बल नदी में कुछ चट्टानें ऊपर निकल आती हैं। इनके पड़ोस में चूने का पत्थर है।

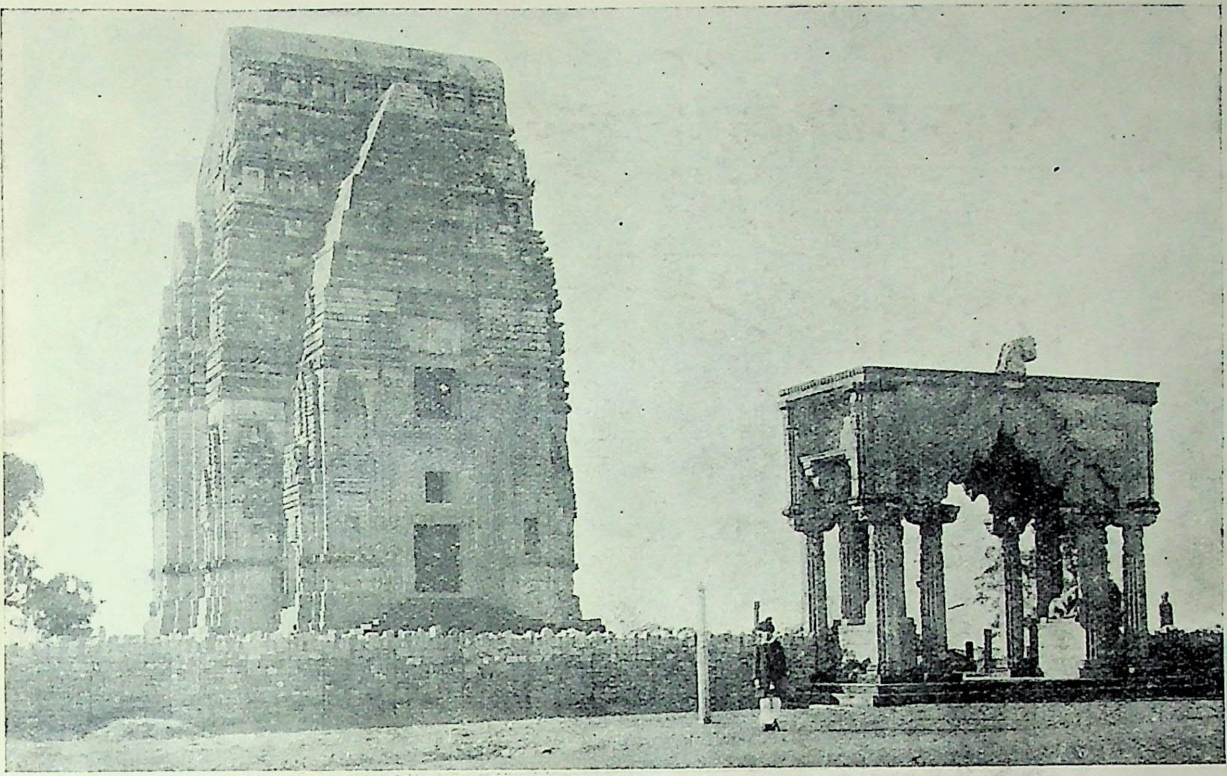
२६ उत्तरी अक्षांश के उत्तर में कैमूर का बलुआ पत्थर बिल्लौरी चट्टानों के ऊपर नहीं मिलता है। इधर वह कछारी धरती में धंसा हुआ है। ये चट्टानें विन्ध्याचल से भी अधिक पुरानी हैं। ये बुन्देल खंड की बिजावर चट्टानों से मिलती हैं इसीलिये इन्हें बिजावर भी कहते हैं। भूगर्भवेत्ताओं का अनुमान है कि बिजावर चट्टानें विन्ध्याचल की सृष्टि के पहले ही मौजूद थीं। इनकी सब से निचली तहों में सफेद पत्थर (कार्टज) के जड़े हुये टुकड़ों के ऊपर बलुआ पत्थर की तहें हैं। इन को अक्सर पार पत्थर कहते हैं। पार क़स्बा ग्वालियर से पन्द्रह मील दक्षिण-पश्चिम की ओर इन्हीं पहाड़ियों की तलहटी में बसा है।

नीमच प्रदेश में कई तरह की चट्टानें हैं। पर इनका अभी पूरा पता नहीं लगाया गया है। इधर दक्षिण का काला आग्नेय पत्थर बहुत है।

अधिक दक्षिण में नर्मदा के समीप बलुआ पत्थर की दो तहों के बीच में समुद्री जानवरों के ढाँचे मिले



ग्वालियर—फाटक



ग्वालियर—पन्द्रहवीं शताब्दी का हिन्दू मन्दिर

वाथ नगर के पास भीतरी चट्टानों में प्रस्तर अंश बहुत है।

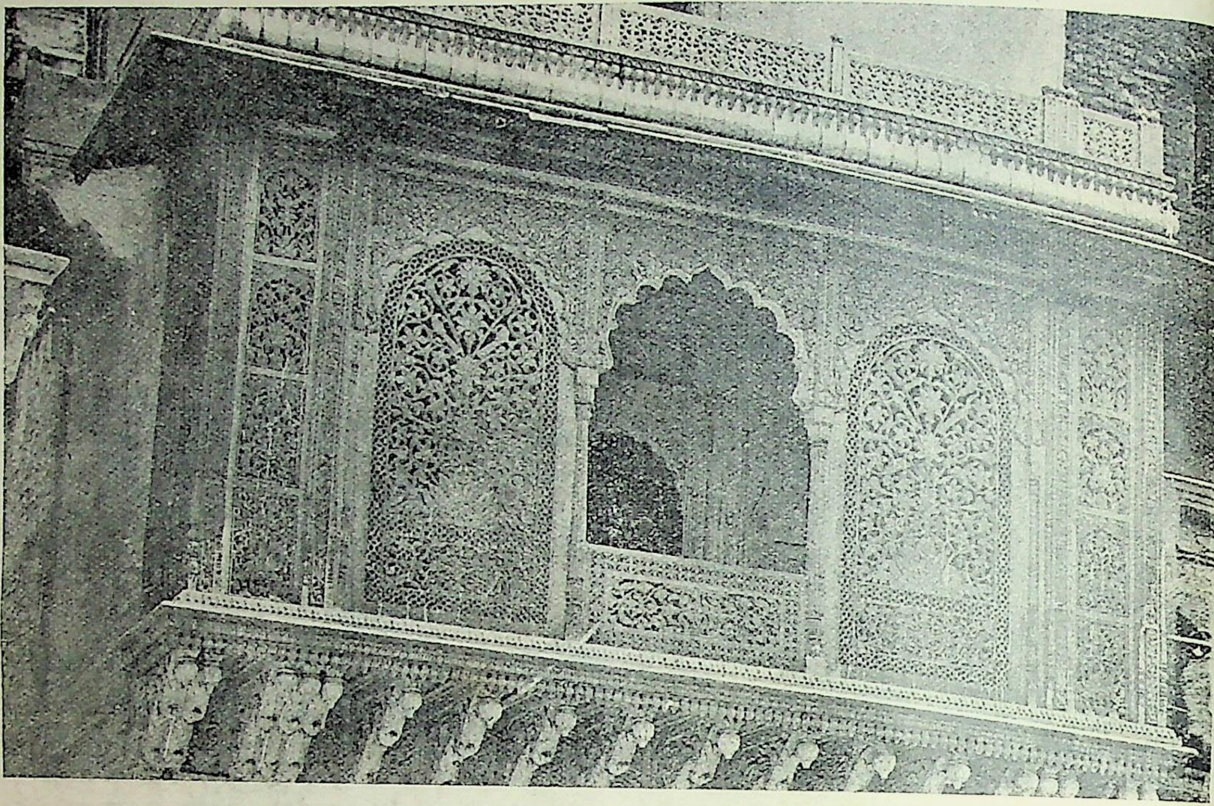
जलवायु—ग्वालियर के ऊँचे पठार की जलवायु न गरमी में अधिक गरम और न सरदी में अधिक ठंड रहती है। लेकिन मैदान गरमी में बहुत गरम हो जाता है। मैदान में सरदी के दिनों में ठंड भी खूब पड़ती है। पठार में वार्षिक वर्षा ३० इंच और मैदान में ४० इंच होती है।

वनस्पति—ग्वालियर के उत्तरी भाग में ऐसे पेड़ और झाड़ियां हैं जिनमें गरमी के दिनों में पत्ते झड़ जाते हैं। तभी उनमें फूल आते हैं। कहीं कहीं बाँस भी मिलता है। धुर दक्षिण में विन्ध्याचल और सतपुड़ा पर मध्य भारत के आदर्श वन हैं।

पशु—ग्वालियर के बनों में विशेष कर उत्तरी भाग में चीता, तेंदुआ, साँभर, चीतल, हिरण, भालू और दूसरे जंगली जानवर बहुत हैं।

कृषि—मालवा प्रदेश की काली माटी या माड बड़ी उपजाऊ है। यहाँ कपास और दूसरी फसलें बड़ी अच्छी होती हैं। यहाँ के किसान भी बड़े मेहनती हैं। नावर, शिवपुर और इसागढ़ में ज़मीन अधिक उपजाऊ नहीं है। अमझोरा का पूरा ज़िला पहाड़ी है। इसमें लगभग २६ फीसदी ज़मीन खेती के काम आती है। ३० फीसदी ज़मीन खेती के योग्य तो है लेकिन इस समय उसमें खेती नहीं होती है। शेष ऊसर, पत्थर और जङ्गल से घिरी है। ज्वार (१८७७ वर्गमील) बाजरा (३४१) मकई (२५८) अरहर (१०७) कपास (३०५) खरीफ की प्रधान फसलें हैं। चना, (९५२) वर्गमील अलसी (१४३) पोस्त(६५) गेहूँ (४६७) जौ (११९) रबी की प्रधान फ़सलें हैं। पीली मिट्टी को सींचने की ज़रूरत पड़ती है। ईख और पोस्त की फसलें बिना सिंचाई के नहीं हो सकती हैं। लेकिन कुआँ खोदने में बहुत खर्च होता है। इसलिये इस समय केवल पांच फी सदी खेत सींचे जाते हैं।

खनिज—ग्वालियर राज्य को बिजावर चट्टानों में अच्छा लोहा पाया जाता है। पहले पनियार के पास



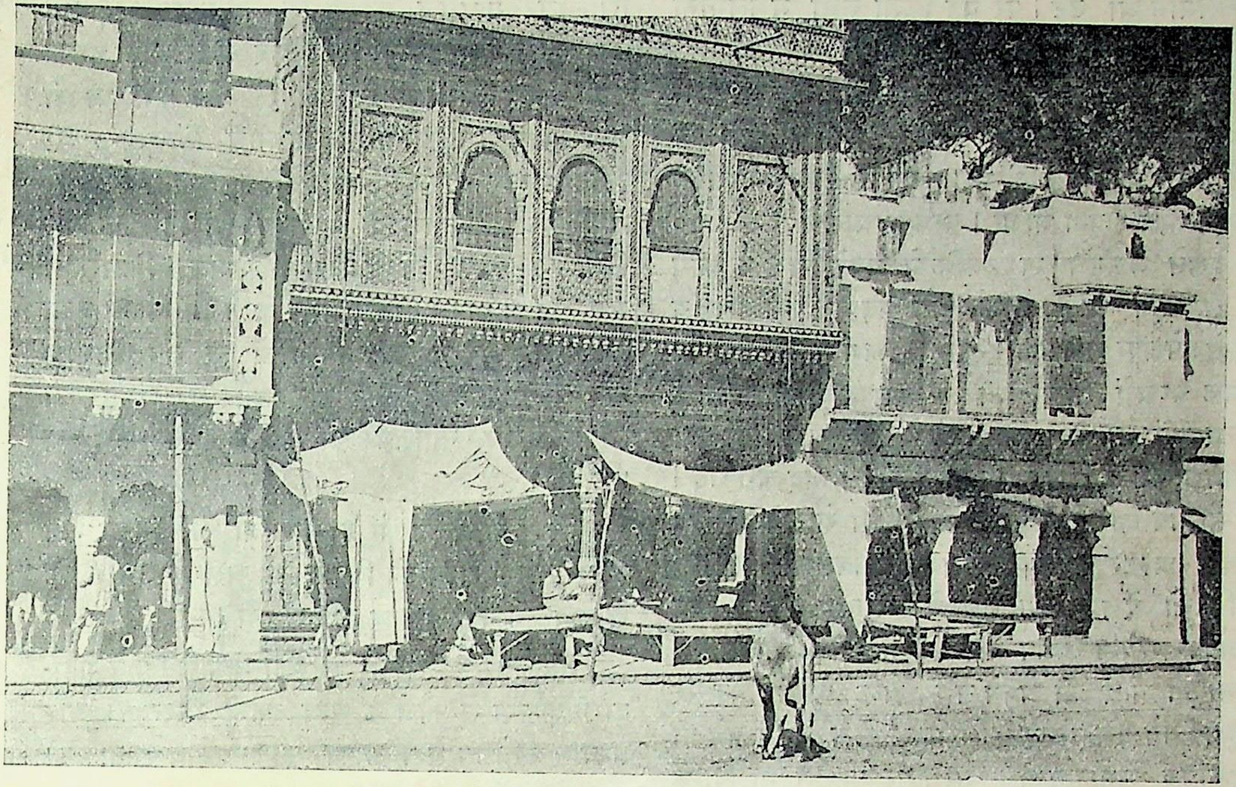
ग्वालियर—पत्थर पर की गई कारीगरी का एक नमूना

बहुत लोहा निकाला जाता था। पर जब से सस्ता विलायती लोहा आने लगा तबसे यह काम रुक गया। गंगापुर के पास अभ्रक बहुत है। राज्य में चूने का पत्थर बहुत है। लेकिन निकाला कम जाता है पर विन्ध्याचल से मकान बनाने का पत्थर बहुत निकलता है। किले की पुरानी इमारतें या लश्कर के नये मकान इसी पत्थर के बने हैं।

इस राज्य का प्रधान कारबार सूती कपड़ा है। उज्जैन में १८९८ ई० में एक सूती मिल स्थापित की गई थी। चन्देरी में बड़ा बढ़िया कपड़ा बनता है। मन्दसोर में कपड़े की छपाई अच्छी होती है। ग्वालियर शहर में चीनी के बरतन अच्छे बनते हैं। शिवपुर की लकड़ी की खरीद और रँगाई मशहूर है।

व्यापार—इस राज्य से अनाज, तिलहन, कपास अफीम, देशी कपड़ा और घी बाहर अहमदाबाद बम्बई, कानपुर और कलकत्ता भेजा जाता है। धातु के बर्तन, मिट्टी का तेल, हथियार मशीनरी, और कागज़ बाहर से आता है।

आने जाने के मार्ग—राज्य के उत्तरी भाग में ग्रेट इंडियन पेनिनसुला रेलवे की प्रधान लाइन है। इसकी एक शाखा भोपाल से उज्जैन को और दूसरी शाखा बीना से बारन को जाती है। इस लाइन का बनाने के लिये राज्य ने रुपया उधार दिया था। उसका सूद मिलता है। छोटी लाइन ग्वालियर से भिंड और सी० पी० को जाती है। इसकी एक शाखा सबलगढ़ को जाती है। यह लाइन १८५ मील लम्बी है। इसके बनाने में ४४ लाख रुपये खर्च हुये। लेकिन यह ऐसे प्रदेश में होकर जाती है जहाँ अकाल के समय में इससे बड़ी मदद मिलती है। एक दो भाग ऐसे हैं। जहाँ शिकार बहुत है। अजमेर से खँडवा को आने वाली बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे मालवा प्रान्त को पार करती है। इसकी एक शाखा उज्जैन को आती है। इसकी बड़ी लाइन भी राज्य को पार करती है। ग्वालियर राज्य में लगभग २००० मील पक्की सड़कें हैं। आगरा से बम्बई जाने वाली पक्की सड़क के ११६ मील ग्वालियर राज्य



ग्वालियर—पत्थर की कारीगरी का दूसरा नमूना

में पड़ते हैं। ग्वालियर झाँसी सड़क के ३३ मील इस राज्य में हैं।

पुरातत्व—इस राज्य के कई स्थानों में पुराने समय के भग्नावशेष मिलते हैं। सबसे पुराना और प्रसिद्ध उज्जैन है। पर इसका इतिहास नीचे दबा पड़ा है। इसको जानने के लिये खुदाई की ज़रूरत है। भिलसा में भी बहुत पुराने भग्नावशेष हैं। उदयगिरि में अब से लगभग दो हज़ार वर्ष के पुराने बौद्ध और हिन्दू भग्नावशेष हैं। बाघ में बड़े सुन्दर बौद्ध बिहार चट्टानों के भीतर खुदे हैं। मध्यकालीन हिन्दू और जैन भग्नावशेष बारों, ग्वालियर, ग्यारसपुर नरोद और उदयपुर में मिलते हैं। मुसलमानी भग्नावशेष चन्देरी, मन्दसार, नरवर, गोहद और ग्वालियर में मिलते हैं। कुटवर या कुभन्तपुर, परोली, परावाली राज्यपुर, तेराही, कँडवाह, दुबकंड, सुहानिया में पुराने भग्नावशेष हैं। उज्जैन शहर से पाँच मील उत्तर की ओर सिप्रा नदी की तली में एक अद्भुत महल बना हुआ है। नदी का पानी महल के दरवाज़ों और पत्थर के पर्दों में होकर २० फुट नीचे गिरता है।

ग्वालियर का संक्षिप्त इतिहास

ग्वालियर नाम गोपगिरि या गोपाद्रि से बिगड़कर बना है। जिस पहाड़ी पर प्राचीन शहर बसाया गया था वह उत्तरी सिरे पर मैदान के ऊपर ३४२ फुट ऊँची उठी हुई है। यह पहाड़ी डेढ़ मील लम्बी और ३०० गज़ चौड़ी है। यह पहाड़ी एक अमर पहरेदार के रूप में घाटी और मैदान की चौकसी करती है। इस पहाड़ी के ऊपर बलुआ पत्थर की विशाल चट्टानें हैं। इनके बीच बीच में नुकीली चोटियाँ निकली हुई हैं जो किले की प्राकृतिक दीवार बनाती है। पर आरम्भ में इस एकान्त स्थान में योगी रहते थे। उनकी गुफायें अब तक मौजूद हैं। अब से लगभग २०० वर्ष पूर्व राजा सौर्यसेन ने किले की दीवारें बनवाईं। आगे चलकर यहाँ पहले कछवाहे फिर चौहान राजपूतों का अधिकार रहा। इसके बाद यहाँ

मुसलमान आ डटे। पर यह क़िला कभी मुसलमानों और कभी राजपूतों के हाथ में रहा।

इसी बीच में महाराजा शिवाजी ने महाराष्ट्र में एक नई शक्ति पैदा कर दी। उनके मरने के बाद इस नये राष्ट्र की बागडोर पेशवाओं के हाथ में आई। इनका दरबार पूना में था। इसी दरबार में १७२५ ई० में देखने में साधारण व्यक्ति ने अपने रोज़ के काम में ही अपूर्व स्वामि-भक्ति और बड़प्पन का परिचय दिया। पेशवा महाराज दरबार के काम में लगे हुए थे। उनके चप्पलों की चौकसी का काम भावी साम्राज्य के जन्मदाता श्री राना जी कर रहे थे। सभा में देरी अधिक लग जाने से बाहर राना जी को नींद लग गई। वे सो गये लेकिन चप्पल उनकी छाती से लगे हुये थे। बाहर आकर पेशवा महाराज इस विलक्षण स्वामि-भक्ति को देखकर दंग हो गये। वे ताड़ गये कि ऐसा कर्तव्य-परायण पुरुष भारी जिम्मेवारी के योग्य है। राना जी शीघ्र ही अपने योग्य राष्ट्र के ऊँचे पद पर पहुँच गये। महाराष्ट्र की अदम्य सेना के वे बड़े ही लोकप्रिय सेनापति थे। मरने पर उन्होंने मालवा के बीच में एक बड़ा राज्य अपने सुपुत्र महादाजी को छोड़ा।

पानीपत (१७६१) की भीषण लड़ाई से महाराष्ट्र की उन्नति कुछ दिन के लिये रुक गई। महादाजी के ऐसा फरसा लगा कि शत्रु लोग उन्हें मरा हुआ समझ कर चलते बने। पर एक भिश्ती ने उन्हें उठाकर दक्खिन में पहुँचाया। वे अच्छे हो गये। धीरे धीरे पूना दरबार में उनकी शक्ति सब से अधिक बढ़ गई। लेकिन सच्चे देश भक्त की भाँति उन्होंने अपने बल को पेशवा की सेवा में लगाया। अंग्रेज़ी प्रलोभनों से वे कोसों दूर रहे। अपने जीवन में उन्होंने महाराष्ट्र को उन्नति के शिखर पर पहुँचा दिया। पर देश के दुर्भाग्य से १७९४ ई० में उनकी मृत्यु हो गई।

बड़े राज्य का भार १३ वर्ष के नवयुवक सम्राट दौलतराव सिन्धिया के कन्धों पर अचानक आ पड़ा। पर इस वीर ने बड़े साहस से अपने शत्रुओं को परास्त किया। उसने अपना राज्य पंजाब तक बढ़ा लिया। दिल्ली का बादशाह उनकी दी हुई पेन्शन पर गुज़र करता था। उन्हें अपनी सेना को सुधारने की अजब लगन थी। फौज को .कवायद सिखाने के लिये उन्होंने कई फ्रांसीसी लोग भी नौकर रख लिये। इस समय सिन्धिया महाराज की सैनिक शक्ति का मुक़ाबला करने वाला कोई न था। कई बार अंग्रेज़ों को हटना पड़ा। यदि फ्रांसीसी सैनिकों को अंग्रेज़ों ने अपनी ओर फोड़ न लिया होता तो आज हिन्दुस्तान का इतिहास कुछ और ही होता। वेलेज़ली की कूटिनीति ने सिन्धिया महाराजा के राज्य को बढ़ने से रोक दिया। १८४३ ई० में महाराज दौलतराव के निःसन्तान मर जाने के बाद गद्दी पर बैठने के लिये झगड़ा हुआ इस झगड़े में अंग्रेज़ी कम्पनी को हस्तक्षेप करने का अवसर मिल गया। पुन्नियार और महाराजपुर की लड़ाई के बाद ग्वालियर की सैनिक शक्ति बहुत कुछ घट गई।

ग़दर के समय में प्रधानमन्त्री सर दिनकर राव ने ग्वालियर राज्य को विद्रोह से अलग रक्खा। तब से अब तब यहां बराबर शान्ति रही।

ग्वालियर का लश्कर मुहल्ला नया है। जब महादाजी दक्षिण से फौज के साथ उत्तरी भारत की ओर प्रस्थान करते तो यहाँ उनका फौजी पड़ाव रहता था। फ ज डेरों में रहती थी।

पीछे से सुन्दर मकान बन जाने पर भी इसका नाम लश्कर (फौजो पड़ाव) ही पड़ गया।

अन्य प्रसिद्ध नगर

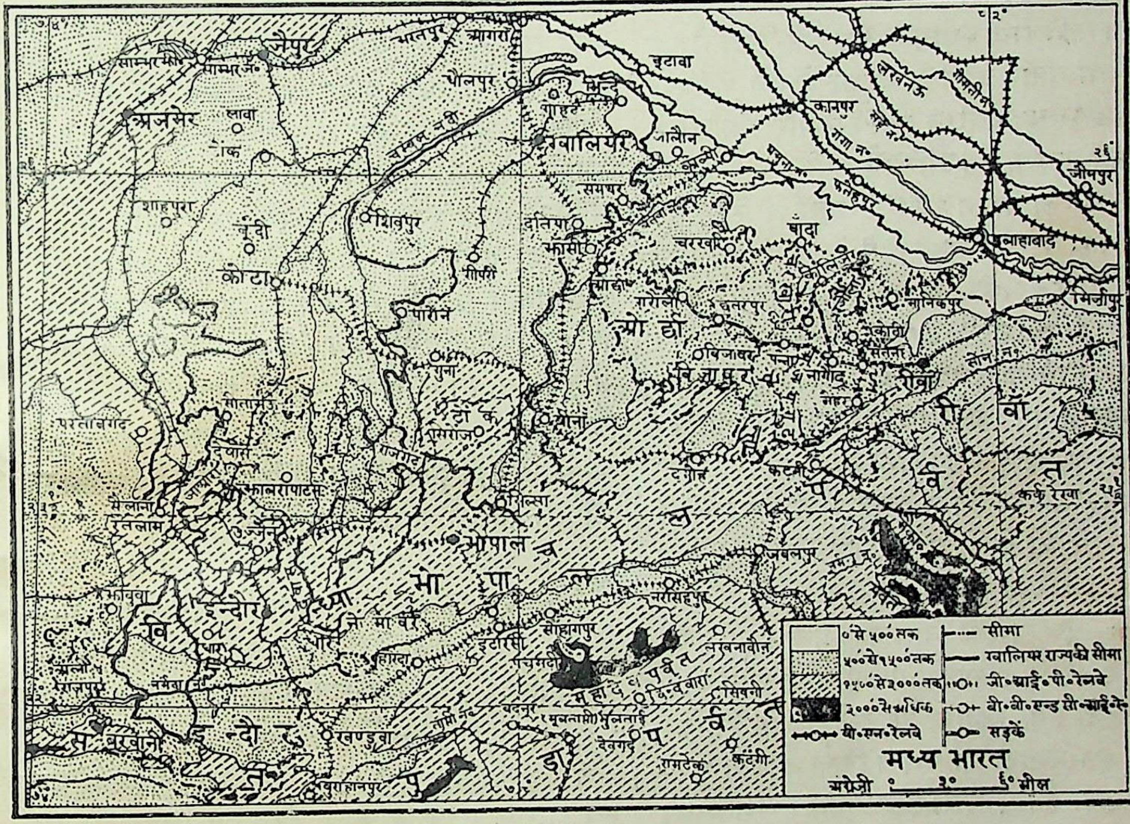
उज्जैन नगर एक पुराना तीर्थ है। यह नगर क्षिप्रा नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। नगर आयताकार है और दो वर्ग मील में फैला हुआ है। पन्द्रहवीं सदी में इसके चारों ओर एक चारदीवारी बनी थी पर अब केवल कहीं कहीं इसके निशान शेष बचे हैं। पुराना शहर वर्तमान नगर से २ मील उत्तर को ओर बसा था। अब इसके खंडहर शेष हैं। शायद भयानक बाढ़ या भूकम्प से यह शहर नष्ट हो गया। पुराने जवाहरात, मुहरें और सिक्के वर्षा में पानी बरसने के बाद कभी कभी मिल जाते हैं।

वर्तमान उज्जैन शहर कई मुहल्लों में बटा हुआ है। एक मुहल्ला सवाई जैसिंह (जैपुर नरेश) की स्मृति में जैपुरा कहलाता है। इन्हीं महाराज ने यहाँ एक बेधशाला बनवा दी थी। इसके खंडहर अब तक मौजूद हैं। कोट (किला

मुहल्ला सबसे ऊँचा भाग है। बहुत से घरों के छज्जों पर बड़ा बढ़िया काम है। जहाँ पहले महाकाल बन था वहीं महाकाल का मन्दिर है। इसके पास ही पुराना महल है जहां पहले श्रीमान दौलतराव सिन्धिया महाराज रहते थे। वहां हर बुधवार को एक बड़ा बाजार लगता है। शिवरात्रि, वैशाखी और कार्तिकी पूर्णिमा को यहाँ बड़ा मेला लगता है। हर बारहवें वर्ष यहाँ सिंहाष्ट उत्सव सब से बड़ा होता है। उज्जैन एक पुराना तीर्थ है। पहले यह अवन्ती या अवन्तिका पुरी नाम से प्रसिद्ध था। आर्य ज्योतिषियों और भूगोल-वेत्ताओं ने प्रथम देशान्तर (मध्यान्ह) रेखा यहीं स्थापित की थी। यहां के राजभोज का नाम सारे हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध है।

मोरार—ग्वालियर की एक प्रसिद्ध छावनी है।

भदौरा की छोटी जागीर बहुत पुरानी है। हिम्मत [सिं]ह सेसोदिया के सुपुत्र जगतसिंह से सेसोदिया ने [१]७२० ई० में इसे लिया था। उमरी की जागीर भी इसी वंश के हाथ में है।



गढ़—एक पहाड़ी जागीर है।

खानियाधान—एक छोटी रियासत है।

पेरन या नरवर—कछवाहे राजपूतों की रियासत है।

राघोगढ़ राज्य—रेज़ीडेण्ट के अधीन है। पार्वती नदी से इस राज्य में सदा पानी मिलता रहता है। यहीं प्रसिद्ध पृथ्वीराज चौहान के वंशज राज करते हैं।

गोहद नगर सिन्ध की सहायक वैशाली नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। यह तीन दीवारों से घिरा हुआ है। सब से भीतरी दीवार के अन्दर पुराना किला है जिसे जाट सरदार राना भीमसिंह ने १७२९ ई० में बनवाया था। यहीं एक बड़ा महल है जिसे राना छत्रपति सिंह ने बनवाया था। यहाँ की इमारतों पर बड़ा बढ़िया काम है।

गुना—एक ब्रिटिश छावनी है जो इसागढ़ ज़िले में स्थित है। आगरा से बम्बई जाने वाली पक्की सड़क यहाँ होकर गुजरती है। यहाँ रेलवे स्टेशन भी है।

खाचरोद—उज्जैन ज़िले में लकड़ी की रंगाई और तम्बाकू के लिये मशहूर है।

महाराजपुर—तोंवर गढ़ ज़िले में एक ऐतिहासिक नगर है। १८४३ ई० में यहाँ की फौज अंग्रेज़ी सेना के साथ बड़ी बहादुरी से लड़ी। उसी दिन यहाँ से १० मील की दूरी पर पनियार में एक छोटी लड़ाई हुई।

मन्दसौर को पुराने समय में दशपुर कहते थे। यहाँ के एक शिलालेख में लिखा है कि कुमार गुप्त ने यहाँ एक मन्दिर बनवाया था। चौदहवीं सदी में अला-उद्दीन खिलजी ने एक किला बनवाया तब से यहाँ मुसलमानी बस्ती बढ़ गई। इसके पास ही हिमायूं ने बहादुरशाह को हराया था। अठारहवीं सदी से यह नगर सिंधिया महाराज के अधिकार में है। महीदपुर की लड़ाई के बाद महाराज होलकर और अंग्रेजों के बीच में यहीं मन्दसौर में सन्धि हुई थी।

तोंमरगढ़ ग्वालियर शहर के उत्तर में स्थित है। यहाँ अधिकतर तोंवर ठाकुर रहते हैं। इसीलिये यह नाम पड़ा। इधर ही सिकरवाड़ी है। यहाँ सिकरवार राजपूत रहते हैं। इनकी कहानी बड़ी विलक्षण है। मुसलमानी समय में इनके राजा अलवर में राज्य करते थे। मुसलमान बादशाह ने राजा की लड़की से ब्याह करना चाहा। इनकार करने पर राजा के कुटुम्बी लोग तलवार के घाट उतारे गये। कुछ लोगों को फतेहपुर सीकरी के शेखों ने शरण दी। इसी से ये लोग सिकरवारी कहलाने लगे।

भिंड—इसी नाम के ज़िले का प्रधान नगर है। सीउनी नगर नरवर ज़िले का प्रधान नहर और छोटी लाइन का अन्तिम स्टेशन है। चन्देरी और नरवर दूसरे नगर हैं। चन्देरी का पुराना किला नगर से २३० फुट ऊँचा खड़ा है। भिलसा इसी नाम के ज़िले का एक पुराना नगर है।

अमझेरा एक अलग कोने में पड़े हुये पहाड़ी जंगली ज़िले का प्रधान नगर है। अगर नगर ग्वालियर राज्य में अँग्रेज़ी छावनी शाजापुर ज़िले में स्थित है। रटरिया तलाब छावनी को क़स्बे से अलग करता है।

गोहदन नगर और किले पर पहले भदौरिया राजपूतों का अधिकार फिर यह राना भीमसिंह के हाथ में आया। अन्त में यहाँ सींधिया महाराज का अधिकार हो गया।

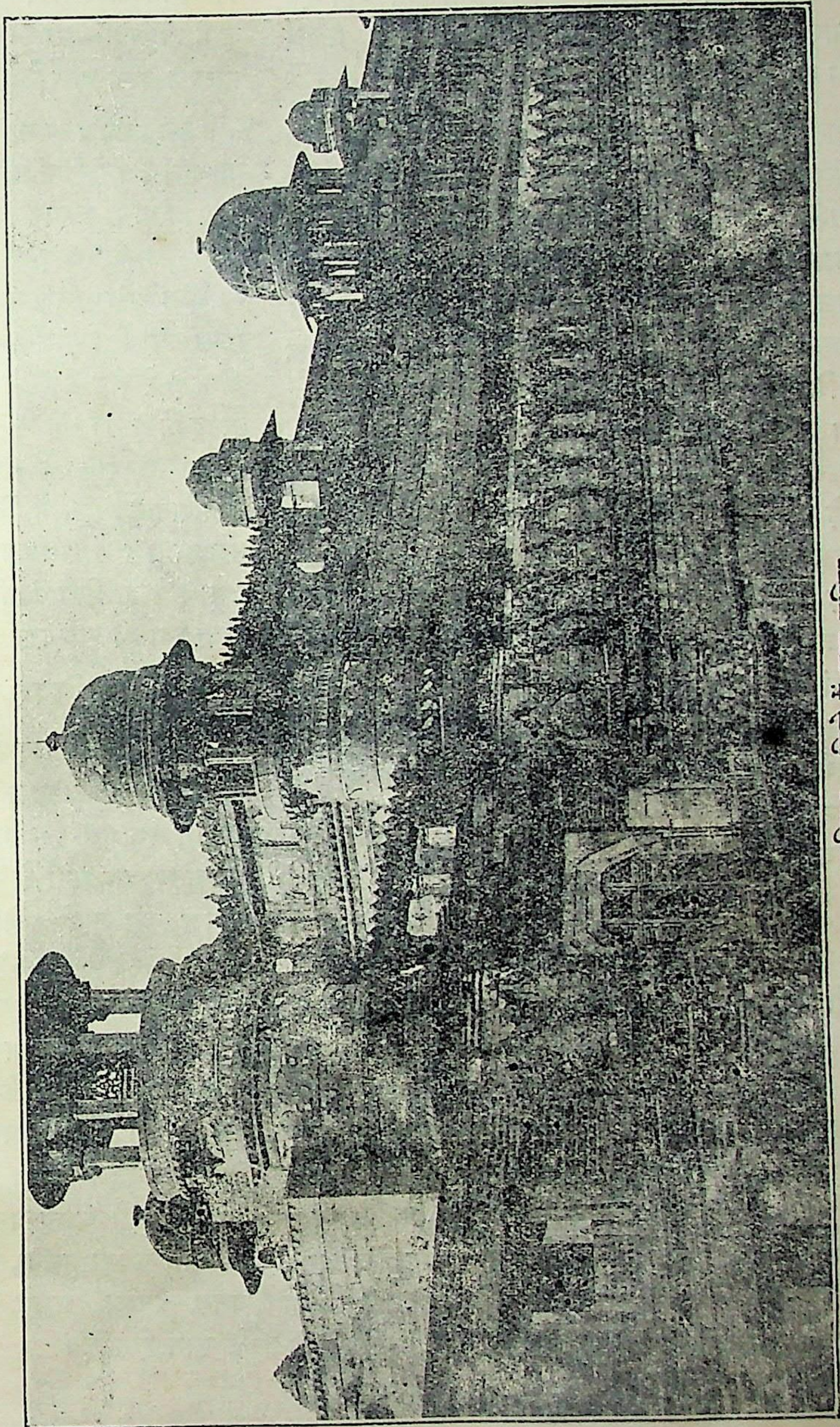
ग्वालियर नरेश हिज़हाईनेस जी महाराजा जीवाजी राव सिंधिया १९१६ में पैदा हुए। आप का राज्याभिषेक १९३६ के सितम्बर महीने में हुआ और आप ने राज्य शासन की बागडोर नवम्बर १९३६ में अपने हाथों में ली। २२ वर्ष की अवस्था होते हुए भी आप के कार्य महान् हैं। राज्य प्रबन्ध के दैनिक कार्यक्रम के निरीक्षण तथा सारी प्रजा के लाभ और सुख के लिये नई योजनाओं को कार्य रूप में परिणित करने में आप ने अपनी चतुरता और विद्वता का अच्छा परिचय दिया है। आपके पास जब मन्त्रीगण कोई राजसम्बन्धी कार्य लाते हैं तो आप एक अनुभवी शासक की भांति उस मामले की बड़ी कड़ी छानबीन करने के बाद अलग करते हैं। आफ़िस के कार्यों को करते समय आप की नज़र सख़्त रहती है किन्तु बाहर आप सभों से स्वतन्त्रता और प्रसन्नता के साथ भली भांति मिलते जुलते हैं। इन्हीं कारणों से भारतीय राज्यों में आप का मान राज्य के अन्दर और बाहर सर्वश्रेष्ठ है। आप के साथ ग्वालियर में एक नये युग का प्रवेश हुआ है। आप अपने पिता के सुयोग्य पुत्र हैं और उनके आरम्भ किये हुये कार्यों की पूर्ति बड़ी सावधानी से कर रहे हैं। ग्वालियर का ऐसे शासक पाने का बड़ा गर्व है।

महाराजा सिंधिया के अधिकार राज्य में सर्वोपर हैं किन्तु इन अधिकारों का प्रयोग कानून बनाने वाली शासन करने वाली तथा न्याय करने वाली संस्थाओं द्वारा होता है। राज्य शासन आठ भागों में विभाजित है और प्रत्येक विभाग एक मन्त्री के आधीन है। कानून बनाने वाली एक सभा है जिसमें प्रजा के चुने हुये और राजा के नामज़द किये हुये मेम्बर हैं। इस सभा में प्रजा के प्रतिनिधियों की संख्या अधिक है। अभी हाल ही में महाराजा ने इस सभा में और अधिक सुधार करने के लिये आज्ञा निकाली है जिससे सभा के अन्दर प्रजा के चुने हुये मेम्बरों की संख्या बढ़ जायगी। और साथ ही साथ ज़िम्मेदारी भी अधिक हो जावेगी।

इस प्रकार ग्वालियर नरेश ने स्वयं अपनी प्रबल इच्छा से अपने पांव प्रजातन्त्र राज्य की ओर बढ़ाया है। यह बात उसके बिलकुल विपरीत है जैसा कि और दूसरे राज्यों में होता है कि प्रजा अपने अधिकारों

को मांगती है। यहां तो स्वयं राजाने ही प्रजा के अधिकारों को जान कर विना मांगे सौंपना आरम्भ किया है। ग्वालियर राज्य में बेकारी को दूर करने के लिये सिविल सर्विस को और अधिक तगड़ा बनाया जा रहा है। हाल ही में ग्राम और समाज सुधार के लिये महाराज ने १,००,००,०००) रुपया प्रदान किया है। ग्राम-सुधार के लिये एक स्कीम बनाई गई है और अशिक्षिता को दूर करने के लिये गांव २ शिक्षा देने का प्रबन्ध हो रहा है।

राज्य के अन्दर ग्रेट इन्डियन पेनिन शुला रेलवे बाम्बे बड़ौदा और सेन्ट्रल इन्डिया रेलवे हैं। इसके सिवा २५० मील की और भी छोटी रेलवे लाइन है। राज्य के भीतर २३३१ मील पक्की सड़क है। इनका प्रबन्ध कम्पनियों के हाथ में है। ग्वालियर राज्य इस समय ब्रिटिश साम्राज्य के हवाई नक़शे में एक मुख्य स्थान है। यह राज्य दिल्ली और कलकत्ता के हवाई मार्ग पर है और इम्पायर एअर मेल स्कीम के ट्रांस इन्डियन मार्ग पर भी पड़ता है। माधो सागर नामक स्थान जहां हवाई जहाज़ ठहरते



ग्वालियर—किले में मान मन्दिर

हैं। वायुयानों का स्टेशन बनाया जा रहा है। इसके रमणीक बनाने का बड़ा प्रयत्न किया जा रहा है। आशा की जाती है कि यह भारतवर्ष में अपने प्रकार का एक ही होगा।

ग्वालियर राज्य में ग्वालियर तथा उत्तरी भारत ट्रान्सपोर्ट कम्पनी है। यह मोटर वालों की एक बड़ी भारी कम्पनी है। ग्वालियर के डाक वा तार का अलग प्रबन्ध है। सिंचाई के लिये नहरों का अभी हाल ही में बड़ा अच्छा प्रबन्ध किया गया है जिससे उजाड़ और ऊसर भूमि, एक हरी भरी उपजाऊ भूमि बना दी गई है। हासी और असोडा के बांधों का काम अभी पूरा नहीं हुआ है इसमें एक करोड़ रुपया लगाया गया है। इससे ग्वालियर राज्य के एक बड़े भाग में सिंचाई होगी और किसानों को बड़ा लाभ होगा। ग्वालियर, उज्जैन और शिवपुरी में बड़े बड़े बिजली घर हैं। इन नगरों के कारखानों में बिजली से काम लिया जाता है। रुई साफ करने का यहां एक बड़ा कारखाना है और चन्देरी में सुन्दर मलमल बनता है। ग्वालियर के जङ्गलों में काफी संख्या में लाख पाया जाता है। यहां लोहा भी बहुत है किन्तु लकड़ी की कमी के कारण वह काम में नहीं लाया जा सकता।

ग्वालियर राज्य आरम्भ से अभी तक आर्थिक संकटों से दूर रहा। ग्वालियर के बजट में घाटा कभी नहीं रहा। इस राज्य ने अपने कोष को रेलवे आदि ठोस कामों में खर्च किया। राज्य के भिन्न भिन्न भाग भौगोलिक दृष्टि से इस प्रकार फैले हुये हैं कि पुलिस पर सारी आय का लगभग १८ फीसदी खर्च हो जाता है। यह खर्च तो अनिवार्य है। लेकिन ग्वालियर राज्य को अपनी आमदनी का बहुत बड़ा भाग (२७ फीसदी) फौज पर खर्च होता है। लेकिन शान्ति स्थापित करने के लिये इस फौज की कभी आवश्यकता नहीं पड़ती है। यह फौज ब्रिटिश साम्राज्य के बाहरी मोर्चों के काम आती है। यदि यह खर्च (जो ब्रिटिश सरकार को अपने ऊपर लेना चाहिये) ग्वालियर से ले लिया जावे तो ग्वालियर राज्य में प्रजाहित के लिये रचनात्मक कार्य और तेज़ी से हो सकते हैं।

इस समय ग्वालियर राज्य ब्रिटिश सरकार के आधीन है। लेकिन जितनी सन्धियां ग्वालियर और ईस्ट इंडियन कम्पनी या ब्रिटिश सरकार के बीच में हुई हैं उनके अनुसार ग्वालियर राज्य को सर्वथा स्वाधीन और ब्रिटिश सरकार की बराबरी का राज्य माना गया है। ग्वालियर में १८१६–२३ तक रहने वाले अंग्रेज़ी रेज़ीडेन्ट (कर्नल क्लोज़) ने लिखा था सिंधिया ईस्टइंडिया कम्पनी से स्वतन्त्र और अलग है। ईस्ट-इंडिया कम्पनी के सम्बन्ध में जो रिपोर्ट १८४० में प्रकाशित हुई उसमें लिखा है सिन्धिया हमारे साथ मरहठा युद्ध में शामिल नहीं हुआ क्योंकि वह स्वतन्त्र राष्ट्र था। इसलिये ग्वालियर तथा हमारे बीच में पूर्ण स्वतन्त्रता की सन्धियां ज्यों की त्यों चली आरही हैं।

ग्वालियर के उद्योग धन्धे

ग्वालियर के उद्योग धन्धों को बढ़ाने के लिए स्वर्गीय माधो महाराज ने प्रदर्शक का काम किया। उन्होंने एक बार इस बात का प्रयत्न किया कि गङ्गा-यमुना चम्बल-मार्ग से कलकत्ते से ग्वालियर तक सीधे जहाज आ जावें। लेकिन बिना भारत सरकार के सहयोग से इसमें सफलता की आशा न थी। आज से ५० वर्ष पहले सिंधिया पेपर मिल्स नाम से यहां कागज़ का एक कारखाना खोला गया। भीतरी कलह और बाहरी संघर्ष के कारण यह बन्द हो गया। आज कल यहां तम्बाकू, शक्कर, सीमेन्ट, कपड़ा, मिट्टी के बर्तन चमड़ा आदि कई चीज़ों के बनाने के कारखाने हैं। घरेलू धन्धों में कपास ओटना, सूत कातना, कपड़ा बुनना, निबाड़, दरी बनाना, धातु के बर्तन बनाना, चमड़े के जूते बनाना आदि कई तरह के काम होते हैं।

बड़ौदा राज्य

बड़ौदा राज्य का क्षेत्रफल ८१६४ वर्गमील है। यह राज्य पांच भागों में बटा हुआ है. इनके बीच-बीच में ब्रिटिश राज्य के कुछ भाग और दूसरे देशी राज्य हैं। बड़ौदा राज्य का सबसे अधिक दक्षिणी जिला नवसारी है। इसके बीच-बीच में सूरत जिले के गांव मिले हुए हैं नवसारी जिला ताप्ती नदी के मुहाने के पास स्थित है। नर्मदा नदी के उत्तर में बड़ौदा राज्य का मध्यवर्ती बड़ौदा जिला है। इसी में इस बड़े राज्य की राजधानी बड़ौदा नगर स्थित है। अधिक आगे अहमदाबाद के उत्तर में कादी जिला है। इसी के पास पट्टन और सिद्धपुर के ऐतिहासिक नगर और दूसरे प्राचीन स्थान हैं। अधिक पश्चिम की ओर काठियावाड़ के अमरेली और ओखा मंडल जिले भी बड़ौदा राज्य के ही अन्तर्गत हैं।

जिला	क्षेत्रफल	जन-संख्या	नगरों की संख्या	गांवों की संख्या
बड़ौदा	१,९५९	९,१०,०००	१९	८२०
कादी	३,०४३	१०,००,६००	१५	१,०३६
नवसारी	१,८०७	४,४१,०००	८	६७३
अमरेली	१,०७७	१,५३,०००	४	२४२
ओखामंडल	२७५	२५,५००	२	४१

बड़ौदा की जनसंख्या लगभग २५ लाख है। इसमें ८५ फीसदी हिन्दू, लगभग दो लाख या ८ फीसदी मुसलमान, एक लाख जंगली फिरके, ५०,००० जैन और १०.००० ईसाई हैं।

बड़ौदा राज्य भारत के देशी राज्यों में एक अत्यन्त उन्नतिशाली राज्य है। भूतपूर्व श्रीमान् महाराजा साहब ने ६० वर्ष राज्य किया। कानून बनाने के लिये एक धारा सभा है जिसमें गैरसरकारी सदस्यों की अधिकता रहती है।

बड़ौदा राज्य भारतवर्ष के ऐसे प्रदेश में स्थित है जहां कारबार और व्यवसाय की बड़ी उन्नति हुई है! इसीसे सरकारी आमदनी भी अधिक (लगभग ३ करोड़) है।

कपास तिलहन और तम्बाकू यहां की तीन प्रधान कारबारी फसलें हैं। सरकारी कृषि विभाग इनकी उन्नति में सदा तत्पर रहता है। सहकारी समितियां की भी यहां बड़ी वृद्धि हुई है। राज्य में लगभग १२,००० सहकारी समितियां हैं। इनके सदस्यों की संख्या ५६,००० है। अपनी रजत जयन्ती के अवसर पर श्री गायकवाड़ महाराज ने १ करोड़ रुपया ग्रामों के उत्थान के लिये दिया। इससे देहाती भागों में कृषि-शिक्षा और स्वास्थ्य की बड़ी उन्नति हुई।

प्रायमरी शिक्षा को भारतवर्ष में सर्वप्रथम निःशुल्क और अनिवार्य करने का श्रेय बड़ौदा राज्य को ही है। आजकल शारीरिक शिक्षा को भी अनिवार्य करने का प्रयत्न हो रहा है। बड़ौदा का पुस्तकालय भारत में एक आदर्श पुस्तकालय है। गश्ती पुस्तकालयों को भी यहां बड़ी सफलता मिली है।

स्त्री-शिक्षा, सामाजिक सुधार आदि में भी बड़ौदा राज्य बहुत आगे है।

व्यापार की सुविधा के लिये बड़ौदा राज्य ने कच्छ की खाड़ी में ओखा बन्दरगाह को सुधरवा लिया है। बन्दरगाह की दीवार ४०० फुट लम्बी है। यहाँ दो समुद्री जहाज एक साथ ठहर कर अपना सामान उतार सकते हैं। काठियावाड़ में केवल एक यही प्राकृतिक बन्दरगाह है। यह बन्दरगाह केवल बड़ौदा राज्य या काठियावाड़ ही के लिये नहीं वरन् मध्य-भारतीय राज्यों और उत्तरी तथा पश्चिमी भारत के समीप होने से उनके लिये भी उपयोगी है। "भारतीय बर्मा शेल आयल स्टोरेज तथा डिस्ट्रीब्यूटिंग कम्पनी लिमिटेड" ने यहां पर भी एक अपनी बड़ी दूकान लगभग १५ लाख रुपये की लागत से खोली है जो राज्य भर में पिट्रौल तथा मिट्टी का तेल पहुँचाती है। एक मीटरगेज की छोटी रेलवे लाइन बन्दरगाह को काठियावाड़ की दूसरी रेलों से मिलाती है। आगे चलकर काठियावाड़ की रेलें राजपूताना और दिल्ली जाने वाली रेलों से मिल जाती हैं। कारबार को उत्तेजना देने के लिये अब से तीस

वर्ष पहले बैंक आफ बड़ौदा स्थापित किया गया। राज्य में बैंक की २१ शाखायें हैं। इस समय बैंक की आर्थिक दशा बहुत अच्छी है।

बड़ौदा राज्य की प्रधान उपज कपास है। बड़ौदा राज्य के आधे क्षेत्रफल में कपास उगाई जाती है। इसी से इस राज्य में कपास ओटने और रुई को दबाकर गांठ बनाने के ११९ कारखाने हैं। रुई कातने और बुनने के १६ बड़े बड़े कारखाने हैं। इन कारखानों की संख्या बढ़ रही है। रंगने के तीन कारखाने हैं। इनमें एक रंगाई का कारखाना न केवल बड़ौदा वरन् सारे भारतवर्ष में सबसे बड़ा है। इस राज्य में दियासलाई के भी दो कारखाने हैं। एक कारखाना टिंकचर बनाता है जो हिन्दुस्तान के प्रायः सभी बड़े अस्पतालों में पहुँचता है। द्वारका की सीमेन्ट फैक्टरी में ८१,८४० टन सीमेन्ट तैयार होता है। ओखा साल्ट वर्कस से हर साल ५१००० टन नमक निकलता है। मामूली नमक के सिवा यहां इपसन नमक, पोटैशियम क्लोराइड तथा मैगनीशियम क्लोराइड भी बनता है जो योरुप को भेजा जाता है। इनके अतिरिक्त यहां और भी कई प्रकार के छोटे कारबार हैं। बड़ौदा राज्य का एक ट्रेड कमिश्नर लन्दन में रहता है। एजेन्ट कई शहरों में फैले हुए हैं।

इतिहास

बड़ौदा राज्य का इतिहास मोगल साम्राज्य के पतन के साथ ही साथ आरम्भ होता है। पहले-पहल १७०५ ई० में मरहठों का पहला आक्रमण यहां हुआ। बाद के आक्रमणों में पिला जी गायकवाड़ बड़े प्रसिद्ध हो गये। १७३४ में पिला जी के पुत्र दामाजी ने बड़ौदा को सदैव के लिये अपने अधिकार में कर लिया। पिला जी ने बड़ौदा राज्य की नींव डाली तब से आज तक उन्हीं के वंश के लोग राज्य कर रहे हैं। १८०५ ई० में अङ्गरेज़ सरकार और बड़ौदा राज्य के बीच सन्धि हुई जिसके अनुसार राज्य की बाहरी नीति अङ्गरेज़ों के हाथ रही। और फिर बड़ौदा राज्य अङ्गरेज़ों का प्रिय मित्र बना रहा। १८५७ ई० के विद्रोह के समय खांडेराव ने ब्रिटिश का साथ दिया। १८७० में मल्हार राव गद्दी पर बैठे किन्तु १८७५ में वे कुछ कारणों से गद्दी से हटा दिये गये। और भूतपूर्व नरेश जो १३ साल के थे गद्दी पर बिठाए गए।

हिज़ हाईनेस फ़रजन्दे खास दौलत इङ्गलीशिया महाराज सर सयाजी राव गायकवाड़ सेना खास खेल शमशेर बहादुर जी० सी० एस० आई०, जी० सी० आई० ई०, एल-एल० डी० १८६३ में आपका जन्म हुआ। १८७५ में आप गद्दी पर बैठे और १८८१ में आपने राज्यप्रबन्ध अपने हाथ में लिया। आपका स्वर्गवास हो जाने से सारा देश शोक में डूब गया।

महाराज को २१ बन्दूकों की सलामी दी जाती है। राज्य की सेना में ५०८६ सैनिक हैं। राज्य की सालाना आय २,८०,४६,००० रुपया है।

बड़ौदा राज्य सभी ओर उन्नति कर रहा है। राज्य का बिजली तथा टेलीफोन का इन्तिज़ाम अपना अलग है। राज्य में एक वायुयान स्टेशन भी है और शीघ्र ही ब्राडकास्टिंग स्टेशन खुलने वाला है।

काश्मीर

काश्मीर राज्य देशी राज्यों में एक प्रधान राज्य है। यह राज्य ३२·१७° से ३६·४८° उत्तरी अक्षांशों तथा ७६·२६° से ८०·३०° पूर्वी देशान्तरों के बीच स्थित है। इसके उत्तर में यारक़न्द और पामीर का पठार, पूर्व में चीनी तिब्बत, दक्षिण में पञ्जाब और पश्चिम में यागिस्तान है। यह राज्य ४०० मील लम्बा और ३०० मील चौड़ा है। इसका क्षेत्रफल ८४,२५८ वर्गमील है और जनसंख्या ३,६५,००० है।

राज्य तीन प्राकृतिक भागों में विभाजित है (१) पीर पंजाल श्रेणी का दक्षिणी भाग (२) पीर पंजाल और काश्मीर और लद्दाख को अलग करने वाली श्रेणी का मध्यवर्ती भाग (३) कराकोरम का दक्षिणी भाग।

पीर पंजाल की श्रेणियां भारतवर्ष को काश्मीर से अलग करती हैं। यह श्रेणियां चनाब नदी के दक्षिण-पूर्व से आरम्भ होती हैं और झेलम नदी के उत्तर-पश्चिम में जाकर समाप्त हो जाती हैं। श्रेणियों के तीन भाग हैं। यह एक दूसरे के समानान्तर फैली हुई हैं। इनके दक्षिण बाहरी पहाड़ियों पर जम्मू नगर बसा है। दक्षिण की ओर यह पहाड़ियां १०० या २०० फुट ही ऊँची हैं किन्तु उत्तर की ओर ये इतनी ऊँची हैं कि इनमें से अधिकांश बरफ से ढकी रहती हैं।

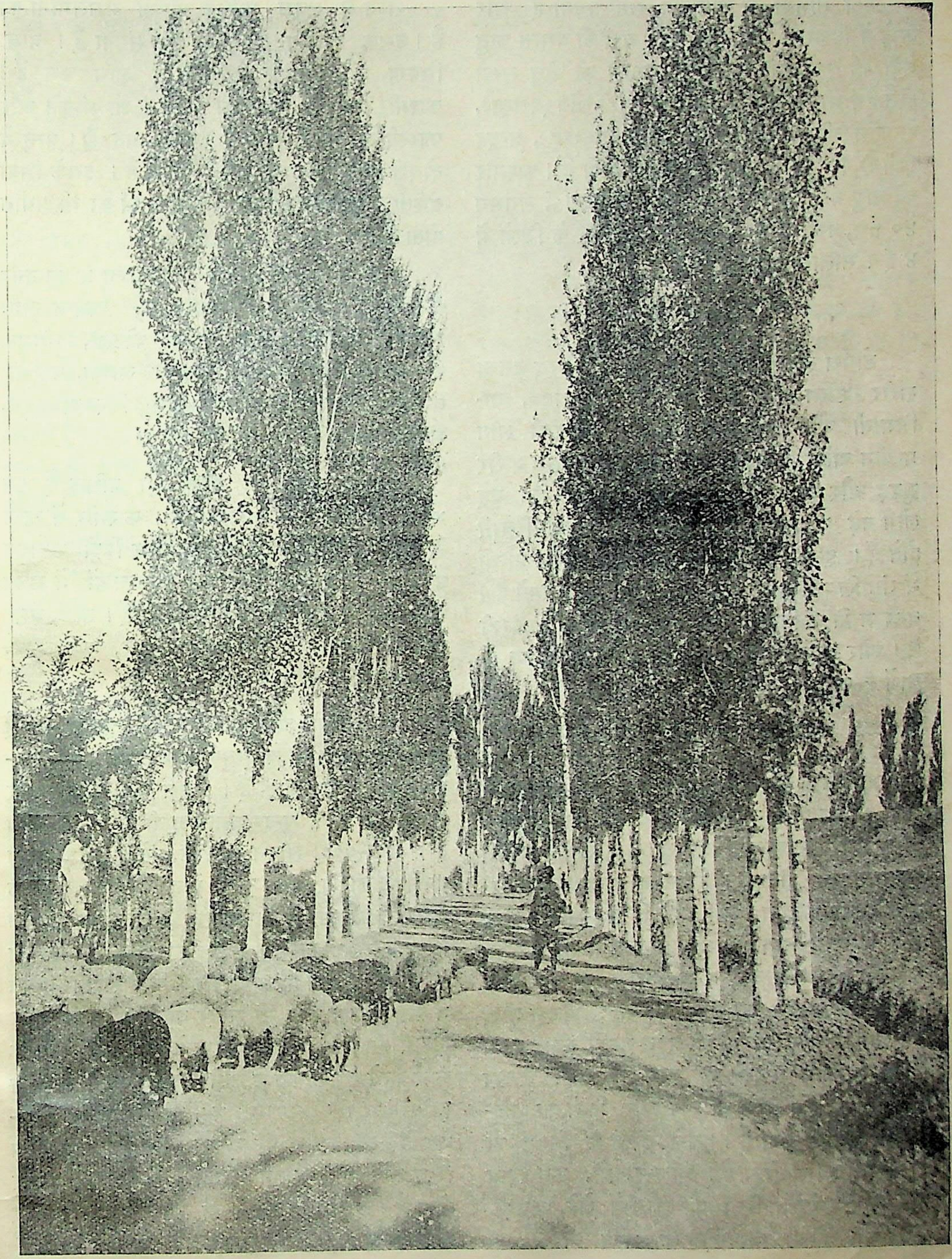
कराकोरम की श्रेणियाँ काश्मीर राज्य की उत्तरी सीमा बनाती हैं। ये श्रेणियां पूर्व की ओर तिब्बत के उत्तर तक फैली हैं और पश्चिम में हिन्दुकुश पर्वत से मिल जाती हैं। ये श्रेणियां बहुत अधिक ऊँची हैं। तिब्बत के उत्तर की श्रेणी के बारे में अधिक बातें ज्ञात नहीं हैं किन्तु पश्चिम की श्रेणी में लद्दाख और यारकन्द के बीच बहुत से दर्रे हैं। इन दर्रों के ऊपर होकर जो कारवाँ-मार्ग गया है वह दुनिया भर में सबसे ऊँचा है। इनकी ऊँचाई अठारह से तीस हजार फुट तक है। और यहां की चोटियों की ऊँचाई पच्चीस हज़ार से अट्ठाईस हज़ार तक है। चाँगचेमो और शायक की घाटियों से होकर दो प्रधान मार्ग गये हैं। ये मार्ग लेह से यारकन्द को जाते हैं। स्करदू और यारकन्द के बीच होकर भी एक मार्ग था किन्तु ग्लेशियरों के भय के कारण यह बन्द कर दिया गया। अधिक पश्चिम-दक्षिण की ओर हुँजा और गिलगिट के मध्य तथा उत्तर में पामीर और बदख़शाँ के बीच बहुत से मार्ग हैं।

पीर पँजाल के दक्षिण के मैदान समुद्र-तल से १००० से २००० फुट तक ऊंचे हैं। इन मैदानों में कथुवा, जम्मू, ऊधमपुर, रिआसी और मीरपुर के जिले बड़े उपजाऊ हैं। पर्वतों के मध्यवर्ती भाग में पूंच, राजौरी, रामबन और भद्रवाह आदि प्रदेश बड़े उपजाऊ और घने बसे हैं। राज्य के भीतर उपज ऊँचाई के अनुसार होती है। राज्य में गेहूँ, जौ, मक्का, चाय, ऊख, केला, कपास आदि वस्तुओं की उपज होती है। बल्लूत, अखरोट और सनोवर आदि पेड़ों के बन हैं जहां भांति भांति के पशु-पक्षी निवास करते हैं। राज्य में लोहा, कोयला, नीलम, गंधक, बिल्लौर शीशा, चूना, नमक, तांबा, चीनी मिट्टी इत्यादि खनिज पदार्थ राज्य में पाये जाते हैं। गिलगिट, करगिल, स्करदू आदि स्थानों पर सोना बालू से साफ कर निकाला जाता है।

काश्मीर में प्राकृतिक पानी की धाराओं की अधिकता है। इसलिये नहरों की आवश्यकता नहीं। केवल मतान, शराबकुल, शाहकुल और लालकुल नहरें ऊँचे पहाड़ी स्थानों को सींचने के हेतु बनाई गई हैं। चनाब नदी में अकनूर नामक स्थान पर एक पुल १९३५ में बनाया गया है जिसमें ४ लाख लागत लगी है। यह भारतवर्ष में बिना स्तम्भों का सब से बड़ा पुल है। जम्मू प्रान्त में नहरों की बड़ी आवश्यकता है। कई एक नहरें बन चुकी हैं जिनसे उजाड़ और ऊसर भूमि की जगह सुन्दर लहलहाते खेत बना दिये गये हैं। मीरपुर तहसील में मंगला स्थान के समीप झेलम से नहर निकालने की योजना ब्रिटिश सरकार ने तयार की है। इसमें लगभग तीन करोड़ का व्यय है। इससे काश्मीर राज्य और ब्रिटिश राज्य दोनों के ही प्रान्त सींचे जावेंगे। चनाब नदी से प्रताप और रनबीर नाम की नहरें और रावी से काश्मीर नामक नहरें निकाली गई हैं।



काश्मीर में श्रीनगर शहर के बाज़ार का एक दृश्य



काश्मीर में चिनार-वृक्षों का एक सुन्दर दृश्य

यहाँ गर्मियों में साधारण गर्मी पड़ती है और जाड़े में विकराल सरदी पड़ती है। यहाँ की बसन्त ऋतु बड़ी ही सुहावनी होती है, पतझड़ की ऋतु सूखी होते हुये भी स्वास्थ्यवर्द्धक होती है। यहाँ सोंत (वसन्त), रेतकोल (ग्रीष्म), वहरा (वर्षा), हरूद (पतझड़), वन्दह (शीत), शिशिर ६ प्रकार की ऋतुयें होती हैं। काश्मीर की वायु बड़ी शान्त है। काश्मीर के प्रदेश में लगभग ४० इंच, जम्मू में ५७ इंच और सीमा पर के ज़िलों में ४ इंच सालाना वर्षा, होती है।

निवासी

डोगरा लोग छोटे कद के होते हैं किन्तु उनका शरीर गठीला होता है। यह लोग बड़े बहादुर, स्वाभिमानी और ईमानदार होते हैं। काश्मीरी लोग प्राचीन आर्यों के वंशज हैं। इनका रंग गोरा, शरीर सुदृढ़ और देखने में सुन्दर शरीर वाले होते हैं। यह लोग बड़े बुद्धिमान, दयावान, प्रेमी और परिश्रमी होते हैं। इसके सिवा लद्दाख के इधर उधर प्रान्तों में मंगोलियन जाति से मिलते जुलते लोग रहते हैं। बम्ब जाति वारामूला मुजफ़्फ़राबाद के बीच में रहती है। और खाखास और हातमाल जातियाँ झेलम के बायें किनारे पर रहती हैं।

ब्यापार तथा कला कौशल

जापानियों की भांति काश्मीरी लोग भी अपनी कला कौशल के लिए प्रसिद्ध हैं। यहां के शाल, दुशाले और ऊनी कपड़े बहुत प्रसिद्ध हैं। यहाँ रेशम का रोज़गार भी होता है। रेशम के रोज़गार में सात-आठ हजार आदमी काम करते हैं और इससे राज्य को एक खासी आय है। श्रीनगर और जम्मू में रेशम के बड़े बड़े कारखाने हैं। सोने चांदी का काम और बेल बूटों के काढ़ने का काम भी बहुत अच्छा होता है। कालीनें और दरियाँ भी बहुत सुन्दर बनाई जाती हैं। इसके सिवा लकड़ी का काम भी बहुत अच्छा बनाया जाता है। राज्य में मेवों और फलों का रोज़गार भी अच्छा होता है। इससे देहात के निवासियों को अच्छा लाभ होता है। शाल-दुशाले, ऊन-रेशम और रेशमी कपड़े, दरियाँ और कालीनें, मेवे, लकड़ी, घी इत्यादि वस्तुयें बाहर भेजी जाती हैं।

राज्य में सबसे अधिक संख्या मुसलमानों की है। उसके पश्चात् हिन्दुओं की संख्या है। बौद्ध, सिक्ख, और दूसरी जातियों के लोग कम हैं। काश्मीर घाटी में काश्मीरी भाषा (जो संस्कृत और फारसी से मिलकर बनी है) बोली जाती है। बन्नू में दोगरी और पंजाबी बोली जाती है। इसके सिवा बाल्ती, भुटिया और पहाड़ी भाषाओं का भी प्रयोग होता है।

राज्य के अन्दर श्रीनगर और जम्मू प्रधान नगर हैं। इसके सिवा सोपुर, बारामूला, अनन्त नाग, शूपियन, पामपुर, मुज़फ़्फ़राबाद, कोटलो, मीरपुर, रामपुर, राजौरी, भीमबेर, अखनूर, साम्बा, कथुआ, बसोहली, ऊधमपुर, रामनगर, रियासी, किश्तवार, पूँच, भद्रवाह आदि प्रसिद्ध नगर हैं।

काश्मीर प्रान्त की झीलें बड़ी प्रसिद्ध हैं इन झीलों पर तैरती हुई बाटिकाएँ हैं। काश्मीर में नावों के ऊपर या लकड़ी के लट्ठों के ऊपर मिट्टी डालकर उसी पर खेती होती है। इन बाटिकाओं में भांति भांति की तरकारियाँ और फल होते हैं। डाल, वुलर, अंचार, मानसवल, तानसर, हाकुर्सर, खुशालसर, पम्बसर आदि झीलें हैं।

यहाँ दरियाँ और क़ालीनें बड़ी सुन्दर बनाई जाती हैं। अब भी ये वस्तुएँ अधिक संख्या में अमरीका और योरुप जाती हैं। रेशम की दरियाँ और क़ालीनें तो इतनी सुन्दर बनाई जाती हैं कि एक वर्ग इंच में २००० सीवन या टाँके होते हैं। १९२९ की मन्दी के कारण और सस्ते दाम पर माँग होने के कारण इस रोज़गार को अवश्य ही कुछ धक्का पहुँचा। किन्तु महाराज काश्मीर ने इस कारखाने की सहायता की जिससे इसको प्रोत्साहन मिला और ख़राब सामान न तयार होकर अब भी सुन्दर बहुमूल्य क़ालीनें और दरियाँ बनती हैं। इस कारख़ाने में १०,००० व्यक्ति कार्य करते हैं। कागज़ से तस्तरी आदि बनाने का काम (Papier mache) भी यहाँ का एक प्रधान रोज़गार है। यह कागज़ पर बनाया जाता है। जब भिन्न भिन्न रंगों का काम तयार होता है तो बड़ा ही सुन्दर होता है। इसकी चित्रकारी का कार्य चतुर कारीगर करते हैं जो बड़ी ही सुन्दर होती है। यहाँ प्रत्येक वर्ष

२,५०,००० पौंड रेशम पैदा किया जाता है। राज्य में लगभग १५ लाख भेड़ें हैं। अच्छा ऊन पैदा करने के लिये इनकी जाति और रंग बदलने की व्यवस्था की जा रही है।

मार्ग

भारतवर्ष से काश्मीर जाने के लिये तीन मार्ग हैं। (१) झेलम घाटी की सड़क (२) बाना हाल सड़क (३) शूपियन सड़क। झेलम घाटी की सड़क १९६ मील लम्बी है और रावलपिंडी से यहाँ तक तांगे पर केवल दो दिन का मार्ग है। यात्री लोग बहुधा इसी सड़क से होकर आते जाते हैं। बानाहाल सड़क भी अच्छी दशा में है। इसमें सभी प्रकार की गाड़ियाँ चल सकती हैं। (३) शूपियन सड़क, यह मुग़ल साम्राज्य के समय में काम आती थी। यह मार्ग दुर्गम और कठिन है।

अमर नाथ, लार में तुलामूल, त्रिसंध्या, रुद्रसंध्या, वासुक नाग, पवन संध्या, सप्तऋशि, ततदान, हरमुखा, दर्थानेश्वर बुमज़ तथा वीरू की गुफाएँ, स्वयम्भू आदि वस्तुएँ अलौकिक हैं। यात्री लोग दूर से इनको देखने आते हैं।

प्राचीन स्मारक

काश्मीर एक बहुत ही प्राचीन प्रदेश है। इसी कारण यहाँ प्राचीन स्मारक बहुत हैं। इनकी रक्षा के लिये राज्य की ओर से प्रबन्ध होता है। निम्नांकित स्मारक प्रधान हैं।

(१) बन्दी का मन्दिर, यह हरे रंग के पत्थर का बना है। (२) बुनिआर का भवानी का मन्दिर। (३) श्रीस्थान का लिंग, यह १२ फुट ऊँचा है। (४) फतेहगढ़ का मन्दिर। (५) नारायण थाल। (६) नरेन्द्रेश्वर का मन्दिर। (७) शंकर-गौरी और सुगनदेश्वर का मन्दिर। (८) शंकराचार्य का मन्दिर, यह सुलेमान पर्वत पर है। प्रत्येक काश्मीर जाने वाला यात्री इसे अवश्य देखता है। इसको बुद्ध लोग बड़े आदर की दृष्टि से देखते हैं। (९) नरपीड़ा स्थान या नरेन्द्रस्वामी का मन्दिर, यह श्रीनगर में है। (१०) शाह हमदान मस्जिद, यह अधिकतर लकड़ी की बनी है। यह मस्जिद काली देवी के मन्दिर को तोड़कर बनाई गई है। (११) पत्थर की मस्जिद, इसको नूरजहाँ ने बनवाया था। (१२) महाश्री। (१३) स्कन्ध भवन। (१४) त्रिभुवन स्वामी का मन्दिर। (१५) क्षेम गौरीश्वर का मन्दिर, (१६) दीदा मठ, (१७) अली मस्जिद, (१८) विक्रमेश्वर, (१९) अमृत भवन, (२०) जामा मस्जिद, (२१) नसीम बाग, (इसको शाहजहां ने बनवाया था।) (२२) शालिमार या प्रेम का स्थान, यहाँ की वाटिकायें सुन्दर हैं, (२३) गुप्त गंगा, (२४) निशात बाग, (२५) मार्तण्ड जी का मन्दिर इत्यादि स्मारक देखने योग्य हैं। ये सभी रमणीक स्थानों पर बने हैं। इनका दृश्य अलौकिक है। इन्हीं सब बातों से ही काश्मीर स्वर्गभूमि कहलाता है।

इतिहास

इतिहास इस बात का साक्षी है कि काश्मीर भारत का सम्बन्ध रहा है। राजतिरंगिनी नामक पुस्तक से हमको और यहां के प्राचीन इतिहास का अच्छा ज्ञान होता है। चौदहवीं शताब्दी में यह राज्य मंगोलियन राजों के अधिकार में रहा। फिर यहां पठानों का शासन रहा। उसके बाद मुग़ल साम्राज्य बना। १८१९ में महाराजा रणजीत सिंह ने इसे अपने अधिकार में किया। फिर एक सन्धि द्वारा जम्मू के राजा गुलाब सिंह राजा बनाये गये। वर्तमान समय में यहां के शासक हिज़ हाईनेस श्री महाराजा हरी सिंह जी बहादुर हैं। आप १९२५ ई० में गद्दी पर बैठे। आप के और रेजीडेन्सी के बीच पहले अच्छे भाव नहीं थे। रेजीडेन्सी राज दरबार के कार्यों में दखल देती थी। अब झगड़े दूर हो गये हैं। आप पहली गोलमेज़ कानफ्रेन्स में सम्मिलित हुए। उसमें आप ने जो कुछ किया वह प्रशंसनीय है। महाराजा पटियाला, अलवर, बीकानेर और भोपाल के नवाब के साथ साथ आपने संघ शासन मानने की स्वीकृति दी।

काश्मीर का शासन करना कोई सरल कार्य नहीं है। यहां के अधिकतर निवासी मुसलमान हैं जो एक हिन्दू राज्य का देखना पसंद नहीं करते। अधिक समय से काश्मीर राज्य की शक्ति वहां के ब्राह्मण पंडितों के हाथ रही थी। इससे महाराज को भय मालूम हुआ कि कहीं राज प्रबन्ध में गड़बड़ी न पड़ जावे। इस लिये वे राजप्रबन्ध को ठीक रास्ते पर लाने का प्रयत्न करने

लगे। वे इस कार्य्य को कर ही रहे थे कि वहां १९३१ में राजविप्लव हो गया जिसमें ब्रिटिश और भारतीय सेनाओं का प्रयोग करना पड़ा। एक निष्पक्ष जांच पड़ताल के बाद महाराज ने शासन में सुधार किया और इसी के अनुसार एक कानून बनाने वाली सभा बनाई जिसमें मुसलमानों को काफ़ी हिस्सा दिया गया है। एक ब्रिटिश अफ़सर को प्रधान मन्त्री की जगह दी गई है। प्रेस को भी काफी स्वतंत्रता प्रदान की गई है। किसानों और गरीबों की दशा सुधारने के लिये भी अच्छा प्रबन्ध किया गया है। आपको २१ बन्दूकों की सलामी दी जाती है। राज्य की सेना में ८,६०० सैनिक हैं।

ब्रिटिश रेज़ीडेंट श्रीनगर और सियालकोट में रहता है। गिलगिट में भी एक पोलीटिकल एजेन्ट रहता है। और मध्य एशिया के व्यापारिक सम्बन्ध होने के कारण एक अँग्रेज़ अफ़सर लेह में रहता है।

शिक्षा

पिछली मर्दुमशुमारी के अनुसार राज्य में १,२३,८०० व्यक्ति ऐसे हैं जो पढ़ लिख सकते हैं जिसमें ९,००० स्त्रियाँ हैं। राज्य में कुल १३९२ शिक्षा सम्बन्धी संस्थाएं हैं जिनमें ३ कालेज भी हैं। उनमें ८९,३७४ विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। म्यूनिसिपल क्षेत्रफल के अन्दर अनिवार्य शिक्षा दी जाती है।

सुधार

वर्तमान महाराज के समय में एक हाईकोर्ट बनाया गया है, जो सब से बड़ा न्यायालय है। एक क़ानून बनाकर बचपन की शादी बन्द कर दी गई है और इसके लिये १८ वर्ष लड़के की और १४ साल लड़की की अवस्था शादी के लिये रक्खी गई है। एग्रीकलचरिष्ट रेलीफ रेगुलेशन बनाया गया है जिससे किसानों को ऋण सम्बन्धी मामलों में सुविधा प्राप्त हुई है। छापाखानों को स्वतन्त्रता प्रदान कर दी गई है। एक स्टेट असेम्बली बनाई गई है जिसमें ग़ैर सरकारी सदस्यों का बहुमत है।

आर्थिक दशा

राज्य की आर्थिक स्थिति अच्छी है। राज्य के ऊपर किसी प्रकार का ऋण नहीं है। भूमिकर, चुंगी, जंगल और दूसरे करों से राज्य की सालाना आय जागीरों की भी मिलाकर २,७०,००,००० रुपया है।

काश्मीर राज्य की जलवायु बड़ी स्वास्थ्यप्रद और अच्छी है। यहाँ के फूलों, वाटिकाओं, झीलों तथा पहाड़ों के दृश्य अनुपम हैं। यहाँ पर सारे भारतवर्ष से भारतीय, योरुपियन तथा दूसरी जाति वाले गर्मियों में स्वास्थ्य सुधारने तथा सैर करने के लिये आते हैं।

मैसूर राज्य

हैदराबाद के दक्षिण में एक प्रधान देशी राज्य है। यह राज्य ११·४० से १५ उत्तरी अक्षांशों और ७४·४० से ६८·३० पूर्वी देशान्तरों के बीच स्थित है। यह राज्य चारों ओर से ब्रिटिश राज्य से घिरा है। इस राज्य का प्रधान नगर बंगलौर है किन्तु राजधानी मैसूर नगर ही है। महाराजा दोनों स्थानों में क्रमशः रहा करते हैं। प्राचीन काल से इसका नाम महिषासुर (भैंसे के सर वाला राक्षस) नामक राक्षस के नाम पर महेशुरु पड़ा, फिर बिगड़ कर मैसूर हो गया।

राज्य का क्षेत्रफल बंगलौर की सिविल और फौजी छावनियों को मिलाकर २९,४६९ वर्गमील हैं। राज्य में आठ जिले हैं—(१) बंगलौर, (२) कोलार, (३) तूमकूर, (४) मैसूर, (५) शिमोगा, (६) कदूर, (७) हसन, (८) चितलद्दग। जन-संख्या लगभग ६० लाख है। इसमें साढ़े तीन लाख मुसलमान और शेष हिन्दू हैं।

मैसूर का राज्य एक ऐसे स्थान पर स्थित है जहाँ पूर्वी घाट और पश्चिमी घाट नीलिगिरि पर्वत से मिल जाते हैं। राज्य के भीतर ४,००० से ५,००० फुट तक ऊँचे पर्वत हैं। बीच बीच में ऊँचे ऊँचे दुर्ग हैं जिनमें नन्दो दुर्ग, सवान दुर्ग, कवल दुर्ग आदि प्रसिद्ध हैं। इन पर्वतों पर प्राचीन काल में किले बने थे। कवल दुर्ग में राज्य का कारागार था।

प्रकृति ने स्वयं मैसूर राज्य को दो भागों में बांट दिया है। (१) मालनाद (२) मैदान। मालनाद, यह एक पहाड़ी प्रदेश है और पश्चिमी घाट पर स्थित है। मदान, यह खुला हुआ प्रदेश है। इसमें नदियों की घाटियाँ और उपजाऊ प्रदेश स्थित हैं। मालनाद का पहाड़ी प्रदेश अपने पर्वतीय दृश्य और सुन्दरता के लिये प्रसिद्ध है। मैदान के उत्तर की ओर काली मिट्टी है जहाँ बाजरा, गेहूँ और कपास की उपज होती है। दक्षिणी-पश्चिमी भाग जहाँ नहरों द्वारा सिंचाई होती है वहाँ ईख और धान की उपज बहुत होती है। जिन जिन स्थानों में सिंचाई तालाबों से होती है वहाँ बगीचे हैं और मुख्य उपज नारियल और Areca palm की है। लाल भूमि वाले पठारी प्रदेशों में रागी और दूसरी शुष्क वस्तुओं की उपज होती है। कृष्णा कावेरी, तुंगभद्रा, वेद्वती आदि नदियां हैं। इनसे और इनकी सहायक छोटी छोटी नदियाँ तथा नहरों से जो इन्हीं नदियों से निकाली गई हैं सिंचाई का काम होता है। सभी पहाड़ी भूमि होने के कारण यहाँ की नदियों में बड़ी बड़ी नावें नहीं चल सकतीं और इस प्रकार नदियों द्वारा व्यापार नहीं हो सकता। तुंगभद्रा और कव्वानी नदियों में लट्ठे बहाये जाते हैं। राज्य में सभी भांति के छोटे बड़े ताल तलरियाँ हैं ये सारे राज्य में फैले हुये हैं। कुल ३७,३५२ हैं। इनमें सबसे बड़ी सुलेकेरे की झील ४० मील के घेरे में है।

तुंगभद्रा की घाटी के समीप स्लेट और दूसरी प्रकार की मुलायम चट्टानें मिलती हैं। यहीं पर चूना और बलुआ पत्थर की खानें हैं बंगलौर में लोहे की खानें हैं जहाँ से लोहा निकाला जाता है। कोलार में प्रसिद्ध सोने की खानें हैं। जहाँ बिजली द्वारा काम होता है। यहां बिजली ९२ मील की दूरी से कावेरी के शिवसमुद्रम् झरने से प्राप्त की जाती है।

इतिहास

मैसूर के प्राचीन इतिहास का ठीक ठीक पता नहीं चलता है। किन्तु राज्य में मिले हुये शिला लेख और ताम्र के पत्रों ने राज्य के इतिहास पर काफी प्रकाश डाला है। महाभारत और रामायण में बतलाये हुये बहुत से स्थान यहाँ पाये गये हैं। मैसूर राज्य प्राचीन काल में सुग्रीव का राज्य था। हनूमान जी रामचन्द्र जी को यहीं मिले थे और उन्होंने सुग्रीव को रामचन्द्र जी से यहीं मिलाया था। रामचन्द्र जी की बानर व भालू सेना यहीं की थी। उसके बहुत काल पीछे ईसा से २०० साल पहले बौद्ध यहाँ आये। फिर यहाँ जैन मत का प्रचार हुआ। अब भी जैन धर्म के बहुत से सुन्दर मन्दिर राज्य में हैं।

ऐतिहासिक काल के आरम्भ में मैसूर के उत्तरी भाग में कदम्ब वंश का राज्य था जिनकी राजधानी वनवासी थी। इस वंश ने पन्द्रहवीं सदी तक राज्य किया, फिर चालोक्य वंश ने इन्हें निकाल बाहर

किया। मैसूर के दक्षिणी भाग मे गंग या कोन्गू राज्य था। पहले इनकी राजधानी काकुर फिर तलकद रही जहाँ से चोला राजों ने नवीं शताब्दी में इन्हें निकाल बाहर किया। मैसूर के पूर्वी भाग में पल्लव वंश का राज्य था जिनको चालोकिया वंश ने मार भगाया। चोल और चालुक्य राज्य के पश्चात् कलचूर्य लोगों का राज्य हुआ फिर हुवसाल बलाल राजे हुये। ये लोग जैन मत के मानने वाले थे। इनकी राजधानी द्वारसमुद्र थी और इनका राज्य १३१० तक रहा। १३१० में मलिक काफूर जो अलाउद्दीन का सेनापति था उसने बलाल राजा को कैद कर लिया और राजधानी पर भी अधिकार जमाया। १६ साल बाद फिर मुहम्मद तुग़लक ने आक्रमण किया और राजधानी को बर्बाद किया। हौसल राजों के बनाये हुये जैन मन्दिरों की कारीगरी की गणना भारत की अद्भुत वस्तुओं में होती है।

हौसल वल्लाल राजों के पश्चात् तुङ्गभद्रा नदी पर विज्यानगर हिन्दू राज्य की नींव हक्क और बुक्क वारंगल दर्बार के अफसरों ने डाली। यह राज्य १३३६ ई० में स्थापित हुआ। हक्क ने अपनी हरीहर की उपाधि ग्रहण की और अपने वंश का नाम नरसिंह रक्खा। इस वंश और बहमनी राज्यके बीच बड़े २ युद्ध हुये। १५६५ ई० में तिलीकोट स्थान पर एक बड़ा युद्ध हुआ जिसमें राम राजा नरसिंह की हार हुई। और विज्यानगर राज्य छिन्न भिन्न हो गया १६१० ई०में मैसूर के राजा ओडेअर ने तीरूमल से जो इस समय नरसिंह वंश का वाइसराय था। श्रीरंगापट्टम छीन लिया और वर्तमान मैसूर राज्य की नींव डाली। राजओडेअर यादौ क्षत्रिय थे और इनके पूर्वज सोराष्ट्र से यहां आकर बसे थे। १६१० के बहुत पहले ही मैसूर के क़िले की नींव पड़ी थी। महिषासुर नामक दैत्य को काली देवी ने मारा था। यही देवी मैसूर राज्य की पूज्य देवी है।

राज ओडेअर के बाद चमराज और कंघी राज राजेहुए। जिन्होंने राज्य को उन्नति दी। इनके समय के पगोडा सिक्के प्रसिद्ध हैं। चिक्क देव राज ने ३४ वर्ष तक राज्य किया। यह राजा कट्टर वैष्णव था इसलिये राज्य का भी धर्म उस काल में वैष्णव ही हो गया। १७०४ में चिक्क देव राजा की मृत्यु हो गई। १७३४ ई० में चिक्क कृष्ण राजगद्दी पर बैठे। इसी राजा के समय में हैदरअली का उत्थान हुआ और उसने मैसूर की गद्दी छीन ली और स्वयं राजा बन गया। किन्तु जितनी जल्दी इसकी उन्नति हुई उतनी ही जल्दी इस वंश की अवनति भी हुई। जो राज्य हैदर अली के समय में प्राप्त किया गया वह उसके पुत्र (टीपू सुल्तान) के समय में छिन गया। १७९९ ई० में श्रीरंगापट्टम में टीपू सुल्तान की हार हुई और वह लड़ते लड़ते मारा गया। ब्रिटिश लोगों ने पुराने राज घराने के कृष्णराज नामी बालक को गद्दी पर बैठाया। पुर्नियां नामक मरहठा ब्राह्मण ने राजा के बाल्यावस्था में राज्य का प्रबन्ध किया। १८३१ ई० से अंग्रेजों ने फिर अपने हाथ में राज्य की बागडोर ले ली। किन्तु १८८६ ई० में चाम राजेन्द्र ओडेयर, चिक्क कृष्ण अर्सू का तीसरा पुत्र गद्दी पर बैठाया गया।

किन्तु जब महाराज चाम राजेन्द्र बालिग हुये तो उन्होंने अपने राजकीय अधिकारों को मांगा उनकी मांग पूरी की गई और राज्य प्रबन्ध उनके हाथों सौंप दिया गया। चीफ़ कमिश्नर और जनरल सेक्रेट्री की जगहें हटा दी गईं। चीफ़ कमिश्नर अपना सारा काम दीवान को सौंप कर अलग हो गया। उसके बाद राज्य प्रबन्ध में बहुत से उलटफेर हुये। राजा की सहायता के लिये नामज़द राज्य के लोगों की एक काउँसिल है। जो मुख्य मुख्य विषयों में राजा को सलाह देती है।

सन् १८९५ ई० में कृष्ण राजा ओडियर गद्दी पर बैठे। लड़कपन होने के कारण महारानी बनी विलास राज काज देखती थीं। १९०२ ई० में महारानी के हाथ में स्वयं गवर्नर जनरल ने आकर राज्य सौंप दिया। १९२७ ई० में एक सन्धि हुई जिसके अनुसार १०½ लाख भेंट की सालाना माफी भारत सरकार ने मैसूर सरकार को दिया।

राजा प्रत्येक वर्ष दशहरा के अवसर पर हर एक तालुक़ा से दो तीन खास २ व्यक्तियों की एक सभा बुलाता है। जिसके सामने गत वर्ष की रिपोर्ट दीवान पढ़ता है और आने वाले साल के कार्यों का ब्योरा बतलाता है। इस समय सभा के प्रत्येक सदस्य से

प्रस्ताव मांगे जाते हैं और उन पर बहस की जाती है। स्वीकृत प्रस्तावों की यथा उचित कार्यवाही की जाती है। राज्य की सालाना आय ३,८६,४३,०००) है। और सालाना व्यय लगभग ३,८५,९३,०००) है।

हिन्दू धर्म के अनुसार राजा का जो प्राचीन आदर्श है उसकी झलक महाराज मैसूर में पाई जाती है। भारतीय नरेशों में उनको प्रजा का एक निस्वार्थ हितैषी होने का गर्व प्राप्त है। किसी भी राज्य की प्रजा मैसूर प्रजा के बराबर तावेदार नहीं है। यहां तक कि अच्छे से अच्छा ब्रिटिश भारतवर्ष का राजनीतिज्ञ भी महाराज मैसूर के शासन का मुकाबला नहीं कर सकता। सभी स्थानों में मैसूर राज्य एक आदर्श माना जाता है। राज्य के सभी प्रकार के लोगों को पूरी स्वतन्त्रता प्राप्त है किन्तु अभाग्यवश न मालूम क्यों यहां कांग्रेस का आन्दोलन ज़ोर पकड़ गया। जिससे बड़ी बड़ी कठिनाइयां उत्पन्न हो गईं। सुधारों की मांगें जो कुछ भी हैं वे प्रजा की नहीं वरन स्वार्थी राजनीतिज्ञों की हैं। वाडियर हिज़ हाईनेस महाराजा सर श्री कृष्ण बहादुर, जी० सी० एस० आई० जी० बी० ई० को २१ बन्दूकों की सलामी लगती है।

शासन-प्रणाली

राज्य की राजधानी मैसूर नगर है किन्तु शासन प्रबन्ध का केन्द्र बंगलौर में है। महाराज के हाथों में राज्य के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। महाराज की सहायता के लिये दीवान और दो आदमियों की एक सभा है। सब से बड़ा न्यायालय हाई कोर्ट है जिसमें तीन जज और चीफ जज हैं। राज्य में दो बड़ी धारा सभायें हैं एक सभा में प्रजा के प्रतिनिधि हैं और दूसरी सभा क़ानून बनाने वाली सभा है। चुनाव में पहले स्त्रियों को वोट देने का अधिकार नहीं था किन्तु अब उन्हें भी अधिकार दे दिया गया है। सभी सदस्यों को प्रस्ताव उपस्थित करने का अधिकार है उन्हें बहस करने का भी अधिकार है। सभाओं की बैठक दशहरा, बजट शेसन के सिवा जब कभी भी आवश्यकता होती है तो बुला ली जाती है। इन दोनों सभाओं का दीवान ही (एक्स आफ़िशियो) प्रेसीडेन्ट होता है। लैजिस्लेटिव काउंसिल में ५० सदस्य हैं। जिसमें २० सरकारी और ३० गैर सरकारी लोग हैं। जनता के चुने हुये सदस्यों की तीन (स्टैंडिंग) कमेटियां बनाई गई हैं ताकि वे राज्य के दैनिक शासन पर अपना प्रभाव डाल सकें। इन कमेटियों में दोनों सभाओं के सदस्य रहते हैं। एक कमेटी रेलवे, बिजली और प्रान्तों का निरीक्षण करती है। दूसरी कमेटी नागरिक स्वतन्त्रता, सफाई और स्वास्थ्य और औषधालय विभागों का निरीक्षण करती है। तीसरी मालगुज़ारी तथा कर सम्बन्धी कार्यों को देखती है।

कृषि

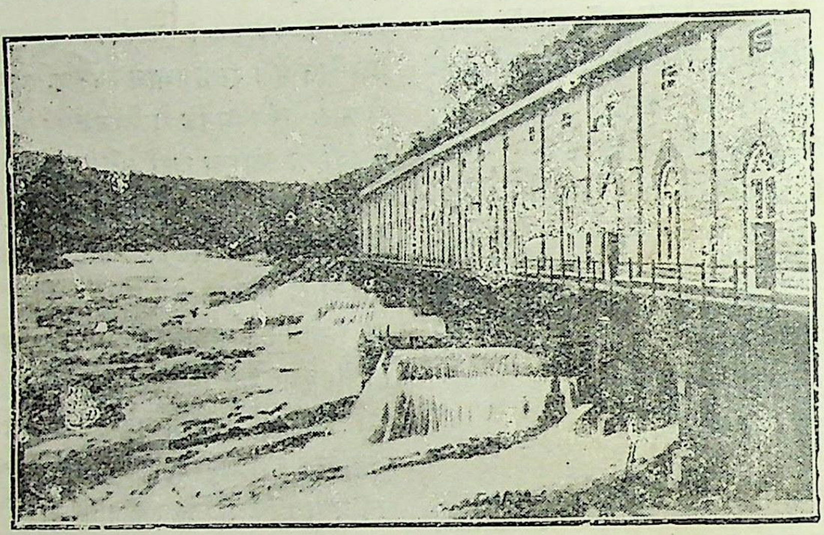
मैसूर राज्य की तीन चौथाई प्रजा खेती के व्यवसाय में लगी है। यहाँ पर रैय्यत वारी बन्दोबस्त प्रचलित है। रागी, धान, ज्वार, बाजरा, चना, ऊख, कपास, सन आदि प्रधान उपज हैं। सस्ते रेशमी कपड़ों के कारण यहाँ की रेशम के घरेलू कारखाने उन्नति नहीं कर सकते। कृषि को प्रोत्साहन देने के लिये राज्य की ओर से भरसक प्रयत्न होता है। सभी तरीकों से बिल्कुल नए ढंग पर खेती करना किसानों को सिखाया जाता है। हेबाल, बाबूर, मरथूर, नेजेन हाली, हुनसूर और मँडिया आदि स्थानों पर राज्य की ओर से फार्म्स खोले गये हैं। इन जगहों पर बिलकुल वैज्ञानिक ढंग पर खेती की जाती है और नए २ बीजों का प्रयोग किया जाता है। कादुर ज़िले में आज़मपुर के समीप एक गल्ला-गोदाम है। बंगलौर में एक सिरम इन्स्टीट्यूट (Serum Institute) खोला गया है जहाँ पर भिन्न भिन्न बीमारियों की दवाएँ बनाई जाती हैं। राज्य के अन्दर जानवरों के ६४ अस्पताल खुले हैं।

कारखाने

राज्य के अन्दर कारबार और रोज़गार बढ़ाने के ध्यान से राज्य ने इन्डस्ट्रीज़ तथा कामर्स विभाग खोल रक्खा है। ये विभाग रोज़गार-धंधों को बढ़ाने के लिये भरसक प्रयत्न करते हैं। मैसूर में भारतवर्ष भर में सबसे अधिक रेशम होता है। उसके लिये एक सेरी कलचर विभाग (Sericulture Department) खोला गया है जो रेशम के रोज़गार को उन्नतिशील बनाने का प्रयत्न करता है। राज्य के अन्दर गवर्नमेन्ट सोप फैक्ट्री, गवर्नमेन्ट पोरसिलेन फैक्ट्री, गवर्नमेन्ट

सिल्क वीविंग फैक्ट्री, गवर्नमेन्ट एलैक्ट्रिक फैक्ट्री और सेन्ट्रल इन्डस्ट्रियल वर्कशाप के कारखाने हैं। इसके सिवा एक चन्दन का तेल निकालने व अतर बनाने का भी कारखाना है। भद्रावती में भी एक बहुत बड़ा कारखाना खोला गया है। एक पाइप फाउन्ड्री पाइप बनाने के लिये खोली गई है। भद्रावती में सीमेन्ट और कागज़ के कारखाने अपना काम बहुत शीघ्र ही आरम्भ करने वाले हैं। इन कारखानों में जेर सोपा नामक वाटर फ़ाल से बिजली लाई जावेगी जहाँ आशा है कि १,००,००० हार्स पावर की बिजली तयार होगी।

सोना निकालते थे किन्तु कोलार के सिवा और कोई भी खान नहीं मिली। यही एक ऐसी खान है जहां अब तक बराबर सोना निकल रहा है। पहले पहल १८०२ ई० में लैफ्टीनेन्ट जान वारेन ने मैसूर राज्य के पूर्वी भाग की पड़ताल की। उसके ७० साल बाद मिस्टर लेवली ने गवर्नमेन्ट से कोलार ज़िले की सोने की खानों की मानापली ले ली। १८७३ में उसने इसको मैसूर के लोगों के हाथ सौंप दिया। १८८० और १८८४ के बीच कई कम्पनियां बनीं और खानों को खोदाई का कार्य होने लगा। वे लोग २०० फुट नीचे खोद ले गये। किन्तु कुछ भी लाभ न हुआ तब मैसूर गोल्ड



४०—मैसूर का प्रसिद्ध शिवसमुद्रम प्रपात। यहीं से बहुमूल्य बिजली तैयार होती है।

मैसूर राज्य में आजकल भेड़ पालने पर बड़ा जोर डाला जा रहा है। राज्य में बहुत सी चरागाहें हैं जहाँ भेड़ें चराई जाती हैं। कोलार ज़िले में एक संस्था है जो प्रजा को भेड़ पालने के आर्थिक लाभ बताती है। इस संस्था में १६० मेम्बर तथा दस हज़ार भेड़ें हैं। तमाम राज्य की भेड़ों को शुद्ध बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। मैसूर सरकार ने ६ हज़ार रुपया अफ्रीका से भेड़ें मँगाने के लिये मंजूर किया है।

कोलार की सोने की खानें

मैसूर में कई स्थानों पर खोदाई होने से मालूम होता है कि प्राचीन समय में भी लोग इस राज्य में

माइनिंग को छोड़ कर सभी बन्द कर दी गईं। मिस्टर जान टेलर को कोशिश से इस कम्पनी का शेष रुपया अन्तिम उद्योग में लगाया गया। १८८५ ई० में प्रसिद्ध चैम्पियन लोड (Champion Lode) की खान मिली जिससे १,६०,००,००० पौंड का सोना प्राप्त हुआ। मैसूर माइन की सफलता देख कर और दूसरी कम्पनियों ने कार्य आरम्भ किया। तब से लगातार इन खानों से सोना अधिक से अधिक संख्या में निकल रहा है। १९०५ ई० में २२,७३,४५७ पौंड का कच्चा सोना खानों से प्राप्त हुआ। १९३७ में यहां से २८,०७,३०६ पौंड का सोना निकाला गया है। इन खानों में मैसूर गोल्ड माइनिंग कम्पनी लिमिटेड, चैम्पियन रीफ गोल्ड माइन्स आफ इन्डिया लिमिटेड, नन्डी द्रुग

माइन्स लिमिटेड तथा अरेगन गोल्ड माइनिंग कम्पनी आफ इन्डिया लिमिटेड काम कर रही हैं। इन कम्पनियों ने लगभग १६ लाख पौंड सोने के खोदने में लगा रक्खा है।

इन खानों में २४,०३९ व्यक्ति कार्य करते हैं जिसमें ३४५ योरुपियन, ५४१ एँग्लो इण्डियन और शेष ०३,२५३ हिन्दुस्तानी हैं।

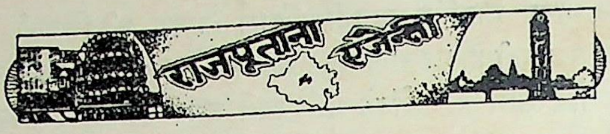
ये खानें लगभग ८००० फुट गहरी खोदी जा चुकी हैं। नीचे नीचे सुरंगों की लम्बाई ४६० मील है। खानों के भीतर बाहर काम बिजली द्वारा होता है। बड़े बड़े पंखे हवा करने के लिये नीचे खानों में बिजली द्वारा चलते रहते हैं। नीचे ठंडक पहुँचाने के लिये मशीनों का प्रयोग किया जाता है। कच्चा सोना खोदकर ऊपर लाया जाता है। यहां पीस कर सारा कच्चा सोना बुकनी बना दिया जाता है उसके बाद फिर साफ सोना निकाला जाता है। वर्तमान कम्पनियों का ठीका १९४० ई० में खतम होने वाला है। इसलिये आगे तीस सालों के लिये ठीका बढ़ा दिया गया है। जितना भी सोना यहाँ की खानों में निकलता है सब का सब भारतवर्ष और बम्बई की बाज़ारों में खप जाता है।

हाइड्रो एलेक्ट्रिक और सिंचाई

कावेरी नदी में शिवसमुद्रम् के पास लगभग २८० फुट का झरना है वहाँ से १२,००० हार्स पावर की बिजली तयार होती है। कृष्णराज सागर से ४,६०,००० हार्स पावर की बिजली बनती है। इस सागर से लगभग १,२०,००० एकड़ ज़मीन की भी सिंचाई होगी। इसी जगह एक सूगर फैक्ट्री है जहाँ १,४०० टन ईख रोज़ाना पेरी जाती है। अंजनपुर के समीप कुमदवती नदी में १८ लाख रुपया लगाकर एक सागर बनाया गया है। जहां से १०,००० एकड़ की सिंचाई होगी। शिमशा नदी में भी एक सागर बन रहा है जिसमें २२ लाख खर्च होगा और १०,००० एकड़ भूमि सींची जायगी। शिमशा नदी के ढाल पर भी बिजली तयार की जावेगी जिसके लिये राज्य की ओर से ५६ लाख रुपये को मंज़ूरी हुई है।

शिक्षा

मैसूर विश्वविद्यालय, इसमें सेन्ट्रल और इंजीनियरिंग कालेज भी शामिल हैं। मेडीकल कालेज महाराजा का तथा महारानी का भी कालेज है। महारानी के कालेज में स्त्रियों को शिक्षा प्रदान की जाती है। मैसूर में तीन इन्टरमेडियट. कालेज हैं। राज्य में ३९ हाई स्कूल हैं जिसमें सात स्कूल लड़कियों के लिये हैं। और ३२८ मिडिल स्कूल हैं जिसमें ३५ लड़कियों के लिये हैं। ११ टीचर्स ट्रेनिंग स्कूल हैं जिसमें तीन औरतों के लिये हैं। इसके सिवा कृषी, कामर्स, इंजीनियरिंग और दूसरे कारोबार सम्बन्धी स्कूल हैं। कुल राज्य में ७,६९२ स्कूल हैं और ३,११,९५७ विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। इस पर लगभग ५७,४२,१९६ रुपया सालाना व्यय किया जाता है।



राजपूताना भारतवर्ष का अत्यन्त खुश्क प्रदेश है। इसका क्षेत्रफल १,३५,००० वर्ग मील है। अर्वली पर्वत इसके एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाता है। जो भाग अर्वली के उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित है वह और भी खुश्क है। मरुभूमि होने पर भी इस प्रदेश के लोगों ने अपूर्व वीरता दिखलाई। इसी से इसे वीर भूमि भी कहते हैं।

आजकल राजपूताना में २१ राज्य हैं। प्रबन्ध की दृष्टि से यदि अजमेर-मेरवाड़ा का ज़िला अलग कर दिया जावे तो शेष बड़ा प्रदेश चार एजेन्सियों में बँटा हुआ है। १—मेवाड़ एजेन्सी में उदयपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतावगढ़ और कुशलगढ़ के राज्य शामिल हैं। २—जयपुर एजेन्सी में अलवर, जयपुर, किशनगढ़, टोंक और शाहपुरा के राज्य (लव रियासत) शामिल हैं। ३—पश्चिमी राजपूताना एजेन्सी में जोधपुर, जैसलमेर, पालनपुर और दान्त राज्य शामिल हैं। ४—पूर्वी एजेन्सी में बूँदी, भरतपुर झालावाड़, करौली और कोटा राज्य शामिल हैं बीकानेर और सिरोही का राजपूताना के एजेन्ट से सीधा सम्बन्ध है। उदयपुर के राना राजपूताना के सारे राजाओं के शिरमुकुट माने जाते हैं। इस राज वंश ने कभी अपनी लड़की मुगलों को नहीं दी। इ राज्य की स्थापना ६७६ ई० में हुई। इस राज्य क ऊँचा नीचा दृश्य बड़ा मनोहर है। जब मेवाड़ के रान चित्तौड़ की रक्षा न कर सके तो उन्होंने पहाड़ियों से घिरी हुई झील के किनारे उदयपुर नगर बसाया इसी से सारे राज्य का नाम भी उदयपुर पड़ गया इस राज्य का क्षेत्रफल १२,९२३ वर्ग मील है। इसक जनसंख्या ९, ३७,००० और आमदनी ८० लाख रु है। उदयपुरी रुपया ब्रिटिश सरकार के रुपये से कुछ छोटा होता है।

✱✱✱✱

उदयपुर राज्य या मेवाड़

यह राजपूताना में एक देशी राज्य है। इसके उत्तर में अजमेर मेरवाड़ा, पूर्व में बूंदी, कोटा, जावद, निमय, निम्भेरा और परतापगढ़, दक्षिण में बाँसवाड़ा, डूंगरपुर, और परतापगढ़, पश्चिम में अरावली पर्वत है जो इस राज्य को मारवार और सिरोही से अलग करता है। यह राज्य २३.४९° उत्तरी अक्षांश से २५.५८° उत्तरी अक्षांश तक और ७३.७° से ७५.५ पूर्वी देशान्तर तक फैला हुआ है। इसका क्षेत्रफल १२,९४१ वर्गमील है। और जनसंख्या लगभग १६,११,३७३ है।

इस राज्य का उत्तरी-पूर्वी भाग पठार है। ये पठार खुले और ढालू हैं। दक्षिणी और पश्चिमी भाग चट्टानों, पहाड़ियों और जंगलों से घिरे हैं। डूंगर से सिरोही तक की भूमि मेवाड़ का पहाड़ी प्रदेश कहलाता है। यहीं अरावली पर्वत की श्रेणियाँ फैली हैं। राज्य के पूर्वी भाग में लोहा पाया जा है। ताँबा और शीशा भी कहीं कहीं पाया जा है। दक्षिण-पश्चिम में बहुत सी छोटी छोटी नदि हैं जो माही कांथा होकर बहती हैं और साबरमत नदी में जाकर मिलती हैं। चम्बल और बना प्रधान नदियाँ हैं।

राज्य के भीतर बहुत सी झीलें और तालाब हैं उनमें से अधिक सुन्दर और बड़े जैसमन्द, राज नगर या राजसमन्द और उदयसागर हैं। जैसमन सागर बनाये हुये तालाबों में दुनिया भर में सब से बड़ तालाब है। यह ९ मील लम्बा और ५ मील चौड़ा है, राज नगर सरोवर के बनवाने में ९६ लाख रुप खर्च हुए हैं। यह ९ मील लम्बा और १½ मील चौड़ है पिचोला की झील राजधानी में ही है। उदयपु राजधानी पहाड़ी की ढाल पर स्थित है। ऊपर चोटी

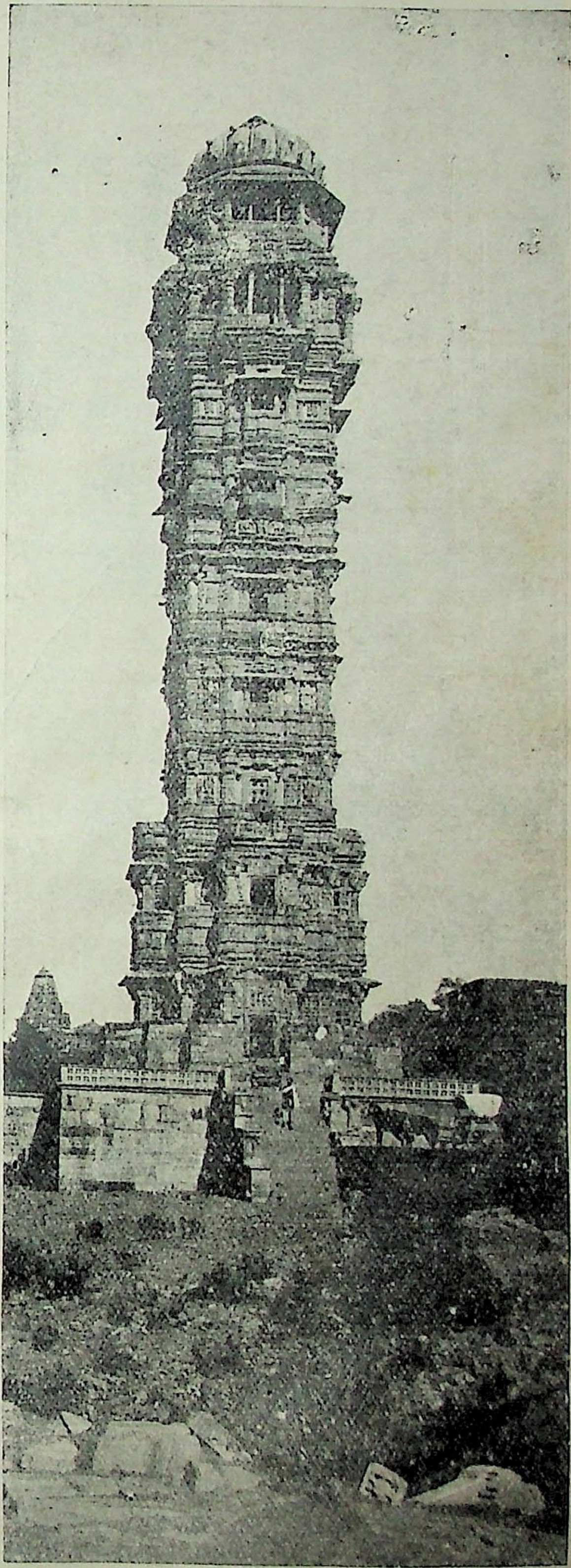
पर राजमहल हैं। उत्तर-पश्चिम की ओर महलों से मिली पिचोला झील है। इस झील के बीच में दो महल बने हुये हैं। कुछ उत्तर को ओर चलकर फतेह सागर है यह सागर एक छोटी नहर द्वारा पिचोला झील से मिला हुआ है। बम्बई से ६९७ मील उत्तर उदयपुर-चित्तौरगढ़ रेलवे के आखिरी सिरे पर उदयपुर नगर है।

म्हायर, भील और भीन जातियाँ यहाँ की प्राचीन जातियाँ हैं। भील जाति पहाड़ों पर रहती है और एक एक भील के पास कई कई मकान होते हैं जिन में से प्रत्येक एक पहाड़ी टीले पर होता है। इनके घेरों को पाल कहते हैं जो कई वर्गमोल में होता है। यहाँ की जलवायु स्वास्थ्यदायक है, गर्म जलवायु होते हुए भी कभी भी असहाय गर्मी नहीं पड़ती। सालभर में लगभग २४ इञ्च वर्षा होती है। यहाँ की पैदावार अगहन में ज्वार, बाजरा, तिल, कपास इत्यादि हैं और बैसाख में गेहूँ, जौ, चना, ईख, अफीम, तम्बाकू इत्यादि पैदा होते हैं।

संक्षिप्त इतिहास

भारतवर्ष के राजपूतों में उदयपुर का घराना सब से उत्तम माना जाता है। उदयपुर के राजे सूर्य वंश के प्रथम शाख से हैं। और हिन्दू जाति यह मानती है कि यह लोग रामचन्द्र भगवान के वंशज हैं। कैनक सेन सूर्यवंशी ने १४४ ई० में उदयपुर की नींव डाली। भारतवर्ष में उदयपुर का घराना ही एक ऐसा घराना है जिसने बहुत समय तक यवनों का सामना डट कर किया और कभी भी अपने घराने की पुत्री यवनों को नहीं दिया।

१२०१ ई० में राहुप चित्तौड़ का राजा हुआ उसने अपने जाति का नाम गिहलौट से बदल कर सिसोदिया रक्खा और राजकुमारों का नाम रावल से बदल कर राना रक्खा। १२९० के समीप अलाउद्दीन ने चित्तौड़ का घेरा डाला और १३०३ में छीन लिया किन्तु कुछ ही समय बाद महाराना हमीर ने फिर चित्तौड़ वापस ले लिया। महाराना हमीर के समय में मारवाड़, जैपुर, बूंदी, ग्वालियर आदि राज्य उदयपुर के अधिकार में थे। हमीर के बाद लगभग १५० साल तक मेवाड़ उन्नति पर रहा और अच्छी

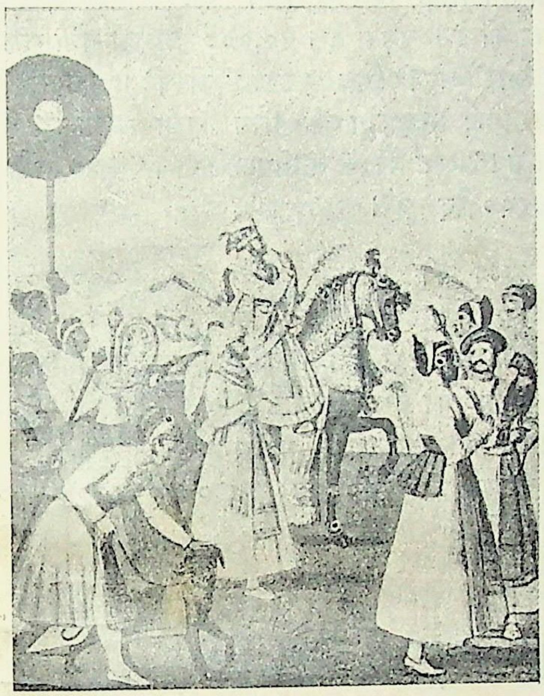


चित्तौड़ गढ़ का विजय स्तम्भ



चित्तौड़ में सूर्यास्त का एक दृश्य

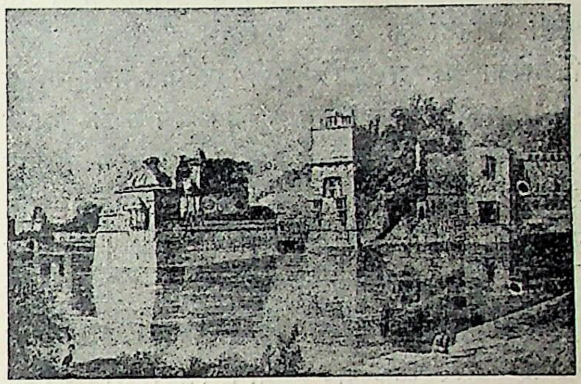
धाक जमी रही। रानासांगा के समय में मेवाड़ उन्नति के शिखर पर था। उस समय इस राज्य का विस्तार उत्तर में पीलाखाल (बमाना के समीप) तक पूर्व में सिंध नदी, दक्षिण में मालवा और पश्चिम में बड़ी बड़ी पहाड़ियां थीं। इस प्रकार राजपूताना के अधिकांश भाग पर साँगा का अधिकार



उदयपुर के राना भीमसिंह जी। इन्हीं पर अलाउद्दीन खिलजी ने आक्रमण किया था।

था। जब बाबर भारत में आया तो इब्राहीम लोदी के बाद उसे साँगा से मुकाबिला करना पड़ा। साँगा का मुकाबिला आसान न था। किन्तु अंत में बमाना के स्थान पर १५ मार्च १५२७ को राना को पीछे हटना पड़ा। राना अपनी राजधानी लौट कर मारे शर्म के नहीं गया। थोड़े दिनों पश्चात् राना की मृत्यु हो गई और ज्येष्ठ पुत्र करन गद्दी पर बैठे। इसके बाद राना उदय सिंह (साँगा के छोटे पुत्र) गद्दी पर बैठे। जब राना से यवनों ने राजधानी ले ली तो राना अरावली पर्वत पर चला गया और वहाँ उसने अपने नाम पर उदयपुर नगरी बसाई और इसी को मेवाड़ की राजधानी बनाया। उदय सिंह के समय में चित्तौड़ हाथ से निकल गया। चार साल बाद राना की मृत्यु हो गई।

१५७२ ई० में महाराना प्रताप सिंह गद्दी पर बैठे। यह अकबर बादशाह के समकालीन थे। महाराना की कई लड़ाइयों में हार हुई जिससे उनकी दशा बड़ी खराब हो गई किन्तु उन्होंने दृढ़ संकल्प कर लिया था कि वे यवनों के आधीन न होंगे और न उन्हें डोला ही देंगे। ईश्वर की कृपा से भाम शाह ने रुपये से राना रपा की



पद्मिनी का महल। जिसके कारण अलाउद्दीन ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया था।

सहायता की तो राणा के दिन लौटे और अकबर की सारी ताकत लगाने पर भी थोड़े समय में महाराना ने लगभग सारा मेवाड़ राज्य वापस ले लिया और अपने जीवन भर आराम से रहे। उनकी मृत्यु के बाद अमरसिंह गद्दी पर बैठे। अकबर के शासन-काल तक राना अमर तो चैन से रहे किन्तु उनको मृत्यु के बाद जहाँगीर ने मेवाड़ को अपने आधीन कर लेने की दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली। इस कार्य में जहाँगीर ने धोखेबाजी से भी काम लिया तो भी उसकी राना के हाथों कई बार हार हुई। अंत में १६१३ में राना अमर ने पराधीनता तो स्वीकार कर लिया किन्तु १६१६ में उसने अपने पुत्र करन के हाथों में राजकाज सौंप दिया और आप अलग हो गया।

शाहजहाँ के समय में राजपूत आराम से रहे क्योंकि शाहजहाँ की माँ एक राजपूत कन्या थी और उसका शाहजहाँ पर काफी प्रभाव पड़ा। किन्तु औरंगजेब ने हिन्दुओं पर जजिया (कर) लगाया।

जिसके विरुद्ध राजपूत खड़े हुए और उन्होंने कई लड़ाइयों में शाही सेना को हरा दिया। अंत में १६८१ में बादशाह ने विवश होकर इसको माफ कर दिया। औरंगजेब के कट्टरपन के कारण सारे राजपूत एक होगये और मेवाड़ को अगुवा बना कर मुकाबिला करने पर तय हुए। १७१६ में अमर सिंह की मृत्यु के बाद संग्रामसिंह मेवाड़ की गद्दी पर बैठे। और उनके बाद जगत सिंह राना हुए। इस समय से आगे १८१७ तक मेवाड़ की दशा उथल-पुथल में रही। कभी तो स्वतंत्र कभी गुजरात के आधीनता में तो कभी मरहठों के कब्जे में रहा। १८१७ के समीप पिंजरियों और मरहठों ने बड़ी लूट पाट मचा रक्खी थी। इसको एकदम दबाने के लिये अंग्रेज सरकार ने सोचा और इसी ख्याल से अंग्रेज सरकार ने राजपूत सरदारों को निमंत्रित किया कि वे सहायक सेना रक्खें और अंग्रेजों के सहकारी बन जावें। उदयपुर के राना ने इसको शीघ्र ही स्वीकार कर लिया और सुलहनामे पर हस्ताक्षर कर दिये महाराना भीम सिंह १८२८ में मरे उनके बाद जुवान सिंह, सरदार सिंह सरूपसिंह, शम्भू सिंह आदि राजे हुए। इसके बाद सुजान सिंह राजा हुए जिन को सरकार की ओर से जी० सी० एस० आई० की उपाधि मिली। किन्तु १८८० में २४ साल की अवस्था में ही राजा की मृत्यु हो गई और फ़तेह सिंह राजा हुए।

महाराज दीवान की सहायता से शासन करते हैं। एक सेना का दस्ता मीलों का अंग्रेज सरकार ने बनाया जिसके खर्च के लिये ५,००० पौंड सालाना राजा को देना पड़ता है। २०,००० पौंड सालाना राजा की ओर से ब्रिटिश सरकार को दिया जाता है। राजा की सहायता के लिये राजा के पास ४६४ बन्दूकें। १३३८ बन्दूक व तोपखाने वाले ६,२४० सवार १५,१०० पैदल हैं।

राज्य की सालाना आय ६६,९७,००० रु० है और सालाना व्यय २२,०८४ रुपये है। इसमें जागीरदारों की आमदनी नहीं मिली है। साल में लगान से ४५०० रु० की बचत होती है। वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस महाराजाधिराज महाराना सर भूपाल सिंह जी बहादुर जी० सी० एस० आई० के० सी० आई० ई० हैं।

✱✱✱✱

जोधपुर या मारवाड़

जोधपुर या मारवाड़ राज्य राजपूताना भर में सब से बड़ा राज्य है। इस राज्य के उत्तर में बीकानेर तथा जैपुर के शेखावती के ज़िले हैं। पूर्व में जैपुर और किशनगढ़, दक्षिण में सिरोही और पालनपुर, पश्चिम में कच्छ का रन, थार, और सिन्ध प्रान्त का पारकर जिला है, राज्य की सब से अधिक लम्बाई २९० मील और अधिक से अधिक चौड़ाई १३० मील है। इसका क्षेत्रफल ३६,०७१ वर्गमील है। यह राजपूताना में सबसे बड़ा राज्य है। यहाँ की जनसंख्या २१,३४,८४८ है जलवायु शुष्क है। दिन में कड़ाके की गरमी तथा लू चलती है और रात में जाड़ा पड़ता है।

इस राज्य की सब से प्रसिद्ध नदी लूनी है। यह अजमेर के समीप एक झील से निकलती है। आगे इसका नाम सागरमती है किन्तु गोविन्द गढ़ के समीप सरस्वती से मिल जाने के बाद इसका नाम लूनी हो जाता है। इस नदी के कछारों में गेहूँ, चना और जौ पैदा होता है। नदी के किनारे २ कुएँ बनाये जाते हैं जो सिंचाई का काम देते हैं और आस पास के गावों में लोग उन्हीं कुओं से पानी पीते हैं। नदी कुछ ऐसे भाग में होकर बहती है कि एक किनारे तो इसके हरे भरे हैं किन्तु दूसरा किनारा ठीक उसी के सामने का सुनसान उजाड़ दिखाई पड़ता है। उसी तरह एक किनारे का पानी मीठा होता है और दूसरे किनारे का नमकीन। नदी के कछार में सिंघाड़ा और तरबूज पैदा किए जाते हैं। जाजरी, सूकरी, गुयावाला, रेरिया, बाँदी, जोवाती आदि नदियाँ लूनी की सहायक हैं। यहां सब से प्रसिद्ध झील सांभर की है जहां से सांभर नमक मिलता है। दीदवाना, पचपदरा झीलों से १४½ लाख मन नमक निकलता है। साचर नामक ज़िले में एक झील है जो बर्सात में लगभग ५० वर्ग

झील में फैल जाती है। सूखने पर इसकी भूमि में गेहूँ और चना खूब पैदा होता है। राज्य में आबू और अरावली पर्वत की श्रेणियां हैं। नापोबाई, पन्नागिरि, सोजात, जालोर, सन्देराव आदि पहाड़ियां हैं जोधपुर के उत्तर का भाग बिलकुल रेगिस्तान है उसे थाल कहते हैं। रेगिस्तान में बालू के बड़े बड़े ढेर हैं जिन्हें टेबस कहते हैं। कहीं तो इन ढेरों की ऊँचाई ३०० से ४०० फुट तक होती है।

जैपुर, जोधपुर और उदयपुर तीनों राज्यों ने आपस में सलाह की कि जिस प्रकार भी हो सके उस प्रकार यवनों से स्वतंत्र होना चाहिये। आपस में यह भी तै हुआ कि उदयपुर की राजकुमारी से पैदा हुआ पुत्र गद्दी का हक़दार होगा। बखत सिंह ने अपने पिता अजीत सिंह को मार डाला। गद्दी के बारे में झगड़ा हो गया। मरहठों ने सहायता दी, जिसके फल स्वरूप यह राज्य मरहठों के अधीन हो गये।

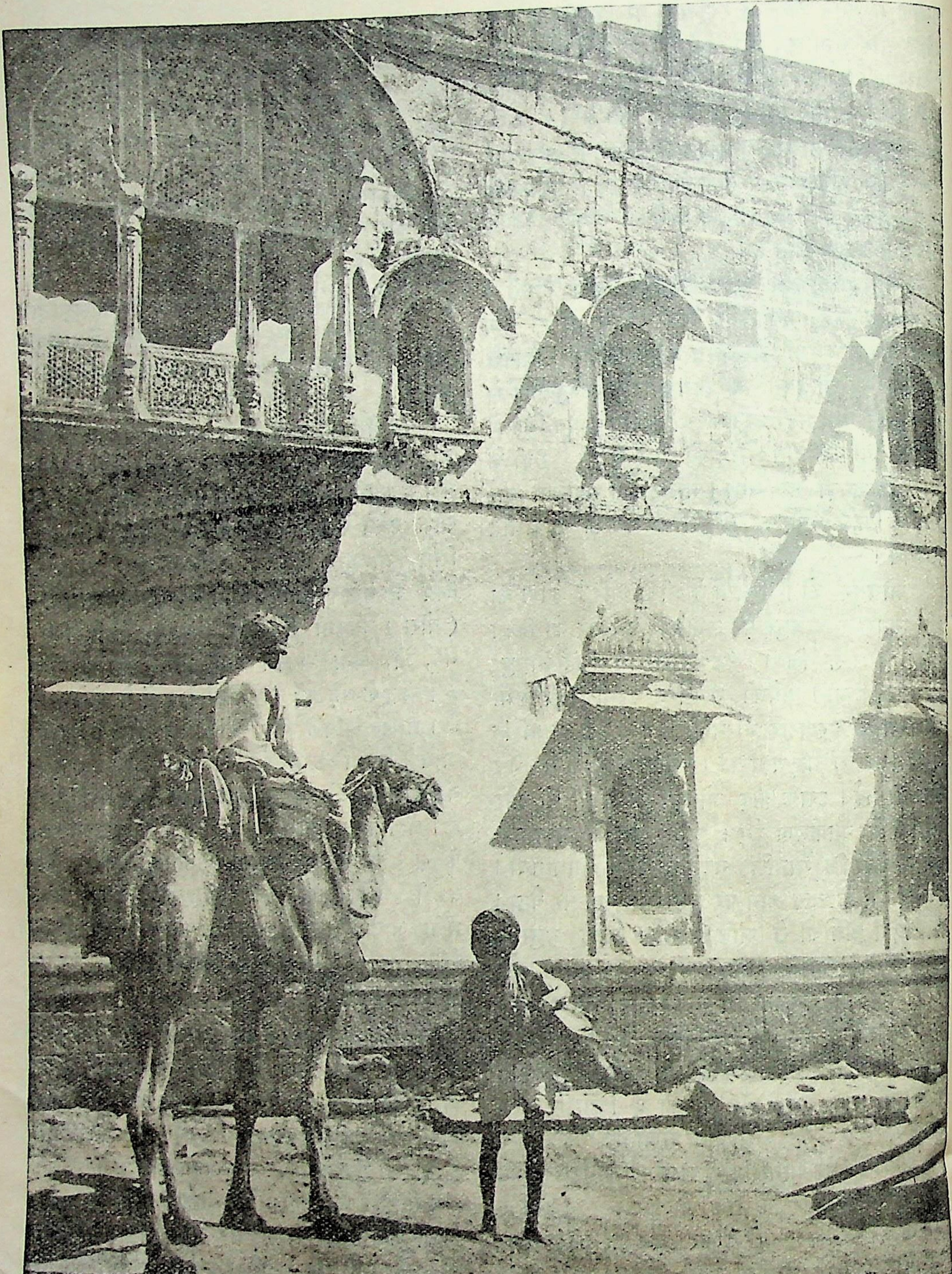
जोधपुर को सिन्धिया ने जीता और ६ लाख का कर महाराज जोधपुर पर लगाया। अजमेर का किला और नगर ले लिया। १८०३ में मान सिंह जोधपुर का राजा हुआ। अँग्रेज़ों ने सन्धि करनी चाही अभी संधिपत्र पर हस्ताक्षर भी न हो पाये थे कि मानसिंह ने होलकर की सहायता की। इसलिये १८०४ में संधि तोड़ दी गई। इसके बाद जोधपुर पर पिंडारियों और मरहठों के आक्रमण हुए। अमीर खाँ ने इतना उपद्रव मचाया कि मानसिंह गद्दी छोड़ कर भाग गया। अमीर खां के चले जाने पर छतरसिंह गद्दी पर बैठा। १८१८ में अँग्रेज़ों से संधि हो गई। इसके अनुसार जोधपुर की रक्षा का भार अँग्रेज़ों पर आया और १,०८,००० की रक़म जो जोधपुर सिंधिया को देता था अँग्रेज़ों को देने का बचन दिया गया। १८२४ में मेड़वाड़ा के २१ गाँव अँग्रेज़ों को दिये। १८३६ में मल्लानो प्रदेश भी अँग्रेज़ों को दे दिया। इसके बदले में १०२००) रु० सालाना राजा को मिलता है।

बाद में फिर मानसिंह ने राज्य की बागडोर अपने हाथ में ली किन्तु ठीक ठीक राज्य-प्रबन्ध न होने के कारण १८१९ में मज़बूर होकर अँग्रेज़ों को रुकावट डालनी पड़ी। एक सेना भेजी गई जिसने ५ महीने तक जोधपुर पर अधिकार रक्खा। बाद में राजा ने ठीक राज्य करने का बचन दिया। तो उसे राज्य दे दिया गया। चार साल बाद मानसिंह की मृत्यु हो गई और अहमद नगर के सर्दार तख्त सिंह राजा चुने गये। राजा ने ग़दर में अँग्रेज़ों की अच्छी सहायता की। १८७३ में उसकी मृत्यु हो गई और महाराज जसवन्त सिंह राजा हुये। महाराज को गोद लेने का अधिकार है और महाराज की पदवी जी० सी० एस० आई० की है।

जोधपुर में बहुत से जागीरदार और ताल्लुकेदार हैं। जो अपनी भूमि के भीतर स्वतंत्र हैं। ठाकुर और जागीरदारों के पास राज्य का लगभग ४⅚ भाग है।

नमकीन झीलों के सिवा राज्य में ७२ गांव और ३७० कारखाने ऐसे हैं जहाँ नमक बनाया जाता है। यहां मुलतानी मिट्टी कपूरी में मिलती है। यह बाल साफ़ करने के काम आती है। यह मिट्टी अमरकोट, सिंध, जोधपुर, बीकानेर आदि स्थानों में बिकने के लिये जाती है। अपने स्थान पर यह दो आने बैल (बोरा) बिकती है। ज्वार, बाजरा, मोथी, तिल, गेहूँ, जौ, चना, अफीम आदि वस्तुएँ पैदा की जाती हैं। बालू के बड़े बड़े ढेर ऊँटों के हलों से जोते जाते हैं। जगह अधिक और ऊँटों के हल होने के कारण अधिक से अधिक भूमि में लोग खेती करते हैं। पर्शियन ह्वील (रहट) और मामूली कुओं से सिंचाई होती है। जहां पर पैदावार कम होती है वहां ज़मीदारों को केवल चौदहवां भाग मिलता है। नमक, जानवर, भेड़ बकरी, घोड़े, रुई, ऊन, हड्डी इत्यादि वस्तुएँ बाहर भेजी जाती हैं। गुड़, शक्कर, चावल, चांदी, तांबा, रेशम, सन्दल, गल्ला और दूसरी बनी हुई वस्तुएँ बाहर से आती हैं।

जोधपुर के शासक उदयपुर की भांति रामचन्द्र के वंशज माने जाते हैं। यह लोग भी अपने को सूर्यबंशी कहते हैं। ११९४ में जैचन्द के पोते शिवा जो राठौर मारवाड़ में उतरे। यह द्वारका जी के दर्शन के लिये गए थे। यह लोग पाली नामक गांव में ठहरे। ब्राह्मण लोगों ने राठौरों का साथ दिया। १२८२ में राठौरों ने मारवाड़ को आधीन किया। जोधा ने थोड़े समय तक राज्य किया और जोधपुर की नींव डाली। १५४४ में शेरशाह ने ८०,००० हजार

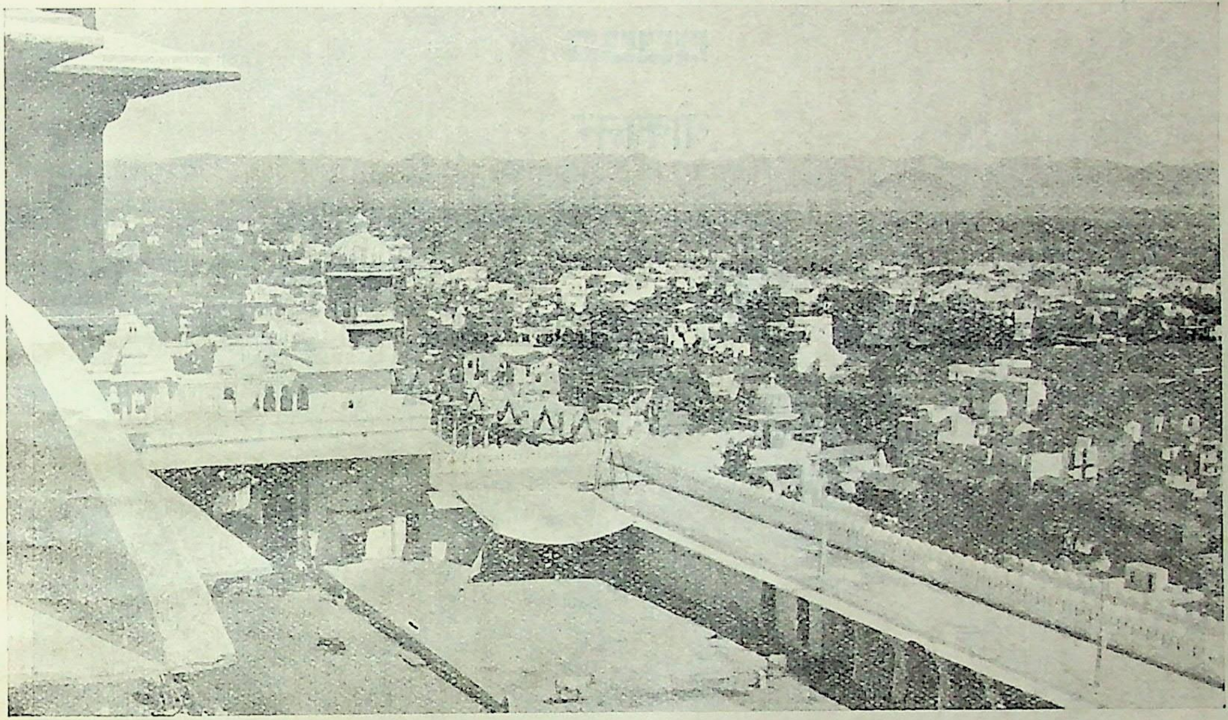


जोधपुर का एक दृश्य

फ़ौज लेकर राज्य पर आक्रमण किया। १५६१ ई० में अकबर का आक्रमण हुआ। महाराज जोधपुर ने अपने पुत्र को बादशाह के पास भेजा। जब उदय सिंह राजा बने तो इन्होंने जोधाबाई का व्याह अकबर से कर दिया। अकबर ने जोधपुर राज्य की भूमि वापस दे दी और उदयसिंह व उदयसिंह के रिश्तेदारों को दरबार में अच्छी अच्छी जगहें दीं। फिर राजा सूर और जसवंत सिंह हुए। जसवन्त अफ़गानिस्तान

जागीरों की आय राज्य की आय के दोगुने से कहीं अधिक है।

राज्य के अन्दर ५५ युद्ध-क्षेत्र की बन्दूकें, १२५ दूसरी बन्दूकें, ३२० बन्दूक चलाने वाले, ३,४९९ सवार और ५,९५४ पैदल सिपाही हैं। जोधपुर नगर के चारों ओर एक मज़बूत पत्थर की दीवार है जो ६ मील लम्बी है। इसमें ७० दर्वाजे हैं जिन पर जो रास्ता जहाँ जाता है वहाँ का नाम लिखा है। ८०० फ़ुट ऊँची



जोधपुर का दूसरा दृश्य

युद्ध पर भेजा गया किन्तु वह रास्ते ही में मर गया। उसका पुत्र अजीत सिंह गद्दी पर बैठा।

इसी समय औरंगजेब ने जोधपुर पर आक्रमण किया और सभी क़िलों पर कब्ज़ा जमा लिया। उसके पश्चात् राठौर जाति को उसने मुसलमान बनाया। यह बात लोगों को अच्छी न लगी।

महाराज जोधपुर को सभी माल व फौजदारी के मुक़दमों के करने का अधिकार है। यहां के अफ़सर हाकिम कहे जाते हैं। जागीरदार अपनी २ जागीरों के भीतर मजिस्ट्रेट का कार्य करते हैं। राज्य की आय ७२,००,००० है। जागीरदारों, ठाकुरों और धार्मिक

पहाड़ी पर क़िला है। नीचे नगर बसा है। जहाँ सरदारों, ठाकुरों और राजा के रहने के मकान हैं। मकानों की कारीगरी देखने योग्य है।

राज्य के वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस राज राजेश्वर महाराजाधिराज सर उमेदसिंह जी बहादुर जी० सी० एस० आई० जी० सी० आई० ई० के० सी० वी० ओ० ए० डी० सी० हैं। इनको १७ तोपों की सलामी दी जाती है।०

राज्य-प्रबन्ध एक सभा (स्टेट काउन्सिल) द्वारा होता है। इस सभा में ५ सदस्य होते हैं और महाराज इसके अध्यक्ष होते हैं। इसके सिवा सरदारों

की एक कमेटी होती है जो जागीर सम्बन्धी बातों में सलाह देती है। न्याय विभाग ब्रिटिश सरकार की भांति ही बनाया गया है। राज्य में एक चीफ कोर्ट, एक सेशंस कोर्ट बाकी चालीस छोटी अदालतें हैं।०

राज्य में कृषि विभाग को उन्नति देने का प्रयत्न किया जा रहा है। किसानों को लगान चुकाने में हर एक भांति की सहायता दी जाती है। सिंचाई के लिए कुआं खोदने के लिये राज्य की ओर से सहायता मिलती है। मारवाड़ी जानवरों की नसल को उन्नति देने के लिये एक फार्म खोला गया है। राज्य से लगभग ९० लाख रुपये के जानवर सालाना बाहर भेजे जाते हैं। किसानों को एक कोआपरेटिव (सहकारी) संस्था द्वारा ऋण आवश्यकता पड़ने पर दिया जाता है।

औषधालय भी दिन प्रतिदिन उन्नति कर रहे हैं। विंघम हास्पिटल में २ लाख रुपये की लागत लगी है और यह अस्पतालों का एक नमूना है। स्त्रियों के लिये भी ९ लाख रुपये लगा कर एक अस्पताल बन रहा है।

बीकानेर

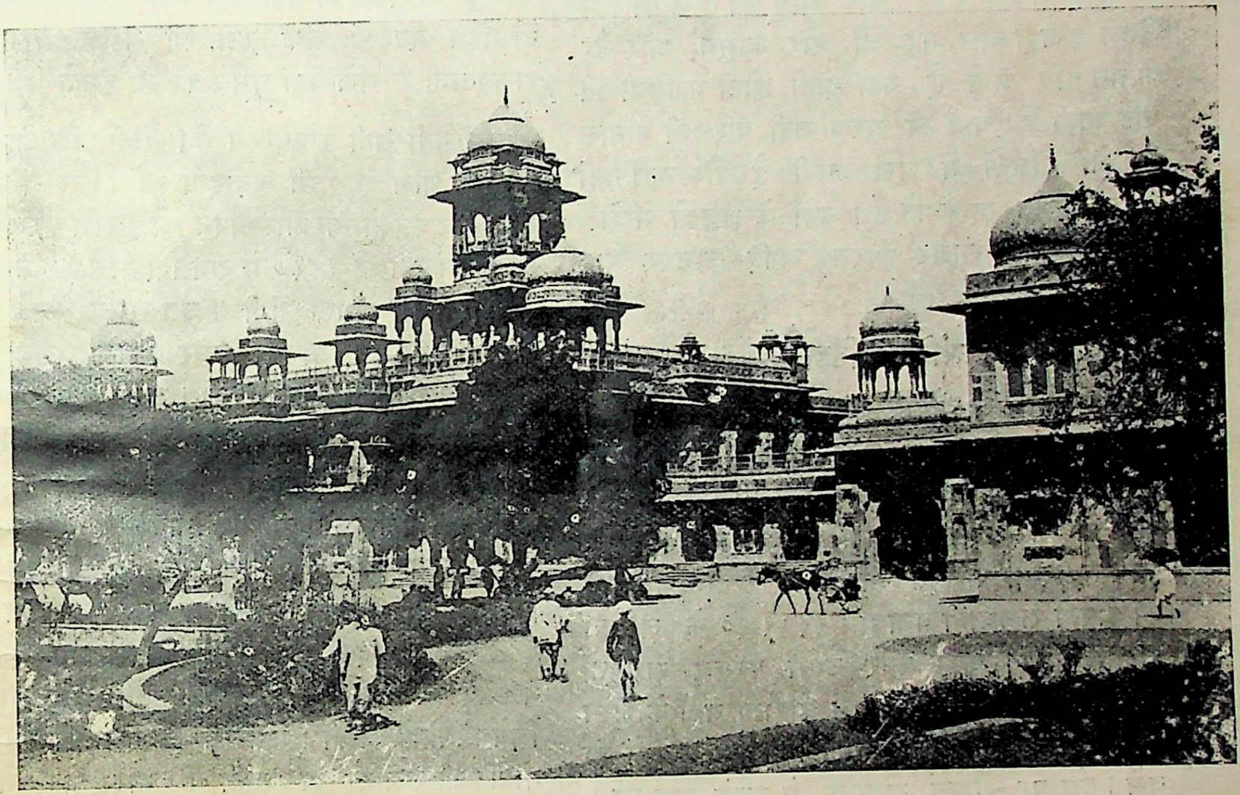


बीकानेर की एक ऊँटिनी सवार फौज

० इसका क्षेत्रफल २३९१७ वर्ग मील है। क्षेत्रफल की दृष्टि से बीकानेर का राजपूताने में दूसरा और समस्त भारत के देशी राज्यों में सातवां स्थान है। लेकिन यहां की जनसंख्या केवल ९,३६,००० है। इसमें ७७ फ़ी सदी हिन्दू, १५ फी सदी मुसलमान, ४ फी सदी सिक्ख और १३ फी सदी जैन हैं। बीकानेर शहर (आबादी ८६,०००) राजपूताने में तीसरे नम्बर का शहर है। इस, राज्य के दक्षिणी भाग में समतल मटियार है। शेष भाग में रेतीला रेगिस्तान है। इस राज्य में औसत से सालभर में

केवल १२ इंच वर्षा होती है। कुओं में पानी १५० से ३०० फुट तक की गहराई पर मिलता है।

यहां के महाराजा राठौर राजपूत हैं। इस राज्य की स्थापना १४६५ ई० में जोधपुर महाराज जोध जी के ज्येष्ठ पुत्र बीका जी ने की थी। इसी से राज्य और राजधानी का नाम जोधपुर पड़ा। यहां के राजा मुगल सम्राट अकबर की सेना के प्रसिद्ध सेना नायक थे। १६८७ में इन्होंने मुगलों के लिये गोलकुंडा जीता तभी इन्हें महाराज की उपाधि मिली। गदर के समय में बीकानेर राज्य ने अँग्रेजों की बड़ी सहायता की १९१४ की बड़ी लड़ाई में बीकानेर के महाराज ने इस से भी अधिक सहायता की। इस राज्य की। आमदनी सवा करोड़ रु० से अधिक है। १९२७ में सतलज नदी से गंगा नहर के निकालने से सवा छः लाख एकड़ जमीन सींची जाने लगी है। बीकानेर शहर से १४ मील दक्षिण की ओर कोयले की एक खान का पता लगा है। ०



बीकानेर का सेक्रेटेरियट

सिरोही

इस राज्य का अधिकतर भाग पहाड़ी है। आबू पर्वत ५,६५० फुट ऊँचा है। यहां के राजा चौहान वंशी देउरा राजपूत हैं। इसी वंश के राजा किसी समय में दिल्ली में राज्य करते थे। वर्तमान सिरोही नगर १४२५ ई० में बसाया गया। जोधपुर और सिरोही की लड़ाई में राज्य को बड़ा धक्का पहुँचा। जंगली मीना लोगों ने भी इस राज्य को बहुत उजाड़ा। १८२९ ई० में ब्रिटिश सरकार के हस्तक्षेप से जोधपुर राज्य की यहां से प्रधानता उठ गई। इस राज्य का क्षेत्रफल २,००० वर्गमील, जनसंख्या २,२४,००० और आमदनी साढ़े दस लाख रुपया है।

इस राज्य के उत्तर में मारवाड़ या जोधपुर है,

दक्षिण में पालनपुर और ईदर और दाँता के मही-कांत राज्य हैं। पूर्व में मेवाड़ या उदयपुर और पश्चिम में जोधपुर राज्य है।

आबू पर्वत राज्य में दक्षिण-पश्चिम से उत्तर पूर्व तक फैला हुआ है और राज्य को लगभग दो बराबर भागों में बाँट देता है। पश्चिमी भाग अधिक खुला और बराबर है। यह भाग अधिक बसा है और यहाँ की भूमि भी अधिक उपजाऊ है। राज्य में बहुत से छोटे छोटे नदी नाले पाए जाते हैं। अरावली पर्वत के निचले ढाल और आबू पर्वत के ढाल में जंगल है जहां बाँस, तेंदू, धौ, खैर, जामुन, और बैर के बन पाए जाते हैं। यहाँ छोटी छोटी झाड़ियाँ भी पाई जाती हैं। यहाँ की मुख्य नदी पश्चिमी बानास है। जो गर्मियों में सूख जाती है और जहाँ तहाँ केवल तालाब रह जाते हैं। यहाँ के जङ्गलों में शेर, रीछ, तेंदुआ, साभर, हिरन आदि जानवर पाए जाते हैं।

संक्षिप्त इतिहास

वर्तमान राजे चौहान वंश के देवरा राजपूत हैं। यह लोग पृथ्वीराज के वंशज देवराज के वंश के हैं। इस राज्य के प्राचीन निवासी भील हैं। उसके बाद गिदलोरा राजपूत यहाँ आकर बसे। इसके पश्चात् परमार राजपूत आए और उन्होंने चन्द्रवती को अपनी राजधानी बनाया। ११५२ ई० के लगभग चौहान यहां आए और उनसे परमार राजपूतों से बड़ी लड़ाई हुई। अंत में चौहान यहाँ के राजा हुए। परमार लोग हार कर आबू के किलों में जा बसे। इस पर चौहान राजपूतों ने उनके साथ चाल-बाजी की और कहा कि वे अपनी पुत्रियों का ब्याह उनके यहाँ करदें। परमार इसपर राज़ी हो गए। वे १२ लड़कियों का डोला लेकर नीचे आए किन्तु चौहान उनपर टूट पड़े और अधिकांश को मारडाला और आबू पर अपना अधिकार जमाया अब तक बचे हुये परमार वहीं आबू पर रहते हैं अपनी पुत्रियों को पर्वत के नीचे नहीं आने देते।

लगभग १४२५ ई० में जब सेन्समल राज्य करता था तो उस समय राना कुम्भ जी चित्तौड़ के मुगल बादशाह के यहां से भाग कर आए और राजा से आज्ञा लेकर आबू पर्वत पर अचलगढ़ नामक किले में जा छिपे। जब मुगल सेना चली गई तो सेन्समल ने राजा को कहला भेजा कि वह अपने राज्य में चला जाय। किन्तु राजा ने उसे सुरक्षित जान कर छोड़ने से इनकार किया। अन्त में राजा सेना द्वारा निकाला गया किन्तु उसी समय से १८३६ तक फिर कोई भी राजा वहाँ जाने नहीं पाया। १८३६ में कर्नल स्पर्स एजेन्ट के समय में महाराजा जीवन सिंह उदयपुर के राजा को वहां तीर्थ मात्र करने की आज्ञा दी गई। तब से रोक उठा ली गई है और अब राजपूताना के राजे वहां घूमने को जा सकते हैं।

उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में सिरोही और जोधपुर राज्य के बीच बहुत सी लड़ाइयां हुईं। सिरोही राज्य बहुत ही दुर्बल होगया और अपने को सुरक्षित रखने के लायक न रहा तो १८१७ में राव शिव सिंह ने ब्रिटिश सरकार से सहायता मांगी। उस समय कर्नल टाड एजेन्ट था उसने जोधपुर और सिरोही राज्यों के इतिहास की अच्छी खोज की। उसके बाद सिरोही को जोधपुर की परतंत्रता से अलग किया। १८२३ ई० में एक संधि सिरोही राज्य और ब्रिटिश सरकार के बीच हुई। जिसके बाद सारे झगड़े शांत हो गए। १८५७ के ग़दर में राव शिव सिंह ने अँग्रेजों का अच्छा साथ दिया। उसके बदले में कर घटा कर ६८८ पौंड कर दिया गया। १८४५ में सिरोही महाराज ने आबू पर्वत पर कुछ भूमि सैनिटोरियम बनाने के लिये अँग्रेजों को दी। महाराज केशरी सिंह को १५ तोपों की सलामी दी जाती है और गोद लेने की सनद प्राप्त है।

राज्य में खरीफ और रबी दो फसलें होती हैं। खरीफ में बाजरा, मूँग, उर्द, तिल, मोथी, कुलथी, कपास, सन आदि उगाए जाते हैं। रबी में जौ, गेहूँ, चना, सरसों, अलसी इत्यादि पैदा होते हैं।

राज्य की आय १०,०२,००० रु० सालाना है।

वर्तमान नरेश हिज हाईनेस महाराजाधिराज महाराव सर सरूपराम सिंह बहादुर जी० सी० आई० ई० के० सी० एस० आई० हैं।

बांसवाड़ा

राजपूताना का अत्यन्त दक्षिणी राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल १९४६ बर्गमील और जनसंख्या २,६१,००० है। यहां का राजवंश उदयपुर राजवंश की ही एक शाखा है। जहां इस समय बांसवाड़ा नगर है वहां पहले एक बड़ा भील पाल या भीलों का उपनिवेश था। वर्षा के बाद यहाँ का दृश्य बड़ा सुन्दर हो जाता है। माही, आनास, एरन, चाप और हास यहाँ की छोटी छोटी नदियाँ हैं। पहले बांस की अधिकता होने से इस राज्य का नाम बांसवाड़ा पड़ा। कहते हैं कि मरहठों से छुटकारा पाने के लिये यहां के महारावल ने १८१८ ई० में अँग्रेजों की स्वाधीनता स्वीकार कर ली। इस राज्य की आय लगभग ७ लाख रुपया है।

डूंगरपुर

राजवंश भी उदयपुर सेसोदिया राजवंश की एक शाखा है। तेरहवीं सदी में इस राज्य की नींव पड़ी। १८१८ ई० में यहां के राजा ने अँग्रेजों से सन्धि कर ली। यह प्रदेश प्रायः पहाड़ी है। यहाँ के भीलों को दबाने के लिये आरम्भ में अँग्रेज़ी फौज ने तरह तरह की सख्तियाँ की। इस राज्य में होकर एक भी रेलवे लाइन नहीं जाती है। सबसे पास का रेलवे स्टेशन उदयपुर है। यह भी डूंगरपुर से ६५ मील दूर है। अहमदाबाद की ओर वाला निकटतम स्टेशन तलोद है। यह सत्तर मील दूर है। इस राज्य का क्षेत्रफल १४६० वर्गमील, जनसंख्या २,२८,००० और आमदनी ८ लाख रुपया है।

प्रतावगढ़

प्रतावगढ़ को कन्थल भी कहते हैं। सोलहवीं सदी में मेवाड़ के राना के एक वंशज ने इस राज्य की नींव डाली थी। १६९८ ई० में श्री प्रतापसिंह ने प्रतापगढ़ नगर बसाया। पहले यह राज्य दिल्ली को कर देता था। कुछ दिनों तक स्वतंत्र रहा। फिर होलकर महाराज को ७५,००० रु० कर देना पड़ा। यह रुपया यहीं की टकसाल में बनता था और पड़ोस के राज्यों में भी चलता था। इस राज्य ने पहली बार १८०४ ई० में अँग्रेजों से सन्धि की। लेकिन लार्ड कार्नवालिस ने इसे रद्द कर दिया। दूसरी बार १८१८ ई० में सन्धि हुई। जो कर होलकर महाराज को राज्य से मिलता था वह ब्रिटिश सरकार को मिलने लगा। १९०४ ई० से यह कर सरकारी रुपयों में ३६,००० रु० कर दिया गया। इस राज्य का क्षेत्रफल ८८९ वर्ग मील, जनसंख्या ७७,००० और आमदनी साढ़े पांच लाख रुपया है।

कुशलगढ़

यह मेवाड़ रेज़ीडेन्सी का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३४० वर्गमील और जनसंख्या ३५,५६४ है। इस राज्य की सालाना आय १,०२,६०० रुपया सालाना है। इस राज्य के वर्तमान शासक राव रणजीतसिंह हैं।

अलवर

यह पूर्वी राजपूताना में एक पहाड़ी राज्य है। यहां के राजा सूर्यवंशी हैं। और श्रीरामचन्द्र जी के ज्येष्ठ पुत्र कुश के वंशज कहे जाते हैं। राजा उदय करन जी जैपुर और अलवर दोनों ही राजवंशों के पूर्वज थे। १७९१ में मरने से पहले राजा प्रताप सिंह जी ने इस राज्य को बहुत कुछ बढ़ाया। उनके उत्तराधिकारी ने सन् १८०३ ई० में लार्ड लेक की बड़ी सहायता की। १९०० में अलवर की फौज चीन में लड़ने गई। बड़ी लड़ाई के समय में भी इस राज्य ने ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा के लिये बहुत से रंगरूट भरती किये। १९१९ में अफ़ग़ानिस्तान और सीमाप्रान्त की लड़ाई में फिर यहां की फौज लड़ने गई। अलवर का क्षेत्रफल ३१५८ वर्गमील और जन-संख्या ७,५०,००० है। इसकी आमदनी २२ लाख रु० है।

इसके उत्तर में गुरगाँव का जिला, नाभा राज्य का बावल परगना और जयपुर राज्य का कोट कासिम का परगना है। पूरब में भरतपुर राज्य व गुरगाँव का जिला है, दक्षिण और पश्चिम में जैपुर राज्य है।

यहाँ की मुख्य जाति "मेओ" है। राजपूत यद्यपि राज्य करने वाली जाति है तो भी यह जाति सारी जनसंख्या का बीसवाँ भाग है।

राज्य के भीतर समानान्तर पहाड़ी श्रेणियाँ उत्तर से दक्षिण को फैली हुई हैं। साबी, रूपरेल, चुहरसिद्ध और लिन्दवा नदियाँ हैं। साबी में अलवर के समीप रेल का सुन्दर पुल है।

राज्य में स्लेट, सँगमरमर, स्लेट के रंग का बलुवा पत्थर, काले और लाल पत्थर, लोहा, ताँबा, सीसा और पोटाश आदि वस्तुएँ पहाड़ियों पर अलवर के समीप ही पाई जाती हैं। राज्य में प्रत्येक भाँति के शिकार मौजूद हैं।

पहले यह एक छोटा सा ताल्लुका था और जैपुर तथा भरतपुर राज्यों के अधीन था। वर्तमान घराने की नींव डालने वाला प्रतापसिंह नरूका राजपूत था। जिसके पास पहले पहल केवल ढाई गाँव थे जिनमें मचेरी गाँव भी था। १७७१ और १७७६ के बीच जब मुग़ल, मरहठे, और जाट आपस में लड़ रहे थे और जैपुर का राजा बालक था तो यहाँ के सर्दार ने स्वतन्त्रता प्राप्त की और वर्तमान राज्य के दक्षिणी भाग पर अधिकार जमाया। १७७६ में भरतपुर के राजा को दुर्बल जान यहाँ के राव राजा ने अलवर नगर और क़िलों पर कब्ज़ा जमाया। इस राजा के मरने पर बख्तावर सिंह राजा हुआ। बख्तावर के समय में अलवर राज्य पर मरहठों ने आक्रमण किया और राज्य को बर्बाद किया इसलिये १८०३ से १८०६ तक मरहठा युद्ध के समय में अलवर के राजा ने मरहठों के विरुद्ध अँग्रेज़ों का साथ दिया। लासवाड़ी नामक स्थान पर अलवर से १७ मील की दूरी पर युद्ध हुआ जहां सिन्धिया की सेना को लार्ड लेक ने भली भांति बर्बाद कर दिया। इसके पश्चात् अँग्रेज़ सरकार ने वर्तमान अलवर का उत्तरी भाग बख्तावर को इनाम के तौर पर दिया जिससे राज्य की आय ७ लाख से १० लाख हो गई।

१८०३ ई० में अलवर के राजा ने अँग्रेज़ सरकार से संधि की जिसके अनुसार यह तै हुआ कि अलवर राज्य अँग्रेज़ सरकार को कुछ कर न देगा वरन् जब कभी भी अँग्रेज़ों को आवश्यकता होगी तो अलवर राज्य अँग्रेज़ी सेना का साथ देगा। १८१ में फिर एक दूसरी संधि हुई जिससे अलवर राज को साफ़ २ मना कर दिया गया कि वह दूसरे राज्य के विरुद्ध कोई कार्रवाई न करें। किन्तु फिर भी १८१२ में अलवर ने धोबी और सिकवारा दो क़िले जो जैपुर के थे ले लिये। अँग्रेज़ों ने मना किया किन्तु अलवर राज्य के न मानने पर सेना भेजी गई जिसके पहुँचने पर राजा ने क़िलों को वापस दे दिया। बख्तावर के मरने पर बेनीसिंह और बलवन्त सिं दो हक़दार हुये और राजगद्दी के बारे में झगड़ा हुआ किन्तु १८४५ में बलवन्त सिंह का औलाद मरा और बेनी सिंह भी १८५७ में मर गया।

बेनी सिंह के बाद सिउदान सिंह गद्दी पर बैठे इनके समय में राज्य में बड़ी गड़बड़ी रही। १८ में सिउदान की मृत्यु हो गई और कोई राज्य क

अधिकारी न रहा तो अँग्रेज़ सरकार ने नरूक वंश के १ बारा कोतरियों में से मंगल सिंह नामी थान्ना वंश के ठाकुर को चुना।

० अलवर राज्य के राजे महाराव राजे कहलाते हैं। और उन्हें गोद लेने का अधिकार है। १८६६ के संधि के अनुसार अँग्रेज़ी सिक्का राज्य में चलने लगा। राजा ने रेलवे के लिये बिना मूल्य के जगह दे दी। और उसके इन्तज़ाम का भी अधिकार अँग्रेज़ों को दे दिया। देहली ब्रांच–राजपूताना स्टेट रेलवे राज्य को दो भागों में बांट देती है। और आगरा-जैपूर लाइन से बुदकुई नामक जङ्क्शन पर मिलती है। राज्य के अन्दर विलायती और चूहर सिद्ध के मेले प्रसिद्ध हैं।

राज्य, तिजारा, किशनगढ़, मन्दावर, बहरोर, गोबिन्दगढ़, रामगढ़, अलवर, बनसूर, कतुम्बर, लक्ष्मणगढ़, राजगढ़, थाना गाजी, बल्देवगढ़ और प्रतापगढ़ नामी चौदह तहसीलों में बँटा है। राज्य की आधी भूमि में खेती होती है। बाजरा, ज्वार, जौ, गेहूँ, चना, कपास, दाल, तिलहन, तम्बाकू, ऊख अफीम आदि की पैदावार होती है।

राज्य की सालाना आय लगभग ३७,५०,००० रु० है और व्यय ३०,७९,००० रु० है। राजा एक काउन्सिल की सलाह से राज्य करता है। राजा किसी प्रकार का कर किसी को नहीं देता। राज्य के भीतर बहुत से स्कूल और औषधालय हैं।

राजा के पास १८०० सवार, ४७५० पैदल, १० युद्ध क्षेत्र वाली और २९० दूसरी बन्दूकें हैं। ३६९ व्यक्ति बन्दूक व तोप चलाने वाले हैं।

बर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस महाराजा श्री सवाई तेज सिंह जी बहादुर महाराजा अलवर हैं।

****

जयपुर राज्य

जयपुर का राजपूताना में चौथा स्थान है। इस राज्य के उत्तर में बीकानेर, लोहारू, झाजर और पटियाला राज्य, पूरब में अलवर, भरतपुर और करौली राज्य, दक्षिण में ग्वालियर, बूंदी, टोंक और मेवाड़ और पश्चिम में किशनगढ़, जोधपुर, और बीकानेर राज्य हैं। इस राज्य का क्षेत्रफल १५,५९० वर्ग मील है और जनसंख्या २६,३१,७७५ है।

राज्य में पहाड़ी श्रेणियां फैली हैं। बीच में त्रिभुजाकार बराबर पठार है। यह पठार समुद्रतल से १४०० से १६०० फीट तक ऊँचा है। यह पठार बनास नदी की ओर क्रमशः ढालू है। जैपुर राज्य के पानी का बहाव पूर्व की ओर है। बनास, बान गंगा, अमानिशाह, गम्भीर, बोंदी, मोरेल आदि नदियाँ हैं। जैपुर नगर में अमानिशाह नदी से पानी जाता है। राज्य में छोटे छोटे बहुत से जंगल हैं। जिनकी लकड़ी जलाने के काम आती है। यहाँ बाजरा, मूंग, मोथी, ज्वार, तिल, दाल, इत्यादि वस्तुयें पैदा होती हैं। सिंचाई का इन्तिजाम किया जा रहा है। प्रत्येक वर्ष ७५,००० रु० खेती की उन्नति पर खर्च किया जाता है। सन् १८८२-८५ में राज्य ने ३,८०,००० रु० सिंचाई की उन्नति के लिए खर्च किया। उसी साल राज्य को २,२०,००० रु० सिंचाई से मिला।

राजधानी में एक टकसाल है जहां से सोने की मुहरें, रुपये और तांबे के सिक्के ढाले जाते हैं।

जयपुर अति प्राचीन समय में मत्स्य राज्य था। यहीं राजा विराट राज्य करते थे। महाराज जयपुर कछवाहा राजपूत हैं। यह लाग राम की सन्तान हैं। ९६७ ई० में धोलाराव ने इस राज्य की नींव डाली। १७२८ ई० तक इस राज्य की राजधानी अम्बर रहा। १७२८ ई० में जैसिंह द्वितीय ने अम्बर को बदल कर जैपुर या धूंदर को राजधानी बनाया। मुगल राजों के समय में जैपुर राज्य ने बड़ी उन्नति की और इस घराने में बड़े बड़े राणा पैदा हुये। इस समय बदारमा जैपुर का राजा था। राजपूत राजाओं में यह पहले राजा हैं जिन्होंने मुसलमान राजा को कर दिया। बदारमा के पुत्र भगवानदास थे। ये सबसे पहले राजपूत हैं जिन्होंने मुसलमान राजाओं से शादी कर के राजपूत स्वच्छता पर दाग लगाया। इन्होंने

अपनी पुत्री का ब्याह महाराज अकबर के पुत्र सलीम से किया। बाद में वह जहांगीर के नाम से गद्दी पर बैठा।

० भगवानदास के पुत्र मान सिंह थे। यह मुगल सेना में एक बड़े जनरल के पदपर थे। उड़ीसा, बंगाल, आसाम आदि स्थानों पर मानसिंह लड़ाई पर गये। उथल पुथल और क्रांति के समय मानसिंह काबुल के गवर्नर रहे। मानसिंह के भतीजे उदयसिंह जो मिर्ज़ा राजा के नाम से प्रसिद्ध हैं औरंगजेब के साथ लड़ाई पर गये। जैसिंह ही ने शिवाजी को पकड़ा था। अन्त में जैसिंह की ताकत इतनी बढ़ी कि स्वयं औरंगजेब उससे भयभीत होने लगा। इसलिये औरंगजेब ने उसे जहर देकर मरवा दिया। इसके बाद तीन राजा और हुए फिर जैसिंह द्वितीय हुये जो विज्ञान में प्रसिद्ध हैं। १६१७ ई० में जयसिंह गद्दी पर बैठे। इन्होंने बहुत सी किताबें लिखी हैं। जैपुर, दिल्ली, बनारस, मथुरा और उज्जैन आदि स्थानों पर राजा ने वेधशालायें (आब्जरवेटरियाँ) बनवाईं। तारों की सूची (तीज मोहम्मदशाही) इन्हीं की बनवाई हुई है। जैसिंह ने अपनी राजधानी अम्बर से हटाकर जैपुर में कर दी।

कुछ समय बाद मुसलमान अधीनता से छुटकारा पाने के लिये जैपुर, उदयपुर और जोधपुर एक हो गये। उदयपुर घराने के साथ सम्बन्ध करने के लिये जैपुर और जोधपुर ने प्रतिज्ञा की कि उदयपुर की राजकुमारी से उत्पन्न हुआ पुत्र ही राजगद्दी पावेगा बड़ा लड़का नहीं। इस कारण जोधपुर और जैपुर दोनों ही को बहुत कष्ट उठाना पड़ा। मरहठे इस समय बड़ा उपद्रव कर रहे थे। इसलिये १८०३ में उनके विरुद्ध अँग्रेजों से मिलकर एक संस्था बनाई गई। लेकिन लार्ड कार्नवालिस ने इसे तोड़ दिया। इसी बीच में उदयपुर घराने की एक लड़की के ब्याह के सम्बन्ध में जैपुर और जोधपुर में झगड़ा हो गया इसी समय पिंडारी लोग बड़ी लूट मार कर रहे थे। १८१८ में जैपुर राज्य से और अँग्रेजों से संधि हो गई। जिससे जैपुर राज्य की रक्षा का भार अँग्रेजों पर आ गया।

जब १८५७ में ग़दर हुआ तो राजा ने अपनी सारी सेना अँग्रेज एजेन्ट की सहायता को दे दी और हर प्रकार से ब्रिटिश सरकार की मदद की। इसके बदले में राजा को कोट कासिम का परगना मिला और एक सनद मिली जिसके द्वारा गोद लेने का अधिकार राजा को प्राप्त हुआ। १८७७ में राजा को २१ बन्दूकों की सलामी की आज्ञा हुई। और स्टार आफ इण्डिया के आर्डर के नाइट ग्रैन्ड कमान्डर बनाये गये। सवाई राम सिंह की १८८० में मृत्यु हो गई और कासिम सिंह गद्दी पर बैठे। उन्होंने अपना नाम सवाई माधो सिंह रक्खा।

राज्य की आय १,४३,४१,००० रु० सालाना है। राज्य की लगभग १,०५,००,००० रु० की जायदाद जागीरों और धार्मिक कार्यों में फँसी है। ६,००,००० रु० सालाना अँग्रेजों को दिया जाता है।

राजा अपने राज्य के भीतर माल और फौजदारी दोनों मामलों में स्वतंत्र है। राज्य-शासन एक कौंसिल द्वारा होता है जिसमें ८ मेम्बर हैं। इस कौंसिल का अध्यक्ष राजा होता है। राज्य में ६५ बन्दूकें, ७१६ बन्दूकची, ३५७८ सवार और ९५९९ पैदल सिपाही हैं। राज्य के भीतर २९ किले हैं।

राज्य की जलवायु शुष्क और स्वास्थ्यप्रद है। शेखावटी में जाड़ों में बहुत जाड़ा पड़ता है। गर्मी के दिनों में गर्म हवा चलती है। किन्तु रात में ठंडक रहती है। राज्य की सालाना वर्षा २४ इंच है। जैपुर नगर राजपूताना में सब से बड़ा नगर है और व्यापार का केन्द्र है। जयपुर हिन्दू नगरों में सबसे अधिक सुन्दर और स्वच्छ है। इसके बसाने का ढंग बड़ा अच्छा है। नगर के तीन ओर पहाड़ हैं जिनकी चोटियों पर घने जंगल हैं। नगर के उत्तर-पश्चिम नाहरगढ़ का किला है। नगर के चारों ओर २० फुट ऊँची और ९ फुट मोटी पत्थर की दीवाल है। इस दीवाल में सात दरवाजे हैं।

वर्तमान नरेश कैप्टेन हिज हाईनेस सरमद-राजाहाय-हिन्दुस्तान राजा राजेन्द्र श्री महाराजाधिराज सर सवाई मान सिंह बहादुर जी० सी० आई० ई० हैं।

किशनगढ़

यह राज्य राजपूताना के प्रायः मध्य में स्थित है। यह दो पतली धारियों में बटा हुआ है। इस का क्षेत्रफल ८५८ वर्गमील है। इसकी जनसंख्या ८० हजार है। इसका उत्तरी भाग प्रायः रेतीला है। दक्षिणी भाग कुछ चपटा और उपजाऊ है। यहां के राजा राठौर राजपूत हैं। कहते हैं महाराज किशन सिंह ने १६११ ई० में किशनगढ़ नगर को बसाया था। इस राज्य की आय लगभग ८ लाख है।०

टोंक

टोंक का कुछ भाग राजपूताना और कुछ भाग मध्यभारत में स्थित है। इस राज्य में ६ परगना हैं जो एक दूसरे से अलग हैं। यहां के नवाब बोनेरवाल अफगानों के सालारजई खानदान के हैं। इस राज्य के संस्थापक पहले (१७९८-१८०६) होलकर महाराज की फौज में एक सैनिक थे। होलकर महाराज ने उनकी सेवाओं के बदले उन्हें कुछ जमीन दे दी। इसी से टोंक राज्य बना। टोंक राज्य का क्षेत्रफल २,६४० वर्ग मील, जनसंख्या ३,१८,००० और आमदनी २४,२५,००० रुपया है।

०यह राजपूताना में एक राज्य है। इस राज्य में ६ भाग टोंक, अलीगढ़-रामपुरा, निमभेरा, पिरवा, चापरा और सिरोंज सम्मिलित हैं।

मोहम्मदशाह गाजी के समय में तालखां ने अपने देश बोनर को छोड़ा और रोहेलखंड में अली मोहम्मद रोहेला सर्दार के यहां आकर नौकरी कर ली। उसके पुत्र हयातखाँ को मुरादाबाद में कुछ जमीन मिल गई। १७६८ में उसके एक पुत्र हुआ इसी पुत्र अमीर खाँ ने टोंक की नींव डाली। पहले यह एक छोटी सी सेना का सरदार था। किन्तु १७९८ में यह होलकर के यहां नौकर होगया और इस प्रकार एक बड़ी स्वतंत्र सेना का सरदार बन गया। होलकर के यहां नौकर होने के कारण अमीर खां को सिंधिया, पेशवा और ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध लड़ाइयां लड़नी पड़ीं। राजपूताने को भी इसने खूब लूटा। पहले इसको सिरोंज मिला फिर १८०६ में होलकर ने टोंक का राज्य दिया। उसी साल अमीरखां और राजा जैपुर से लड़ाई हुई। फिर जोधपुर के राजा से युद्ध हुआ। इस प्रकार दोनों राज्यों को बरबाद कर १८०३ में ४०,००० सेना लेकर नागपुर के राजा के मुकाबले को बढ़ा। रास्ते में उसे २५,००० पिंडारी सेना मिल गई। किन्तु ब्रिटिश सरकार की चेतावनी के कारण वापस आया और रास्ते में राजपूताने को लूटता आया।

१८१७ में मारकुईस आफ हेस्टिंग्ज ने राजपूताना व सी० पी० में शांति स्थापित करना चाहा और पिंडारियों का खातमा करना चाहा। इसलिये अमीर खाँ से कहा कि जो जगहें होलकर ने तुम्हे दी हैं उनको तुम लेलो किन्तु अपनी सेना कम कर दो। मुकाबले की ताकत न देख अमीर खाँ झुका। ४० बन्दूकें छोड़कर बाकी सारा सामान उसका खरीद लिया गया। अमीरखाँ के सैनिकों को ब्रिटिश सेना में जगह दी गई। रामपुरा का किला और अलीगढ़-रामपुरा का प्रान्त अमीर को अंग्रेजों ने इनाम के तौर पर दिया।

१८१४ में अमीरखां मर गया और उसका पुत्र वजीर मोहम्मद खां नवाब बना। १८६४ में उसका पुत्र मोहम्मद अली खां नवाब बना। किन्तु धोके बाजी के कारण निकाल दिया गया और उसका पुत्र मोहम्मद इब्राहीम अली खां नवाब बनाया गया। नवाब को लड़का न रहने पर मोहमडन पद्धति के अनुसार गद्दी देने का अधिकार सनद द्वारा दिया गया है। नवाब भारत सरकार को किसी प्रकार का कर नहीं देता। नवाब को १७ बन्दूकों की सलामी का हुकम है। राज्य की आय १८,३ ,००० रु० है। नवाब के पास ५२६ सवार २८८ पैदल १७५ बन्दूकची रणक्षेत्र की तोपों और ४५ दूसरी तोपों के रखने का अधिकार है। ०

राज्य की सालाना २४२४८३९ रु० है। वर्तमान नरेश हिज हाईनेस सय्यददौला वज़ीरुलमुल्क नवाब हफीज़ सर मोहम्मद सादत अली खां बहादुर सौलतजंग जी० सी० आई० ई० हैं।

✱✱✱✱

शाहपुरा राज्य

शाहपुरा के महाराज उदयपुर राज्य में स्थित ८० गांव के जागीरदार हैं। यह राज्य सन् १६२९ ई० में स्थापित हुआ। मुगल सम्राट शाहजहां ने कुछ परगने उदयपुर के महाराना अमरसिंह के दूसरे लड़के सूरजमल के लड़के को दे दिये। फिर कुछ परगने उदयपुर राज्य की ओर से मिल गये। इस प्रकार शाहपुरा का राज्य बना। इस राज्य का क्षेत्रफल ४२५ वर्गमील है, जनसंख्या ५७,००० है। इसकी आमदनी ४ लाख रुपया है। यह राज्य १०००० रु० ब्रिटिश सरकार को और ३००० रु० उदयपुर राज्य को कर देता है। यहां के राजा को ९ तोपों की सलामी मिलती है।

✱✱✱✱

जैसलमेर

जैसलमेर राजपूताना में एक देशी राज्य है। इस राज्य की अधिक से अधिक लम्बाई १७२ मील और चौड़ाई १२६ मील है। यहां का क्षेत्रफल १६०६२ वर्ग मील है। जनसंख्या ७६२७६ है। जैसलमेर के उत्तर में भावलपुर पूर्व में बीकानेर तथा जोधपुर, दक्षिण में जोधपुर और सिन्ध और पश्चिम में खैरपुर और सिन्ध हैं।

जैसलमेर राजपूताने के बड़े रेगिस्तान का एक भाग है। जैसलमेर शहर के चारों ओर पथरीली जमीन है। बाकी तमाम राज्य में रेगिस्तान है। यहाँ बालू की बड़ी बड़ी पहाड़ियां हैं जो १५० फुट तक ऊँची हैं। इन बालू की पहाड़ियों पर पश्चिमी भाग में कुछ झाड़ियाँ हैं और पूर्वी भाग में लम्बी लम्बी घास है। गांव बहुत दूर दूर पर बसे हैं। नाह, बीकमपुर, बिरसिलपुर आदि गांवों में बालू की पहाड़ियों के मध्य में यदि ऋतु अच्छी हुई तो ज्वार और बाजरा बोया जाता है। राज्य में पानी का बड़ा भारी कष्ट है। २५० फुट के ऊपर पानी नहीं निकलता। कुओं की गहराई कहीं कहीं ४९० फुट है। जहां तक होता है वर्षा का पानी पीने के काम आता है। कोई बड़ी नदी नहीं है जिसका पानी लोग प्रयाग कर सकें। केवल एक काकनी नदी है जो मोज झील बनाती है।

जैसलमेर की जलवायु शुष्क और स्वास्थ्यदायक है। मई और जून में लू (गर्म हवा) का प्रकोप होता है और बहुत अधिक गरमो पड़ती है। वर्षा होते ही गर्मी शान्त हो जाती है। सब से ज्यादा सर्दी आधे दिसम्बर से फरवरी तक पड़ती है। जून और जुलाई और अगस्त में वर्षा होती है। वर्षा होने पर बालू की पहाड़ियां ऊँटों के हलों से जोती जाती हैं और बाजरा, ज्वार, मोथी, तिल इत्यादि बोए जाते हैं। कहीं कहीं गेहूँ, जौ और चना भी थोड़ा थोड़ा पैदा होता है। लगान अनाज के रूप में लिया जाता है। गेहूँ, जौ का पांचवां या छठाँ भाग और ज्वार बाजरे का सातवें से ग्यारहवें भाग तक लिया जाता है।

जैसलमेर में ऊन, घी, ऊँट, जानवर, भेड़ आदि का व्यवसाय होता है।

० जैसलमेर के अधिकांश निवासी यादव वंशी राजपूत हैं। यह जाति इराडोसिथियन की शाखा है। भट्टी लोग पहले पहल पञ्जाब में आकर ठहरे। लेकिन जब यवनों ने इन्हें भगाया तो राजपूताना में आकर बसे। देवरावल की नींव देवराज ने डाली। यही वर्तमान शासक के पितामह माने जाते हैं। ११५६ में देवराज ने पहले पहल रावल की पदवी ग्रहण की। देवराज के बाद छठीं पीढ़ी में जैसल हुए जिन्होंने

किया। जैसलमेर के क़िले और नगर की नींव डाली। १२९४ ई० में अलाउद्दीन ने राज्य पर आक्रमण किया और राज्य को बर्बाद कर डाला। रावल सबल सिंह ने पहले पहल शाहजहाँ की पराधीनता स्वीकार की और अपने वंश के पहले राजा थे जो देहली राज्य के अधीन रहे। इस समय जैसलमेर राज्य ने अच्छी उन्नति की। दूर मरु प्रदेश में स्थित होने के कारण यहाँ मरहठों के आक्रमण नहीं हुए।

रावल मूलराज जैसलमेर के पहले सरदार थे जिनसे ब्रिटिश सरकार से सन्धि हुई। यह सन्धि सन १८१८ में हुई। इसके अनुसार राजा को गोद लेने का अधिकार मिला और राज्य की रक्षा का भार अँग्रेज़ सरकार पर हो गया। मूलराज के पश्चात् गजसिंह गद्दी पर बैठे। उनकी मृत्यु के बाद उनकी रानी ने उनके भतीजे रंजीत सिंह को १८६४ में गोद लिया। राजा को महारावल कहते हैं और वह भाटियों का सरदार है। राजा, दीवान और हाकिमों की सहायता से शासन करता है। राजा के पास ५०० सवार और ४०० पैदल सिपाही हैं। सवार लोग ऊँट का भी प्रयोग करते हैं। यह ऊँट यहां बड़े काम की चीज है रेगिस्तान में सवारी और बोझा ढोने दोनों के काम आता है। राज्य की सालाना आय ३६६६१४ रु० है। क्षेत्रफल को देखते हुए आय बहुत कम है। इसके दो मुख्य कारण हैं—(१) देश बड़ा ही गरीब है। (२) अधिकतर लोग जागीरदार हैं जो राना के घराने के हैं।

वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस महाराजाधिराज महारावल सर जवाहिर सिंह बहादुर के० सी० एस० आई० हैं।

पालनपुर

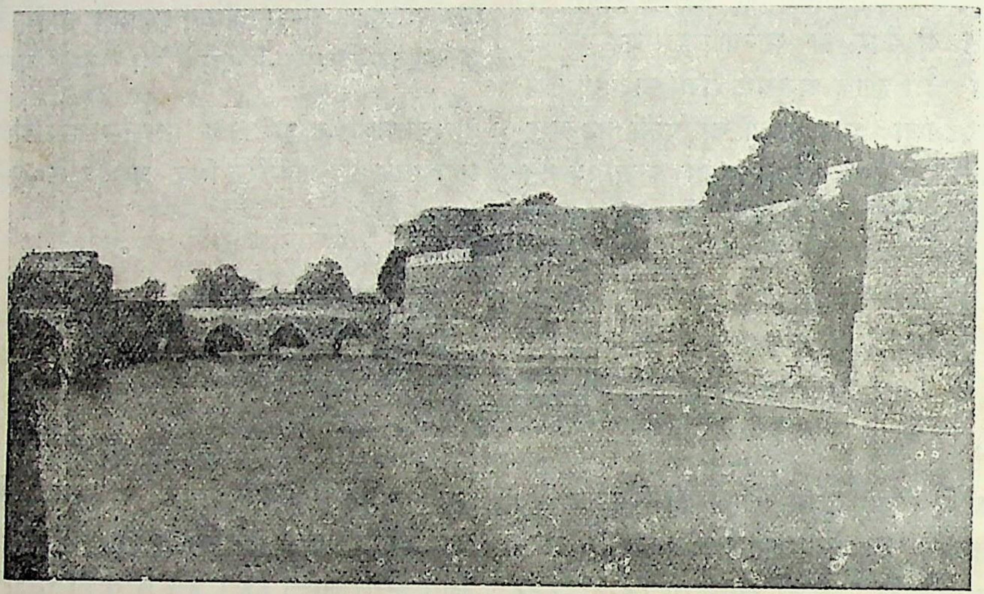
गुजरात में एक प्रथम श्रेणी की रियासत है। इसका क्षेत्रफल १७७४ वर्गमील है। इसकी जनसंख्या २,६५,००० है। इसकी आमदनी ११,६५,००० रुपया है। यहां के नवाब लोहानी वंश के नवाब हैं। हुमायूं के समय में (१४वीं सदी में) इस रियासत की स्थापना हुई। अकबर ने यहां के शासक को दीवान की पदवी दी थी। १८१७ ई० में ब्रिटिश सरकार के साथ इससे सन्धि हुई। इस रियासत में कपड़ा, गेहूँ, चमड़ा, तिलहन, घी और ऊन का बहुत कारबार होता है। यहां के राजा को १७ तोपों की सलामी मिलती है।

बूँदी

यह राजपूताना के दक्षिण-पूर्व में एक पहाड़ी राज्य है। यहां के राजा चौहान-राजपूत हैं। यह राज्य तेरहवीं सदी में स्थापित हुआ। इसके कुछ ही समय बाद मालवा और मेवाड़ से इस राज्य का झगड़ा आरम्भ हुआ। सोलहवीं सदी में यह दिल्ली के मुसलमान सम्राटों से मिल गया। आगे चलकर यहां मुग़लों और मरहठों के हमले हुये। १८१८ में इस राज्य ने ब्रिटिश सरकार से सन्धि कर ली। इस राज्य का क्षेत्रफल २,२२० वर्गमील और जनसंख्या २,२५,००० है। इसकी आय ६ लाख रुपया है। यहां के नवाब को १७ तोपों की सलामी मिलती है।

भरतपुर

राज्य की अधिकतर ज़मीन नदियों की लाई हुई काँप की मिट्टी से बनी है। इसे बान गंगा और दूसरी नदियों ने बनाया है। इस राज्य का क्षेत्रफल १६७० वर्गमील और जनसंख्या ४,८०,००० है। यहां के राजा जाट हैं। इस राज्य की स्थापना ग्यारहवीं सदी में हुई। राजपूताना में यह पहला राज्य है जिस ने सब से पहले अंग्रेज़ों की सहायता की। १८०२ ई० में यहां के ५००० घुड़सवारों की सहायता से लार्ड लेक को लसवारी और आगरा की लड़ाइयों में विजय हुई थी। इस से मराहठों की शक्ति कम हो गई और अँग्रेज़ी राज्य की जड़ जम गई। इसके बदले में अंग्रेज़ों ने पांच ज़िले भरतपुर को दे दिये। लेकिन १८०४ ई० में भरतपुर के राजा ने होलकर की सहायता की। १८०५ ई० में अंग्रेज़ों ने भरतपुर का घेरा डाला। इसमें उन्हें सफलता न मिली। लेकिन दोनों के बीच मित्रता की सन्धि हो गई जो अब तक चली आती है। गदर के समय में फिर भरतपुर के राजा ने अँग्रेज़ों की सहायता की। बड़ी लड़ाई में भरतपुर की सेना ने पूर्वी अफ्रीका और दूसरे युद्धस्थलों में ब्रिटेन की सहायता की। भरतपुर के महाराज सर किशन सिंह जी राष्ट्रीय विचारों के थे। उन्हों ने अपने यहां अखिल भारतीय हिन्दीसाहित्यसम्मेलन को निमन्त्रण दे कर बुलाया। सम्भवतः उनके विचार ब्रिटिश सरकार को खटकने लगे। उनके साथ कड़ा व्यवहार किया गया। १९२९ के मार्च महीने में उनकी अकाल मृत्यु हुई। इस समय उनके सुपुत्र सवाई बृजेन्द्रसिंह जी भरतपुर के महाराज हैं। इस राज्य की आमदनी ३५ लाख रुपया है।



भरतपुर का क़िला

✱✱✱✱

धौलपुर

धौलपुर के महाराजा बमरौलिया जाट हैं। इनके पूर्वज ग्वालियर के पास आ कर बस गये। यहां उन्होंने मुगलों की लड़ाई में राजपूतों का साथ दिया। पानीपत की लड़ाई में जब मराहठों की हार हुई तो इन्होंने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया। आगे चलकर यह उनसे छिन गया। १७७९ ई० में यहां के

राना ने मराहठों को रोकने के लिये अँग्रेजों से सन्धि कर ली १७८१ में धौलपुर और अंग्रेजों की फौज ने मिलकर ग्वालियर फिर जीत लिया। लेकिन गोहद और ग्वालियर अन्त में १८०५ ई० में सिन्धिया महाराज को लौटा दिये गये। धौलपुर बारी, बसेरू, सिपाऊ और राजखेड़ा धौलपुर के महाराज राना धौलपुर को मिल गये। धौलपुर का क्षेत्रफल १२२१ वर्गमील और जनसंख्या २,५५,००० है। यहां की आमदनी १७,७०,००० रु० है। यहां के महाराज राना को १७ तोपों की सलामी मिलती है।

झालावार

यह राज्य राजपूताना के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। इसके दो भिन्न भिन्न भाग हैं। इसका क्षेत्रफल ८१३ वर्गमील और जनसंख्या १,०८,००० है। इसकी आमदनी ८ लाख है। यहां के राजा झाला राजपूत हैं।

करौली

चम्बल नदी इस राज्य की दक्षिणी-पूर्वी सीमा बनाती है और इसे ग्वालियर राज्य से अलग करती है। करौली राज्य के दक्षिण-पश्चिम में जैपुर राज्य है। इसके उत्तर-पूर्व में भरतपुर, धौलपुर और जैपुर राज्य हैं। इस का क्षेत्रफल १२४२ वर्ग मील और जनसंख्या १,४१,००० है। गेहूँ, जौ, चना, तम्बाकू, यहां की प्रधान उपज है। इसकी आमदनी ६ लाख रु० है। यहां के महाराजा को १७ तोपों की सलामी दी जाती है।

यहाँ ऊँची नीची पठारी भूमि को "डाँग" कहते हैं। यहाँ की मुख्य पहाड़ियाँ उत्तरी सरहद पर हैं जो समुद्र तल से १४०० फुट ऊँची हैं। चम्बल नदी कहीं तो गहरी और मन्दवाहिनी है और कहीं पहाड़ी प्रदेश में बहुत तेज़ बहती है। पंचनद, कालीसूर, दानगिर जिरोता आदि दूसरी नदियाँ हैं। गरमी के दिनों में चम्बल नदी की घाटी को जलवायु खराब हो जाती है। इसलिये यहां के निवासी अपने जानवरों के साथ चम्बल नदी के तट पर चले जाते हैं। चम्बल का पानी अच्छा नहीं है। विन्ध्या को श्रेणियाँ कैमूर और रेखा है। विन्ध्या की श्रेणियों में मकान बनाने के अच्छे पत्थर मिलते हैं। फतेहपुर सीकरी और आगरा के ताजमहल का कुछ भाग यहां के भांड़ेर पत्थर का ही बना है। चम्बल नदी के ऊपर जङ्गल हैं जहाँ ढाक, गरजन, साल, नीम, धाव आदि पेड़ पाये जाते हैं। यहाँ के जङ्गलों में नीलगाय, शेर, रीछ, साँभर, हिरन आदि पाये जाते हैं। इस राज्य की भूमि हलकी है। केवल चम्बल के तट की भूमि अच्छी है। यहाँ धान की ही मुख्य पैदावार है। वहीं बाजरा और ज्वार की भी अच्छी खेती होती है। करौली नगर के समीप भाँग और गाँजा काफ़ी मात्रा में पैदा होती हैं। जब बड़े तालाब सूख कर उथले हो जाते हैं तब उनमें धान लगा दिया जाता है। यहाँ का मुख्य व्यवसाय खेती है। रंगरेजी, सँगतराशी, लकड़ी और सूत का भी थोड़ा बहुत काम होता है। चावल, कपास और बकरियाँ बाहर भेजी जाती हैं। नमक, चीनी, कपड़े, बैल और दूसरा पक्का माल बाहर से आता है। राज्य की सालाना आय ७,१०,००० रुपया है। इस राज्य में साल में ३० इञ्च पानी बरसता है।

संक्षिप्त इतिहास

० करौली राज्य के शासक अर्जुन पाल यादव राजपूत हैं। ये लोग अपने को कृष्ण भगवान की सन्तान बतलाते हैं। इस जाति के लोग ब्रज, मथुरा के आस पास में रहते हैं। किसी समय बियाना इन्हीं के कब्जे में था जो १०५२ ई० में अँग्रेजों के हाथ चला गया। १४५४ ई० में करौली को मालवा के बादशाह महमूद खिलजी ने अपने आधीन किया था। किन्तु जब अकबर ने अपने मालवा पर अधिकार

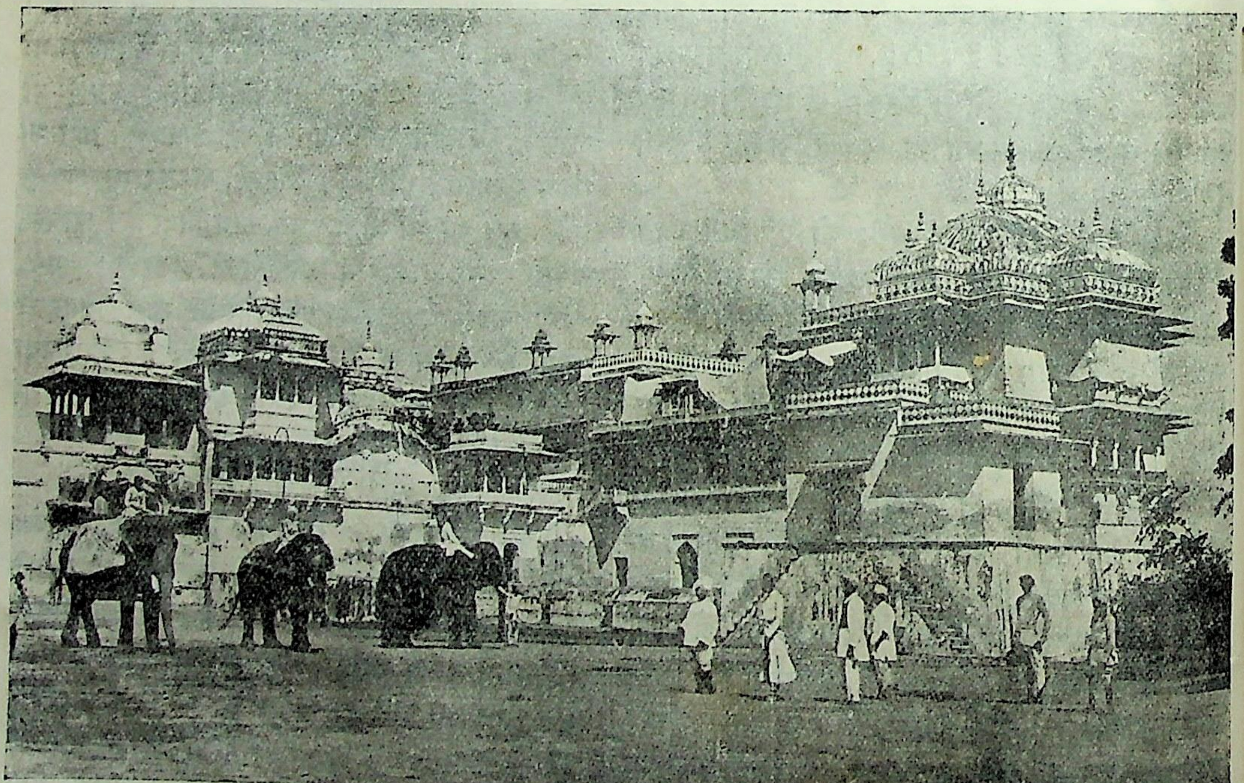
जमाया तो यह राज्य दिल्ली राज्य के आधीन होगया। मुगल साम्राज्य के अवनति के समय यह मरहठों के अधिकार में गया और उन्होंने ३७,५०० रु० सालाना कर लगाया। १८५७ में पेशवा ने इसको अँग्रेजों को दे दिया। राजा के कहने पर यह कर इस शर्त पर माफ कर दिया गया कि राजा अपनी शक्ति के अनुसार समय पड़ने पर ब्रिटिश सरकार को सेना देगा। उसी समय अँग्रेजों ने राज्य की रक्षा का भार भी अपने ऊपर ले लिया।

१८५२ में नरसिंह पाल की मृत्यु हो गई। इस समय कोई भी राज्य का उत्तराधिकारी न था। इस बात पर विचार हुआ कि राज्य को बृटिश साम्राज्य में मिला लिया जाय किन्तु कोई कारवाई न करके राज्य सुरक्षित रक्खा गया। १८५७ ई० में महाराज मदनपाल राजा बनाये गये। इन्होंने गदर में अँग्रेजों की सहायता की। राजा ने कोटा के बागियों को दबाने के लिये एक सेना भेजी थी। इन सेनाओं के बदले २०,५०० रु० का कर्ज जो राजा के ऊपर अँग्रेजों का था माफ किया गया, राजा को जी० सी० एस० आई० की उपाधि मिली। राजा को सम्मानार्थ एक पोशाक दी गई। राजा को १७ तोपों की सलामी मिलने लगी। १८६९ में राजा की मृत्यु हो गई। उसके बाद तीन व्यक्ति गोद लिये गये और गद्दी पर बैठाए गए। १८८३ ई० में देखभाल करने वाली काउन्सिल ने तीन विभागों में राज्य का प्रबन्ध बाँट दिया और इस प्रकार राज्य का प्रबन्ध किया।

वर्तमान नरेश हिज हाईनेस महाराजा सर भोमपाल देव बहादुर मादुकुल चन्द्रभाल के०सी०एस०आई०हैं।

****

कोटा



कोटा का प्रसिद्ध क़िला। (जहाँ के राजा ने राणा संग्राम सिंह के साथ मिल कर बाबर से लोहा लिया था।)

० यहां के राजा चौहान राजपूत हैं। यह बूँदी राजवंश के सम्बन्धी हैं। १६२५ ई० में यह राज्य बूंदी से अलग हो गया। इस राज्य का क्षेत्रफल ५६८४ वर्ग मील है। इस की जनसंख्या ६,८६,००० और आमदनी ५० लाख रुपया है। यहां की फौज में १५,००० सिपाही हैं। यहां के महाराज को १७ तोपों की सलामी दी जाती है।

✱✱✱✱

लवा

यह राजपूताने का एक अलग राज्य है। यह पहले जैपुर के अधीन था। फिर कुछ दिनों तक यह टोंक के अधीन रहा। १८६७ में टोंक के नवाब ने लवा के ठाकुर को मार डाला। तब से यह अलग होगया। यहां के ठाकुर कछवाहे राजपूत हैं। लवा का क्षेत्रफल १८ वर्ग मील और जन संख्या ३,००० है। इस राज्य की सालाना आमदनी ३०,००० रुपया है। यहां के वर्तमान नरेश बंसप्रदीपसिंह (बालक) हैं।

✱✱✱✱

दान्ता

दान्ता राज्य बम्बई प्रान्त में स्थित है। इस राज्य में ७८ गाँव हैं। यह राज्य पहाड़ तथा बनों से घिरा हुआ है। इस राज्य का क्षेत्रफल ३४७ वर्गमील और जनसंख्या २६,१७२ है। राज्य की सालाना आय २,०२,९४७ है। यहां की मुख्य उपज गेहूँ, जौ, चना, ज्वार, बाजरा और ईख है।

यहाँ के शासक पामार राजपूत हैं और राना कहलाते हैं। यह राज्य ३२७ पौंड बड़ौदा को, ५१ पौंड ईदर राज्य को और ५० पौंड पालपुर राज्य को कर देता है।

राज्य के अन्दर अम्बा भवानी का मन्दिर है जहाँ पर देश के प्रत्येक भाग से यात्री दर्शन के लिये आते हैं। यहां अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर और नवम्बर के महीने में मेला होता है। देवी जी के मन्दिर से राज्य को काफी आय होती है।

मध्यभारत एजेन्सी

इन्दौर राज्य

स्थिति और विस्तार—

इन्दौर राज्य या होल्कर का राज्य मध्य भारत के मालवा और नीमाड़ प्रदेशों में स्थित है। यह राज्य कई बड़े-बड़े टुकड़ों से मिलकर बना है और २१·२२ से २४·४० उत्तरी अक्षांशों तथा ७४·२२ और ७७·३ पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। इसके उत्तर में उदयपुर राज्य, उत्तर-पूर्व में झालावार, पूर्व में गवालियर, देवास, धार और नीमाड़, दक्षिण में खानदेश, पश्चिम में गवालियर, बारवानी आदि प्रदेश स्थित हैं।

इन्दौर राज्य का नाम इसी राज्य के मुख्य नगर इन्दौर पर ही पड़ा है। इन्दौर या इन्दूर, इन्द्रेश्वर या इन्द्रपूर से बिगड़ कर बना है। इन्द्रेश्वर का मन्दिर जिसके पीछे इस नगर का नाम पड़ा अब भी नगर के बीचोबीच मौजूद है।

इस राज्य का विस्तार मध्य भारत के तीन प्राकृतिक विभाग पठार, पहाड़ी और नीचे बसे हुये प्रदेशों में है। इसका क्षेत्रफल ६६०२ वर्गमील, जन-संख्या १३,२५,०८९ है। रामपूर-भानपूर, महीदपूर और इन्दौर के ज़िले पठार में स्थित हैं, यहाँ की भूमि बहुत उपजाऊ है। जहाँ खेती करने लायक़ भूमि नहीं है वहाँ घास अच्छी उगती है। यहाँ के किसान बड़े परिश्रमी होते हैं और पोस्ते की खेती करने में बड़े चतुर होते हैं। इसी कारण वहाँ पोस्त अधिक होता है।

नीमाड़ ज़िला पहाड़ी प्रदेश में है। यहाँ विन्ध्याचल और सतपुड़ा दोनों पहाड़ों की श्रेणियां हैं और घने जङ्गलों से भरपूर हैं। दोनों श्रेणियों के बीच में नर्मदा की घाटी है जहाँ किसान लोग खेती करते हैं। बाक़ी जगहों में भील और जङ्गली लोग रहते हैं जो खेती बहुत कम करते हैं। आलमपुर का परगना निचले पहाड़ी प्रदेश में है। यह उपजाऊ प्रदेश है और मल्हारराव होल्कर की स्मृति भी यहाँ मौजूद है।

पहाड़

पहाड़ों की दो मुख्य श्रेणियाँ विन्ध्याचल और सतपुड़ा यहाँ स्थित हैं। इन श्रेणियों में पुराने क़िले और रास्ते पाये जाते हैं जिनमें से ख़ास ख़ास धनताला, रामघाट, जाम घाट, घारा घाट इत्यादि विन्ध्या-श्रेणी में हैं। ग्वालिनघाट जो सेन्दवा के नाम से अधिक प्रसिद्ध है सतपुड़ा श्रेणी में है। आगरा-बम्बई सड़क इसी में होकर जाती है। बीजागढ़ का प्रसिद्ध क़िला इसी श्रेणी में है।

नदियाँ—

इस राज्य में छोटी छोटी बहुत सी नदियां हैं, किन्तु मुख्य चम्बल और नर्मदा हैं, शेष सभी उन्हीं की सहायक हैं। चम्बल नदी इस राज्य में ९८ मील बहती है और सिपरा, गम्भीर, खान, काली सिंध बड़ी और छोटी सभी इसकी सहायक हैं। नर्मदा नदी इस राज्य की सबसे बड़ी नदी है। यह राज्य के अन्दर ११६ मील बही है। और वीदा, कुन्डी, देव, गोई, कनार, चोरल, जामनर, गोमी इत्यादि इसकी सहायक नदियाँ हैं। नर्मदा ही एक ऐसी नदी इस राज्य में है जिसमें नावें चल सकती हैं। और दूसरी सभी बड़ी नदियाँ बेकार हैं। वे सिंचाई के काम भी नहीं आ सकतीं क्योंकि उनके किनारे अधिक खड़े और ऊँचे हैं।

नदी	राज्य के अन्दर लम्बाई	किनारे के मुख्य नगर
चम्बल	९८	हसलपुर, खरादा,
सिपरा	६८	महीदपुर
गम्भीर	४६	म्हो
खान	३४	इन्दौर
काली सिंध (छोटी)	५६	कपाथा
काली सिंध (बड़ी)	४७	
नर्मदा और उसकी सहायक		
नर्मदा	११६	नेमावार, सन्डलेश्वर, महेश्वर, चिखाल्दा
गोमी	२०	
जामनर	३०	
वगदी	२०	खाटे गांव

नदी	लम्बाई	मुख्य नगर
धनुनी	३०	
चन्द्केशर	२०	कन्ताफर
खारी	१५	
कनार	४२	
कोरल	४५	बरवाहा
खेलार	२५	
मालन	१७	
महेश्वरी	१५	महेश्वर
करम	२२	ककरदा गुजरी
मान	१२	टोकी
हटनी	१५	
उरी	६	देहरी
उरीबागनी	१०	निसारपुर
वाकुर	२०	
बेदा	६५	भमनाहा, गोगाँव
कुंडी	४८	खारगन
सटक	१५	
बोरार	२२	
देव	५८	
गोई	४८	
सीमाई	५	आलमपुर

जङ्गली जानवर—

यहाँ के जंगलों में उत्तरी भारतवर्ष के से ही जंगली जानवर पाये जाते हैं। शेर, बाघ, तेंदुआ, चीता, साँभर, रीछ, भेड़िया, नील गाय इत्यादि पाये जाते हैं। ख़तरनाक जानवरों को मारने के लिये राज्य की ओर से इनाम मिलता है, क्योंकि गाँवों के जानवरों को यह अधिक नुक़सान पहुंचाते हैं। पहले यहाँ हाथी, जंगली साँड और भैंसे भी पाये जाते थे। मुग़ल-राज्य के समय बीजागढ़ और सतवास में हाथी पकड़े जाते थे; किन्तु अब यह जानवर बिलकुल नहीं मिलते। यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के साँप और चिड़ियाँ पाई जाती हैं। टिड्डी भी यहाँ बहुत पाई जाती हैं जो फ़सल को अधिक नुक़सान पहुँचाती हैं।

जलवायु—

राज्य के तीन प्राकृतिक भागों की जलवायु एक दूसरे से भिन्न है। मालवा का प्रदेश जिसमें मुख्य नगर और राज्य के बीच का भाग सम्मिलित है, यहाँ की जलवायु गर्म है और नर्मदा की घाटी बहुत ही गर्म है।

नीचे हर एक ज़िले का तापक्रम (जो सबसे ऊँचा और नीचा है) दिया गया है, जिससे यहाँ की जलवायु का ज्ञान होगा—

ज़िला	समुद्रतल से ऊँचाई	शीतकाल औसत अल्प तापक्रम	ग्रीष्मकाल औसत तापक्रम
इन्दौर	१,८२३	५५	१०५
मेहीदपुर	१,७००	७२	१०२
नीमाबार	१,०५०	६५	११०
नीमार	१०५०	६६	११०
रामपुरा-भानपुरा	१,६५०	७२	१०८

तालाब—

यहाँ मुख्य तालाब महेश्वर, दीपालपुर और यशवन्त नगर हैं।

यहाँ के किसानों ने साल को तीन भागों में विभाजित किया है। ग्रीष्मकाल जिसमें फागुन, चैत, बैसाख, ज्येष्ठ शामिल हैं (२) वर्षाकाल या चतुर्मासा जिसमें आषाढ़, सावन, भादों और कार मास शामिल हैं (३) शीतकाल जिसमें कार्तिक, अगहन, पूस और माघ मास शामिल हैं।

वर्षा—

भिन्न-भिन्न भागों में वर्षा भी भिन्न-भिन्न प्रकार की है

वर्षा इञ्चों में

मालवा प्रान्त	३० इञ्च
रामपुरा-भानपुरा का पहाड़ी प्रान्त	२४ इञ्च
नीमाड़ का पहाड़ी प्रान्त	२० इञ्च

इतिहास

० होल्कर-वंश के राजा धानगर (गड़रियों) के वंशज हैं। उनके बाप दादे पहले मथुरा और उसके आस-पास के निवासी थे। वहां से वे दक्षिण की ओर चलकर पहले मेवाड़ में टिके फिर और दक्षिण की ओर चल कर औरंगाबाद प्रान्त में मीरा नदी के किनारे हाल या होल ग्राम में आकर बसे जो उस समय निमवल्कर राज्य में था और पूना से चालीस मील है। उसी ग्राम के नाम पर इस वंश का नाम हालकर या होलकर पड़ा। मालीवा इस गांव का चागुला या मुखिया था। ग्यारहवीं पीढ़ी में खान्डोजी होलकर पैदा हुआ जिसके केवल एक ही पुत्र था जिसका नाम मल्हार राव हुलकर हुआ जो इन्दौर घराने की नीव डालने वाला है। मल्हार राव सन् १६६४ ई० में पैदा हुए, पिता के मरने पर माता के साथ खानदेश प्रान्त में तालोदा गांव में अपने मामा भोजराज वर्गल के यहाँ जाकर रहने लगे। इनके मामा एक सम्पन्न पुरुष थे। वह कुछ सवार अपने ज़मींदार, सरदार, कादम बन्दे* के लिये रखते थे। मल्हारराव ने अपना नाम इन्हीं सवारों में लिखा लिया और अपने चचा की लड़की गौतम बाई के साथ ब्याह कर लिया। गौतम बाई के भाई नारायण ने उदयपुर के राना के यहाँ काफ़ी ख्याति प्राप्त कर ली थी इसी लिये बुधा ग्राम उनको जगीर मे मिला था। नारायण ने आधा गाँव अपनी बहन को दिया जिसने अपने पति मल्हारराव के नाम पर मल्हार गढ़ रक्खा और नारायण ने अपने गाँव का नाम नारायणगढ़ रक्खा। इस वंश का १७२१-२२ ई० में नाश हो गया। मलहरराव अपनी सिपाहियाना ख़ूबियों के कारण आगे बढ़ गये और आखिरकार पेशवा का ध्यान इनकी ओर आकर्षित हुआ। १७२४ ई० मे पेशवा ने इनको बुलाया और ५०० घुड़सवारों का सरदार बना दिया। कादमबन्दे होल्कर की इस तरक्की पर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने इनको फ़ौज के आगे बन्दे वंश का झंडा लेकर चलने का हुक्म दे दिया। यह झंडा तिकोना लाल और सफेद पट्टीदार है और आज तक होल्कर घराने का चिन्ह है। ०

मरहठों की ताक़त इस समय बढ़ रही थी। बालाजी विश्वनाथ पहले ही अप्रैल १७२० में मर चुके थे। उनके सुयोग्य पुत्र बाजीराव ने शीघ्र ही अपनी तमाम ताक़त के साथ मरहठों का सङ्गठन करना शुरू किया। उसका ध्यान पहले पहल मालवा की ओर आकर्षित हुआ। १७२४ ई० में मुहम्मदशाह को निज़ामुल्मुल्क पर शक पैदा हुआ तो उसने नागर ब्राह्मण गिरधर बहादुर को मालवा और गुजरात का सूबेदार बनाया। गिरधर बहादुर एक बहादुर और सुयोग्य शासक था और हमेशा मरहठों से लड़ा करता था जिससे वे मालावार पर अपना अधिकार सदैव के लिए न जमा सकें। १७२५ ई० में निज़ाम और उसके भतीजे हमीद खां में झगड़ा हो गया। बाजीराव ने इसका लाभ उठाया और होलकर, सिंधिया और धार के पानवार को आज्ञा दी कि वे मालवा से चौथ और सरदेश मुखी जो पूना को चाहिये वसूल करें और आधा मुकासा वे स्वयं अपनी फौज के खर्च के लिये ले लेवें।

मल्हारराव तो ऐसी ताक में थे ही, फ़ौरन नर्मदा नदी के तटीय विभाग पर चढ़ाई कर दी। १७२६ ई० में गिरधर बहादुर मारा गया। उसके बाद उसके पुत्र दयाबहादुर ने लड़ाई जारी रक्खी और अपने देश की रक्षा बहादुरी के साथ करता रहा। १७३१ ई० में निज़ाम ने स्वयं अपनी इच्छा की पूर्ति के लिये बाजीराव से कहा कि मालवा प्रदेश में चढ़ाई की जाय। १७३२ ई० में पेशवा के भाई चिमनजी अप्पा के अधिकार में एक सेना भेजी गई। होल्कर भी साथ गया। दयाबहादुर धार के समीप

---

* बन्दे बीजापुर के राजों के समय बारगाँव के पटेल थे। जब शिवाजी तरक्की करने लगे तो अमृत राव जो पांचों में सबसे बड़े थे। शिवाजी के साथ हो गये दाभोद सेनापति के साथ यह खानदेश चौथ के लिए भेजे गये, और उनको जो भूमि प्राप्त हुई उसका आधा इनाम के तौर पर इनको दिया गया जिसका मूल्य ६०,००० था, अमराना गाँव की चढ़ाई मे अमृतराव मारे गये और दूसरे भाई गुजरात भेजे गये। राजा साहू ने अपनी पुत्री गजरा बाई मल्हारराव बन्दे को ब्याह दी। बन्दे नाम उसी झंडे से निकाला है जो वह लेकर चलते थे।

तिरला की लड़ाई में मारा गया और मालवा मरहठों के अधिकार में आ गया। जब बाजीराव दक्षिण की ओर १७३५ ई० में लौटा तो होल्कर ने मालवा होकर दौड़ लगाई और चम्बल को पार करता हुआ आगरा तक गया। १७३६ ई० में होल्कर बाजीराव के साथ दिल्ली गया और सिंधिया की सहायता द्वारा दिल्ली नगर के समीप मुग़ल सेना को परास्त किया। सन् १७३६ ई० में निज़ाम जो दिल्ली लौटकर आया था उसे बाजीराव ने भूपाल के युद्ध में परास्त किया। इस लड़ाई में मल्हारराव ने बड़ी वीरता दिखाई।

१७२८ ई० में मल्हारराव को १२ ज़िले मालवा में मिले जो १७३१ में ८२ ज़िलों तक बढ़ा दिये गये। इस समय मल्हारराव को पूरे मालवा का अधिकार प्राप्त हो चुका था। पेशवा धार के उदाजी पाड़वार की बढ़ती ताक़त को रोकना चाहता था। होल्कर ने पहले ही नर्मदा के दक्षिणी प्रदेश और महेश्वर नगर को ले चुका था जो १८१८ ई० तक उसकी राजधानी रहा। १७३३ ई० में इन्दौर उसके अधिकार में तो आ चुका था, किन्तु मंडसर की सन्धि तक वह राजधानी नहीं बना था।

इसके पश्चात् सन् १७३८ ई० में मल्हारराव निज़ाम के विरुद्ध लड़ाई में भेजा गया। १७३९ ई० में वह पुर्तगालियों के विरुद्ध बेसीन भी गया और १७४८ ई० में रुहेलों के विरुद्ध भी भेजा गया। इस प्रकार दिन प्रति दिन उसकी ताक़त बढ़ती ही जा रही थी।

सन् १७४३ ई० में जैपूर का सरदार जैसिंह सवाई मर गया तो उसके बड़े पुत्र ईश्वरीसिंह और माधोसिंह में राज्य के बारे में झगड़ा हो गया। होल्कर ने माधो की सहायता की, अंत में जब ईश्वरीसिंह ने अपनी स्वयं हत्या कर ली तो होल्कर को ६४ लाख रुपया और रामपुरा-भानपुरा और टोंक प्रान्त इनाम में मिले।

जब १७४५ ई० में रानोजी सिंधिया मरा तो मल्हारराव मालवा में साढ़े चौहत्तर लाख की भूमि का मालिक था। १७५१-५२ में होल्कर ने ग़ाज़ीउद्दीन की सहायता हैदराबाद पर अधिकार करने में की, किन्तु वह ज़हर देकर मार डाला गया। इसलिए १७५४ में होल्कर ने ग़ाज़ीउद्दीन के पुत्र मीर शहाबउद्दीन की सहायता की और बादशाही सेना को दिल्ली के समीप परास्त किया। उसी समय जब कि अहमदशाह और आलमगीर द्वितीय में शाही तख़्त के लिये लड़ाई हो रही थी होल्कर शहाबउद्दीन की ही सहायता कर रहा था। १७६० ई० में होल्कर ने जब अबदालिस के कैम्प पर हमला किया तो अचानक वह अकेला पड़ गया और उसको अपनी जान की रक्षा के लिये भागना पड़ा। १७६१ ई० में पानीपत की तीसरी लड़ाई हुई जिससे मरहठों की ताक़त बिलकुल बरबाद होगई। मल्हारराव ने इस लड़ाई में कोई बड़ा भाग नहीं लिया। कारण यह हुआ कि जब युद्ध-क्षेत्र में सेनायें अपनी अपनी जगहों पर खड़ी की जा रही थीं तो मल्हारराव ने सदाशिवराव भाऊ से कहा कि एक या दो दिन के लिये लड़ाई स्थगित कर दी जाय। उसका जवाब भाऊ ने दिया कि "बकरियों के चरवाहे की राय कौन चाहता है ?" तो मल्हारराव ने अपनी सेना लड़ाई से हटा ली कि ऐसे सेनापति के साथ अपनी सेना का बरबाद करना अच्छा नहीं जो उसकी क़द्र नहीं करता।

मल्हारराव ने राक्षस भवन की लड़ाई में भी भाग लिया जिसके बदले में ३० लाख की भूमि उन्हें प्राप्त हुई।

अब मल्हारराव की अवस्था ६७ वर्ष की होगई थी। कहाँ तो वे एक मामूली किसान के पुत्र थे और कहाँ आज वे एक बड़े राज्य के मालिक थे। उनका राज्य इस समय दक्खिन, खानदेश, नर्मदा की घाटी, मालवा, विन्ध्याचल और सतपुड़ा के जंगलों और पहाड़ों पर फैला हुआ था। पानीपत की लड़ाई के बाद होल्कर ने सोचा कि वे अपने राज्य को संगठित करें, किन्तु उनका कार्य ठीक से समाप्त नहीं हो पाया और २० मई सन् १७६६ ई० को आलमपुर नगर में उनका देहान्त हो गया।

मल्हारराव एक अच्छे सिपाही थे, किन्तु अपने युग के महादाजी सिंधिया की भाँति राजनीतिज्ञ न थे, तो भी उनके राज्य का शासन बहुत ही अच्छा

और दृढ़ था। उनकी बहादुरी की गणना नहीं की जा सकती, क्योंकि वे एक जंगली समय में मरहठों के सरदार बन गये। वे बड़े ही उदार थे। जब कभी वे किसी सिपाही की बहादुरी से प्रसन्न होते तो कहते थे कि उसकी ढाल रुपयों से भर दी जाय।

मल्हारराव के केवल एक पुत्र (खाँडेराव) था। वह भी १७५४ ई० में (जब रघुनाथराव दत्ताजी सिंधिया राजपूताना गये थे) कुम्भेर के किले पर मारा गया था।

खाँडेराव की शादी अहल्याबाई सिंधिया से हुई थी जिससे एक पुत्र और एक पुत्री उत्पन्न हुए। पुत्र का नाम मालेराव और पुत्री का मुक्ताबाई था। मुक्ता का व्याह जसवन्तराव फान्से से हुआ था। मालेराव गद्दी पर बैठा, किन्तु साल भर बाद ही वह मर गया। उसके बाद अहल्याबाई गद्दी पर बैठी

अहल्याबाई :—

० अहल्याबाई ने अपने पुत्र के जीवन तक राज्य का शासन ठीक रक्खा और स्वयं देखती रही। गंगाधर यशवन्त ने (जो मंत्री था) सलाह दी कि अब रानी किसी होल्कर वंश के लड़के को गोद ले ले, किन्तु वह राज़ी न हुई। रघुनाथराव और महादाजी सिंधिया की राय को भी नहीं माना और स्वयं राज्य का प्रबन्ध अपने हाथों लिये रही। वह स्वयं सेना का नेतृत्व करती थी और इस प्रकार लड़ाई के कार्यों को पूरा करती थी जो एक स्त्री-जाति के लिये बहुत ही कठिन है।

तुकोजीराव होल्कर को उसने अपनी सेना का अगुवा बनाया जो किसी भाँति भी राज घराने से सम्बन्ध नहीं रखता था। पेशवा ने भी तुकाजी को मान लिया। तुकोजी ने पेशवा को १५,६२,००० रु० भेंट दिये जिसके बदले में उसे खिलअत मिली। इस प्रकार राज्य का काम अहल्या और तुकोजी मिल कर ३० साल तक भली भाँति करते रहे। तुकोजी हमेंशा सभी खास कामों में अहल्याबाई की राय लिया करता था।०

१७६६ ई० में तुकोजी ने १५,००० घुड़सवारों के साथ विसाजी किशन और राम चन्द्र गणेश का साथ जाटों और रुहेलों के विरुद्ध युद्ध में दिया। और नजीबुद्दौला का साथ सिंधिया के विरुद्ध दिया। इसी समय १८ नवम्बर सन् १७७२ ई० में माधोराव पेशवा मर गया और उसके बाद ही उसका पुत्र नारायणराव भी ३० अगस्त सन् १७७३ ई० को मार डाला गया। इसलिये उनके चचा रघुनाथराव पेशवा बने।

पेशवा की गद्दी के बारे में झगड़ा हो रहा था। पहले तो होल्कर रघुनाथराव की सहायता नहीं करना चाहता था, फिर १७७८ ई० में उसने साथ दिया। फिर जब सिंधिया ने ६ लाख रुपये दिये तो वह नाना फड़नवीस की ओर हो गया।

१७८५ ई० में तुकोजी टीपू के विरुद्ध गणेश पन्त का साथ देने के लिए भेजा गया। लड़ाई के समाप्त होने पर तुकोजी महेश्वर को अहल्याबाई की भेंट करने चला गया। १७८८ ई० में उसने महेश्वर छोड़ा और अलीबहादुर के साथ सिंधिया का साथ देने के लिए दिल्ली गया।

लेकिन अब वह समय आ गया था जब कि होल्कर इस बात को समझने लगा कि सिंधिया की अधिक ताक़त बढ़ जाना उसके लिये बर्बादी का कारण है तो वह उसके ख़िलाफ़ कार्रवाई करने लगा। कुछ समय तक होल्कर और सिंधिया की सेनाएं राजपूताने के राज्य में चौथ और सरदेशमुखी लेती रहीं, पर अब अधिक दिनों तक वे साथ न रह सके। इस समय महादाजी की राजनीति न होने के कारण १७६३ ई० में दोनों सेनाओं में अजमेर के समीप लाखेरी में मुठभेड़ होगई। होल्कर की हार हुई। इससे सिंधिया की ताक़त बढ़ गई और फिर कभी भी होल्कर ने सामना करने का इरादा नहीं किया। १२ फरवरी सन् १७६४ ई० को महादाजी सिंधिया की मृत्यु हो गई। इसलिये तुकोजी मरहठों के अगुवा हो गये। होल्कर ने करदला की लड़ाई में डडरेन्स को परास्त किया, किन्तु यह युद्ध बिलकुल ही बेकार था।

१३ अगस्त सन् १७९५ को अहल्या बाई की मृत्यु होगई और राज्य की बागडोर तुकोजी के हाथ आगई।

अहल्याबाई के शासन-प्रबन्ध की बहुत ही प्रशंसा सर जान मैलकम द्वारा की गई है, यद्यपि उन्होंने कुछ बढ़ा कर लिखा है तो भी 'स्टेट' में लिखा है कि अहल्याबाई एक बड़ी ही बुद्धिमान स्त्री थी। वह अपनी प्रजा की दशा सुधारने के लिये भरसक प्रयत्न करती थी। उसके भरपूर प्रयत्न करने पर भी उसके प्रान्तों पर बहुधा हमले होते रहते थे और हुवधा किसानों के भागने और गाँवों के उजड़ जाने के सन्देश राज्य में आते रहते थे। लेखों द्वारा पता चलता है कि मल्हारराव प्रथम की ऐसी बहुधा आदत थी कि वह अपनी पतोहू के ज़िम्मे राज-काज सौंप कर बाहर चले जाते थे, इसमें संशय नहीं कि यह उसी के कारण था जो अहल्याबाई ने इतनी योग्यता राजनीति में प्राप्त कर ली थी। उसके समय के लेखों द्वारा पता चलता है कि वह प्रत्येक छोटे और बड़े कार्य को स्वयं देखती थी।

काशीराव (१७६७-६८)—

होल्कर भी १५ अगस्त सन् १७६७ ई० को परलोक सिधारा।

काशीराव बड़े पुत्र होने के कारण गद्दी का हक़दार था और तुको जी यही चाहता था, किन्तु आपस में तै न हो सका और काशीराव और मल्हार-राव में छिड़ गई। मल्हारराव की मदद पेशवा कर रहा था और काशीराव की सहायता में सिंधिया लगा हुआ था। इस समय लार्ड वेलेज़ली भारत में था। जसवन्तराव ने तमाम लूट मार करना आरम्भ कर दिया था। दुर्भाग्यवश मार्च सन् १८०० ई० में सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ नाना फड़नवीस की मृत्यु होगई, नाना के मरते ही महाराष्ट्र-मंडल में खलबली मच गई।

जसवन्तराव—

दौलतराव सिंधिया और जसतन्तराव होल्कर दोनों मरहठों में अग्रसर बनने की कोशिश कर रहे थे। दोनों ही पूना पर अपना अधिकार स्थापित करना चाहते थे। पेशवा बाजीराव द्वितीय निकम्मा आदमी था। होल्कर ने एक बड़ी सेना लेकर पूना पर चढ़ाई की। सिंधिया पेशवा की सहायता के लिये गया, परन्तु दोनों को होल्कर ने १८०२ ई० में पूना की लड़ाई में बुरी तरह हराया। बाजीराव भाग कर बेसीन चला गया और उसने अँग्रेजों से संधि करने की इच्छा प्रकट की।

बेसीन की सन्धि (१८०२)—

बाजीराव को अब अंग्रेजों की सहायता की आवश्यकता थी। उसने प्रतिज्ञा की कि मैं अपने ख़र्च से अँग्रेज़ी सेना रक्खूँगा, किसी भी योरुपीय को अपने यहाँ नौकरी नहीं दूँगा और किसी राज्य से बृटिश-सरकार की आज्ञा बिना लड़ाई अथवा सन्धि नहीं करूँगा। सन्धि के बाद अँग्रेज़ी सेना पेशवा को लेकर पूना पहुँची और उसे फिर गद्दी पर बिठा दिया। अमृतराव जिसे होल्कर ने पेशवा बनाया था, सामना न कर सका और पेंशन से सन्तुष्ट होकर बनारस चला गया।

इस सन्धि से सिंधिया और भोंसला मरहठों की बेइज़्ज़ती समझ कर बहुत नाराज हुए जिसके कारण मरहठों की दूसरी लड़ाई १८०३ में हुई। १८०४ ई० में जसवन्तराव होल्कर ने जयपुर-राज्य पर चढ़ाई की और लूट मार करना आरम्भ किया। वेलेज़ली इसको बरदाश्त न कर सका और उसने लड़ाई की तैयारी शुरू कर दी। राजा भरतपुर की सहायता से होल्कर ने दिल्ली लेने की चेष्टा की, परन्तु उसे अँग्रेज़ सैनिकों ने पीछे हटा दिया। १३ नवम्बर सन् १८०४ ई० को डीग के पास, होल्कर के साथ लड़ाई हुई जिसमें लार्ड लेक ने उसे पराजित किया। लार्ड कार्नवालिस मरहठों से लड़ना नहीं चाहता था। इसीलिये उसने सन्धि करनी चाही; किन्तु उसकी मृत्यु हो गई। उसके पश्चात् जब सर जार्ज बार्लो आये तो उन्होंने होल्कर इत्यादि से सन्धि कर ली।

जसवन्तराव के बाद १८११ ई० में मल्हारराव द्वितीय राजगद्दी पर बैठा। उसने १८३३ तक राज्य किया, उसके बाद मारतण्डराव ने १८३३-३४ तक राज किया फिर १८३४ से १८४३ तक हरीराव ने राज्य किया। बादमें खण्डे राव ने एक साल तक राज्य किया उसके बाद तुकोजी राव द्वितीय गद्दी पर बैठे।

तुकोजीराव द्वितीय (१८४४-८६)—

तुकोजी ने अँग्रेजों के साथ मित्रता का सम्बन्ध रक्खा। उस समय एच० एम० ड्यूरण्ड अँग्रेज एजेन्ट था। ट्रावर्स भी ड्यूरण्ड के साथ ही मौजूद था। ड्यूरण्ड गढ़ ने १४ मई १८५७ को सुना कि मेरठ में विद्रोह हो गया, फिर २८ मई को नसीराबाद में, ३ जून को नीमच में और ७ को झाँसी में और १४ जून को गवालियर में विद्रोह हो गया। ड्यूरण्ड को शक होल्कर पर भी था कि कहीं वह भी विद्रोह न कर बैठे। ऐसी ही अवस्था में ३० जून को एक नौकर ने ड्यूरण्ड से कहा कि रेज़ीडेन्सी पर हमला होने वाला है। ऐसी दशा में होल्कर ने कहा कि ड्यूरण्ड अपने लड़के वालों को बाहर भेज दें और स्वयं भी अपना इन्तज़ाम करें किन्तु ड्यूरण्ड ने सलाह न मानी दूसरे दिन इन्दौर बाज़ार में विद्रोह हो गया तब तो ड्यूरण्ड के कान खड़े हुए और वह सीहोर चला गया। ४ जुलाई को विद्रोहियों ने इन्दौर की बरबादी कर डाली। नवीं जुलाई को म्हो में विद्रोह हुआ, कमान्डर हङ्गर फोल्ड ने शान्ति स्थापित करने के लिये विद्रोहियों का मुक़ाबिला किया। कुछ दिनों के बाद विद्रोहियों की शक्ति को अँग्रेजों ने होल्कर की सहायता से ठंडा कर दिया और १५ दिसम्बर को सर राबर्ट हैमिल्टन ने आकर कार्य प्रारम्भ किया। १८६३ ई० में तीन लाख रुपया होल्कर को विप्लव काल के सिपाहियों के ख़र्च के बदले में मिला और १८७८ ई० में होल्कर को ३६० वर्गमील जगह अँग्रेजों ने इनाम में दी और ३०,००० रुपया पाटन और बूंदी के बदले में मिला। १८६१ में जी० सी० यस० आई० की उपाधि मिली और १८६२ में यह सनद मिली कि पुत्र न होने पर होल्कर गोद ले सकता है। इसी समय से होल्कर स्टेट रेलवे बनी, १८७२ ई० में बन्दूक़ और लड़ाई के दूसरे सामान बनाने के लिये इन्दौर में एक फ़ैक्टरी खोली गई। सन् १८७७ में सी० आई० ई० की उपाधि होल्कर को प्राप्त हुई। १७ जून सन् १८६६ ई० को तुकोजी द्वितीय की मृत्यु हो गई।

तुकोजीराव (१६०३)—

तुकोजी के बाद शिवाजीराव ने १८८६ से १६०३ तक राज किया। बाद शिवाजीराव के तुकोजी राव १६०३ में गद्दी पर बैठे।

वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस महाराजाधिराज राजराजेश्वर सवाई श्री यशवन्तराव होल्कर बहादुर जी० सी० आई० ई० हैं। आप को १६ बन्दूक़ों की सलामी मिलती है और आप चैम्बर ऑफ प्रिन्सेज़ के मेम्बर हैं। आप के राज्य की आय १,३५,००,००० रुपया सालाना है। महाराजाधिराज बड़े उत्साही व्यक्ति हैं। आप ने स्थानीय स्वतन्त्रता देने के लिये इन्दौर नगर और दूसरे चार-पाँच नगरों में म्युनिस्पैलिटियाँ क़ायम की हैं। इन्दौर नगर की म्युनिसिपैलिटी स्वयं अपना प्रबन्ध करती है। देहातों में गाँव-गाँव पंचायतें खोली गई हैं।

महाराज की सहायता के लिये मन्त्रियों की एक सभा है जिसके प्रधान श्री० सर्वमल बापाना हैं। क़ानून बनाने के लिये भी एक सभा है जिसके सदस्यों को बहस करने और राय देने की स्वतन्त्रता है।

राज्य के अन्दर लैण्ड रिवीन्यू एक्ट प्रचलित है जो किसानों को अच्छी सुविधायें प्रदान करता है। प्रत्येक किसान को अपने खेतों पर सर्वाधिकार राज्य की ओर से मिला है। उनको निकाला नहीं जा सकता। महाराज स्वयं प्रत्येक गाँव में लगान वसूल करने वाले नौकर रखते हैं। ग्रामीणों को आर्थिक सहायता देने के लिये ग्रामीण कोआपरेटिव संस्थाएँ व सेंट्रल कोआपरेटिव बैंक है जहाँ उनको सभी प्रकार की सुविधाएं मिली हैं। अधिक ग़रीब जनता की भलाई के लिये मनी लैन्डर्स बिल बनाया गया है जिससे महाजन गरीबों को न सता सकेंगे। महाजनों और किसानों के बीच अच्छे भाव उत्पन्न करने के लिये कन्सीलियेशन बार्डस बनाए गए हैं।

इन्दौर राजधानी व्यापार का एक बड़ा केन्द्र है। यहाँ पर सूत कातने और कपड़ा बुनने के लिये एक बड़ा भारी कारख़ाना है जहाँ कई हज़ार व्यक्ति काम करते हैं। राज्य में एक फैक्ट्री ऐक्ट बनाया गया है जो मजदूरों और मालिकों के बीच शान्ति स्थापित करता है। जो बिजली घर यहाँ है उसको काफी प्रोत्साहन दिया जा रहा है जिससे उसकी बिजली से कारखानों और खेतों का कार्य्य हो सके। यहाँ पर एक शीशा बनाने का भी कारख़ाना है जहाँ पर



इन्दौर राज्य
नरसिंहगढ़
होशंगाबाद
भोपाल
झालरापाटन
इन्दौर
देवास
धार
रतलाम
उज्जैन
खण्डवा
हर्दा
बड़वानी
नर्मदा नदी
सीतामऊ
मकसी
आलमपुर
इन्दौर
निमार
नेमावाड़
महीदपुर
रामपुरा भानपुरा
रेलवे

बल्ब बनाये जाते हैं। यहाँ पर आय-कर नहीं लगता इसलिये बाहरी लोग यहाँ अपना रुपया लगाने की अधिक इच्छा करते हैं। इन्दौर नगर के समीप एक नदी में बांध बनाकर सारे नगर में सदैव पानी पहुँचाने की योजना सोची जा रही है जिसमें ७,००,००० रु० लगेंगे। एक दूसरी योजना ड्रेनेज सिस्टम की भी है जिसमें १०,००,००० रु० लगेंगे। एक सेंट्रल डेरी भी खोली जाने वाली है जो अच्छे से अच्छा दूध सस्ते से सस्ते दाम पर सब को देगी।

राज्य के अन्दर एक प्रथम श्रेणी का कालेज और ६ हाई स्कूल हैं। वर्नाक्यूलर और प्रायमरी स्कूल बहुत से हैं। एक हिन्दी यूनिवर्सिटी खोलने की योजना की जा रही है जिसकी पढ़ाई हिन्दी में होगी और खर्च वर्तमान विश्वविद्यालयों से कहीं कम होगा।

राज्य के अन्दर रोजगार सम्बन्धी भी बहुत से स्कूल हैं जहाँ बालकों को दस्तकारी, कारीगरी का काम, गानविद्या और चित्रकारी का काम सिखाया जाता है।



भोपाल

कहा जाता है कि राजा भोज के एक मन्त्री ने यहाँ एक बाँध बनवाया था। इससे इस प्रदेश की रक्षा होती थी। इसी से इसका नाम भोजपाल पड़ा। पीछे से बिगड़ कर इसका नाम भोपाल पड़ गया।

निज़ाम हैदराबाद को छोड़ कर भोपाल हिन्दुस्तान में सब से अधिक प्रभावशाली (सुन्नी) मुसलमानी राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल ६,९२४ वर्ग मील और जन-संख्या ७,२९,९५५ है। भोपाल राज्य मालवा के पूर्वी भाग में स्थित है। भोपाल के पूर्वी ज़िले बुन्देलखंड और दक्षिणी ज़िले गोंडवाना को छूते हैं। भोपाल के उत्तर में ग्वालियर, बासोदा, कोर्वाई, मकसूदनगढ़, टोंक राज्य और मध्य प्रान्त का सागर ज़िला है। दक्षिण की ओर नर्मदा नदी भोपाल राज्य को होशंगाबाद ज़िले से अलग करती है। इसके पूर्व में सागर और नरसिंहपुर के ज़िले हैं। पश्चिम की ओर ग्वालियर और नरसिंहगढ़ राज्य हैं।

भोपाल राज्य का अधिकतर (४०४७ वर्ग मील) प्रदेश मालवा पठार में स्थित है। यहाँ ऊँचे नीचे लहरदार मैदान हैं जो कुछ पीली घास से ढके हैं। उपजाऊ काली या रेगर मिट्टी में कपास की खेती होती है। दक्षिण पूर्व की ओर बलुआ पत्थर की चट्टानें जो विन्ध्याचल की शाखायें हैं। ठीक दक्षिण की ओर विन्ध्याचल की प्रधान श्रेणी है। इसके आगे नर्मदा की घाटी है। भोपाल का पहाड़ी देश लगभग २,८५५ वर्ग मील है। और पठारी प्रदेश से बहुत छोटा है। सौभाग्य से भोपाल का पठारी प्रदेश अधिक बड़ा होने के अतिरिक्त अधिक उपजाऊ है। यहीं गेहूँ, मकई, धान, अफ़ीम और कपास की खेती होती है। पहाड़ी भाग जंगलों से ढके हैं। भोपाल की पहाड़ियों की औसत उँचाई लगभग २,००० फ़ुट है। चोटियाँ इससे भी अधिक ऊँची हैं। पहाड़ी भाग में बलुआ पत्थर बड़े काम का होता है। यह मकान बनाने के लिये बहुत अच्छा होता है।

विन्ध्या पर्वत ही भोपाल राज्य में प्रधान जल-विभाजक बनाता है। उत्तर की ओर बेतवा और पार्वती दो बड़ी-बड़ी और उनकी कई छोटी-छोटी सहायक नदियाँ अपना पानी यमुना में गिराती हैं। बेतवा नदी मध्य भारत की प्रधान नदियों में से एक है। प्राचीन ग्रन्थों में भी बेत्रवती (बेतवा) का कई स्थानों में उल्लेख आया है। इसका उद्गम जंगली दुर्गम प्रदेश में भोजपुर के पास कुमरी ग्राम से कुछ ही दूर है। यहाँ से निकल कर उत्तर-पूर्व की दिशा में भोपाल राज्य में बेतवा नदी ५० मील बहती है। भोजपुर के पास ही बेतवा में कालिया सोत नाम की सहायक नदी मिलती है। गुनी और केरवा नदियाँ कालिया सोत में मिलती हैं। कुहू और मनियारी भी बेतवा की ही सहायक नदियाँ हैं।

पार्वती (या पश्चिमी पार्वती क्योंकि ग्वालियर राज्य में भी इसी नाम की दूसरी नदी है) बुराना खेड़ी गाँव के पास से निकलती है। पार्वती नदी भोपाल राज्य में लगभग ६० मील बहती है। लेकिन अक्सर यह नदी भोपाल राज्य की पश्चिमी सीमा बनाती है। अजनाल, पापनास और परुआ इसकी सहायक नदियाँ हैं।

लगभग १२५ मील तक नर्मदा नदी भोपाल राज्य की दक्षिण सीमा के पास से होकर बहती है। दक्षिण की ओर बहने वाली भोपाल राज्य की प्रायः सभी नदियां अपना पानी नर्मदा में गिराती हैं। सिन्दोर, खार, घाघरा, तेन्दोनी, बारना, दोबी, भागनेर, भाभर, कोलार, हम्बार, अजनाल, गोनी और जामनेर प्रधान सहायक नदियाँ हैं।

भोपाल में भाँवर (भूरी) दूमट, कालमट (काली मिट्टी) पिलूटा (कुछ कुछ पीली) सियारी (कुछ लाल और काली) आदि कई तरह की ज़मीन हैं। लेकिन सब मिला कर उपजाऊ ज़मीन का क्षेत्रफल २,००० वर्गमील से अधिक नहीं है।

उँचाई के कारण भोपाल राज्य की जलवायु विकराल नहीं है। नर्मदा की घाटी और विन्ध्याचल के पड़ोस की जलवायु कुछ विषम कही जा

सकती है। इस राज्य में साल भर में लगभग ५० इंच पानी बरसता है। किसी वर्ष न २४ इंच से कम और न ६५ इंच से अधिक वर्षा यहां हुई है।

अफ़ीम या पोस्ता इस राज्य की प्रधान फ़सल है। वैसे यहां ज्वार, बाजरा, मक्का, मूंग, तिलहन, गेहूँ, चना, कपास आदि कई तरह की फसलें होती हैं। धान, गन्ना, तरकारी को ही सींचने की ज़रूरत पड़ती है। गेहूँ, जौ और मकई को बहुत कम सिंचाई की ज़रूरत पड़ती है। जिस भाग में ज़मीन अच्छी नहीं है और केवल घास उगती है वहां जानवर पाले जाते हैं। गाय, बैल, भैंस, बकरी आदि यहां जानवर बहुत पाले जाते हैं। इनके बेचने के लिये इस राज्य में कई मेले लगते हैं। पहाड़ी भाग में जङ्गल हैं। लेकिन जङ्गल को उन्नत करने का यहां कोई प्रयत्न नहीं किया गया है। आम, अमलतास, आँवला, बहेरा, बांस, बरगद, बेल, गूलर, इमली, जामुन, नीम, पीपल, सेमल, हल्दू यहाँ के प्रधान पेड़ हैं।

भोपाल राज्य की ७ लाख जन-संख्या में लगभग १३ फ़ी सदी मुसलमान और ८७ फ़ी सदी हिन्दू हैं। इन्हीं में कुछ मूल निवासी गोंड और जैन भी शामिल हैं। भोपाल शहर में मुसलमानों की प्रधानता है।

भोपाल राज्य का सब से बड़ा कारबार खेती है। कई गाँवों में मोटा कपड़ा (खद्दर) और खारूआ बुना जाता है। सीहोर में बढ़िया मलमल बनती है। यहीं पगड़ी में सोने चाँदी के तार की कढ़ाई होती है और पीतल की चिलमें बनती हैं। छिपानेर में नर्मदा के पत्थर का गारा (Mortars) बनता है। भैरौंदा में दरी और चिचिली में चमड़े के सन्दूक़ बनते हैं। जेथारी में कम्बल और देउरी में सरौता बनाये जाते हैं। अष्टा में पगड़ी, कमरबन्द और दूसरे बढ़िया कपड़े बनते हैं। भोपाल शहर तरह तरह के जेवर के लिये प्रसिद्ध है। भोपाल शहर का गुटका भी प्रसिद्ध है, जो सुपारी, कत्था, लौंग, इलायची, पिस्ता और दूसरे मसालों को मिला कर तयार किया जाता है और चूना में मिला कर चबाया जाता है।

भोपाल के सेन्ट्रल जेल में ऊनी-सूती क़ालीनें, कम्बल और निवाड़ बनाने का काम भी अच्छा होता है।

पहले जब चीन में बहुत अफ़ीम खाई और पी जाती थी तब भोपाल राज्य को अफ़ीम के कार-बार से बड़ा लाभ हुआ। चीक या कच्ची अफ़ीम को किसान से लेने के बाद अलसी के तेल में भिगोते हैं। इससे वह सूखने नहीं पाती है। इस अफ़ीम को दुहरे कपड़े के बोरे में भर कर डेढ़ महीने तक अँधेरे कमरे में रखते हैं। जब सब तेल बह जाता है तब वर्षा होने पर बोरों की अफ़ीम ताँबे के बर्तनों (चाकों) में उँडेल दी जाती है। इन्हीं चाकों में अफ़ीम को दबाते और माँड़ते हैं। फिर इसे परातों में उलट कर माँड़ते हैं। गाढ़ा होने पर अफ़ीम के एक-एक सेर के गोले बना लिये जाते हैं। इन गोलों को रब्बा या जेठा पानी में भिगो कर अफ़ीम को सूखे पत्तों में लपेट लेते हैं। तेल निकल जाने पर अफ़ीम के गोलों को काट लेते हैं। बेचने के पहले अफ़ीम की जाँच होती है। अफ़ीम को दस मिनट तक उबालते हैं और सोख़ता के तीन परतों से छानते हैं। अगर यह एकदम साफ़ छन जाती है तो अच्छी समझी जाती है। अगर काग़ज़ या बर्तन पर कुछ तलछट छूट जाता है तो यह अच्छी नहीं होती है। कपड़ों को भिगो कर जो रद्दी अफ़ीम तयार होती है वह रब्बा या जेठा पानी कहलाती है। यह पंजाब में बहुत बिकती है।

० औरङ्गज़ेब के शासन काल में सन् १६९६ में दोस्त-मुहम्मद खां नाम का एक अफ़ग़ान हिन्दुस्तान में आया। पहले वह लोहारी जलालाबाद पहुँचा जहां अफ़ग़ानों का एक उपनिवेश था। लेकिन वहाँ उसने किसी झगड़े में एक आदमी को मार डाला। पकड़े जाने के डर से वहां से भाग कर दिल्ली आया। यहां वह शाही सेना से मिल गया जो मालवा में मरहठों पर हमला करने आ रही थी। मालवा पहुँचने पर दोस्तमुहम्मद ने सीतामऊ के राजा के यहां नौकरी कर ली। इसके बाद वह मङ्गल-गढ़ के ठाकुर आनन्द सिंह सोलङ्की के यहां नौकर हो गया। ठाकुर और उनकी मां के मरने पर दोस्त-मुहम्मद ने उनके ख़ज़ाने पर अधिकार कर लिया। फिर उसने जगदीशपुर के राजा की ओर नज़र

डाली। मित्र बनने के बहाने उसने राजा और उसके साथियों को निमन्त्रण दिया। भोज के समय उसने अचानक हमला करके सब को मार डाला। फिर उसने बिना कठिनाई के जगदीशपुर पर अधिकार कर लिया और उसका नाम बदल कर इस्लाम नगर रख लिया। पड़ोस की जिस नदी में राजपूतों की लाशें फेंकी गई थीं उसका नाम हलाली नदी पड़ गया। भिलसा के सूबेदार को अचानक छापा मार कर उसने भिलसा के क़िले पर अधिकार कर लिया। इससे उसकी शक्ति बढ़ गई। ग्यारसपुर, दोराहा, सीहोर, इछावार, देवपूर, गुलगांव और दूसरे स्थान शीघ्र ही उसके हाथ में आगये। कुछ ही समय में उसने उस समय की अराजकता से लाभ उठा कर गिनूर गढ़ और दूसरे स्थानों को भी ले लिया। भोपाल की स्थिति उसे बहुत पसन्द आई। यहीं उसने शहर की नींव डाली और फतेह गढ़ का क़िला बनवाया।

इसके बाद उसने नवाब की उपाधि धारण कर ली और वह एक स्वाधीन सरदार बन गया। १७२३ ई० में हैदराबाद को जाते समय निज़ाम ने भोपाल पर चढ़ाई की। दोस्तमुहम्मद निज़ाम का सामना करने में असमर्थ था। अतः उसने अपना बेटा यारमुहम्मद निज़ाम को सौंप दिया। ३० वर्ष के लगातार परिश्रम के बाद उसने अपनी तलवार और कूटनीति के बल पर एक बड़ा राज्य स्थापित कर लिया। १७२६ में उसका देहान्त हो गया।

निज़ाम की सहायता से यारमुहम्मद भोपाल की गद्दी पर बैठा। उसने भी उदयपुर, सेवान और पठारी को मिला लिया। इसी समय १७३६ में नादिरशाह का हिन्दुस्तान पर हमला हुआ और मुग़लों की रही-सही शक्ति भी क्षीण हो गई। लेकिन मरहठों का ज़ोर बढ़ने लगा। १५ वर्ष शासन करने के बाद यारमुहम्मद भी मर गया। फ़ैज़मुहम्मद के नवाब होने पर यहाँ गृह-कलह फैली। लेकिन यहाँ के योग्य दीवान विजयराम ने अच्छा प्रबन्ध किया। फ़ैज़मुहम्मद कोई बेटा छोड़ कर न मरा। अतः १७७७ में उसका भाई हयातमुहम्मद ख़ाँ भोपाल का नवाब हुआ। इसी समय ईस्ट इंडिया कम्पनी ने बंगाल से एक फ़ौज बम्बई की सरकार की सहायता के लिये भिलसा, खेमलास, भोपाल और होशङ्गाबाद के मार्ग से बम्बई को भेजी। भोपाल राज्य में अँग्रेज़ी कम्पनी की हिन्दुस्तानी फ़ौज को सब तरह की सहायता मिली।

१८१४ में भोपाल के दूसरे नवाब ने ईस्ट इंडिया कम्पनी की मित्रता प्राप्त करने की पूरी कोशिश की। मरहठों के विरुद्ध अँग्रेज़ी फ़ौज को भोपाल राज्य में होकर जाने के लिये उसने अनुमति दे दी। लेकिन क़िला देने के लिये राज़ी न हुआ। १८१८ में सन्धि हो गई। इसके अनुसार भोपाल दरबार ६०० घुड़सवार और ४०० पैदल सिपाही कम्पनी के लिये रखने को राज़ी हो गया। बदले में इस्लाम नगर का क़िला जो सिंधिया के अधिकार में था भोपाल दरबार को दिला दिया गया। पांच परगने भी भोपाल को दिला दिये गये। १८१६ में नवाब नज़र मुहम्मद के मरने पर उसकी छोटी बेटी सिकन्दर बेगम ने भोपाल में राज्य किया। ग़दर के समय में भोपाल राज्य ने अँग्रेज़ी सरकार की जो सहायता की उसके उपलक्ष में सिकन्दर बेगम को G. C. S. I. की उपाधि मिली। १८६८ में नवाब शाहजहां बेगम भोपाल की गद्दी पर बैठी। १६०१ तक उसने राज्य किया। उनके मरने पर १६०१ में सुल्तान जहां बेगम ने राज्य किया।

राज्य की सालाना आय ८०,००,००० रु० है।

वर्तमान नरेश लैफ्टिनेन्ट कर्नल हिज़ हाईनेस सिकन्दर सौलत इफ्तिख़ारुल मुल्क नवाब मोहम्मद हमीद उल्ला ख़ाँ बहादुर जी० सी० एस० आई०, जी० सी० आई० ई०, सी० वी० ओ० वी० ए० (अफ़गान) हैं। आपको १६ बन्दूक़ों की सलामी दी जाती है और आप चैम्बर ऑफ़ प्रिन्सेज़ के मेम्बर हैं।

अपने माता के राज्य-काल में आप प्रधान मन्त्री की जगह पर सुशोभित रहे। १६३० में आप चैम्बर आफ प्रिन्सेज़ के चान्सलर हुए। आप स्वयं राज-प्रबन्ध देखते हैं। आपकी सहायता के लिये एक्ज़ीक्यूटिव और लैजिस्लेटिव सभाएँ हैं। न्याय-विभाग शासन विभाग से बिल्कुल अलग है।

राज्य में रैय्यतवारी खेतों का प्रबन्ध है। सभी किसान राज्य से खेतों को लेते हैं और वे जब तक

बरावर लगान चुकाते हैं तब तक उनका हक़ खेतों पर रहता है। उसे कोई ले नहीं सकता। बेगार की प्रथा राज्य से बिल्कुल उठा दी गई है।

वर्तमान समय में राज्य के अन्दर ४०० मील पक्की सड़क और ३०० मील कच्ची सड़क है। नये ढंग पर खेती करने के लिये प्रजा को राजा की ओर से उत्साह दिया जाता है। ग्राम-सुधार और सफाई के लिये भी प्रचार होता है। किसानों को नये खेती के औज़ारों के लिये भी राज्य की ओर से प्रबन्ध हो रहा है।

उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये लोगों को वज़ीफ़े दिये जाते हैं।



रीवा* राज्य

[श्री० लाल भानुसिंह जी बाघेल]

भौगोलिक बातें

यद्यपि भारतवर्ष का मध्य, केन्द्र, झाँसी के पास कहीं होना चाहिये, पर झाँसी के दक्षिण फैला हुआ प्रान्त ही मध्य भारत कहा जाता है। इसमें मालवा, बुन्देलखण्ड और बघेलखण्ड प्रान्त सम्मिलित हैं। मालवा प्राचीन अवन्ती है और बुन्देलखण्ड प्राचीन डाहल या चेदि राज्य का नया नाम है, जिसे बीचोबीच जेजाभुक्ति भी कहते थे। इसी डाहल के पूर्वी भाग में बघेल राजपूतों का प्रभुत्व होने से उसे बघेलखण्ड कहा जाता है। बघेलखण्ड का रीवा राज्य मध्य भारत के देशी राज्यों में एक प्रमुख राज्य है। ग्वालियर को छोड़ कर विस्तार में यह सब से बड़ा है। यहाँ के शासक बघेल राजपूत हैं। वे हिज़ हाईनेस बान्धवेश महाराजाधिराज की उपाधि और १७ फ़ैर तोपों की सलामी से सम्मानित हैं। रीवा राजधानी होने से रीवा राज्य और प्रसिद्ध क़िला बान्धवगढ़ होने से इसे बान्धव राज्य भी कहते हैं।

वर्तमान शासकः—

हिज़ हाईनेस महाराजाधिराज सर गुलाब सिंह बहादुर, जी० सी० आई०, के० सी० एस० आई० (बुन्देल राजपूत) प्रिन्सेज़ चैम्बर के मेम्बर हैं।

स्थिति और विस्तार

रीवा राज्य कर्क रेखा के दोनों ओर फैला हुआ है। संयुक्त प्रान्त, बिहार, मध्यप्रान्त और बघेलखण्ड की मैहर, नागोद आदि छोटे-छोटे राज्यों के बीच का भू-भाग ही रीवा राज्य है। विन्ध्याचल की घाटियों से ले कर गंगा के दक्षिणी मैदान तक अर्थात् २२°—३० उत्तरी अक्षांश से २५°—१२ उत्तरी अक्षांश तक तथा ८०°—३६ पूर्वी देशान्तर से ८२°—५१ पूर्वी देशान्तर तक विस्तृत है। इस में जङ्गली भू-भाग, पठारी मैदान और कछारी मैदान सब प्रकार की भूमि सम्मिलित है। इस का आकार डमरू की भाँति, मध्य में सङ्कीर्ण और क्षेत्रफल १३ हज़ार वर्ग मील है। इस राज्य की स्थिति पर विचार करते समय यह भी ध्यान रखना चाहिये कि यहाँ विशेष कर दक्षिणी भाग में भू-कम्प इत्यादि कोई असाधारण तूफ़ान कभी नहीं आया है।

प्राकृतिक विभाग

प्राकृतिक रूप से यह राज्य तीन विभागों में विभाजित है। दक्षिण का पहाड़ी प्रान्त, बीच का पठारी मैदान और उत्तर का कछारी भाग। यहाँ की भौगोलिक भाषा में इन्हें क्रमशः पठहार-ड्हार, उपरिहार और तरिहार कहते हैं। दक्षिणी भाग नर्मदा के उद्गमस्थल से आरम्भ हो कर पूर्व-पश्चिम विस्तृत विन्ध्याचल की कैमूर नामक श्रेणी तक समाप्त होता है। राज्य का लगभग साढ़े नौ हज़ार भू-भाग इस प्रान्त में सम्मिलित है; किन्तु इस भाग से शेष राज्य का न कोई प्रत्यक्ष प्राकृतिक सम्बन्ध है और न शासन के सिवाय किसी विषय की एकता है।

कैमूर श्रेणी के उत्तर से बीच का पठारी प्रान्त (उपरिहार) प्रारम्भ होकर बिंझ नाम की, प्रायः पूर्व-पश्चिम विस्तृत पर्वत श्रेणी तक समाप्त होता है। यह प्लेटो पूर्व में रीवा राज्य और युक्तप्रान्त की सीमा से प्रारम्भ होकर पश्चिम में बुन्देलखण्ड के पन्ना और अजयगढ़ राज्य तक चला गया है। यह बड़ी सुन्दर उच्च-सम-भूमि है। क्या जलवायु और क्या उपजाऊपन सब विषयों में यह प्रान्त सुन्दर है। कैमूर पहाड़ से निकलने वाली अनेक नदियाँ इसे सजला-सुफला करती हैं। दो-चार टीलों को छोड़ कर रीवा राज्य में कोई पर्वत श्रेणी नहीं है। बंटाढाल मैदान पड़ा हुआ है। रीवा राजधानी इसी प्रान्त के मध्य में है। इसका क्षेत्रफल २,६६६ वर्गमील है।*

---

*अनुमान किया जाता है कि नर्मदा नदी का उद्गम इसी राज्य से होने के कारण उसी के दूसरे नाम 'रेवा' के नाम पर राजधानी का नाम 'रेवा' रक्खा गया और पीछे फ़ारसी लिपि के कारण वह रीवा हो गया। —लेखक

*दक्षिणी भाग और उच्च-सम-भूमि की अवस्था कैंब्रियनकाल अर्थात् पृथ्वी की आदिम अवस्था, की मानी जाती है और उसकी आयु डेढ़ अरब वर्षों से अधिक अनुमान की जाती है। —लेखक

विंध्य श्रेणी के उत्तर यमुना-गंगा के कछारी मैदान का ८१६ वर्गमील भू-भाग भी इस राज्य में सम्मिलित है। इस भाग की भूमि की अवस्था २० से ३० लाख वर्षों की कूती जाती है।

पर्वत और नदियाँ

राज्य का अधिकांश भाग विशेष कर दक्षिण का वन्य प्रान्त विन्ध्याचल की विभिन्न श्रेणियों से भरा हुआ है। इनमें मुख्य सब से दक्षिण मेकल श्रेणी है। यह पूर्व की ओर छत्तीसगढ़ के पर्वतों तक फैली हुई है। समुद्र-तल से इसकी उँचाई ३०,०० फुट है। मध्य में कैमूर श्रेणी पूर्व से पश्चिम तक, राज्य के आर-पार, मान-दण्ड की भाँति, खड़ी हुई है। राज्य में इसकी लम्बाई १०६ मील और समुद्र-तल से उँचाई १८०० फुट है। इतनी लम्बाई में यह कहीं टूटी हुई नहीं है। उत्तर में विंध्य श्रेणी राज्य के उत्तर-पूर्व के नोक कैमूर से ही प्रारम्भ होकर पश्चिम की ओर पन्ना पर्वत-श्रेणी में समा गई है।

जहाँ पर्वतों की ऐसी प्रचुरता हो वहाँ नदियाँ भला क्यों न हों? पर्वतों की भाँति दक्षिणी प्रान्त अनेक छोटी-बड़ी नदियों से भी भरा हुआ है। राज्य के धुर दक्षिण में मेकल-पृष्ठ पर अमरकण्टक भारतवर्ष के भूगोल में एक महत्वपूर्ण स्थान है। वैसे तो यह नर्मदा के उद्गम के लिए ही प्रसिद्ध है, पर इस जल-विभाजक के दूर-दूर चारों ओर से चार नदियों का उद्गम हुआ है। पश्चिम नर्मदा, उत्तर शोण, पूर्व महानदी और दक्षिण बाणभंगा। भौगोलिक दृष्टि से रीवा-राज्य एक ऐसा राज्य है जिसका पानी बंगाल और अरब दोनों समुद्रों में जाता है। अमरकण्टक से नर्मदा नदी निकली है और केवल ४२ मील पश्चिम ओर विन्ध्याचल की अधित्यका में बह कर राज्य से बाहर चली गयी है। ४२ मील का पानी नर्मदा द्वारा अरब-समुद्र में जाता है। इस नदी से राज्य को कोई विशेष लाभ नहीं है।

शोण रीवा राज्य की सब से बड़ी नदी है। यह अमरकण्टक से पूर्व सोनमूढ़ा स्थान से निकल कर कुछ जिला विलासपुर में बहने के बाद फिर रीवा राज्य में आ गई है और १४४ मील उत्तर की ओर बह कर कैमूरजल-विभाजक के कारण उसके समानान्तर १४४ मील पूर्व की ओर राज्य में बहने के बाद युक्त प्रान्त होती हुई विहार में, दानापुर के पास, गंगा में गिरी है। भूमि के कारण इस नदी में इतना परिवर्तन हुआ है कि रीवा राज्य की शोण और विहार की शोण को देख कर कोई एक नहीं कह सकता। जहाँ रीवा राज्य में यह गहरी हो कर इतने ऊँचे किनारे बनाती है कि बड़े से बड़े बूढ़ों में भी इसका पानी कभी ऊपर नहीं आता वहाँ बिहार में यह बिना किनारों (तटों) की होकर मीलों चौड़ी और इतनी छिछली (उथली) हो जाती है कि वर्षा में भी सर्वत्र अथाह नहीं होती। रीवा राज्य में इसका बालू लाल रंग का है। इसके शोण नाम का यही कारण मालूम होता है; क्योंकि संस्कृत भाषा में शोण का अर्थ लाल होता है। संस्कृत में इसका दूसरा नाम हिरण्यवाह है, जिस का अर्थ होता है सोना बहाने वाला। प्राचीन काल से खानों के अतिरिक्त नदियों की बालू से भी सोना निकाला जाता था। अब भी शोण की बालू में सोना पाया जाता है, पर इतना कम कि उस के निकालने में खर्च अधिक पड़ जाता है। इस नदी का पानी रीवा राज्य में अत्यन्त गहराई में होने के कारण उसका कोई उपयोग नहीं होता और न यह कोई उपजाऊ कछार ही बनाती है। बहुत थोड़े लकड़ी के व्यापार के लिए इस नदी को काम में लाया जाता है। इसके किनारे के राज्य के जंगलों से ठेकेदार लोग बाँस और लकड़ी काट कर बेड़ा द्वारा शोण से बिहार के डेहरी स्थान तक ले जा कर बेंचते हैं। इस कार्य में २०-२२ दिन बेड़े पर ही पानी-पानी जाना पड़ता है। जुहिला, महानदी, बनास, गोपद बड़ी-बड़ी नदियाँ इसकी सहायक हैं। इन में अनेक दहारें हैं और उन में अनेक जीव-जन्तु भी हैं। मार्कण्डेय, बरौंधा, नरबार, नौघटा, भमरसेन इत्यादि स्थानों में शोण दर्शनीय है।

उत्तरी और मध्यवर्ती भाग में कैमूर से कई नदियाँ निकलती हैं। वे सब उत्तर ही की ओर बहती हैं। ये नदियाँ रीवा प्लेटों को सींचने के बाद सैकड़ों फ़ीट की उँचाई से एकदम कछारी मैदान (तरिहार) के धरातल पर गिर कर दर्शनीय प्रपात बनाती हैं। यहाँ इलाहाबाद जिला से बेलंद नदी भी आकर इनसे मिल जाती है। इसी प्रकार सब आपस में मिल कर अन्त में टमस के नाम से इलाहाबाद जिले में सिरसा के पास गंगा में गिरती हैं। इन में भी बड़ी-बड़ी दहारें हैं। इनके किनारे शोण की भाँति ऊँचे नहीं हैं, पर इन से भी कोई काम नहीं लिया जाता। इन में बाँध बाँध कर सिंचाई का काम और प्रपातों से बिजली पैदा करने का काम लिया जा सकता है।

जलवायु और ऋतुएँ

भारतवर्ष की जाड़ा, गर्मी और वर्षा तीनों प्रधान ऋतुएँ इस राज्य में कड़ाके की होती हैं; इसी लिये वहाँ का जलवायु भी बहुत परिवर्तनशील है। स्थूल रूप से दक्षिणी भाग से मध्य भाग का और मध्य भाग से उत्तरी भाग का जल वायु अच्छा है। दक्षिणी भाग का जल-वायु वर्षा ऋतु में जङ्गलों के कारण प्रायः विषाक्त (मलेरियल) हो जाता है। राज्य भर की वर्षा का औसत ४२°२३ इञ्च दक्षिणी भाग का ४६°५६ इंच, मध्यभाग का ४२°२ इञ्च और उत्तरी भाग का ४१°५ इंच है। गर्मी का औसत तापमान दिसम्बर का ८०° और जून का ११५° है। पर अमरकण्टक में गर्मियों में भी ठण्डक मालूम होती है।

वनस्पति और जीव-जन्तु

१३,००० वर्गमील भूमि में ४ हजार ६ सौ वर्गमील से अधिक जङ्गल है। वर्षा की कमी नहीं है। अतएव वनस्पतियों की भी इस राज्य में कमी नहीं है। दक्षिणी भाग की प्रधान वनस्पति साखू या सलई है। इस भाग के सारे जङ्गल सलई से भरे पड़े हैं। इस की लकड़ी घरों में लगाने के लिये बहुत बढ़िया होती है। इसके अतिरिक्त चार, तेंदू, खैर, आमला, हर्र, बहेड़ा आदि के पेड़ भी बहुत अधिक हैं। उत्तरी भाग के जंगलों का प्रधान पेड़ सागौन है। यहाँ पर्याप्त परिमाण में उत्तम सागौन पाया जाता है। इस का काष्ठ मकान और फर्नीचर सब काम के लिये बढ़िया होता है। बाँस तो दोनों भागों में बहुत अधिक और बढ़िया होता है। जंगलों से राज्य को अच्छी आमदनी होती है।

जहाँ जङ्गलों और नदियों की ऐसी प्रचुरता हो वहाँ जीव-जन्तुओं की प्रचुरता होनी ही चाहिये। दक्षिण-पूर्व में इस राज्य का सम्बन्ध छोटानागपुर (सरगुजा) के जंगलों से है। इसलिये अभी एक शताब्दी भी नहीं हुए यहाँ जंगली हाथी पकड़े जाते थे, पर अब मनुष्यों की अधिकता से उन का आवागमन कम हो गया है। पड़ोस के सरगुजा राज्य में अब भी हाथी पकड़े जाते हैं। अरना और गोर जाति के बन में भैंसों का शिकार अब भी इस भाग में सफलता पूर्वक खेला जाता है। शेरों और चीतों के लिये तो यह राज्य प्रसिद्ध ही है। भालू, सूअर, सामर, रोझ (नील गाय), स्याही— काला और गोरा हिरन, सोनहा (हुँडार), गीदड़, लकड़-बग्घा, भेड़िया, लोमड़ी इत्यादि कई प्रकार के जीव-जन्तु यहाँ के जङ्गलों में हैं। काली धारी और स्वच्छ सफ़ेद रंग का शेर भी यहाँ पाया जाता है। पक्षियों में पढ़ने वाला बड़ा तोता, मोर आदि अनेकों प्रकार के पक्षी यहाँ होते हैं। नदियों में घड़ियाल, मगर और अनेक प्रकार की मछलियाँ होती हैं।

निवासी और भाषा

दक्षिण के जङ्गली प्रान्तों में अब भी गोंड़ जाति के प्राचीन निवासियों का राज है। इनके लिए जङ्गलों की विषाक्त जल-वायु भी अनुकूल ही रहती है। किन्तु पेड़ों की छाल की लँगोटी लगाने और तीर-कमान से शिकार करके जीवन-निर्वाह करने वाले अब कम पाये जाते हैं। अधिकांश में खेती-बारी करने और कपड़े पहिनने वाले ही हैं। इनका रंग काला, क़द नाटा, नाक चपटी और प्रायः दाढ़ी-मूँछ रहित होते हैं। इनकी अपनी सभ्यता है। अब तक हम लोगों से ये लोग कहीं अधिक स्वतन्त्र थे, पर नई सभ्यता अथवा गुलामी के विस्तार के साथ ये लोग भी गुलाम होते जा रहे हैं। अब तक ये लोग अपनी आवश्यकता अपने आप पूरी कर लेते थे, पराधीन नहीं रहते थे। कपास पैदा करके अच्छा कपड़ा तयार कर लेते थे, अलसी-तिली से तेल निकाल लेते थे, बढ़ई का काम कर लेते थे। लोहार के काम के लिये तो इनमें अगरिया एक जाति ही होती है। ये लोग धाऊ मिट्टी से लोहा निकाल कर बहुत पक्के हथियार बनाते हैं, पर बाजारों में विदेशी वस्तुयें सस्ती हो जाने से ये लोग भी अपना काम भूल कर पराधीन होते जाते हैं। कपास उत्पन्न करने और कातने की इनकी कला भी लुप्त होती जाती है। अब ये लोग भी बाजारों से सूत लेकर कपड़ा बनाते हैं अथवा मशीन की दुकड़ी धोतियाँ अपनी औरतों को पहनाते हैं। भाषा इनकी बाघेली और छत्तीसगढ़ी हिन्दी का सम्मिश्रण है। इस भाग के पूर्वी भाग में चन्देल राजपूतों की और शेष में बाघेलों की प्रधानता है।

उत्तरी (पठारी और कछारी मैदान) भाग में ब्राह्मण, क्षत्रिय, कुरमी, काछी किसान अधिक पाये जाते हैं। इस भाग के पूर्वी भाग में सेंगर राजपूतों की और शेष में बघेलों की प्रधानता है।

भाषा बघेलखण्डी हिन्दी है, पर वह भी तीनों प्राकृतिक विभागों में विभिन्न हो गई है। ठेठ दक्षिणी भाग में छत्तीसगढ़ी की छाया पाई जाती है। पूर्वी भाग में मिर्ज़ापुरी की

और उत्तरी में इलाहाबाद की बोली की विशेषता है। शुद्ध बघेली रीवा नगर के आस-पास में ही बोली जाती है।

जन-संख्या, उपज और आय

यहाँ की जन-संख्या १५ लाख, ८७ हज़ार, ४ सौ ४५ है और दक्षिणी भाग से मध्य भाग तथा मध्य भाग से उत्तरी भाग अधिक आबाद है। यही हाल उपज का भी है। दक्षिणी से उत्तरी भाग क्रमशः अधिक उपजाऊ है। आबादी का औसत ११७ मनुष्य प्रति वर्गमील और पहाड़ी भाग का ८७ मनुष्य प्रति वर्गमील है। दक्षिणी भाग की प्रधान उपज धान और जङ्गल की चीजें हैं। मध्य और उत्तरी भाग में धान, कोदो, गेहूँ, चना, अरहर, अलसी सब कुछ होता है। १८ लाख ५४ हज़ार एकड़ जमीन जोती-बोई जाती है। प्रति शत ७५ मनुष्य कृषि-जीवी हैं। खेती दैव-मातृक ही होती है। सिंचाई उत्तरी कछारी प्रान्त (तरिहार) में ही कुछ होती है। यहाँ की माली (भूमि-कर की) ५१,८०,०००) है, कही जाती है।

यहाँ के भू-गर्भ में पत्थर, लोहा और कोयला विशेष रूप से पाया जाता है। प्रायः दक्षिणी प्रान्त के सारे भू-गर्भ में कोयला होने का अनुमान किया जाता है। कहा जाता है कि संसार में अन्य किसी शासन के अधीन इतने बड़े क्षेत्र-फल में कोयला नहीं है। उमरिया और बुढ़ार की खानों से कोयला निकाला भी जाता है। यह कोयला दूसरे दर्जे का माना जाता है।

व्यवसाय और वाणिज्य

रीवा राज्य का प्रधान व्यवसाय खेती और पशु-पालन है तथा वाणिज्य गल्ला और घी बेचना है। किन्तु कोई किसान सङ्गठित रूप से इसका भी व्यवसाय नहीं करता। गाँवों के पास की छोटी-छोटी मण्डियों में थोड़ा-थोड़ा माल अपनी आवश्यकता पूरी करने के लिए गाँव वाले ले जाते हैं अथवा गाँव या मण्डियों के बनिये अपने टट्टुओं पर गाँव गाँव घूम कर माल खरदीते हैं। किसानों या गाँवों का कोई सङ्गठन न होने से बनिये किसानों का माल मनमाना भाव में लेते हैं और बदले में अपना माल (नोन, गुड़, तम्बाकू, तेल, सुपारी) मनमाना भाव में देते हैं।

आने जाने का मार्ग

उत्तरी भाग के पूर्व से पश्चिम को हिन्दुस्तान की मशहूर सड़क ग्रेट डेकेन रोड निकल गई है। यह रीवा राजधानी होकर ही गयी है। इसी से उत्तर की ओर रीवा-इलाहाबाद रोड निकली है। दक्षिण भारत से इलाहाबाद और मिर्ज़ापुर को मिलाने के लिए यही सड़क है। इसी से रीवा सतना रोड निकलती है। रीवा से गुढ़ और गोविन्द-गढ़ के लिए भी पक्की सड़कें हैं। दक्षिणी से उत्तरी का सम्बन्ध जोड़ने के लिये कैमूर पर्वत श्रेणी को चार स्थानों से काट कर और शोण में सूखी ऋतुओं का पुल बना कर ठेठ दक्षिणी भाग में अमरकण्टक और पुष्पराजगढ़ तक के लिये सड़कें निकाली गयी हैं, जिनमें लारियाँ दौड़ा करती हैं।

दक्षिणी जिले के कुछ भाग से बङ्गाल नागपुर रेल की कटनी-विलासपुर लाइन निकल गयी है। और उत्तरी भाग से जी० आई० पी० रेल की इलाहाबाद इटारसी लाइन निकल गई है। इसी का सतना स्टेशन राज्य का दरवाज़ा है।

दर्शनीय स्थान

एक प्रकृत-प्रेमी के लिए शोण-वर्णन में बताए हुए उसके विशेष स्थल सब दर्शनीय हैं। अमरकण्टक तो एक तीर्थ ही है। दक्षिणी भाग के बान्धवगढ़ तहसील में बान्धव गढ़ का ऐतिहासिक क़िला भी दर्शनीय है। यह एक पहाड़ी क़िला है। इसके चारों ओर के किनारे इतने खड़े हैं कि एक रास्ता के सिवा ऊपर जाने के लिये और कोई रास्ता नहीं है। ऊपर मीलों लंबा-चौड़ा मैदान है। यहाँ राज्य की ओर से रसद और कुछ फ़ौज रहती है। उमरिया कोयले की खानि भी दर्शनीय है।

कैमूर की चुहिया घाटी से दक्षिणी भाग का दृश्य बहुत बढ़िया दिखाई देता है, विशेष कर शरद ऋतु में जब हरे-पीले धान के खेतों में पाबी भी भरा रहता है। इसी प्रकार मार्कण्डेय के पास की सड़क की घाटी से वर्षा ऋतु का दृश्य बड़ा मनोहर होता है। गोविन्दगढ़ का तालाब या कृत्रिम झील भी दर्शनीय है। यह ११ सौ बीघे में है। रीवा राजधानी के राज-महल और वेंकट-विद्या-सदन संग्रहालय भी दर्शनीय हैं। उत्तरी मध्य भाग की नदियों के प्रपात एक उत्तम प्राकृतिक दृश्य हैं। इन में कई प्रपातों की धारा गरमियों में बन्द हो जाती है। केवल टमस, बीहर और महाना नदी की धारा नहीं सूखती। परन्तु इन सब का दृश्य शरद ऋतु में ही उत्तम रहता है। रीवा-नगर बिछिया और बीहर नदियों के संगम पर बसा हुआ है। दोनों नदियों के संगम का दृश्य बहुत सुन्दर है।

शासन-प्रबन्ध

शासन-प्रबन्ध के सङ्गठन के लिए रीवा राज्य किसी देशी राज्य से कम नहीं है। राज्य के बेडौल विस्तृत और पहाड़ी-जङ्गली होने पर भी उसका सङ्गठन प्रशंसनीय रूप से किया गया है। इसके लिये राज्य पूर्वी, दक्षिणी और उत्तरी तीन ज़िलों और १२ तहसीलों में बाँटा गया है। ब्योहारी, गोपद-बनास, देवशर और सिंगरौली तहसील पूर्वी ज़िले में, पुष्पराजगढ़, बान्धवगढ़ और सोहागपुर दक्षिणी ज़िले में और हुज़ूर तहसील (रीवा), रघुराजनगर, मऊगंज, शिरमौर और त्योंथर तहसील उत्तरी ज़िले में हैं। गोपद-बनास तहसील का मुख्य स्थान सीधी, हुज़ूर तहसील का रीवा और सब का वही है जिस नाम से तहसीलें प्रसिद्ध हैं। पूर्वी ज़िले का मुख्य स्थान सीधी, दक्षिणी का उमरिया और उत्तरी का रीवा है। प्रत्येक तहसील के माल विभाग का उत्तरदाता तहसीलदार और ज़िले का डिपुटी कमिश्नर है। डिपुटी कमिश्नरों के ऊपर रेवेन्यू मिनिस्टर हैं। इन के अधीन जङ्गल विभाग भी है। इस विभाग की सर्वोच्च अदालत रेवेन्यू बोर्ड महाराजा साहब बहादुर की निगरानी में अपना काम करती है।

न्याय के लिये कई ऑनरेरी मजिस्ट्रेट, डिपुटी मजिस्ट्रेट, डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट और प्रत्येक ज़िलों में सेशन जज नियुक्त हैं। इनके ऊपर चीफ कोर्ट है इस में तीन माननीय जज बैठते हैं। यहाँ की चीफ कोर्ट छान-बीन पूर्वक न्याय के लिये प्रसिद्ध है। चीफ जज लाल शङ्कर सिंह क़ानून के धुरन्धर विद्वान हैं। चीफकोर्ट की अपील महाराजा साहब को इजलास में होती है जिसकी निगरानी क़ानून के विद्वानों की एक जुडिशल कमेटी करती है। न्याय विभाग की यही अन्तिम अदालत है और अपने निर्भीक न्याय के लिये प्रसिद्ध है।

प्रजा के जान-माल की रक्षा के लिये राज्य भर में बहुत से थाने हैं, जिन में ट्रेण्ड सब-इन्स्पेक्टर रहते हैं। इनके ऊपर सरकिल इन्स्पेक्टर और तीन ज़िलों में तीन पुलिस सुपरिंटेन्डेंट हैं। इनके ऊपर इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस है, जो फाइनेंस मिनिस्टर के सामने उत्तरदाता है। सेना में पैदल, रिसाला, तोपखाना और ट्रांसपोर्ट है। सेना का मुख्य अफ़सर चीफ दि जनरल स्टाफ कहा जाता है और यह भी फाइनेंस मिनिस्टर के सामने उत्तरदाता है।

शिक्षा के लिये राज्य भर में २६ मिडिल स्कूल, ८ लोअर मिडिल स्कूल, १०२ प्राइमरी स्कूल, १० इमदादी और कुछ दीगर पाठशालाएँ हैं। रीवा राजधानी में एक इण्टरमिडियेट कॉलेज, एक बालिका हाई स्कूल, वेद पाठशाला, संस्कृत पाठशाला और एक औद्योगिक पाठशाला है। सतना में भी हाई स्कूल है। इस विभाग का कार्य एक डाइरेक्टर के निरीक्षण में होता है, जिसके अधीन प्रत्येक ज़िले में तीन डिपुटी इन्स्पेक्टर कार्य करते हैं। यह विभाग भी फाइनेंस मिनिस्टर के अधीन है। राज्य का इंजिनियरिङ्ग विभाग ही पी० डब्लू० डी० का काम करता है। राज्य भर में २२ अस्पताल भी हैं। रीवा शहर में एक बड़ा अस्पताल और एक ज़नाना अस्पताल भी है। यह विभाग एक स्टेट सर्जन के अधीन है।

रेवेन्यू, फाइनेन्स, इन्डस्ट्रीज, पोलिटिकल और जुडिशल मिनिस्टरों तथा वाइस-प्रेसीडेण्ट की काउन्सिल के सहयोग से महाराजा साहब बहादुर राज्य भर का शासन करते हैं।

एक राज्य-परिषद भी है जिसका अधिवेशन विजय-दशमी और होली में होता है। इस के मेम्बर सब राजकीय (नामजद) होते हैं। चुने नहीं जाते।

सार्वजनिक ज़ीवन

राज्य भर में सार्वजनिक जीवन की कमी है। रीवा-नगर के अतिरिक्त सतना उमरिया आदि अधिकांश रेलवे स्टेशन छोटे-छोटे शहर हैं। पर जो कुछ जागृति के लक्षण दिखाई देते हैं, थोड़े-बहुत रीवा ही में हैं। शहर की सब से पुरानी संस्था बाल-समिति सामाजिक, शिक्षा-सम्बन्धी और साहित्यिक कार्य कर रही है। रघुराज-साहित्य-परिषद साहित्यिक कार्य में संलग्न है। वेंकट-विद्या-सदन सरकारी वाचनालय और संग्रहालय है। यहाँ का अनाथालय एक सुसङ्गठित संस्था है। कहते हैं यहाँ एक कांग्रेस-कमिटी भी है। पर इन सब का कार्य रीवा नगर तक ही परिमित है। गाँवों की खबर लेने वाला कोई सङ्गठन नहीं है। राज्य की ओर से एक 'प्रकाश' साप्ताहिक पत्र भी निकलता है। रीवा-नगर में सामाजिक और नैतिक जागृति से अधिक साहित्यिक जागृति ही अधिक है। शेष राज्य में तो यह भी नहीं हैं। सारांश यह कि सार्वजनिक जीवन के कार्य भी यहाँ जो कुछ दिखाई देते हैं वे अधिकांश में यहाँ की सरकार द्वारा ही किये हुए हैं। यहाँ की जनता अपने आप कुछ न कर के सभी कार्य के लिए सरकार पर निर्भर रहती है। अभी,

इसी वर्ष, एक महिलाश्रम रीवा-सरकार द्वारा ही खोला गया है।

ऐतिहासिक वृत्तान्त

जितनी ज़मींन पर इस समय रीवा राज्य फैला हुआ है प्राचीन काल में ठीक उतने ही भू-भाग पर किसी एक राज्य के होने का पता नहीं चलता। उस समय इस राज्य की भूमि बड़े-बड़े साम्राज्यों में सम्मिलित थी; जैसे, अशोक-साम्राज्य गुप्त-साम्राज्य, हर्ष-साम्राज्य और चेदि-राज्य। अर्थात् इतने भू-भाग पर बाघेलों ने ही इस राज्य की स्थापना की है। तेरहवीं शताब्दी में बाघेल लोग गुजरात से यहाँ आये तब से आज ७०० वर्षों तक बराबर इस प्रान्त पर उसी वंश का राज्य है। उदयपुर को छोड़ कर और बहुत कम राज-वंश इतने प्राचीन हैं।

बाघेलों से पहले विक्रम की दशवीं से तेरहवीं शताब्दी तक पड़ोस के चेदि या डाहल-राज्य में इस राज्य की भूमि सम्मिलित थी। राजधानी इस की जबलपुर के पास त्रिपुरी थी। जहाँ इस वर्ष भारतीय राष्ट्रीय काङ्गरेस का अधिवेशन हुआ था। कलचुरि राजवन्श का राज्य था। इस राज्य में इनके कई ताम्र-पत्र और शिला-लेख मिले हैं तथा इनके दो शिवालय और दो मठों के खण्डहर अभी वर्तमान हैं।

शिला-लेखों से मालूम होता है कि दशवीं से तेरहवीं शताब्दी तक इन की तेरह पीढ़ियों ने इस प्रान्त पर राज्य किया। इनकी बीच की तीन पीढ़ियाँ, गांगेयदेव (१०६० वि०), कर्णदेव (१०६६ वि०) और यशःकर्णदेव तो समय समय पर उत्तर में नेपाल, पूर्व में विहार, दक्षिण में कर्णाटक और पश्चिम में गुजरात तक विजय किया था। इन में भी कर्णदेव तो कर्ण ही की भाँति प्रवल प्रतापी हो गया है। इसे यहाँ (रीवा राज्य में) करनडहरिया कहते हैं।

ये लोग शैव थे और शैव साधुओं को बड़ी-बड़ी जागीरें देते थे। ये साधु आजकल के गद्दीधर महन्तों की भाँति बड़े बड़े मठाधीश थे और अपनी जागीरों का प्रबन्ध स्वयं करते थे। शत्रुओं से युद्ध करते थे। प्रजा के लिए नदियों में पुल, पहाड़ों में घाटियाँ और बनों में सड़के बनवाते थे। सब जातियों के लिये सदावर्त (अन्नसत्र), औषधालय और विद्यालय बनवाते थे। इन राजाओं का शासन-प्रबन्ध बहुत ऊँचे दर्जे का था। उसमें निम्नलिखित दश मुख्य कर्मचारी होते थे :—

१—महामन्त्री=मुख्यमन्त्री
२—महामात्य=दीवान या प्राइम मिनिस्टर
३—महासामन्त=मुख्य योद्धा या सेनापति
४—महापुरोहित=धर्माचार्य
५—महाप्रतिकार=राजमहल का मुख्य अधिकारी
६—महाक्षपटलिक=लेखक-विभाग का मुख्य अधिकारी
७—महाप्रमात्र—न्यायाधीश (चीफ जस्टिस)
८—महाश्व सानध—रिसाले का मुख्य अधिकारी
६—महाभाण्डागरिक—मुख्य खजांची
१०—महाध्यक्ष—बड़ा एकाउण्टेण्ट

इसके अतिरिक्त प्रत्येक विभाग में लेखक रहते थे। जैसे धर्म-लेखी अर्थात् धर्म विभाग का लेखक। प्रत्येक काम खूब निश्चय और स्पष्टता पूर्वक होता था। गाँवों की सीमा इतनी स्पष्ट रहती थी कि जहाँ प्राकृतिक सीमा नहीं होती थी वहाँ खाई खोद कर सीमा बनायी जाती थी। काग़ज-पत्र बहुत स्पष्ट लिखे जाते थे और अधिकार का बहुत सूक्ष्म विवेचन किया जाता था। गावों के दान-पत्रों में जल, थल आम, महुआ, गड्ढा, चुङ्गी, नमक की खानि, गोचर भूमि, जङ्गल, कछार, पेड़ बाग-बगीचा और घास तक का दिया जाना लिखा जाता था; पर शासन-प्रबन्ध नहीं दिया जाता था। वह वर्तमान समय की भाँति सुबन्ध के लिये राजाओं के हाथ में ही रहता था। ये दान-पत्र महाराज, महारानी, युवराज, राज्य के सभी विभाग के मुख्य कर्मचारी और जो गाँव दान में दिया जाता था उसको प्रजा के सामने लिखे जाते थे। महारानियों को परदा नहीं था वे भी शासन का एक अङ्ग मानी जाती थीं आने-जाने के लिये नदियों में पुल, बनों में सड़कें और पहाड़ों में घाटियाँ बनवाई जाती थीं। प्रजा के लिये औषधालय और पाठशालाएँ भी होती थीं।

शिल्प और साहित्य भी अच्छी अवस्था में था। इमारतें इतनी अच्छी और मजबूत बनती थीं कि आज सैकड़ों वर्ष बाद भी वैसी ही बनी हुई हैं। मूर्तियाँ तो उस समय बहुत बढ़ के बनती थीं। पत्थर पर खुदे लेखों के अक्षरों की स्वच्छता और सुन्दरता का उतना ही ध्यान रक्खा जाता था जितना आजकल अच्छे टाइपों में रक्खा जाता है। लेखों से मालूम होता है कि उस समय संस्कृत साहित्य भी अच्छी अवस्था में था। प्रशस्ति-निर्माण के लिये बड़े बड़े योग्य पंडितों को राजा लोग आश्रय देते थे।

कलचुरि लोग कट्टर शैव थे, पर अन्य धर्मवालों के साथ अन्याय नहीं करते थे। इनकी धर्मशालाओं में सब धर्मवालों को सदावर्त मिलता था। ब्राह्मण और साधुओं को दान में गाँव दिये जाते थे। इनका अन्तिम राजा त्रैलोक्यवर्द्धन् १२९८ वि० में था। इसी समय के लगभग बाघेलों ने उनकी राजधानी त्रिपुरी पर चढ़ाई कर के उनके राज्य की समाप्ति कर दी। कलचुरियों के कमजोर होने पर यहाँ भर, लोधी, गोंड़, वेणुवंशी, बालन्द और सेंगर जातियों ने जोर पकड़ा। इनके छोटे छोटे राज्य बन गये। केवल बान्धवगढ़ के आस-पास कलचुरियों का अधिकार रह गया।

बाघेलों का समय

गुजरात के सोलंकियों की एक शाखा व्याघ्रपल्ली गाँव में रहने के कारण व्याघ्रपल्लीय अर्थात् व्याघ्रपल्ली वाली कही जाने लगी। बाघेल या बघेल इसी व्याघ्रपल्लीय शब्द का रूपान्तर है। उस समय गुजरात के व्याघ्रपल्ली और धोल्का (धवलगढ़) के इलाके इनके अधिकार में थे। इन लोगों ने मुसलमानों के आक्रमणों का सामना कर के उन्हें परास्त किया। इनके राज्यकाल में गुजरात में साहित्य, व्यापार-धर्म आदि की अच्छी उन्नति हुई। इनका चौथा राजा वीरधवल (१२९२ वि०) बहुत योग्य शासक और योद्धा था।

कहा जाता है कि इसी वीरधवल का व्याघ्रदेव नामक कोई पुत्र १२९० वि० के इधर-उधर इस ओर आये। चित्रकूट के पास तरौंहा के राजा कनकदेव ने अपनी लड़की से आपका विवाह करके निस्सन्तान होने के कारण, अपना छोटा राज्य भी, इन्हें दे दिया। तरौंहा का राज्य पाकर ये मड़फा (चित्रकूट के पास) के क़िले में रहे। धीरे धीरे रघुवंशियों से गहोरा (जिला बाँदा) प्रान्त और लोधियों से पुर्दवाँ (कसौटा) का प्रान्त भी इन्होंने ले लिया तथा रीवा प्रान्त पर भी अधिकार कर लिया। इस कार्य में बाघेलों को तिवारी ब्राह्मणों से बड़ी सहायता मिली। इसी से रीवा राज्य में अब तक तिवारियों की विशेष प्रतिष्ठा है।

व्याघ्रदेव के पाँच पुत्रों में बड़े कर्णदेव उनके उत्तराधिकारी हुए। बीच के तीन का पता नहीं है। छोटे कन्धरदेव पुर्दवाँ (कसौटा) चले गये। वहाँ उनके वंशज अभी तक शासन करते हैं।

कहा जाता है कि कर्णदेव का विवाह रतनपुर (मध्य-) प्रान्त) के हैहयवंशी (कलचुरी) राजा सोमदत्त की कन्या से हुआ और दहेज में बान्धवगढ़ किला प्राप्त हुआ; किन्तु रतनपुर के इतिहास में राजा सोमदत्त का पता नहीं है। अस्तु; जो हो व्याघ्रदेव से लेकर आज कल ३३ वीं पीढ़ी बाघेलों की रीवा राज्य पर शासन कर रही है। उनके समय की मुख्य ऐतिहासिक घटनाएँ निम्नलिखित हैं।

१६ वें महाराज भीर सिंह या भैद्यदेव (१५२७-५२ वि०) ने दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लोदी के विरोधी जौनपुर के नवाब हुसेनशाह शर्की को शरण देने के कारण सिकन्दर लोदी ने बान्धवगढ़ पर चढ़ाई किया। पर बान्धवगढ़ तक नहीं पहुँचा। भीरसिंह के पुत्र शालिवाहन (१५५२-५७ वि०) के समय में लोदी ने महाराज से लड़की देने का प्रस्ताव किया। महाराज ने, यह जानते हुए भी कि प्रस्ताव के अस्वीकार का परिणाम घोर युद्ध और आपत्ति होगी, तुरन्त अस्वीकार कर दिया। इस से लोदी ने बान्धवगढ़ पर फिर आक्रमण किया। इस बार वह बान्धवगढ़ तक पहुँच गया पर उसे तोड़ नहीं सका। शालिबाहन के पुत्र वीरसिंह देव (१५५७-९७ वि०) के समय में गढ़ा-मण्डला की प्रसिद्ध रानी दुर्गावती का श्वशुर अमानदास, जो पीछे संग्रामशाह के नाम से प्रसिद्ध हुआ, अपने पिता की हत्या करके राजा बन गया। महाराज वीरसिंहदेव इससे रुष्ट होकर गढ़ा पर चढ़ाई करके अमानदास को खदेड़ दिया। महाराणा साँगा और बाबर के बीच फ़तहपुर सीकरी में जो इतिहास प्रसिद्ध युद्ध हुआ था उसमें वीरसिंहदेव ने ४ हजार सवार लेकर महाराणा की सहायता की थी।

म० वीरभानु (१५९७-१६१२ वि०) के समय में जब हुमायूँ शेरशाह के डर से पटना की ओर से भागा हुआ कन्नौज पहुँचा तब उसकी बेगम हमीदा भूलती भटकती हुई महाराज वीरभानु के निकट आयी और अमरकोट (सिन्ध) जाना चाहा। महाराज ने उसका समुचित स्वागत कर के अपने विश्वस्त आदमियों के साथ अमरकोट पहुँचवा दिया। वहाँ उसके गर्भ से अकबर का जन्म हुआ। इस उपकार के बदले बेगम ने, जब अकबर बादशाह हुआ तब, रीवा राज्य के लिये एक लाखिराज खरीता (अदेन अधिकार पत्र) दिलवाया।

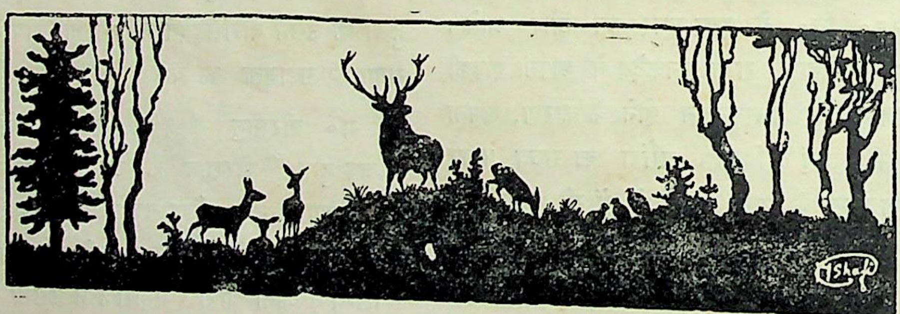
महाराज रामचन्द्र १६१२-१६५० वि०) ने शेरशाह के किसी उत्तराधिकारी से बुन्देलखण्ड के कालिंजर का क़िला

ख़रीद लिया। इब्राहीम सूर ने रामचन्द्र पर आक्रमण किया, युद्ध में सूर क़ैद कर लिया गया, पर महाराज ने उसका कोई अपमान नहीं किया। गाज़ीखाँ तातारी पर अकबर रुष्ट हो गया और वह भाग कर रामचन्द्र की शरण में आया। इससे रामचन्द्र पर भी रुष्ट होकर अकबर ने बान्धवगढ़ में घेरा डलवा दिया। कालंजर का क़िला महाराज रामचन्द्र ने अकबर को दे दिया इस से प्रसन्न हो कर बादशाह ने इन्हें अरैल (प्रयाग के दक्षिण) का इलाक़ा दिया।

महाराज विक्रमादित्य की नाबालिगी में अकबर बान्धवगढ़ पर अपना अधिकार करके उन्हें अपने पास बुला लिया। वयस्क होने पर इन्हीं ने रीवा में अपनी राजधानी बनायी। महाराज अनूपसिंह (१६६७-१७१७ वि०) की नाबालिगी में बुन्देलखण्ड के ओर्छा के राजा पहाड़ सिंह ने पुराना बदला लेने के लिये रीवा पर चढ़ाई किया। और राजपरिवार को किला छोड़ देना पड़ा। महाराज भावसिंह (१७१७-४७ वि०) के समय में राज्य के सोहागपुर और अमरकण्टक के परगने नागपुर के भोंसलों के अधिकार में चले गये। महाराज अवधूत सिंह (१७५७-१८१२ वि०) के समय में पन्ना के राजा हृदयशाह ने रीवा पर अधिकार कर लिया। राज-माता के आवेदन पर तत्कालीन दिल्लीपति बहादुरशाह की आज्ञा से हृदयशाह भगा दिया गया; पर मैहर का इलाक़ा राज्य से अलग हो गया।

महाराज अजीतसिंह (१८१२-६६ वि०) के समय में शाहज़ादा अलीगौहर (शाह आलम) जब लार्डक्लाइव के डर से पटना की ओर से भागा तब अपनी बेगम लालबाई को रीवा-नरेश की शरण में छोड़ कर आप बक्सर की ओर गया। यहीं बेगम के पुत्र पैदा हुआ जो पीछे छोटे अकबर के नाम से बादशाह हुआ। बाँदा के नवाब अलीबहादुर का सेनापति यशवन्तराव नायक दस हजार सेना ले कर रीवा पर एकाएक चढ़ आया, पर रीवा के बहुत थोड़े (केवल २ सौ) बहादुर सरदारों ने उसकी सेना को मार भगाया।

महाराज जयसिंह देव (१८६६-९० वि०) के समय में कम्पनी-सरकार से बराबरी की सन्धि हुई। महाराज रघुराजसिंह (१९११-३७ वि०) को ग़दर में अँगरेजी सरकार की सहायता करने के कारण सोहागपुर और अमरकण्टक के परगने वापस मिले। महाराज वेंकटरमणसिंह (१९३७-७५ वि०) राज्याधिकार पाते ही राज्य की अदालतों की भाषा उर्दू और लिपि फ़ारसी उठा कर हिन्दी और नागरी कर दिया। अब महाराज गुलाबसिंह के वर्तमान समय में द्रुत गति से समय परिवर्तित हो रहा है।



ओरछा या टीकमगढ़ राज्य

सीमा और स्थिति—

बुंदेल खण्ड में सेंट्रल इन्डिया एजेन्सी का सब से अधिक प्रसिद्ध राज्य ओरछा या टीकमगढ़ है। यह राज्य २४° २६' और २५° ४०' उत्तरी अक्षांशों और ७८° २६' और ७९° २६' पूर्वी देशान्तरों के बीच स्थित है। इसके उत्तर पच्छिम में झाँसी का जिला, दक्षिण में सागर का जिला, विजावर और पन्नाराज्य और पूर्व में चरखारी, विजावर और गौराली जागीर हैं।

ओरछा के राजा बुन्देले क्षत्रिय सूर्यवंशी हैं। यह बुन्देला जाति के अगुआ समझे जाते हैं। और दूसरे बुन्देले ओरछा घराने की शाखाओं में से हैं।

प्राचीन काल में यह राज्य उत्तर में जमुना से लेकर दक्षिण में नर्मदा तक और पच्छिम में चम्बल नदी से पूर्व में टोंस नदी तक फैला हुआ था। लड़ाई झगड़ों और घरेलू बँटवारे के कारण वर्तमान राज्य केवल २०८० वर्ग मील रह गया है। पुराने राज्य का अधिकांश भाग ब्रिटिश बुन्देलखण्ड और दूसरे राज्यों में शामिल कर दिया गया है।

नाम—

ओरछा या आँडछा नाम इस राज्य का इसलिये पड़ा कि पहले पहल जो राजपूत सरदार यहाँ आया उसने "आन्ड़ोछे" (नीचा) शब्द का उच्चारण किया। टीकम गढ़ नाम सन् १७८३ ई० में पड़ा जब कि महाराजा विक्रमाजीत ने वर्तमान राजधानी की नींव डाली। यह नाम कृष्ण भगवान् के नाम पर रक्खा गया। टीकमगढ़ राजधानी का पुराना नाम टेहरी था।

प्राकृतिक विभाग और दृश्य—

यह राज्य सेन्ट्रल इन्डिया के निचले प्रदेश में स्थित है। इसका अधिकांश भाग पथरीला है। यहाँ की भूमि कम उपजाऊ है। इसके कुछ भाग में जंगल है। यहाँ बहुत सी झीलें हैं उनमें से कुछ तो बहुत प्राचीन हैं। चट्टानों के बीच बीच में उपजाऊ काली भूमि है। यह भूमि बालू और ज्वालामुखी पर्वतों के राख से मिलकर बनी है यहाँ के दृश्य बड़े ही सुहावने हैं। हरे, लहलहाते खेतों के ठीक ऊपर ही भूरे रंग की बड़ी बड़ी चट्टानें हैं। ये चट्टानें पहाड़ियों से मिली हुई हैं। इन पहाड़ियों की चोटियों पर प्राचीन काल के बने हुए क़िले हैं। पहाड़ियों के नीचे झीलें हैं जिन पर चारों ओर से बाँध बँधे हैं। यह बाँध पत्थरों को छाँट कर बनाए गये हैं। इन बाँधों के ऊपर सुन्दर पेड़ों की छाया है।

पहाड़ियाँ—

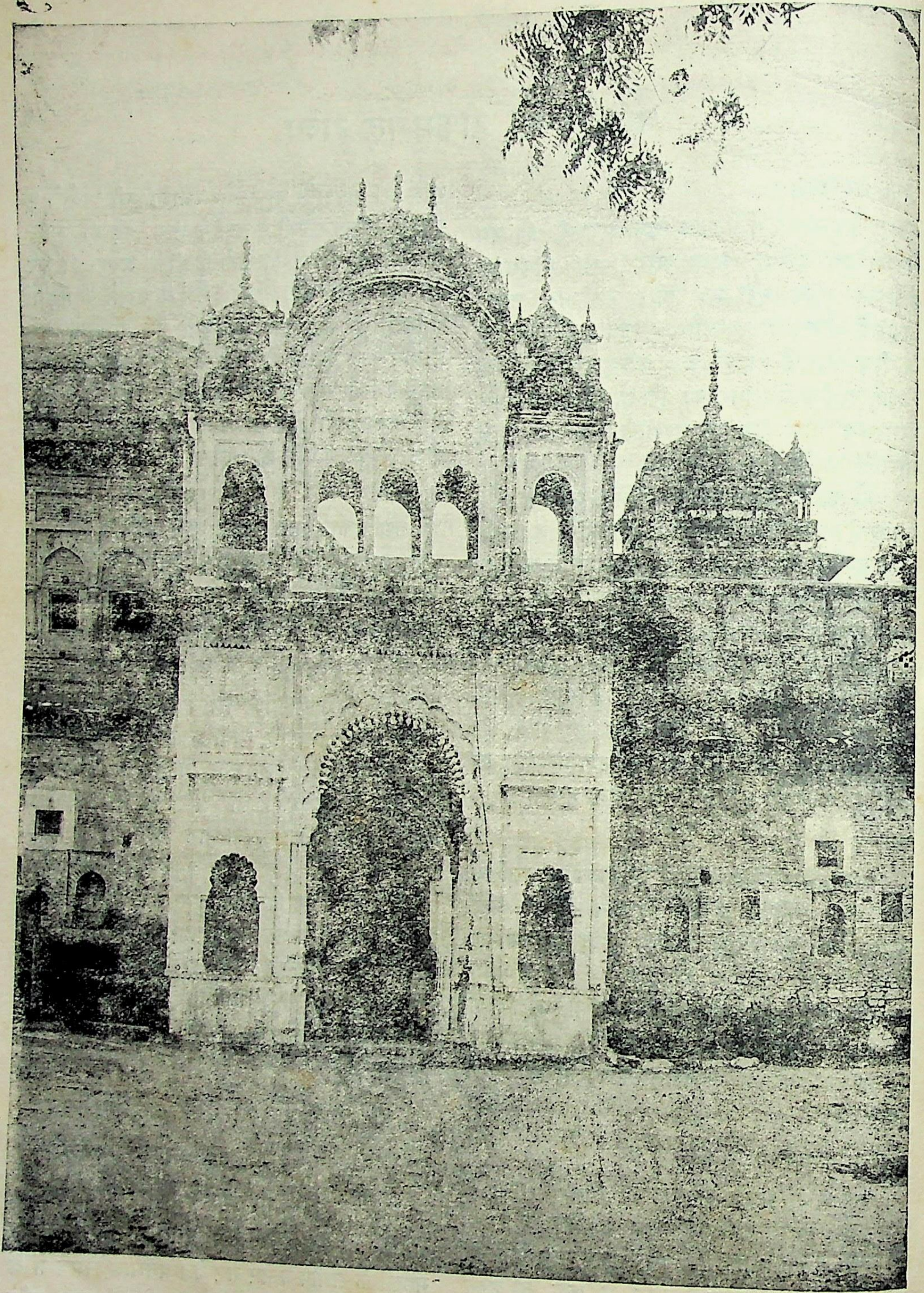
यद्यपि कोई खास पहाड़ी यहाँ नहीं है तो भी छोटी छोटी बहुत सी पहाड़ियाँ समानान्तर दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूरब की ओर फैली हुई हैं, जो समुद्रतल से १४ फीट ऊँची हैं।

नदियाँ—

यहाँ की बेतवा और धसान दो मुख्य नदियाँ हैं। जमानी, बाँदा, वारगी, वावी इत्यादि बेतवा की सहायक नदियाँ हैं। ओरछा नगर बेतवा के किनारे पर है। यहाँ पर सुन्दर क़िला और वीरसिंह देव की मूर्ति है। धसान का पुराना नाम डशारना (दश+रिना) है। दश का अर्थ दस और रिना का अर्थ दुर्ग है अर्थात् दस क़िले का अर्थ है। धसान और बेतवा के बीच का प्रान्त दशारना देश कहलाता था। बेतवा नदी लगभग ७० मील इस राज्य में बहती है। अर, सपरार, रौनी, सिमामिया और उमरा इसकी सहायक नदियाँ हैं।

झीलें—

बलदेवगढ़, लिधौरा, जतारा, वीरसागर इत्यादि बड़ी बड़ी झीलें हैं। यह ध्यान देने योग्य बात है कि ये पुराने सरोवर, जिनके बाँध बुन्देलों और दूसरे राजों ने बँधाए पहले सिंचाई के लिये नहीं बने थे। ये केवल सैर करने के लिये मन्दिरों और महलों के समीप बनाए गए थे। वर्तमान समय में ये सिंचाई के काम आते हैं। अर्जर झील अर्जर गाँव



ओरछा में रघुनाथ जी का मन्दिर

के समीप है। वीर सागर झील वीर सागर गाँव के समीप है। इसको महाराजा वीरसिंह देव ने बनवाया था। यादन्या सागर विन्दपुरा में है। कहा जाता है कि यहाँ महाराजा जनमेजय ने बड़ा भारी यज्ञ और बलिदान किया था। मदन सागर जातारा में है। इसको मदन चन्देल वंशी वर्मन ने बनवाया था। इसके सिवा जेरान, नन्दन वारा, बल्देवगढ़ तालाब आदि हैं।

पहाड़ी जङ्गल राज्य के अधिकांश भाग को घेरे हुए है। इन बनों में केवल झाड़-झंखाड़ व छोटे छोटे पेड़ हैं। यहाँ पर बड़े बड़े जानवरों के रहने योग्य जंगल नहीं हैं। इसलिए शेर तो शायद ही कभी दिखलाई पड़ता है। चीते और तेंदुए पहाड़ियों पर रहते हैं। नीलगाय, मृगा व काले हिरण इत्यादि काफी संख्या में पाए जाते हैं। चिड़ियाँ भारतवर्ष के और स्थानों की भांति ही पाई जाती हैं।

जलवायु और वर्षा—

ओरछा की जलवायु अच्छी नहीं है। खास कर उत्तर पश्चिम की जलवायु तो बहुत ख़राब है। यहाँ के निवासी सदैव मलेरिया बुखार से बुरी तरह तङ्ग रहते हैं। जाड़े में यहाँ जाड़ा और गर्मी में गर्मी अधिक पड़ती है। जाड़े के समय में मिरज़ई का पहनना तो बड़ा ही आवश्यक हो जाता है। जो मिरज़ई नहीं पहन सकते वह पैरे (पियाल) या घास की सथरी बना कर सोते हैं। कोदो का पियाल बड़ा गर्म होता है। जनवरी से आधे फ़रवरी तक गजब का जाड़ा पड़ता है। मई के महीने में लू (लपट) चलती है। लू के प्रभाव से बचने के लिये लोग आम के पने का प्रयोग करते हैं। वर्षा ५ इञ्च सालाना होती है।

इतिहास

वंशावली—

*१०४८ के पूर्व यह राज्य भारतवर्ष के दूसरे बड़े बड़े राज्यों के अधिकार में रहा। किन्तु करनपाल गहरवार ने राज्यों को संगठित किया। उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र हेमकरण को राजकाज सौंपा और दूसरे पुत्रों को जागीर दी।

यहाँ के राजे सूर्यवंशी हैं। इनका स्रोत मनु वैवस्वतु और महाराज इक्ष्वाकु से है। भगवान रामचन्द्र के ज्येष्ठ पुत्र लव के दो पुत्र गंगासेन और कनकसेन हुए। गङ्गासेन ने अपना राज्य इस राज्य में और इसके पूर्व की ओर स्थापित किया। उसके बाद के राजों का हाल ज्ञात नहीं। गङ्गा राजा ने जो इसी कुल का था गयाजी का मन्दिर बनवाया। प्रद्युम्नारिका राजा ने अक्षयवट का वृक्ष लाकर प्रयाग के क़िले में लगाया। और राजा इन्द्रद्युम्नारिका ने जगन्नाथ जी का पुरी में मन्दिर बनवाया था। कर्तराज जो इसी वंश के थे काशी की ओर गए और वहाँ के सर्दार दीवोदास को हराया और वर नामक राजकुमारी से शादी किया और बनारस राज्य की नींव डाली। इस वंश के बीसवें राजा का नाम कन्दपाल या करणपाल था। करणपाल के तीन पुत्र वीर, हेमकरण, अरिब्रह्म या अरिवर्मा थे। हेमकरण को उसके पिता ने उत्तराधिकारी बनाया और दूसरे दो पुत्रों को जागीर दी।

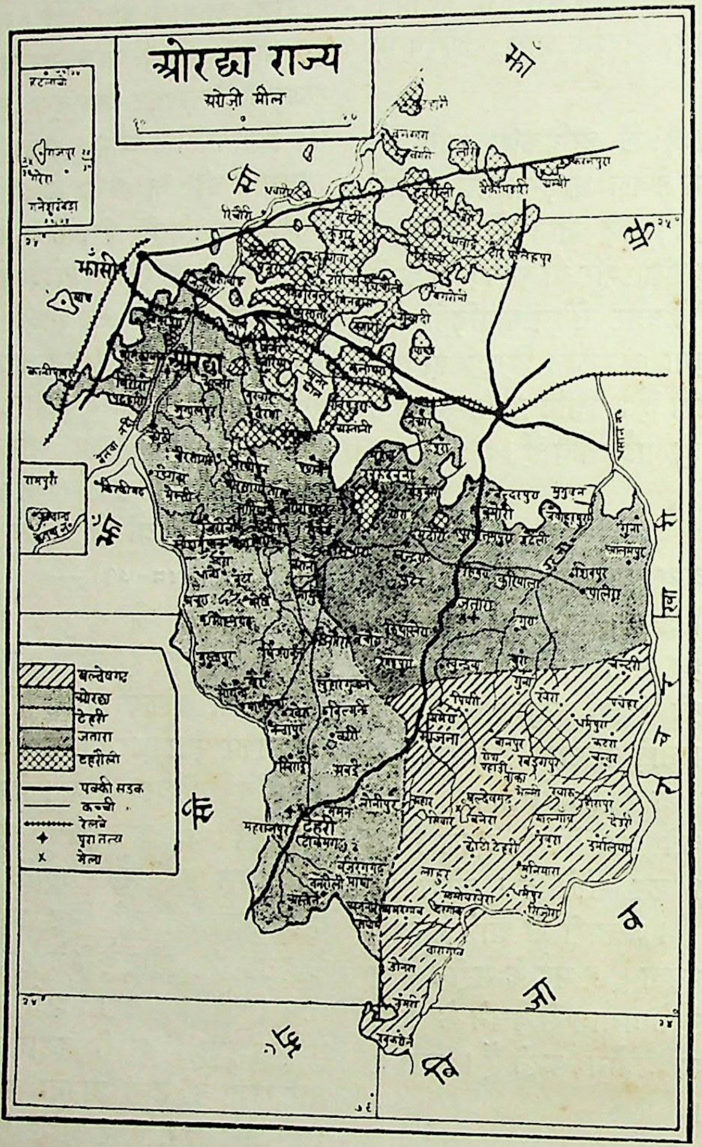
हेमकरण (१०४८-७१)—

करणपाल की मृत्यु के पश्चात् अरिब्रह्म और वीर ने मिलकर हेमकरण को निकाल बाहर किया। हेम हताश होकर विन्ध्यवासिनी देवी के स्थान पर जाकर पूजा करने लगा। उसने मनुष्य के सिरों के पाँच बलिदान किए। वैसाख सुदी चतुर्दशी सम्वत् ११०५, और सावन सुदी पंचमी १११२ को देवी प्रसन्न हुईं और उन्होंने वरदान दिया। कहते हैं कि जब पाँचवाँ सिर राजा ने चढ़ाया तो देवी के दर्शन हुए और देवी ने राजा से पञ्चम विन्धेला नाम रखने को कहा। इसी नाम पर इसका नाम बुन्देला पड़ा। दूसरी कहावत यह है कि अन्तिम बार राजा ने स्वयं अपना बलिदान करना चाहा था। जैसे ही गले पर उसने तलवार लगाई वैसे ही देवी ने दर्शन दिया और वरदान दिया। तलवार की चोट से एक बूँद खून गिरा था। उसी बूँद पर इस वंश का नाम बुंदेला पड़ा। पहले वरदान की तिथि वैसाख चतुर्दशी अब भी बड़े समारोह से मनाई जाती है। और रविवार दिन होने के कारण प्रत्येक रविवार को ढोल और नगाड़े बजाए जाते हैं। नवरात्रि का त्योहार विन्ध्यवासिनी देवी की

याद में बड़े समारोह के साथ मनाया जाता है। हेमकरण ने अपना राज्य काफ़ी बढ़ाया। बुढ़ापे के कारण वह गहरवारपुर (गौरा, मिर्ज़ापुर ज़िला) बिन्ध्यवासिनी देवी के स्थान के समीप जाकर तपस्या करने लगा। वीरभद्र बड़ा पुत्र राज्य का मालिक

कर्णपाल (१०८७–१११२)—

करन, कन्नार शाह, सानकदेव, नानकदेव, माहपती, अजय भूपति, अर्जुनपाल आदि राजाओं ने लगभग १४४ वर्ष तक राज किया। उसके बाद सोहनपाल राजा हुआ।



हुआ। इसने तातार ख़ाँ से जगमानपुर में युद्ध किया। इसी बीच इसने मोहानी पर अधिकार जमा लिया और अपनी राजधानी बनाया। इसने पाँच शादियां कीं और पांच पुत्र हुये। दूसरी से रनधीर तीसरी से कर्णपाल, चौथी से हीराशाह और हंसराज और पांचवीं से कल्याण सिंह पैदा हुये। ज्येष्ठ पुत्र की मृत्यु के कारण कर्णपाल राजा बना।

सोहनपाल (१२३१–५६)—

सोहनपाल पहला ऐतिहासिक राजा कहा जा सकता है जिसने ओरछा राज्य में राज किया। वह झांसी से ३० मील उत्तर आकर गढ़कुण्डार में आया और राज्य स्थापित किया। उसके बाद सहजेन्द्र, नानकदेव, पृथीराज, रामसिंह, रामचन्द्र,

मेदिनीमल, अर्जुनदेव मलखानसिंह आदि राजों ने राज्य किया।

मलखान सिंह आखिरी राजा था जिसने गढ़-कुण्डार में अपनी राजधानी रक्खी। इसके ६ पुत्र थे। ज्येष्ठ पुत्र का नाम रुद्रप्रताप था। मलखान के बाद यही राजा हुआ।

रुद्रप्रताप (१५०१-३१)—

रुद्रप्रताप ने ओरछा की नींव डाली। इसी के समय से ओरछा राज्य का प्रारम्भ होता है। बाबर के हमले से रुद्रप्रताप ने काफ़ी लाभ उठाया। यद्यपि उसको सिकन्दर और बहलोल लोदी से लड़ना पड़ा, तो भी उसने अपना राज्य काफ़ी विस्तृत कर लिया। एक दिन १५३० ई० में रुद्रप्रताप शिकार खेलने गया। ओरछा नगर जहां स्थित है उसे देख कर रुद्र का ध्यान उधर आकर्षित हुआ। वैशाख सुदी तेरस संवत् १५८८ (मई सन् १५३१ ई०) को इसकी नींव डाली गई और राजमहल बनने लगा। किन्तु इसी बीच राजा एक गाय को शेर से छुड़ाता हुआ घायल हुआ। यद्यपि गाय को उसने छुड़ा लिया और शेर को मार डाला तो भी चोट गहरी होने के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

भारतीचन्द्र (१५३१-५४)—

रुद्र प्रताप के दो रानियाँ थीं। दूसरी से ८ लड़के पैदा हुये। भारती चन्द्र जो सबसे बड़ा था, राज्य का मालिक हुआ। इस के समय में भारत वर्ष में काफी गड़बड़ी हुई। बाबर के आक्रमण के बाद हुमायूँ राजा हुआ। फिर शेरशाह ने हुमायूँ को मार भगाया और उसने कालिंजर पर इसी राज्य में, होकर घेरा डाला। १५३६ ई० में ओरछा के महल तयार हो गए और राजदरबार गढ़कुण्डार से हटा कर ओरछा में लाया गया। १५५४ ई० में भारतीचन्द्र की मृत्यु हो गई।

मधूलकर शाह और रामशाह के बाद वीरसिंह देव राजा हुआ। मधूलकर के आठ पुत्र थे। पहले रामशाह गद्दी पर बैठा, किन्तु जब वीरसिंह ने जहाँगीर के कहने पर अबुलफ़ज़ल को कत्ल कर डाला तो उसकी ताक़त बढ़ गई। अन्त में अकबर की मृत्यु के बाद जब जहाँगीर राजा हुआ तो उसने ओरछा का राज्य वीरसिंह को दे दिया।

वीरसिंह देव (१६०५-२७)—

ओरछा के राजाओं में वीरसिंह देव सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है। वह बड़ा बहादुर और सूरमा था। स्वयं जहाँगीर ने लिखा है "वह बहादुर, दयावान और स्वच्छ दिल का मनुष्य है।" राज्य का विस्तार इसके समय में अच्छा हुआ। १,२५,००० गाँव इसके राज्य में थे और राज्य ८१ परगनों में बँटा था। जहाँगीर महल, चतुर्भुज मन्दिर, फूलबाग़, ओरछा और दतिया के महल आदि इसने बनवाये। इसके तीन रानियाँ थीं। पहली से पाँच, दूसरी से चार पुत्र और एक पुत्री, तीसरी से तीन लड़के थे। राज्य सभी पुत्रों में बाँटा गया। दूसरी रानी का पुत्र भगवान राव को दतिया मिला, जो बाद में एक राज्य बना और अब तक उसी के वंशज राजा हैं। १६२७ में वीरसिंह मर गया और उसका ज्येष्ठ पुत्र जुझार सिंह राजा हुआ।

जुझार सिंह—

यद्यपि जुझार सिंह और उसके पुत्र सदैव शाहजहां के कहने के अनुसार काम करते रहे और उन्हें बड़ी-बड़ी पदवियाँ भी मिलीं तो भी ज़रा सी बात में बादशाह नाराज़ हो गया और इनके पीछे पड़ गया। जुझार सिंह और उसके पुत्र मारे गए। जुझार सिंह की स्त्री रानी पार्वती, उसके पुत्र और पौत्र की स्त्रियाँ बादशाह के सामने लाई गईं। जिनमें से जुझार की दोनों बहुओं को मुसलमान बनना पड़ा और उनका नाम इस्लाम कुली और अली कुली रक्खा गया। छोटा पुत्र मुसलमान बनाया गया और इस्लाम कुली और अली कुली के साथ पढ़ने को भेजा गया। उदयभान और शाम के मुसलमान बनने से इन्कार करने पर उन्हें प्राण दण्ड दिया गया। इसके बाद चार साल तक सिंहासन ख़ाली रहा। १६४१ ई० में पहाड़सिंह को शाहजहाँ ने बुला कर राजा बनाया।

पहाड़सिंह (१६४१-५३)—

बादशाह ने पहाड़सिंह को ५,००० पैदल और २,००० घोड़ों का मंसबदार बनाया। पहाड़सिंह ने शाहजहाँ की बड़ी मदद की और वह काबुल, कंधार, आदि स्थानों में लड़ाई पर बादशाह की ओर से भेजा गया।

सुजानसिंह—

पहाड़सिंह १६५३ में मर गया। उसकी मृत्यु के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र सुजानसिंह राजा हुआ। सुजान ने अर्जर स्थान पर सागर बनवाया और इसकी माता ने रानीपुर बसाया। १६७२ में सुजान की मृत्यु हो गई।

उदोतसिंह (१६८६-१७३६)—

सुजान के बाद इन्द्रमती, यशवन्तसिंह और भगवन्त सिंह राजा हुए फिर १६८६ में उदोतसिंह राजा हुए। एक बार जब उदोतसिंह ने शेर को अकेले मारा तो उसे बहादुरशाह ने अपने नाम की खुदी हुई तलवार इनाम दी। इसके बाद ईद के शुभ अवसर पर खिलअत व पालकी भी दी। यह सब अब तक राजदरबार में मौजूद हैं। १७०६ में उसे बादशाह का फ़रमान और पहाड़सिंहपुर गांव मिला। इस समय मरहठों के आक्रमण के कारण राज्य का बहुत बड़ा भाग निकल चुका था १७३६ ई० में उदोतसिंह महोबा स्थान पर मरा। उसके बाद पृथ्वीसिंह राज-काज का मालिक हुआ।

पृथ्वीसिंह (१६३६-५२)—

मुग़ल बादशाह और राजपूत राजे दोनों मरहठों के इस समय शिकार हो रहे थे। बरुआ सागर, मऊरानीपुर, झांसी आदि ज़िले राज्य से निकल गए।

सावन्तसिंह (१७५२-६५—

१७५२ में सावन्तसिंह राजा हुआ। १७५६ में अहमद शाह ने भारत पर आक्रमण किया। इस समय राज्य के और भाग के साथ आठगढ़ी भी राज्य से निकल गया। १७६१ में पानीपत की तीसरी लड़ाई हुई जिससे मरहठे कमज़ोर हो गए। १७६४ में बक्सर की लड़ाई हुई जिससे अँगरेज भारतवर्ष में सब से अधिक बलवान समझे जाने लगे। रीवा से लौटते समय सावन्तसिंह ने शाहआलम की बड़ी खातिर की। उसके बदले में उसे 'महेन्द्र' की पदवी और शाही झंडा मिला। १७६५ ई० में सावन्त की मृत्यु हो गई।

हेतसिंह, मानसिंह और भारती चन्द्र के राज्य करने के बाद सन १७७६ ई० में विक्रमाजीत राजा हुए। इस समय राज्य की दशा बहुत शोचनीय थी। इस समय राजा की सवारी में केवल ५० सिपाही, एक हाथी और २ घोड़े ही थे। तो भी राजा मरहठों के अधीन नहीं हुआ।

अपने चतुर मन्त्री की सहायता से इसने अपनी पुरानी जायदाद का कुछ भाग फिर अपने राज्य में मिला लिया।

अंग्रेजों से संधि (१८१२.)

२३ दिसम्बर सन् १८१२ ई० को राजा ने अंग्रेज़ों से संधि कर ली। जिससे मरहठों के आक्रमण से वह फ़ुर्सत हो गया।

धरमपाल सिंह और तेजसिंह, क्रियाजीत के बाद राजा हुए फिर सुजानसिंह १८४१ में गद्दी पर बैठा। किन्तु धरमपाल की स्त्री लराप रानी ने गोद लेना चाहा। इस पर राज्य में दो दल—नया राज्य और पुराना राज्य हो गया। पुराना राज्य रानी की सहायता कर रहा था। सुजानसिंह मजबूर होकर झांसी चला गया। दो साल के बाद वह लौटा, किन्तु फिर पृथवीपुर की लड़ाई में हार गया। गवर्नमेन्ट ऑफ इंडिया ने सुजानसिंह की सहायता की और गद्दी पर बैठाया, किन्तु रानी राज्य का काम देखती रही। अन्त में राजा को जहर देकर मार डाला गया।

हमीरसिंह (१८५४-७२)—

रानी ने अँग्रेज सरकार के कथनानुसार हमीर सिंह दिगौरा के ठाकुर के पुत्र को गोद लिया। रानी, हमीरसिंह के लड़कपन के समय तक राजकाज करती रही। १८५७ ई० में विप्लव हो गया। परन्तु रानी अँग्रेजों की सहायक बनी रही। ग्वालियर और ललितपुर के अँग्रेज़ अफसर भाग कर टीकमगढ़ आए। यह लोग पण्डित प्रेम नारायण, जो हमीर सिंह के गुरु थे, उनके यहाँ मेहमान रहे।

दूसरी जुलाई को कैप्टन गार्डन, चँदेरी के डिप्टी कलक्टर ने धन्यवाद का पत्र राजदरबार को लिखा। पाँचवीं जून को झांसी का हत्याकाण्ड हुआ। इस पर ओरछा की सेना ने मऊरानीपुर, पड़वाहा और गढ़कोटा के परगनों में जाकर उपद्रव शांत किया और बर्वा सागर पर अधिकार कर लिया। तीसरी

सितम्बर को सेनाएँ झाँसी गईं । और घेरा डाला, किन्तु २२ अक्टूबर को घेरा उठा लिया गया। १८६२ में हमीरसिंह को शान्ति स्थापित करने की सनद मिली।

प्रतापसिंह (१८७४)—

१८७४ ई० में हमीरसिंह का स्वर्गवास होगया उसके बाद स्वर्गीय महाराजा के छोटे भाई महाराजा प्रतापसिंह गद्दी पर बैठे। सिंहासन पर बैठते समय इनकी अवस्था २० वर्ष की थी।

मेजर ए० म्यून राज्य-प्रबन्ध के लिये थोड़े दिनों के लिये भेजे गए। किन्तु जून १८७६ ई० में राजकाज महाराजाधिराज के हाथों सौंप दिया गया और अंग्रेज़ अफसर वापस बुला लिया गया। ग़दर के समय तक टहरौली परगना के लिये झाँसी राज्य को ३००० रुपये देने पड़ते थे। विप्लव-काल में सहायक रहने के इनाम में यह माफ कर दिया गया और मोहानपुर का स्तमरारी लगान भी माफ कर दिया गया। १८८८ ई० में झाँसी मानिकपुर लाईन की भूमि भी टीकमगढ़ राज को वापस दे दी गई।

महाराजा प्रतापसिंह को १८८६ में सरामद राजा हाय बुन्देल खण्ड की पदवी मिली। उनको सवाई की भी पदवी मिली १९०३ में महाराजाधिराज दिल्ली दरबार में गए। इनको सोने का एक तमग़ा मिला। सन् १८९८ में जी० सी० आई० ई० की पदवी मिली और सन् १९०६ में जी० सी० एस० आई० की पदवी मिली। १७ बन्दूकों की निजी सलामी और १५ बन्दूकों की (राजा की) सलामी दग़ाई जाती है।

पदवी—

हिज़ हाईनेस सरमद राजा हाय बुन्देलखण्ड सवाय महेन्द्र महाराजा श्री सर वीर सिंह देव बहादुर के० सी० एस० आई० (बुन्देला राजपूताना)। राजा प्रिन्सेज़ अप चैम्बर के मेम्बर हैं।

राज्य में टीकमगढ़ मुख्य नगर और राजधानी है। इसकी जनसंख्या ३,१४,६१६ है। ७०६ गाँव हैं। जिसमें ५१६ ऐसे गाँव है जिनकी जनसंख्या ५०० से कम है। १ १५ ऐसे हैं जिनकी जनसंख्या १००० और ५००० के बीच की है। ५३ ऐसे गाँव हैं जिनकी जनसंख्या १००० और २००० के बीच में है। और १९ ऐसे हैं जिनकी जनसंख्या २००० और ५००० के बीच की है।

सामाजिक स्थिति—

बुंदेलखंडी भाषा बोली जाती है। कुल ४१२५ व्यक्ति पढ़े लिखे हैं जिनमें ८६ स्त्रियाँ हैं। धोती, कुर्ता, मिर्ज़ई बन्द, साफा यहाँ के पुरुषों के मुख्य कपड़े हैं। स्त्रियाँ साड़ी धोती, और चोली का प्रयोग करती हैं। भोजन यहाँ का शाकाहारी है। नीच जाति के लोग मांस भी खाते हैं। अच्छे घरों में गेहूँ, जौ, चावल का आहार होता है। छोटी जाति वाले प्रायः साँवा और कोदो का प्रयोग करते हैं। घर मिट्टी के बनाए जाते हैं। उनपर खप्पर या छप्पर डाले जाते हैं। शादियाँ भारतवर्ष के और स्थानों की भाँति ही होती हैं। मरे हुए लोग जला दिये जाते हैं। दशहरा, दीवाली और होली ख़ास-ख़ास त्योहार हैं जो राज्य में और दरबार में मनाए जाते हैं। ईदुलफ़ितर और रमज़ान मुसलमानों के त्योहार हैं। ऐसे समय महाराजाधिराज एक बार मुख्य मसजिद में जाते हैं।

मार्ग—

दो मुख्य मार्ग हैं। पहली टीकमगढ़ से जतारा होकर मऊ जाती है। दूसरी झाँसी से मऊ जाती है। रेलवे झाँसी से मानिकपुर जाती है। ख़ास स्टेशन राज्य के ओरछा, तेहरका, अर्जर हैं।

शासन-प्रणाली—

राजप्रबन्ध राजा स्वयं देखा करते हैं। उनकी सहायता के लिये दो दीवान रहते हैं। दीवान विभाग मदारुलमुदामी कहलाता है। इनमें से एक दीवान सेना विभाग का भी मालिक होता है। सेशन जज न्याय विभाग का अगुवा होता है। और सभी कार्य्य महाराजाधिराज से पूछ कर करता है। इसके यहां से केवल महाराजाधिराज के यहां ही अपील हो सकती है।

राज्य का शासन, राजकीय विभाग, शासन विभाग, सेना विभाग, रेवन्यू विभाग, तामीरात विभाग और कोठी प्रतिपालक द्वारा होता है।

राज्य के अन्दर हिन्दी का प्रयोग कचहरियों में होता है। केवल फौजदारी के न्याय और पोलीटिकल एजेन्ट से लिखा पढ़ी उर्दू में होती है।

शासन विभाग—

राज्य पांच तहसीलों में बँटा है। टीकमगढ़ प्रधान केन्द्र और राजधानी है। टीकमगढ़, बलदेवगढ़, जतारा, ओरछा, तहरौली तहसीले हैं। पहाड़-सिंहपुर तहसील हैदराबाद राज्य के औरंगाबाद ताल्लुका में है। सब से बड़ी तहसील जतारा की है। इसका क्षेत्रफल ६०२ वर्ग मील है। सब से छोटी तहसील तहरौली है। इसका क्षेत्रफल २३७ वर्ग मील है। प्रत्येक तहसील एक तहसीलदार के अधिकार में है। सभी रेवन्यू, फ़ौजदारी व माल के काम उसके अधिकार में हैं। इन तहसीलदारों को रेवन्यू सम्बन्धी मामलों में दूसरे दर्जे के असिस्टेन्ट कलेक्टर का अधिकार है। और ये इन मामलों में सीधे रेवन्यू विभाग के अधिकार में हैं। इनको इनकी योग्यता के अनुसार दूसरे और तीसरे दर्जे के मजिस्ट्रेटों का अधिकार दिया जाता है।

फ़ौजदारी, माल, फांसी व मुक्ति के मामलों में आख़िरी निर्णय महाराजाधिराज का ही होता है।

प्रत्येक गांव में ज़मींदार या महाते अगुवा समझा जाता है। अगर किसी गांव में अधिक महाते हुए तो उनमें से अगुवा चुना जाता है और वह भले आदमियों की पंचायत की सहायता से छोटे मोटे मामलात तै करता है।

प्रत्येक गांव में पटवारी होता है जो दरबार से वेतन पाता है और भूमि-सम्बन्धी सभी कार्य करता है।

अदालत माल—

तहसीलदारों की कचहरियाँ सबसे छोटी माल के मामले में होती हैं और वह ५०) रुपये तक के मामलात तै करते हैं। इसके ऊपर मुंसिफ, नाज़िम, अदालत सेशन की अदालतें हैं। सर्वोपरि राजदरबार की कचहरी है।

अदालत-फ़ौजदारी—

इसमें भी तहसीलदार सब से छोटे होते हैं और इनको दूसरे या तीसरे दर्जे का अधिकार होता है। एक माह से ६ माह तक की सज़ा और ५०) से २००) रुपये तक जुर्माना कर सकते हैं।

इसके ऊपर मजिस्ट्रेट नम्बर अव्वल, डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट और सेशन जज होते हैं। इन लोगों के वही अधिकार हैं जो क्रिमिनल प्रोसीजर कोड आफ़ ब्रिटिश इन्डिया में लिखे हैं।

फांसी आदि के मामले में सेशन जज को राजा की आज्ञा लेनी पड़ती है।

राजा के यहां अपील नीचे की कचहरियों की बड़ी कचहरियों द्वारा होती है।

राज्य की आय १३,८२,००० रु० सालाना है।

सन्धि १८०२—

२३ दिसम्बर सन् १८०२ को बांदा में महाराजाधिराज महेन्द्र विक्रमाजीत बहादुर राजा ओरछा राज और अँग्रेज़ सरकार के बीच सन्धि हुई। इसके अनुसार दोनों राज्यों में दोस्ती हो गई। राजा ने वादा किया कि आज की तारीख़ से वह अंग्रेज़ सरकार के दोस्तों को दोस्त और दुश्मनों को दुश्मन समझेगा। वह बिना अंग्रेज़ सरकार की आज्ञा के न तो किसी दूसरे राज्य से सन्धि करेगा और न लड़ाई ही करेगा। राजा किसी भी अंग्रेज़ी प्रजा या योरुपियन को बिना आज्ञा अंग्रेज़ सरकार के नौकरी न देगा। अंग्रेज़ सरकार ने वादा किया कि वह सदैव राज्य की रक्षा बाहरी आक्रमणों से करेगी और जो कुछ भी झगड़े दूसरे राज्यों से पड़ेंगे उसे वह किसी न किसी तरह निपटारा करा देगी। अंग्रेज़ सरकार की ओर से जॉन वाचदोय थे और राजा की ओर से धाकुनलाल वकील थे।

दतिया-राज्य

स्थिति और क्षेत्रफल—

दतिया-राज्य भी बुन्देलखण्ड में सेन्ट्रल इण्डिया एजेन्सी का एक राज्य है। यह राज्य २५°३४' से २६°१८ उत्तरी अक्षांस और ७८°१३' से ७८°५३' पूर्वी देशान्तर से फैला हुआ है। इसका क्षेत्रफल ६१२ वर्ग मील है। जनसंख्या १,०८,८३४ है।

प्राचीन काल में यह प्रान्त दन्तवकर दानव राजा के अधिकार में था। जिसको कृष्ण भगवान ने मारा था। दतिया उसी दन्त नगर से बिगड़ कर बना है। वर्तमान नगर दीपालपुर को दलपत राव ने बसाया था। उसने अपने राशि के नाम पर परताप नगर का क़िला भी बनवाया था।

इस राज्य के उत्तर में ग्वालियर राज्य और जालौन का ज़िला, दक्षिण में गवालियर राज्य और झाँसी का ज़िला, पूर्व में समथर और झाँसी का ज़िला, और पच्छिम में गवालियर राज्य है।

प्राकृतिक विभाग—

सेन्ट्रल इण्डिया के निचले भाग में यह राज्य स्थित है। मुख्य नगर का दक्षिणी भाग कँकरीला-पथरीला और चट्टानों से भरा है। उत्तरी भाग उपजाऊ है और कछारी भूमि है। यहाँ केवल एक सिउन्ध पहाड़ी है जो समुद्रतल से १,००० फ़ीट ऊँची है। सिन्ध और पाहुज दो नदियाँ हैं। सोमला और पदवान इनकी सहायक नदियाँ हैं।

सीता सागर, तरोन ताल, लक्ष्मण ताल, करन सागर, राधा सागर, लाला का ताल, बरौनी ताल, राम सागर और वीर सागर इस राज्य में प्रसिद्ध झीलें हैं। यहाँ से लोग पानी लेते हैं। किन्तु सिँघाड़े के लिये यह नदियाँ काम में नहीं लाई जातीं। इनके किनारों में पानी हट जाने पर खेती होती है। तेदूँ, धवा, घोटहर, अचार, करदी, करौंदा, खैर, बाँस आदि वृक्ष के जंगल हैं।

मकान बनाने की बलू, शोरा और नमक यहाँ पाया जाता है। १,८४० मन नमक और ४,००० मन शोरा सालाना निकलता है। दतिया नगर में कुछ अफ़ीम भी बनाई जाती है।

जलवायु-वर्षा—

इस राज्य में गर्मिगों में अधिक गर्मी और शीतकाल में अधिक सर्दी पड़ती है। ३८ इञ्च सालाना वर्षा होती है।

इतिहास

भगवानराव—

यहाँ के राजा ओरछा राज्य के वंशज हैं। महाराज बीरसिंह ओरछा के पुत्र भगवान राव थे। उनको दतिया की जागीर मिली थी। कार्तिक सुदी नौमी सम्बत् १३८१ को भगवान राव दतिया आये। भगवानराव ने मुगल बादशाह की बड़ी सहायता की और कई स्थानों पर लड़ाई में गये जिसके इनाम में उनको छोटी छोटी पदवियों के सिवा पाँच हज़ारी के मंसब की भी पदवी मिली। १६५६ में उनकी मृत्यु हो गई। उनकी स्मृति नगर के समीप ही सुराही छतरी, के नाम से प्रसिद्ध है।

शुभकरन (१६५६-८३)—

भगवानराव की मृत्यु के बाद उनके पुत्र सभाकरन गद्दी पर बैठे। औरंगजेब की सहायता राजगद्दी सम्बन्धी युद्ध में शुभकरन ने की थी इसलिये उसे बुन्देलखण्ड का सूबेदार औरङ्गजेब ने बनवाया और पंच हज़ारी मंसब की पदवी दी! १६८२ ई० में राजा दिलेरखाँ की सेना के साथ डेकन गये, और बीमार पड़ गये। ६३ साल की अवस्था में १६८२ ई० में उनकी मृत्यु हो गई। इनके दो पुत्र थे। एक का नाम दलपत राव और दूसरे का अर्जुन सिंह था।

दलपतराव (१६८३-१७०७)—

शुभकरन की मृत्यु का हाल सुन कर औरंगजेब को बड़ा दुख हुआ और उसने क़ासिम खाँ को अपनी ओर से शोक प्रकट करने के लिये दतिया भेजा। और पंच हज़ारी मंसबदार दलपतराय को बनाया। बाद को राजा दिल्ली गए वहाँ उनकी बड़ी खातिर हुई। एक बार शाह की बेगम को राजा आगरा भेजने गए। रास्ते में दलपत राव के रानी का हाथी बिगड़ गया। पर्दा खुल जाने के भय से राजा ने रानी को मारना चाहा किन्तु बेगम ने यह सुन अपनी बन्द पालकी भेज दी। उसी दिन से आज तक दतिया राज्य की रानियाँ बाहर निकलते समय बन्द पालकी पर निकलती हैं।

राजा दलपतराव बड़े सूरमा थे। वे बीजापुर, गोलकुण्डा, अदोनी, जिन्जी आदि स्थानों में लड़ाई पर शाह की ओर से भेजे गए। महरठों के मुक़ाबिले में भी आप भेजे गए। आपको शाह की ओर से राव की पदवी और एक जोड़ी बड़े द्वार इनाम मिले जो फूल बाग में अब भी मौजूद हैं। जाजौ की लड़ाई में राजा घायल हुए और १६ जुलाई १७०७ को उनकी मृत्यु होगई।

रामचन्द्र (१७०७-३६)—

दलपतराव की मृत्यु के पश्चात् भारतीचन्द्र (रामचन्द्र के छोटे भाई) ने गद्दी लेने का प्रयत्न किया। राव रामचन्द्र ने ओरछा के राजा उदोतसिंह से सहायता चाही। उसके पश्चात् लड़ाई हुई। १७११ में भारतीचन्द्र मर गया। रामचन्द्र दिल्ली गया जहाँ उसकी बड़ी ख़ातिर हुई और उसे बहादुरशाह ने खिलअत दी और मंसबदार बनाया।

जब फ़रुखसियर राजा हुए तो उन्होंने नवाब मुकराम ख़ाँ को शाही फरमान, खिलअत और एक तलवार लेकर राजा के पास भेजा। १७१४ ई० में राजा दिल्ली दर्बार गए। शाह ने हुकुम निकाला था कि सभी बिना किसी हथियार के दर्बार में हाज़िर हों, किन्तु रामचन्द्र अपनी पोशाक में हथियार सहित दरबार में गये। शाह राजा की बहादुरी देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ और राजा की बड़ी प्रसंशा की।

१७३२ में राजा कोड़ा जहानाबाद के घेरे में गया और घायल हुआ और मृत्यु होगई। उस राजा की मूर्ति अब तक कोड़ा में खड़ी है।

इन्द्रजीत (१७३६-६२)—

इन्द्रजीत रामचन्द्र के पौत्र राजगद्दी पर सरलता से नहीं बैठ सके। राधा अपने पुत्र रघुनाथसिंह को गद्दी पर बैठाना चाहती थी। रानी सीताजू ने ओरछा महाराज से प्रार्थना की कि इन्द्रजीत की सहायता की जाय। महाराज ओरछा ने इन्द्रजीत (बच्चा) को एक सेना के साथ भेजा। वह गद्दी पर बैठाया गया। लड़कपन की हालत में रानी सीताजू राज-काज करती रहीं।

१७६० ई० में शाह आलम बुन्देलखण्ड देखने आया। बाँदा में ओरछा और दतिया के राजे शाह से मिलने आए। शाह ने इन्द्रजीत को एक सिंहासन, दो झण्डे और अर्बी बाजे दिए। १७४२ में नारूशङ्कर ने ओरछा राज्य पर आक्रमण किया और ओरछा व दतिया राज्य का बहुत बड़ा भाग अपने राज्य में मिला लिया। उस साल मालवा का गवर्नर आज़मउल्ला ख़ाँ दतिया गया और उसने राजा से ७ लाख रु० लिये। १७४७ में मरहठों से संधि होगई। और १६½ लाख सालाना की भूमि मरहठों को मिली। १७६२ में राजा की मृत्यु दतिया में हुई।

शत्रुजीत (१७६१-१८०१)—

राजा विक्रमाजीत को ओरछा सिंहासन पर बैठाने में शत्रुजीत ने सेना सहित सहायता की। १८०१ ई० में सिउँधा क़िले की लड़ाई में राजा घायल हुआ और मृत्यु हो गई।

महाराज शत्रुजीत के ६ रानियाँ थीं। रानी आनन्द कुँवरि से परीक्षित पैदा हुए और पाँच पुत्रहीन थीं।

परीक्षित (१८०१-३६)—

पिता की मृत्यु के बाद राजा परीक्षित गद्दी पर बैठे। उन्होंने अपने पिता की खोई हुई सम्पत्ति मरहठों से फिर लेनी चाही। भाँडर पर इन्होंने अपना अधिकार जमा लिया। १८०४ में जब कैप्टन बैली बुन्देलखण्ड का एजेन्ट दौरे पर था तो राजा नादीगाँव में उसके पास गया और उससे संधि कर ली। १८१८ में लार्ड हेस्टिन्ग्ज़ दतिया स्टेट में आये। राजा ने बड़ी ख़ातिरदारी के साथ उसका स्वागत किया जिसके बदले चौरासी इलाक़ा और इन्द्रगढ़ राजा को मिला। १८२४ ई० में राजा ने लार्ड अमरहर्स्ट से कानपुर में भेंट की। १८२५ ई० में लार्ड कामबरमेअर दतिया में ठहरे और दर्बार किया। १८३६ ई० में राना ने विजय बहादुर नामी बालक को गोद लिया जिसको अंग्रेज सरकार ने भी स्वीकार किया।

१८२६ ई० में राजा लार्ड वैन्टिन्ग्स के दर्बार में गए और १८३६ में ७० साल की अवस्था में राजा का स्वर्गवास हो गया।

विजयबहादुर (१८३६-५७)—

विजयबहादुर एक धार्मिक राजा थे इनके समय में कोई ख़ास बात नहीं हुई। १८५७ में राजा की मृत्यु हो गई।

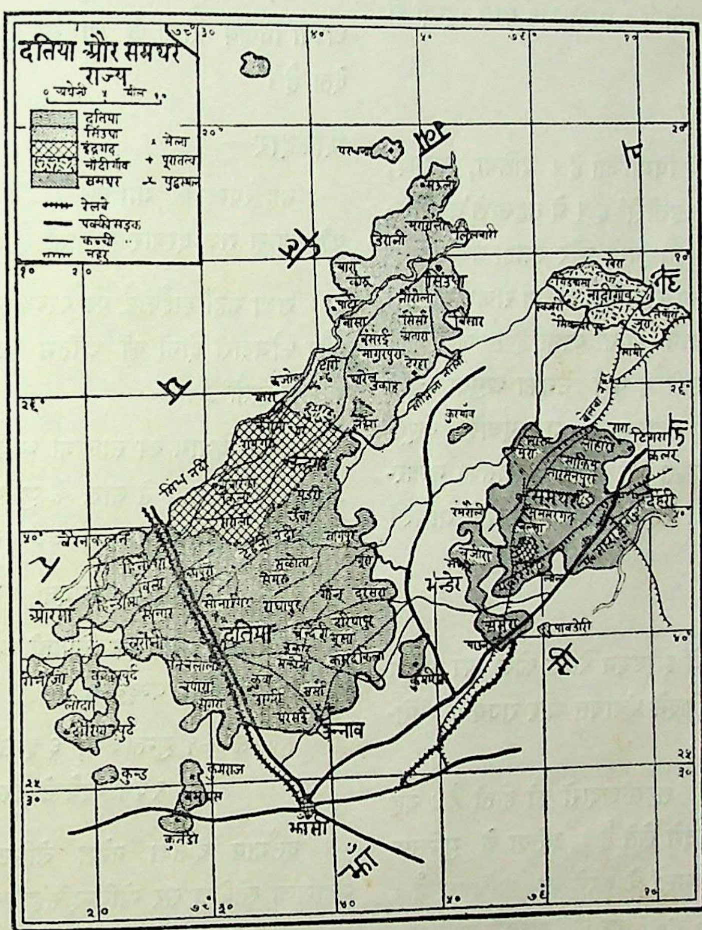
भवानी सिंह (१८५७-१९७१)—

यह ओरछा राज्य के वंशज थे और रानी ने गोद लिया था। रानी राज-काज करती थी। उसने अँग्रेजों की पूरी सहायता विप्लवकाल में की। उसकी मृत्यु के बाद सरी रानी प्रान कुंवरि राज-काज की मालिकिन हुई।

विप्लव शांत होने के पश्चात् राज्य में गड़बड़ी पड़ी। रानी विजयबहादुर के दोगले पुत्र अर्जुन सिंह को राजा बनाना चाहती थी। ब्रिटिश सरकार ने फ़ौज भेज कर रानी

और उसके साथियों को दबाया। और एक अँग्रेज अफसर को राज्य-कार्य के लिए दतिया में नियुक्त किया।

सन १८६२ ई० में राजा को गोद लेने की सनद मिली। नमक के बारे में इक़रारनामा हुआ और १०,००० रु० सालाना अँग्रेज़ सरकार ने देना मंजूर किया। बेतवा नहर के लिये भूमि जून १८८२ ई० में दी गई। रेलवे के लिये भूमि १८८८ ई० में मिली। एक हाई स्कूल खोला गया। १८६५ ई० में राज-काज राजा के हाथ सौंप दिया गया।



१८६६ में राजा आगरे के दरबार में लार्ड लॉरेन्स के समय में गए। १८७७ में राजा इम्पीरियल असेम्बुलेज़ में दिल्ली गए जहाँ लोकेन्द्र की पदवी, एक झण्डा और सुनहरा तमगा मिला। १८८० में रामलीला दरबार में आरम्भ हुआ। १८६७ में राजा को के० सी० एस० आई, और दीवान को रावबहादुर की पदवी मिली। सन् १६०२ में राजा गोविन्दसिंह ने चन्द्रकुँवर से व्याह किया। इसी साल लार्ड कर्ज़न राजदरबार में आये।

गोविन्दसिंह (१६०७)—

महाराज भवानीसिंह ४ अगस्त सन् १६०७ को परलोक सिधारे और उनके इकलौते पुत्र गोविन्दसिंह गद्दी पर बैठे।

बहुत से महलों के सिवा इटावा में सूर्य्य का मन्दिर है। यह सूर्य्य नामक एक बड़ा घूमता पत्थर है और उसके चारों और नवग्रह हैं। रङ्गपञ्चमी (मार्च) में दूर दूर के यात्री यहाँ दर्शन को आते हैं। और मन्दिर से मिले हुए सरोवर में स्नान करते हैं। कहते हैं कि इसमें नहाने से कोढ़ आदि रोग अच्छे हो जाते हैं।

महाराज की पदवी हिज हाईनेस महाराजा लोकेन्द्र के० सी० एस० आई० है।

शासन—

राज्य के अन्दर सभी कार्यों में प्रधान अधिकार महाराज का ही होता है। सभी प्रकार की अन्तिम निर्णय वाली अपीलें इजलास-खास में होती हैं।

दीवान—

दीवान सभी शासन विभागों का प्रधान होता है जो महाराजा की ओर से सभी कार्यों की देखभाल करता है।

राजकीय विभाग—

राज-काज, न्याय, शिकदारी या खेन, दरबार, ट्रेजरी, जङ्गल, पुलीस और जेल, पब्लिक वर्क्स, शिक्षा और औषधालय विभागों में बँटा है। दर्बार का कार्य हिन्दी, उर्दू में होता है। आज्ञापत्र उर्दू में निकलते हैं। बाकी सब काम हिन्दी में होता है।

राजनैतिक विभाग—

राज्य चार तहसीलों में विभाजित है। दतिया, इन्द्रगढ़, नदीगाँव, सिउँधा ये चारों तहसीलें हैं। ये तहसीलें तहसीलदारों के अधिकार में हैं। क़ानूनगो और स्याहा नवीस तहसीलदार को सहायता के लिए रहते हैं। दतिया राजधानी है।

नम्बरदार गाँव का प्रधान माना जाता है। जहाँ कहीं एक से अधिक नम्बरदार होते हैं वहाँ उनका अगुवा चुना जाता है। यह पटवारी की सहायता से मालगुज़ारी वसूल करता है। गाँव में एक पंचायत भी होती है जिसका नम्बरदार प्रधान माना जाता है। यह पंचायत छोटे-मोटे मामलों को तै किया करती है।

अदालतें और क़ानून—

फौजदारी के मामलों में इन्डियन पेनल कोड का प्रयोग होता है। किन्तु माल के मुक़दमे पंचायत और राज्य के रीति-रिवाज के अनुसार होते हैं।

सब से छोटी कचहरी तहसीलदारों की होती है। यह लोग १०० रु० तक के मुक़दमे लेते हैं। दतिया के मुन्सिफ को ५,००० रु० तक के मामलों के करने का अधिकार है। सिउँधा के मुन्सिफ १,००० रु० तक के मुक़दमे करते हैं। दीवान को इनके ऊपर अधिकार है।

दतिया के मजिस्ट्रेट, उन्नाव, रादरी, रोनिज, इन्द्रगढ़ और दतिया नगर के थानों के मुक़दमे करते हैं। उनको ६ महीने की सजा और ५० रु० जुर्माने का अधिकार है। नदी गाँव, थरेट और सिउँधा के थाने के मामले, सिउँधा के मजिस्ट्रेट करते हैं। इनको ३ महीने की सजा और २५ रु० जुर्माने का अधिकार है। बरौनी के मजिस्ट्रेट वहीं के थाने के मामलात करते हैं। इन कचहरियों की अपीलें दीवान के यहाँ होती हैं, और अंतिम अपील राजा के यहाँ होती है।

बड़े और गम्भीर मुक़दमें दीवान करता है। और अपना निर्णय राजा के सामने हुक्म देने के लिये पहुँचा देता है।

शिकदार—

यह रेवन्यू के मामलों में प्रधान होता है। इसके यहाँ की अपील राज दरबार में होती है।

राजा यहाँ हाईकोर्ट का कार्य्य करता है। अदालत माल और फौजदारी दोनों की अंतिम निर्णय वाली अपीलें राजा के पास होती हैं।

न्याय विभाग का सालाना व्यय १४,००० रु० है। ७½ प्रति सैकड़ा के भाव से माल के मुक़दमों में फीस लगती है। सालाना आय लगभग १८,००० रु० के है।

राज्य की सालाना आमदनी १२,६६,००० रु० है

फ़ौज—२४० पैदल सिपाही और लगभग ६२५ सवार, १२४ बन्दूकें हैं।

पुलीस—१ मुन्तज़िम, ६ इन्सपेक्टर, ७ सब इन्सपेक्टर और २६१ कानेस्टेबुल्स हैं।

वर्तमान दतिया नरेश लेफ़्टिनेन्ट कर्नल हिज़ हाइनेस महाराजा लोकेन्द्र सर गोविन्दसिंह बहादुर जी० सी० आई० ई०, के० सी० एस० आई० हैं। आप चैम्बर आफ प्रिन्सेज़ के मेम्बर हैं और १५ तोपों की सलामी दी जाती है।

धार राज्य

धार भारतवर्ष में प्राचीन और प्रसिद्ध नगरों में से है। 'धार' शब्द धार-नगरी से बिगड़ कर बना है। यह राज्य की राजधानी है। इसी नगर के पीछे इस राज्य का नाम धार पड़ा। यह राज्य दो भागों में बँटा है (१) बड़ा ब्लाक (२) तीन छोटे ब्लाक (टुकड़े) जो बड़े से अलग हैं। बड़ा टुकड़ा जो धार नगर के चारों ओर स्थित है उसमें धार, बड़नावर, नाल्डा, माँडू, धरमपुरी और ठिकरी के परगने हैं। कुकसी, सुन्दरसी नियामपुर के परगने दूसरे भाग में हैं। समस्त राज्य का क्षेत्रफल लगभग १,८०० वर्ग मील है। इस राज्य के मुख्य भाग के उत्तर में रतलाम राज्य, दक्षिण में बर्वानी व इन्दौर राज्य, पूर्व में ग्वालियर और इन्दौर, पश्चिम में झाबुआ, ग्वालियर और इन्दौर राज्य हैं।

इस राज्य के दो प्राकृतिक विभाग हैं। यह दोनों भाग विन्ध्याचल की एक पट्टी द्वारा विभाजित हैं। इस श्रेणी के उत्तर में मालवा पठार का उपजाऊ प्रदेश स्थित है। पट्टी के दक्षिण ऊँचा पहाड़ी प्रदेश है। पठारी प्रदेश का क्षेत्रफल ८६६ वर्ग मील और पहाड़ी प्रदेश का ९०६ वर्ग मील है। पठारी प्रदेश १,५०० से लेकर २,५०० फीट तक ऊँचा है। दक्षिणी भाग जो नर्मदा की घाटी तक है केवल ८०० फीट ऊँचा है। मालवा प्रदेश तथा नर्मदा की घाटी का प्रदेश बड़ा ही उपजाऊ है। पहाड़ी प्रदेश में बहुमूल्य बन हैं। विन्ध्यन श्रेणी जल-विभाजक का काम करती है, इसके उत्तर और दक्षिण छोटी छोटी नदियाँ हैं जो चम्बल और नर्मदा के सहायक हैं। सबसे बड़ी नदी नर्मदा है जो राज्य में लगभग ५० मील तक बहती है। इसके किनारे सुन्दर दृश्य हैं। माँडू और धार नगर की झीलें प्रसिद्ध हैं। पठार और पहाड़ी प्रदेश की जलवायु अच्छी है। न तो गर्म है और न ठंडी। गर्मी के दिनों में भी रात्रि को सर्दी पड़ती है। पहाड़ी प्रदेश में गर्मियों में अधिक गर्मी पड़ती है। शीत-काल बहुत ही छोटा होता है। केवल दिसम्बर से फ़रवरी तक जाड़ा पड़ता है। सालाना वर्षा लगभग २६ इंच है। राज्य की जनसंख्या २,४३,४३० है जिनमें ६६ प्रतिशत हिन्दू और बाकी मुसलमान, जैन, ईसाई और दूसरी जातियाँ हैं। राज्य में हिन्दी, माल्वी, निमारी, भिलाली और भीली भाषाओं का प्रयोग होता है। लगभग ११,३६,३८० एकड़ भूमि में खेती होती है। २,४४,१३० एकड़ भूमि में जंगल है। १,३०,६५७ एकड़ भूमि खेती के लायक़ है किन्तु अभी परती पड़ी हैं। अगहनी और बैसाखी दो फ़सलें होती हैं। ज्वार, बाजरा, तिल, मूँग, उर्द, मक्का अगहनी फसलें हैं और गेहूँ, मसूर, चना, जौ, अलसी आदि बैसाखी फसलें हैं। तरकारियाँ लगभग सभी प्रकार की पैदा होती हैं। फलों में संतरा, नींबू, आम, केला, जामुन, बैर, इमली, खिन्नी, चिरौंजी, चकोतरा, रामफल, सीताफल, कमरख, अंगूर, आँवला, जम्बू आदि फल पैदा होते हैं। बनों में और भी सैकड़ों प्रकार के फल फूल पैदा होते हैं जिनका प्रयोग जंगली लोग करते हैं। शेर, चीता, बाघ, तेंदुवा, भेड़िया, काले हरन, साँभर, जंगली सुअर, लंगूर-बन्दर आदि जानवर जंगलों में पाए जाते हैं।

राज्य का संक्षिप्त इतिहास—

धार राज्य के राजे अग्निकुल के क्षत्रिय हैं। यह पँवार मरहठे कहे जाते हैं। नवीं सदी से तेरहवीं सदी तक इस वंश का राज्य रहा। इनकी राजधानी धार और उज्जैन थी। मूँजा वाकपती और राजा भोज इस वंश के प्रसिद्ध राजे हैं। महाराज भोज के समय में महमूद गजनवी का आक्रमण हुआ। १२३५ ई० में भिलसा और उज्जैन पर अलतमश ने अधिकार जमाया। १३०४-५ में अलाउद्दीन ने धार नगरी पर आक्रमण किया और उस समय से १७३२ तक धार राज्य पर मुसलमानों का अधिकार रहा।

१७३२ में उदाजी पँवार ने दयाबहादुर को हराकर और भाग्य चक्र से अपने पुराने खोए हुए राज्य पर फिर अधिकार जमाया।

जब मुसलमानों ने पँवार राजपूतों को दक्षिण की ओर ढकेला तो यह वहाँ जाकर बिलकुल मरहठों में मिल गए। महाराज शिवाजी के समय में साबाजी राव पँवार ने अच्छी उन्नति की और नाम पैदा किया। उनके पुत्र कृष्णजी और पौत्र बूबाजी ने और भी अधिक अपने वंश का नाम बढ़ाया। सतारा महाराज साहू के समय में बूबाजी के पुत्र कालूजी और सम्भाजी अच्छे अच्छे पदों पर नियुक्त किये गए।

उदाजी प्रथम (१७२५-४२)—

कालूजी के पुत्र तुकोजी और जीवाजी ने सीनियर (बड़ा) और जूनियर (छोटा) देवास राज्य की नींव डाली। सम्भा जी के तीन पुत्र उदाजी, आनन्द राव, और जगदेव हुए। उदाजी बाला विश्वनाथ पेशवा के यहाँ नौकर रहे और कई बार मालवा का भ्रमण किया। एक बार कुछ दिनों तक धार पर इनका अधिकार भी रहा। १७२५ में बाजीराव पेशवा ने उदाजी को मालवा पर कर लगाने की सनद दी। १७३२ में उदाजी ने टिरला के दयाबहादुर को हरा कर अपना अधिकार मालवा प्रदेश पर जमाया। अभाग्यवश पेशवा उदाजी से अप्रसन्न हो गया और इनको हटाकर इनके भाई आनन्द राव को इनके स्थान पर नियुक्त कर दिया।

आनन्द राव (१७४२-४९)—

१७४२ में पेशवा ने धार राज्य की सनद आनन्द राव को बख्शी। उस समय धार राज्य वर्तमान राज्य से कहीं अधिक बड़ा था। होल्कर और सिंधिया के बाद पांवार वंश का नम्बर था। १७४९ में आनन्द राव की मृत्यु के बाद उनके पुत्र यसवन्त राव गद्दी पर बैठे। किन्तु १७६१ ई० में पानीपत की तीसरी लड़ाई में मारे गए। उसके बाद उनके पुत्र खाँडेराव २३ वर्ष की अवस्था में गद्दी पर बैठे। राजकाज माधोराव ओरेकर (ब्राह्मण) करता था। १७७४ में खाँडेराव ने राघोबा की सहायता की। इसी बीच धार के क़िले में बाजीराव द्वितीय पैदा हुआ। खाँडेराव का व्याह गोविन्द राव गायकवाड़ की पुत्री से हुआ जिससे आनन्द राव द्वितीय हुए। १७८० में खाँडेराव की मृत्यु हो गई।

आनन्द राव द्वितीय (१७८०-१८०७)—

आनन्द राव का ननिहाल ही में पालन-पोषण हुआ। वहीं उनका सटवाजी साठे की पुत्री से व्याह हुआ। १७ वर्ष की अवस्था में धार आए, रँगराव दीवान ने नाराज़ होकर सिंधिया और होल्कर को धार के विरुद्ध खड़ा किया जिससे एक के बाद दूसरे कई आक्रमण धार राज्य पर हुए। १७०३ ई० में आनन्द राव ने असई के युद्ध में सिंधिया का साथ दिया जिसमें सिंधिया की हार हुई। आनन्द राव भाग कर धार आए। इस समय आगर, सुनेर, बदनावर, वरसिया, ताल, मँदावल और राजपूताना के प्रदेश इनके हाथ से निकल गए।

१८०७ ई० में आनन्द राव अपनी गर्भवती स्त्री के हाथ राज्य छोड़ कर परलोक सिधारे। मैना बाई ने राज्य प्रबन्ध बड़ी सावधानी से किया। माँडू में जाकर रामचन्द्र राव मैनाबाई से पैदा हुए। रानी ने अपने बैरियों का सामना बड़ी चतुरता और बहादुरी से किया। इसी बीच रामचन्द्र राव की मृत्यु होगई तब रानी ने अपनी बहन के पुत्र लक्ष्मण राव को होल्कर और सींधिया की राय से गोद लिया। लक्ष्मण राव, रामचन्द्र राव के नाम से गद्दी पर बैठे।

रामचन्द्र राव द्वितीय (१८१०-३६)—

इस समय होल्कर, सीन्धिया और पिंडारियों के आक्रमण के कारण केवल धार नगर ही शेष रह गया था। बड़ी कठिनाई से जीविका चलती थी। इसी समय अँग्रेज़ों का आक्रमण हुआ जिससे शान्ति स्थापित हुई। १० जुलाई सन् १८१२ को धार राजधानी में अँग्रेज़ों से सन्धि हुई जिससे बदनावर, बेरसिया, कुकसी, नालछा और दूसरे प्रान्त राजा को दिये गए। २५,००,००० का कर्ज़ भी राजा को दिया गया। जिसके बदले में बेरसिया का परगना ५ साल तक अँग्रेज़ सरकार के हाथ रहा। बापू रघुनाथ राज्य के मंत्री बनाए गए। राज्य की आय ३५००० से २,६७,००० हो गई। १८२१ में १२ वर्ष की अवस्था में राजा की शादी दौलत राव सिंधिया की पौत्री अन्न

पूर्णादेवी से हुई। उसी साल बेरसिया परगना और अलीराजपुर का कर अँग्रेज़ों को दे दिया गया जिसके बदले में अँग्रेज़ सरकार ने १,१०,००० रु० सालाना दर्बार को देने का वादा किया।

रामचन्द्र राव पाँवार अक्टूबर सन् १८३३ में मरे। उनके बाद यसवन्त राव द्वितीय ने १८३३-५७ तक राज्य किया। उसके बाद अनिरुद्ध राव पाँवार आनन्द राव द्वितीय गद्दी पर बैठा और १८६८ तक राज्य किया। २५ अक्टूबर सन् १८५७ को बाग़ियों ने धार पर अपना अधिकार जमा लिया। १६ जनवरी १८५८ को राज्य को बृटिश सरकार ने ज़ब्त कर लिया, किन्तु इँगलैण्ड में सवाल पैदा हो जाने के कारण मई १८६० में फिर वापस कर दिया। १८६२ में राजा को गोद लेने की सनद दी गई। १८७७ में महाराजा की पदवी मिली और राजा नाइट कमान्डर बनाए गए। १८८३ में इंडियन इम्पायर के आर्डर के कम्पेनियन बनाए गए। १५ जुलाई १८६८ को राजा की मृत्यु हुई।

उदाजी राव द्वितीय (१८६८)—

महाराज उदाजी राव, अन्ना साहब पाँवार के पुत्र हैं। आपने डेली कालेज इन्दौर में शिक्षा पाई। १६०३ में आप दिल्ली के कारोनेशन दर्बार में गए वहाँ आपको सोने का तमगा मिला। १६०५ में राजा इन्दौर के दर्बार में गए और वेल्स के राजकुमार व राजकुमारी से भेंट की। १६०७ में राजा को राज्य करने की पूरी आज्ञा प्राप्त होगई। राजा अपने अफ़सरों की सहायता द्वारा राज्य-शासन करता है। राज्य धार, बड़नावार, नाल्छा, माँडू, संडर्सी, धरमपुरी, सुलतानाबाद कुकसी, नीमानपुर आदि परगनों में विभाजित है। प्रत्येक परगना एक कामदार के अधीन है। राज्य की सालाना आय १७,६०,००० रुपये हैं।

वर्तमान नरेश हिज़ हाइनेस महाराजा आनन्द राव पाँवार हैं। (मरहठा) आप चैम्बर आफ प्रिन्सेज़ के मेम्बर हैं। और १५ तोपों की सलामी दी जाती है।



देवास राज्य

देवास नाम देवीवास या देवीवासिनी से बिगड़ कर बना है। इस नाम की एक पहाड़ी देवास राजधानी के पास स्थित है। देवास का राज्य दो भागों में बँटा है। एक को देवास जूनियर (छोटा और दूसरे को देवास सीनियर (बड़ा) कहते हैं। देवास सीनियर (बड़ा) का क्षेत्रफल ४४६ वर्गमील है। छोटे देवास का क्षेत्रफल ४१६ वर्गमील है।

देवास प्रायः सब का सब (केवल बागौंड परगने को छोड़ कर) मालवा पठार पर स्थित है। दोनों राज्य एक दूसरे से ऐसे मिले हुये हैं कि उनका क्षेत्रफल अलग नहीं किया जा सकता। इनका राज्य ग्वालियर और होल्कर राज्यों से भी मिला हुआ है। देवास राज्य के खासगी और बागौंड परगनों में विन्ध्याचल की पहाड़ियाँ हैं। पठार के ऊपर पहाड़ियाँ ३०० से ५०० फ़ुट तक ऊँची खड़ी हुई हैं। धजारी, तुमाई माता चोटियां समुद्रतल से २,००० फ़ुट ऊँची हैं। विन्ध्याचल पर्वत इस राज्य को प्रधान जल विभाजक बनाता है। यहां का पानी यमुना में जाकर मिलता है। चम्बल नदी देवास जूनियर राज्य में १६ मील तक बहती है। वहां यह नदी काफ़ी बड़ी है, लेकिन वह सिंचाई के काम नहीं आती है।

चिप्रा या सिप्रा नदी दोनों देवास राज्यों में ३० मील तक बहती है। इस नदी के किनारे बहुत ऊँचे हैं और वह सिंचाई के काम नहीं आती है। सिप्रा नदी में यहां साल भर पानी भी नहीं बहता है। गर्मी की ऋतु में इसका बहुत सा भाग सूख जाता है। केवल कहीं-कहीं पर इसमें पानी के कुंड मिलते हैं। इस नदी को हिन्दू लोग पवित्र मानते हैं। इसके किनारे पर कई जगह मन्दिर बने हैं। सिप्रा और नागधामन के संगम पर जूनियर देवास के राजा ने एक बड़ा मन्दिर बनवाया था।

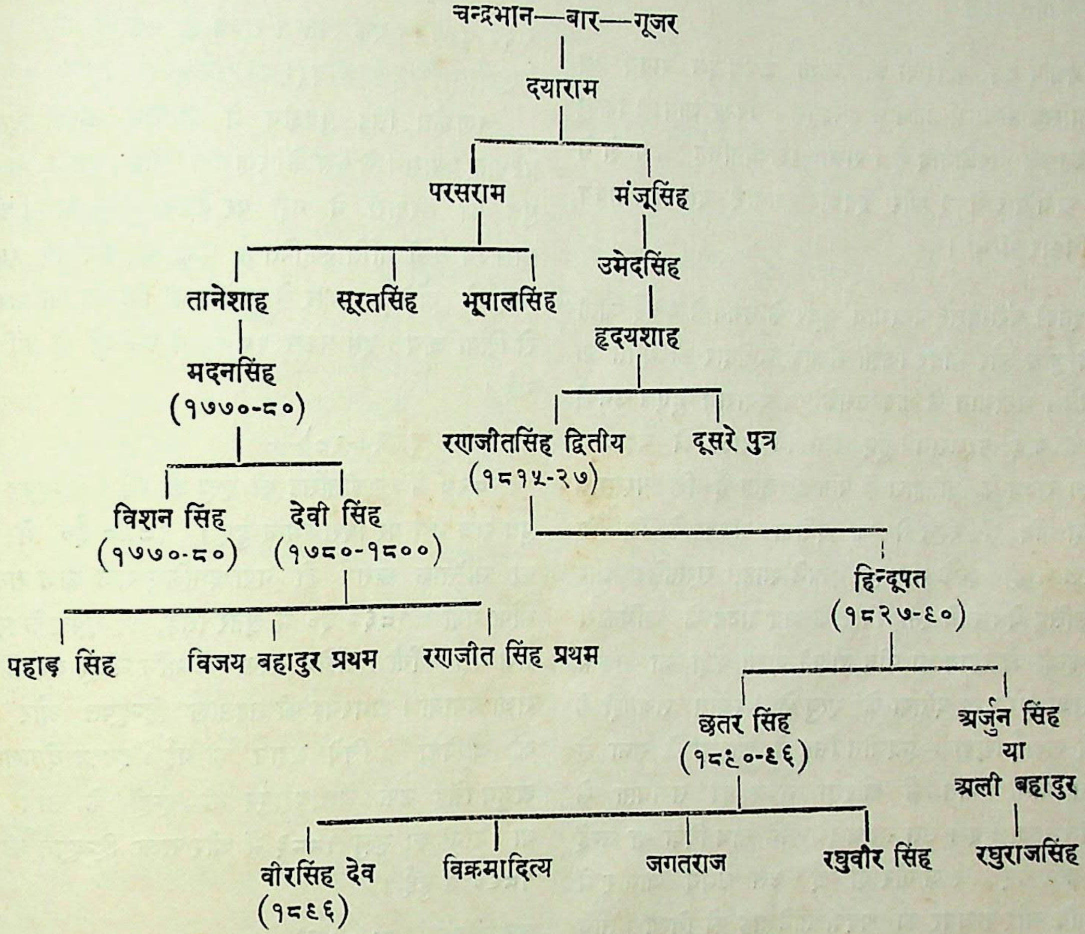
काली सिन्ध नदी बड़े देवास राज्य से निकलती है और १८ मील तक इस राज्य में होकर बहती है। यह नदी भी सिंचाई के लिये उपयोगी नहीं है। इसमें मिलने वाली कुछ छोटी धारायें सिंचाई के काम आती हैं।

देवास राज्य की ज़मीन लावा की काली रेगर मिट्टी की बनी है। इधर बहुत छोटे-छोटे पेड़ों का जंगल है। इसमें बनास बहुत हैं। इस में तेंदुआ, हिरन, सांभर, लोमड़ी आदि उसी तरह के जानवर हैं जो मध्यभारत में मिलते हैं। देवास राज्य में साल में लगभग ३५ इंच पानी बरसता है। गरमी अधिक रहती है। सरदी की ऋतु में ५३ अंश फारेन हाइट से कम तापक्रम नहीं होता है।

बड़े देवास की जन संख्या ८३,३२८ है और सालाना आय ६,८३,००० रु० है। वर्तमान नरेश हिज़-हाईनेस महाराजा विक्रमसिंह राव पुआर बी० ए० (मरहठा) हैं। आपको १५ तोपों की सलामी लगती है। और आप चैम्बर आफ़ प्रिन्सेज़ के मेम्बर हैं। राज्य की सालाना आय ६,८३,००० रु० है।

छोटे देवास की जनसंख्या ७०,५१३ है और सालाना आय ७,३८,००० है। वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस महाराजा सदाशिवराव खासे साहब पँवार हैं। आपको १५ तोपों की सलामी लगती है और आप चैम्बर ऑफ़ प्रिन्सेज़ के मेम्बर हैं।

समथर-राज्य



स्थिति—

यह राज्य २५'३८' से २६'२' उत्तरी अक्षांशों और ७८'४८' से ७६'११' पूर्वी देशान्तरों के बीच स्थित है।

इसका क्षेत्रफल १७८ वर्ग मील है। इसके उत्तर और पूरब में जालौन का जिला, दक्षिण में झाँसी का जिला, पश्चिम में ग्वालियर राज्य और झाँसी का जिला है। राज्य की जन-संख्या ३३,२०७ और सालाना आय १,५०,००० रुपये सालाना है।

नामकरण—

समथल के अर्थ बराबर भूमि के होते हैं। इसकी भूमि बराबर होने के कारण इसका नाम समथल या समथर पड़ा।

प्राकृतिक विभाग—

राज्य की सारी भूमि कछारी और समथल है। यहाँ कोई पहाड़ी नहीं है। केवल सिउरा पहाड़ है जहाँ पर कपिलनाथ का मन्दिर है। यहाँ चैत कृष्ण पक्ष द्वितीया को हर साल मेला लगता है। यहाँ बेतवा और परहु दो नदियाँ हैं। इन नदियों के कछार की भूमि बड़ी उपजाऊ है। यहाँ आँवला, बांस, मकोर, करौंदा, घोट, तेंदू, हरसिंगार, बैर, खैर आदि के जङ्गल हैं।

जलवायु और वर्षा—

गर्मियों में अधिक गर्मी और शीतकाल में कड़ाके का जाड़ा पड़ता है। वर्षा २८ इंच सालाना है।

जन संख्या लगभग ३५ हजार के है।

इतिहास—

यहाँ बार गूजर वंश के लोग राज करते हैं। यह राज्य अँगरेजों के आने के थोड़े ही पहले स्थापित हुआ।

प्राचीन इतिहास (१७००-१८००)—

यद्यपि यह कोशिश की जाती है कि इस राज्य का ऐतिहासिक सम्बन्ध प्राचीन इतिहास से किया जाय। किन्तु यह बिलकुल बेबुनियाद है। राजा रणजीतसिंह के पहले ये केवल ज़मींदार थे। और इनकी जागीरें दतिया राज्य के अधिकार में थीं।

इनकी वंशावली चन्द्रभान गूजर के समय से बताई जाती है। ये कूंच और भाँडर जिलों में एक जमींदार की भाँति आ कर बसे। चन्द्रभान के बाद उसके पुत्र दयाराम हुए। उनकी मृत्यु के बाद परसराम हुए जिन्होंने राज्य को बढ़ाया। ओरछा राज्य के इतिहास से पता चलता है कि परसराम परसोंदा गाँव में रहते थे जो दतिया राज्य के सिउँधा तहसील में है। इनके तीन पुत्र ताने शाह, सूरतसिंह और भोपालसिंह थे। ताने शाह पिता के बाद राज्य के अधिकारी हुए। इन्हीं को राज्य का नीव डालने वाला कहा जा सकता है। राजा रामचन्द्र दतिया के मृत्यु के पश्चात राजगद्दी के बारे में लड़ाई छिड़ी। इन्द्रजीत सिंह ने ओरछा के राना से सहायता माँगी। अंत में ओरछा राज्य की सहायता से इन्द्रजीत राजा हुए। उस समय जिन्होंने साथ दिया था उन्हें इनाम बाँटे गए और जागीर दी गई। उसी समय जागीर में पाँच गाँव और राजधर की पदवी तानेशाह को मिली। ताने शाह के पुत्र मदन सिंह (१७२५-७०) ने उन्नति की और समथर क़िले के गवरनर हो गए। इनके दो पुत्र विशन सिंह और देवीसिंह हुए। (१७००-१८००) देवी सिंह राजा हुए। देवी सिंह से दतिया महाराज से बहुत घनिष्ठता थी। इस हेतु उन्हें पाँच गाँव इनाम में मिले जिसमें समथर गाँव भी शामिल था। यद्यपि समथर राज्य दरबार इस बात को नहीं मानते तो भी यह बात सत्य प्रतीत होती है। मरहठों के आक्रमण से दतिया राज कमज़ोर हो गया तो समथर राज्य को बढ़ने का अच्छा अवसर मिला और यहाँ के राव स्वतन्त्र हो गए। देवीसिंह के तीन पुत्र थे। पहाड़ सिंह, विजय सिंह की मृत्यु हो जाने के कारण रणजीत सिंह राजा हुए।

रणजीत सिंह प्रथम (१८००-१५)—

रणजीत सिंह ने मरहठों का आक्रमण देख यह बात निश्चित जानी कि उनका सत्यानाश हो जावेगा। इसलिए रणजीत सिंह ने मरहठों से संधि कर ली। इस प्रकार पेशवा द्वारा इनको राजा की पदवी मिली और यह राज्य दतिया राज्य से अलग एक स्वतन्त्र राज्य हो गया।

रणजीत सिंह द्वितीय (१८१५-२७)—

रणजीत सिंह पुत्रहीन थे इसलिए उनकी मृत्यु के पश्चात् दयाराम के वंश के रणजीत सिंह हृदय शाह के पुत्र को सरदारों ने गद्दी पर बैठाया। इस समय अँग्रेज़-साम्राज्य भली भाँति स्थापित हो चुका था, इसलिए रणजीत सिंह ने अँग्रेज़ सरकार से प्रार्थना की कि वह भी शरण में ले लिया जाय। इस प्रकार १८०७ में अँग्रेज़ों से संधि हो गई।

हिन्दूपत (१८२७-६०)—

१८२७ में रणजीतसिंह की मृत्यु हो गई। हिन्दूपत उसके पुत्र राज गद्दी पर विराजमान हुए। १८५८ ई० में राजा का मस्तिष्क खराब हो गया इसलिए राज काज रानी को सौंपा गया। १८६२ ई० में छतर सिंह, हिन्दूपत के पुत्र ने राज गद्दी माँगी। अँग्रेज सरकार ने माँग मंजूर कर ली और राजा बनाया। अमरगढ़ की तहसील हिन्दूपत और रानी को जीविका के लिये प्रदान की गई। इनका दोगला पुत्र अर्जुन सिंह उर्फ अलीबहादुर भी इन्हीं के साथ रहता था। रानी की मृत्यु १८८३ में और राजा हिन्दूपत की मृत्यु १८६० में हुई।

छतरसिंह (१८६०-६६)—

यद्यपि १८६२ से ही छतर सिंह राज काज करते रहे तो भी वे सचमुच १८६० से ही राजा माने गए। छतर सिंह बड़े चतुर राजा थे। १८६२ ई० में अंग्रेज़ सरकार ने गोद लेने की सनद प्रदान की। १८७६ ई० में नमक के बारे में प्रतिज्ञापत्र लिखा गया और अंग्रेज़ सरकार ने १४५० रु० सालाना देने का वचन दिया। १८८२ में कथउन्ड और हमीरपुर नहर के लिये भूमि दी गई और १८८४ में ग्रेट इण्डियन पेनिनशुला रेलवे के लिये भूमि मिली। १८७० ई० में ड्यूक ऑफ़ एडेन्बरा के आने पर आगरा में दरबार हुआ। इसमें राजा भी गए। १८७७ में राजा दिल्ली गए। वहाँ एक झंडा, सोने का तमग़ा और महाराजा की पदवी मिली।

१८६६ में राजा की मृत्यु हो गई। इनके चार पुत्र वीरसिंह देव, विक्रमादित्य, जगतराज और रघुवीरसिंह थे।

वीरसिंहदेव (१८६६—)—

पिता की मृत्यु के बाद वर्तमान राजा राजगद्दी पर बैठे। १९०३ में दिल्ली दरबार में राजा गए और १९०५ में इन्दौर में महाराज जार्ज पञ्चम और महारानी से मिले। १९०७ में प्रथम श्रेणी का क़ैसर-हिन्द का मॉडल मिला।

वर्तमान समय में राजा की पदवी हिज़ हाइनेस महाराजाधिराज है।

जन-संख्या—

यहाँ की जन-संख्या लगभग ३४ हज़ार के है। गाँव और टाऊन सभी मिल कर ९१ हैं। ७९ की जन-संख्या ५०० के नीचे है। ५ की जन-संख्या १००० और ५०० के बीच की है। ६ की जन-संख्या २००० और १००० के बीच है और एक (प्रधान नगर) की जन-संख्या ५००० से अधिक है। कुल लगभग ३२ हज़ार हिन्दू, और ३२ जैन और २२२६ मुसलमान हैं।

बुन्देलखण्डी हिन्दी भाषा बोली जाती है। केवल २ प्रतिशत पढ़े-लिखे हैं।

शासन—

राजा सभी कार्यों और मामलों में प्रधान माना जाता है। राजा की सहायता के लिये वज़ीर रहता है। वज़ीर सभी डिपार्टमेन्ट्स का निरीक्षण करता है।

शासन विभाग—

राज्य का शासन निम्न लिखित विभागों में विभाजित है। १—हुजूर दरबार, २—दरबार आम या वज़ीर की कचहरी, ३—निज़ामत, ४—खजाना, ५—रेवन्यू, ६—कर, ७—शिक्षा, ८—प्रजाकार्य (पब्लिक वर्क्स) ९—पुलीस, १०—औषधालय।

राजनैतिक विभाग—

राज्य चार तहसीलों में बँटा है। प्रत्येक तहसील एक तहसीलदार के अधिकार में है। जो रेवन्यू अफ़सर, मजिस्ट्रेट और सिविल जज का काम करता है। पुलीस थानेदार उसकी सहायता के लिये रहता है।

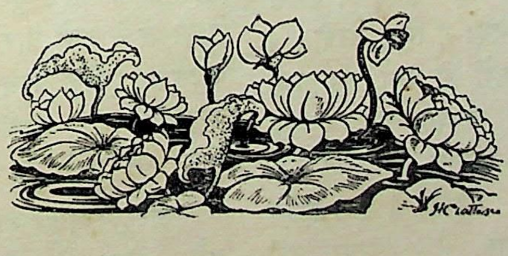
न्याय और क़ानून—

क़ानून बनाने वाली कोई सभा नहीं है। राजा को आज्ञानुसार दीवान कभी कभी आज्ञा पत्र निकालता है जिसका पालन क़ानून की भाँति ही होता है।

कचहरियाँ—

सब से छोटी कचहरी तहसीलदार की है। नाज़िम की कचहरी इसके ऊपर है। और पाँच साल तक की सज़ा देने का अधिकार है। नाज़िम की कचहरी के ऊपर दरबार-आम या दीवान की कचहरी है जो सभी मामलात की अपील सुनता है। इसके ऊपर हुज़ूर-दरबार या राजा की कचहरी है। जीवन भर की सज़ा या फाँसी के मामलात का फ़ैसला राजा के ही हाथ में रहता है। दीवान या मन्त्री के यहाँ की अपील हुज़ूर-दरबार में होती है। माल के मामलात में नाज़िम १५,००० रु० तक के मुक़दमे कर सकता है। मन्त्री के यहाँ किसी मूल्य के मुक़दमे हो सकते हैं, मन्त्री के यहाँ की अपील राजा के यहाँ होती है।

वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस राजा राधाचरन सिंह जूदेव बहादुर (गूजर) हैं। आपको ११ तोपों की सलामी लगती है और आप चैम्बर आफ प्रिन्सेज़ के मेम्बर हैं।



जाओरा

जाओरा राज्य मध्य भारत के मालवा प्रदेश में स्थित है। यह तीन सन्धि राज्यों (Treaty states) में एक है। इस राज्य का क्षेत्रफल केवल ६०२ वर्ग मील है और कई भागों में बँटा हुआ है। जाओरा, बसेदा, ताल, बरखेरा और नवाबगंज प्रधान तहसील हैं। मल्हार गढ़ और संजीत की तहसीलें दूसरी तहसीलों से कुछ अलग हैं।

जाओरा नाम पुराना है। लेकिन इसकी उत्पत्ति का पता नहीं चलता है। पहले यह एक छोटा (३०० मनुष्यों का) गाँव था। यहाँ पर सोलंकी ठाकुर राज्य करते थे। फिर यह नवाब ग़फ़ूर खाँ के हाथ लगा। जाओरा राज्य उत्तर में ग्वालियर और देवास राज्यों से घिरा हुआ है। दूसरी ओर दक्षिण में रतलाम राज्य और ग्वालियर हैं। पश्चिम की ओर ग्वालियर और प्रताप गढ़ राज्य हैं। पिप्पलोदा के ठाकुर की रियासत मल्हारगंज तहसील को दूसरी तलसीलों से अलग करती है। संजीत और मल्हारगंज की तहसीलें चारों ओर से ग्वालियर और इन्दौर राज्यों से घिरी हुई हैं।

जाओरा राज्य में केवल नवाबगंज तहसील का पश्चिमी भाग पहाड़ी है। शेष लहरदार पठार है। इसके बीच बीच में चपटी चोटीवाली अकेली पहाड़ियाँ उठी हुई हैं। चम्बल और उसकी सहायक मलेनी यहाँ की दो प्रधान नदियाँ हैं। मलेनी नदी सैलाना के पास पहाड़ी भाग से निकलती है। जाओरा राज्य को पार करके यह नदी देवास राज्य में प्रवेश करती है। वहीं यह चम्बल नदी में मिल जाती है। जाओरा और बरोदा तहसीलों की वर्षा का पानी बहकर इसी नदी में आता है। चम्बल नदी विन्ध्याचल के पश्चिमी ढालों से निकलती है। यह नदी कुछ उत्तर की ओर बहती है। सिप्रा के पास इसमें सिप्रा (क्षिप्रा) नदी मिलती है। सिप्रा नदी जाओरा राज्य को झालावार राज्य से अलग करती है। नदी के किनारे बड़े सपाट हैं। इसलिये यह नदी सिंचाई के काम नहीं आती है। चम्बल नदी में साल भर पानी रहता है। लेकिन मलेने में साल भर में केवल ४ महीने पानी रहता है। चम्बल की दो और छोटी सहायक नदियाँ सऊ और रेतम हैं। सऊ प्रतापगढ़ की पहाड़ियों से निकलती है और मन्दसौर होती हुई ग्वालियर और जाओरा के बीच में सीमा बनाती है। संजीत तहसील में यह चम्बल में गिर जाती है।

जाओरा राज्य के जंगली भागों में तेन्दुआ भालू, काले हिरण और दूसरे जङ्गली जानवर मिलते हैं।

इस राज्य की जलवायु पठार के दूसरे भागों की तरह समशीतोष्ण है। तापक्रम १०० और ७० अंश के बीच में ही रहता है।

अब्दुल गफ़ूर खां ने जाओरा राज्य की नींव डाली। उनके पूर्वज ताजिकखेल के सम्बन्धी थे और स्वात से आये थे। अब्दुल ग़फ़ूर खां का परदादा (पितामह) अब्दुलमजीद नजीबाबाद के नवाब के यहां नौकर हो गया। धीरे धीरे वह एक विश्वासपात्र मन्त्री हो गया।

उसके मरने पर उसके दो बेटे अब्दुलहामिद और अब्दुलरशीद पहले कुछ दिनों ग़ुलामक़ादिर खां के यहां नौकरी करते रहे।

लेकिन ग़ुलाम क़ादिरखां ने दिल्ली सम्राट् शाह आलम के साथ बुरा बर्ताव किया इससे सिन्धिया महाराज ने उन्हें मार डाला। इसके बाद बड़ा भाई अब्दुल हमीद रामपुर राज्य के भैंसिया गाँव में बस गया और वहीं खेती करने लगा। अब्दुल-गफ़ूर खाँ उसी का छोटा लड़का था।

अब्दुल गफ़ूर खाँ का बहुत सा समय दिल्ली और जैपुर के बीच में बीता। फिर वह इन्दौर आया। १८११ ई० में जसवन्त राव होल्कर के मरने पर गद्दी के लिये झगड़ा हुआ। महारानी तुलसी

बाई ने अपने गोद लिये बेटे मल्हारराव का पक्ष लिया। अब्दुल गफ़ूर खाँ का साथ दिया। १८१७ में महीन्द्रपुर की लड़ाई में वह तटस्थ रहा। लड़ाई के अन्त में उसने अपने को ब्रिटिश के हाथ में सौंप दिया। १८१८ में मन्दसौर की सन्धि के बाद सञ्जीत, मल्हारगढ़ ताल, मन्डावल, जाओरा और बरौदा की तहसीलें गफ़ूर खाँ को मिल गईं। पिप्लौदा से उसे कर भी मिलने लगा। १८२५ में वह मर गया। उसके बेटे गौस मुहम्मद खाँ ने १८६५ तक और उसके बाद इस्माइलखाँ ने १८६५ तक राज्य किया। १८६५ में इफ़्त खाँ बाटओरा का नवाब हुआ। पिपलौदा, बिलौदा, सिरसी, सदा खेरी, खेरवासा, बरखेरा, खोजन खेरा, डपरवासा, शतौता, केठारकुजा आदि के जागीरदार हैं। अम्बा, मण्डावल और पहेरा के जागीरदार जाओरा राज्य की नींव पड़ने के पहले ही मौजूद थे।

जाओरा नगर समुद्रतल से १६०० फ़ुट ऊँचा है। यह अजमेर खंडवा लाइन पर स्थित है। नगर का क्षेत्रफल लगभग ७½ मील है। यह २६ भागों में बँटा हुआ है। यहाँ पहले खटकी राजपूत रहते थे। महल, जामा मस्जिद, हनुमान का मन्दिर, धर्मशाला, गफ़ूर खाँ का मक़बरा देखने योग्य हैं।

राज्य की जनसंख्या १,००,१६६ है और सालाना आय १२,४४,००० रु० है। वर्तमान नरेश लेफ्टिनेन्ट कर्नल हिज हाईनेस फख़रुद्दौला नवाब सर मोहम्मद इफ़्तिख़ार अली खां बहादुर सौलते जङ्ग जी० वी० ई०, के० सी० आई० ई० पठान हैं। आपको १३ तोपों की सलामी लगती है और आप चैम्बर आफ प्रिन्सेज़ के मेम्बर हैं।



छतरपुर

स्थिति और क्षेत्रफल—

छतरपुर का राज्य भी सनद वाले राज्यों में से है। यह बुन्देलखण्ड में शामिल है और सेंट्रल इंडिया एजेन्सी का एक राज्य है। यह राज्य २८·२०′ उत्तरी अक्षांश से २५·१५′ उत्तरी अक्षांश तक और ७६·२५′ से ८·१५ पूर्वी देशान्तर तक फैला हुआ है। इसका क्षेत्रफल ११·३० वर्गमील है।

नामकरण—

पन्ना महाराज छत्रसाल ने छतरपुर नगर की नींव डाली। उसी नगर के नाम पर इस राज्य का नाम भी छतरपुर पड़ा।

प्राकृतिक विभाग—

यह राज्य सेंट्रल इंडिया के निचले प्रदेश में स्थित है। यहाँ समतल मैदान हैं और कहीं कहीं भूमि ६०० फीट समुद्र तल से ऊँची है जो भिन्न प्रकार के वृक्षों से ढकी है। यहाँ पन्ना श्रेणी फैली हुई है। जो समुद्र तल से १६०० फीट ऊँची है। यहाँ की मुख्य नदी केन है। उर्पल, केल, कटनी, खुरार, सेमरी, बेंसकर, बुरेना, बरना आदि दूसरी छोटी छोटी नदियाँ हैं।

केन नदी के नाम पड़ने का कारण—

कहते हैं कि एक अहीर की लड़की और कुर्मी के लड़के में प्रेम हो गया। लड़की के पिता को इसका पता चल गया। बूढ़े अहीर का खेत पहाड़ी के नीचे था। उस जगह एक पानी की धारा पहाड़ से निकल कर बहती थी। अहीर बाँध बांध कर अपने खेत को बहने से बचाना चाहता था। किन्तु उसे सफलता न होती थी। उसने एक ब्राह्मण पंडित से सलाह ली। ब्राह्मण देवता ने मनुष्य बलिदान की राय दी। फिर क्या था। उस अहीर ने उस कुर्मी के लड़के को मार कर उसी बांध के नीचे गाड़ दिया। जब लड़की को पता चला तो वह रोती हुई उस स्थान पर पहुँची और अपनी पवित्रता का परिचय देते हुए ईश्वर से प्रार्थना की कि ईश्वर मुझे उस लड़के के दर्शन दो। परमात्मा ने उसकी प्रार्थना सुन ली और उसी समय वह धारा इतनी प्रबल हुई कि बाँध टूट गया और मृतक शरीर खुल गया। वह मृतक शरीर और जीवित बालिका दोनों उसी प्रवाह में बह गये। वह लड़का पन्ना राज्य के शाहनगर का निवासी था तब से आज तक जब कोई बोट पहले पहल नदी में उतारा जाता है तो उतारने के पहले मल्लाह को नदी में महावर चढ़ानी पड़ती है।

केन नदी बड़े वेग के साथ बहती है। रानेह स्थान पर नदी ७५ फीट की ऊँचाई से गिरती है। वर्षा ऋतु में इस नदी के बहाव का शब्द कई मील तक सुनाई देता है।

जलवायु और वर्षा—

यहाँ की जलवायु गर्म है। गर्मियों में यहाँ लू चलती है। यहाँ की सालाना वर्षा ४६ इंच है।

पैदावार—

लगभग १,५०,७०० एकड़ भूमि में खेती होती है। यह कुल राज्य का २१ फी सदी है। मार, कावर, परुआ, राकड़, में चार प्रकार की भूमि पाई जाती है। कोदों, ज्वार, बाजरा, मकई, धान, मूँग, तिल आदि अगहनी पैदावार होती है। गेहूँ, चना, जौ, आदि मुख्य रबी फसल होती है।

ईख, गन्ना और पौंढ़ा भी उगाए जाते हैं। राज्य में कुल ७५ एकड़ भूमि में ईख बोई जाती है।

जन-संख्या और भाषा—

इस राज्य की जन-संख्या लगभग १,६१,२७० है। छतरपुर नगर में दस हजार से अधिक आबादी है। बाक़ी ४२१ गाँव हैं जहाँ ५०० से ५,००० तक आबादी है। राज्य में ९५ प्रतिशत हिन्दू हैं शेष ५ प्रतिशत में मुसलमान, जैन और दूसरी जातियाँ हैं। बनाफ़री और हिन्दी दो मुख्य भाषाएँ इस राज्य में प्रचलित हैं।

व्यवसाय—

(१) खेती—इस पर ३८,२०७ मनुष्य अर्थात् कुल राज्य की जन संख्या के २१ प्रतिशत का गुज़ारा होता है। १६,८०० लोग मजदूरी करके पेट पालते हैं। ७,१०० लकड़ी का कार्य्य करते हैं। ३,५६० मनुष्य कपड़ा कातते बुनते हैं। ४००० व्यक्ति जूते बनाते हैं। ३००० व्यक्ति जानवर पाल कर अपना जीवन चलाते हैं। २,५०० मनुष्य बांस की टोकरियाँ आदि बना कर निर्वाह करते हैं। इसके अलावा और भी छोटे मोटे कार्य्य हैं जिनमें लोग लगे हुए हैं।

संक्षिप्त इतिहास

इस राज्य का पुराना इतिहास, ओरछा और पन्ना राज्य का इतिहास है।

सोनशाह (१७८५-१८१६)—

कुँवर सोनशाह पँवार ने अठारहवीं सदी के अन्त में इस राज्य की नींव डाली। हिन्दूपत के मरने पर उसके पुत्र पन्ना महाराज सरनतसिंह को विवश होकर १७७६ में राज्य छोड़ कर भागना पड़ा। ये छतरपुर के समीप राजनगर में रहने लगे। सरनतसिंह के मरने पर उनके नाबालिग़ पुत्र हीरासिंह के पालन-पोषण और देख भाल का भार सोनशाह पँवार पर पड़ा जो राज्य की सेना के एक अफ़सर थे। सोनशाह ने हीरासिंह के लड़कपन से लाभ उठाया और जागीर पर १७८५ ई० में अपना अधिकार जमा लिया। जब मरहठों का हमला हुआ तो इसने अपनी जागीर और भी बढ़ाई।

१७८२ और १७८६ में दो सनदें मिलीं जिससे पता चलता है कि इन्हीं दो सालों के बीच सोनशाह ने जागीर पर अधिकार जमाया होगा।

१८१२ में सोनशाह ने अपने राज्य का बटवारा अपने ५ पुत्रों के बीच किया। प्रतापसिंह, पृथ्वीसिंह, हिन्दूपत और बख्तसिंह चार सगे भाई थे और पांचवां हीरासिंह रखेली का पुत्र था।

कुछ दिनों बाद छोटे भाइयों के बहकाने पर फिर बटवारा किया गया जिसमें बड़े पुत्र प्रताप की जागीर बहुत कम कर दी गई। ब्रिटिश सरकार ने बटवारे को न माना इसलिये कि अव्वल यह प्रताप के लिये बड़ा अन्याय था दूसरे बुन्देलखण्ड की इससे बदनामी थी कि बड़ा पुत्र राज्य का अधिक भाग न पावे। इसलिये यह बात अंग्रेज़ सरकार ने तै की कि दूसरे पुत्रों के मरने पर उनकी जायदाद प्रताप को ही दे दी जायगी।

४ मई सन् १८१६ को सोनशाह की मृत्यु हो गई। सोनशाह ने अयोध्या में एक मन्दिर, वृन्दावन में टट्टी नामक कुञ्ज, चित्रकूट में रामचन्द्रजी का मन्दिर और राजनगर में धनुषधारी मन्दिर बनवाया।

प्रतापसिंह (१८१६-५४)—

प्रतापसिंह ३२ साल की अवस्था में गद्दी पर बैठे। सनद के अनुसार १५ जुलाई सन् १८१६ ई० को १८२ गाँव प्रताप को मिले जिनसे ६·६ लाख की आय थी। भाइयों के पास ८७,६०० रुपये के १७८ गाँव थे। भाइयों के मरने पर वह भी प्रताप को मिले।

१८२७ ई० में प्रतापसिंह को राजा बहादुर की पदवी प्रदान की गई। प्रतापसिंह बड़ा ही चतुर राजा था। मरते समय इसने राज्य को बड़ी अच्छी दशा में छोड़ा। १८३२ ई० में राजा किशोरसिंह पन्ना ने अंग्रेज़ सरकार से आज्ञा लेकर अपने राज-काज का भार भी प्रताप को सौंप दिया। १८४३ ई० में अंग्रेज़ सरकार ने कण्टोन्मेन्ट के लिये १६०० रु० सालाना पर राजा प्रताप से भूमि ली।

१८५२ में जगतराज को प्रताप ने गोद लेना चाहा; किन्तु कोर्ट आफ़ डाइरेक्टर्स ने नामंजूर किया। १८ मई १८५४ को राजा की मृत्यु हो गई।

जगतराज (१८५४-६७)—

इस समय जगतराज की अवस्था केवल ८ साल की थी। इसलिये राज-काज का भार प्रतापसिंह की दूसरी रानी को सौंपा गया। १८५७ में रानी ने नौ गाँव के भागे हुये लोगों को शरण दी और दीवान देशपत को मिला कर अपने राज्य में शान्ति स्थापित किये रही। देशपत एक बागी सरदार था। उसके मारने के लिये इनाम था। १८६३ में रानी को हटाकर अंग्रेज अफसर ई० टामसन रक्खे गये। इसी बीच देशपत मारा गया और उसके मारनेवालों को डोनी और महटोल के गांव इनाम में मिले। १८६७ में जगत राज को राज्य सौंप दिया गया। किन्तु उसकी

मृत्यु होगई। उसके केवल एक पुत्र विश्वनाथ सिंह चौदह महीने का था।

विश्वनाथ सिंह (११६७)—

१६ अगस्त सन् १८६६ ई० को विश्वनाथ सिंह पैदा हुए। विश्वनाथ की राजगद्दी के समय दीवान टिटानिया साहब गोरे मन्त्री थे। इनके पिता चरखारी राज्य के मन्त्री थे। पिता के मरने पर टिटानिया साहब ने स्तीफ़ा दे दिया और पिता के स्थान पर चले गए। परमेश्वरीदास टिटानिया के बाद मन्त्री बने। इनके बाद धनपतराय चौबे मन्त्री हुए।

चौबे जी के समय में कई सुधार हुए। १८७४ ई० में अँग्रेज़ सरकार ने नौगांव कन्टोन्मेण्ट ले लिया और पोलिटिकल एजेण्ट और राजकुमार के रहने को स्थान बनवाया। १२ मई सन् १८७६ को चौबे जी की मृत्यु हो गई। १८७७ में रानी और विश्वनाथ सिंह दोनों दिल्ली असेम्बुल्ज़ में गए।

इस समय राज्य की आर्थिक दशा बड़ी बुरी थी, नौकरों की नौकरी पड़ी थी। दैनिक आवश्यकताओं के पूरा करने में बड़ी कठिनाई उठानी पड़ती थी। इसलिये अँग्रेज़ सरकार ने मुन्शी चन्डी प्रसाद को सुपरिन्टेन्डेण्ट बनाया। मुन्शी चन्डीप्रसाद ने बड़ी चतुरता से कार्य किया। बहुत से सुधार किए। पाठशालाएँ व औषधालय खोले गए। इतनी चतुरता से कार्य्य हुआ कि १८८३ तक ७ लाख की बचत हुई।

१८८४ में राजनगर के महल की तलाशी हुई और भूमि खोदने पर वहाँ ७,४८,२२५ रु० प्रतापसिंह के समय के मिले, साथ ही ४० मोहरें भी मिलीं।

१८८४ में बालक राजा का ब्याह महाराज ओरछा की पुत्री से हुआ। १८८७ में राजा के हाथ राजकाज सौंप दिया गया। इस समय एफ़० ए० विल्सन ने एक दर्बार भी किया।

इसी बीच पाँच साल तक डकैती का बड़ा ज़ोर रहा। १८६४ में राजा को ख़ास ख़ास अधिकार अँग्रेज सरकार ने फ़ौजदारी मामलों में दिये।

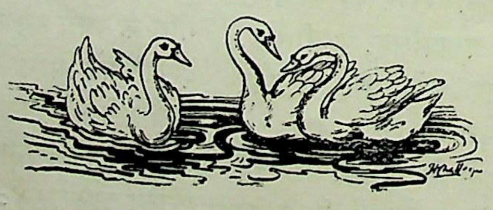
१८६६-६७ में घोर अकाल पड़ा। राजा ने प्रजा की जीवन-रक्षा के लिये बड़े-बड़े उपाय किये। नहर तालाब, सड़कें बनवाई गई।

१८६७ में राजा को "महाराजा" की पदवी मिली। राजा के नाम ११ तोपों की सलामी दगाई जाती है। राजा दीवान की सहायता से सारा राजकाज देखता है।

छतरपुर, राजनगर, लारी, देवरा राज इन चार परगनों में विभाजित है। प्रत्येक परगना एक तहसीलदार के हाथ में है।

राजा की सहायता के लिये २२ सवार ६७ पैदल २७ तोपें और २६ तोप चलाने वाले सिपाही हैं। राज्य में १०० पुलीस सिपाही और २८५ चौकीदार हैं।

राज्य की सालाना आय ६,३२,००० रु० है। वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस महाराजा भवानीसिंह बहादुर (पँवार राजपूत) हैं। आप चैम्बर ऑफ प्रिन्सेज़ के मेम्बर हैं।



बिजावर

बिजावर सनदवाले राज्यों में से है। यह बुन्देलखण्ड में है। २४°१६ उत्तरी अक्षांश से २५°१' उत्तरी अक्षांश तक तथा ७६° और ७६°५७' पूर्वी देशान्तरों के बीच फैला हुआ है।

नामकरण—

विजयसिंह नामी गोंड ने बिजावर नगर की बुनियाद डाली। उसी के नाम पर इस राज्य का नाम बिजावर पड़ा।

सीमा तथा क्षेत्रफल—

इस राज्य का क्षेत्रफल ९७३ वर्ग मील है। इसके उत्तर में छतरपुर, चरखारी और ओरछा राज्य, दक्षिण में चरखारी, पन्ना और सागर जिला, पूर्व में छतरपुर और पश्चिम में ओरछा, पन्ना और सागर का ज़िला है।

प्राकृतिक विभाग—

यह राज्य सेन्ट्रल इण्डिया के निचले प्रदेश में स्थित है। इसका मध्यवर्ती भाग इधर-उधर पहाड़ियों से कट गया है। पहाड़ियाँ १६०० फ़ीट से अधिक ऊँची नहीं हैं। ये पहाड़ियाँ घने जंगलों से परिपूरित हैं। सब से ऊँची पहाड़ी चन्दलाख की है जो १७९६ फ़ीट ऊँची है। यह बिजावर नगर के समीप ही है। करैय्या तहसील की भूमि अच्छी, सम और उपजाऊ है।

नदियां तथा झीलें—

केन, सुनार, बैरमा, मीरहसन, धसान, बेला, कथल आदि इस राज्य की नदियाँ हैं। गोरा, भगवान, रगौली, पथरकुवान, भरतपुरा, कसार आदि बड़े-बड़े ताल हैं जहाँ साल भर बराबर पानी भरा रहता है।

जलवायु तथा वर्षा—

३७ इञ्च सालाना वर्षा होती है। यहाँ की जलवायु गर्म है, केवल पहाड़ियों पर गर्मियों में अधिक गर्मी तथा जाड़ों में कड़ाके का जाड़ा पड़ता है।

जन-संख्या तथा भाषा—

इस राज्य की जन-संख्या लगभग १,१५,८५२ है। राज्य में केवल बिजावर नगर की जन-संख्या ५ हज़ार से अधिक है। बाक़ी ३४३ गाँव हैं जिनकी जन-संख्या ५०० से १००० तक है। राज्य में ९६ प्रति सैकड़ा हिन्दू शेष ४ प्रतिशत में जैन, मुसलमान और दूसरी जातियाँ हैं।

व्यवसाय—

मुख्य व्यवसाय खेती है। १,३६,७०० एकड़ भूमि में खेती होती है। जिसमें १५,००० एकड़ में सिंचाई होती है। रबी व खरीफ़ दो फसलें तैयार की जाती हैं। यहाँ बिजावर व करैला तहसीलों में पान की खेती होती है। राज्य के अन्दर लगभग २,७४,६०० एकड़ जंगल हैं। जंगल की लकड़ियाँ काटी व बेची जाती हैं। सिमेर, झंड और धनौज आदि गाँवों में हीरा निकाला जाता है। लोहा और चूना की भी खोदाई होती है

घी, लाख, चिरौंजी, तिल, महुआ और जंगल से प्राप्त वस्तुएँ बाहर भेजी जाती हैं। मिट्टी का तेल, तम्बाकू, चावल, चीनी, नमक, कपड़ा आदि बाहर से आते हैं।

संक्षिप्त इतिहास—

१७३२ ई० में महाराज छत्रसाल ने जब अपना राज्य बाँटा तो जैतपुर, बाँदा, अजयगढ़ और चरखारी जगतराज को मिले। जगतराज के तीन पुत्र थे। दूसरे पुत्र पहाड़सिंह ने गुमानसिंह को निकाल कर स्वयं राज्य पर अपना अधिकार जमाया। तीसरा पुत्र दीवान वीरसिंह देव था। जब पहाड़सिंह व गुमानसिंह में लड़ाई हुई तो वीरसिंह देव ने पहाड़सिंह का साथ दिया। किन्तु कुछ समय पश्चात् पहाड़-सिंह को वीरसिंह देव के ऊपर शंका हुई। माँ ने जब तख़्ता पलटता देखा तो वीरसिंह देव और अपने दामाद नरादसिंह पँवार को लेकर बिन्द्रावन चली गई। वहाँ जाकर एक मन्दिर बनवाया जो अब भी राज्य की सहायता से चलता है। यहाँ रानी की मृत्यु हो गई। तब वीरसिंह देव ने अपनी अवस्था फिर सुधारनी चाही।

इसी बीच पहाड़ सिंह की मृत्यु हो गई। मरने के पहले पहाड़ सिंह ने बांदा और अजमयगढ़ गुमानसिंह को और चरखारी खुमानसिंह को दिया।

वीरसिंह (१७६६-६३)—

गुमानसिंह को वीरसिंह देव पर दया आई इसलिये बुलाकर राज्य में नौकरी दे दी और ८०००० मूल्य की जायदाद भी मताएड परगने की दी। वीरसिंह ने अपनी जायदाद को और बढ़ाना चाहा इसलिये गुमान सिंह ने और अधिक दूरी पर मताएड परगने की जगह १७६८ में बिजावर का परगना दे दिया। थोड़े ही समय में वीरसिंह ने अपने राज्य को बढ़ा लिया। इस कार्य में उसे उसके सेनापति बेनी बहादुर ने बड़ी सहायता दी।

जब गोसाई अलीबहादुर और हिम्मतबहादुर ने बुन्देलखन्ड पर आक्रमण किया तो वीर सिंह ने उन्हें रोकना चाहा, किन्तु हार हुई।

केसरीसिंह (१७६३-१८१०)—

धोरेवाल सिंह अपने पिता वीरसिंह देव से पहले ही मर चुका था। इसलिये हिम्मत बहादुर ने अलीबहादुर को सलाह दी कि एक सनद लिख कर केसरीसिंह को उसके पिता की जायदाद दे दी जाय जिससे वह नवाब के अधीन बना रहे। यह सनद पाँचवीं अक्टूबर सन् १८०२ ई० को लिखी गई।

जब अँग्रेज शक्ति में आए तो केसरीसिंह ने अँग्रेजों से सनद लेने व दोस्ती करने की अपील की। इसी समय कुछ गाँवों के विषय में चरखारी और छतरपुर राज्यों से झगड़ा था इसलिये सनद न मिल सकी। अंत में लक्ष्मण डोवा द्वारा यह झगड़ा मिटाया गया। १८१० में केसरी सिंह की मृत्यु हो गई।

रतनसिंह (१८१०-३२)—

केसरी के तीन पुत्र रतन, खेत और शत्रुजीत थे। बड़े पुत्र रतन सिंह गद्दी पर बैठे। अब गाँवों के बारे में निपटारा हो गया था इसलिये १८११ में अँग्रेज सरकार ने सनद मंजूर कर दी।

सनद द्वारा राजा को राज्य का पूरा अधिकारी अङ्गरेज सरकार ने माना और राज्य की प्रजा को कहा कि वे राजा को ही माने। राजा व राजा के वंशज को सनद द्वारा राज्य पर पूरा अधिकार मिला। रतनसिंह के समय में राज्य-शासन उसका भाई खेतसिंह करता था।

१८३२ में रतनसिंह की मृत्यु हो गई। गद्दी के लिये वंश के अन्दर झगड़ा हो गया जिस में राजा के बहुत से वंश वाले मारे गये।

लक्ष्मण सिंह (१८३२-४७)—

भारत सरकार ने लक्ष्मण सिंह, खेत सिंह के पुत्र को राजा स्वीकार किया। १८४७ में उसकी भी मृत्यु हो गई। उस समय उसका पुत्र भानप्रतापसिंह पाँच साल का था। राज-काज खेतसिंह की स्त्री करती थी! यद्यपि रानी एक पर्दानशीन रमणी थी तो भी विप्लव काल में उसने अच्छी शान्ति राज्य में रक्खी। गदर के समय में ही रानी को राजा के लिए खिलअत मिली और ग्यारह तोपों की सलामी का हुक्म हुआ। १८६२ में गोद लेने की सनद दी गई। १८६६ में महाराना की पदवी मिली। राज्य की आर्थिक दशा बिगड़ जाने के कारण राज्य १८६७ ई० में भारत सरकार में मिला लिया गया।

सावन्तसिंह (१८६६-)—

भानसिंह के पुत्र न था इसलिए ओरछा राज्य के राजा के पुत्र राव राजा सावन्तसिंह को गोद लिया। १८६६ में भानसिंह की मृत्यु हुई। १६०३ में राजा शासन करने की आज्ञा दी गई। १६०५ ई० में राजा शाहज़ादा और शाहज़ादी के शुभागमन के समय इन्दौर पहुँचे। राजा दीवान की सहायता से शासन करता है।

राजा की सहायता के लिये २४ सवार और ८० पैदल सिपाही और ६ तोपची हैं। ८४ पुलिस व १८८ चौकीदार हैं।

राज्य चार तहसीलों में विभाजित है। विजावर, गूलगंज, रगौली और करैया की तहसीलें हैं। प्रत्येक तहसील एक तहसीलदार के अधीन है। एक नायब तहसीलदार भी सहायता को रहता है।

आय-व्यय—

राज्य की सालाना आय ३,२४,००० रुपया है।

वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस महाराजा सवाय सर सावन्तसिंह बहादुर के० सी० आई० ई० (बुन्देला) हैं। आपको ११ तोपों की सलामी लगती है और आप चैम्बर आफ़ प्रिन्सेज के मेम्बर हैं।

अजयगढ़

स्थिति तथा क्षेत्रफल—

अजयगढ़ राज्य के दो भागों में विभाजित है। एक भाग मुख्य नगर के चारों ओर का है और दूसरा नगर के दक्षिण मइहर के समीप का है। और दूसरे अथवा दक्षिणी भाग का क्षेत्रफल ५१३ वर्गमील है तथा कुल दोनों राज्य का क्षेत्रफल ८०२ वर्गमील है।

नामकरण—

इस राज के नाम पड़ने के दो कारण बताए जाते हैं। यहां एक क़िला था जिसका नाम "जय दुर्ग या जयपुर दुर्ग" था उसी से बिगड़ कर अजय गढ़ हुआ। "जयदुर्ग या जयपुर दुर्ग" नाम क़िले की दीवार पर खुदा है।

दूसरी कहानी यह है कि यहां केदार पर्वत पर अजय-पाल नामक साधु वास करते थे। वे आश्चर्य-जनक और अद्भुत कृपाओं के लिये प्रसिद्ध थे। अजयपाल, अजमेर के तारासिंह के भाई थे जिन्होंने तारागढ़ का क़िला बनवाया था। अजयपाल एक बड़े जादूगर थे। एक बार ख्वाजा माताउद्दीन अजमेर आए और अजयपाल से उनका जादूगरी में मुक़ाबिला हुआ। इसमें मुसलमान जादूगर की हार हुई। इस पर तारासिंह ख्वाजा को लज्जित करने पर अपने भाई से अप्रसन्न होगया। इस लिये अजयपाल क़िले में जाकर ऋषियों की भांति वास करने लगे। उन्हीं साधु के नाम पर इसका अजयगढ़ नाम पड़ा।

सीमा—

इस राज के उत्तर में बांदा ज़िला, दक्षिण में दमोह और जबलपुर के ज़िले, पूर्व में पन्ना व रीवा राज्य और पश्चिम में चरखारी और छतरपुर राज्य हैं। इस राज्य के दोनों भागों के बीच पन्ना राज्य का एक भाग है।

प्राकृतिक विभाग—

लगभग सारा राज्य पन्ना श्रेणी में स्थित है। और बनों से घिरा है। बर्षा और शीतकाल में यह प्रदेश बड़ा ही रमणीक हो जाता है। इसकी पहाड़ियाँ टीक और तेन्दू के वृक्षों से हरी भरी रहती हैं। घाटियों में छोटे वृक्ष तथा झाड़झंकाड़ होते हैं। इनके बीच सैकड़ों नदी नाले हैं। जिधर जाइये उधर ही घाटियाँ और पहाड़ियाँ दिखाई पड़ती हैं। विन्ध्याचल की तलहटी और विन्ध्याचल की बालाय खारी यह दो मुख्य प्राकृतिक भाग हैं। विन्ध्याचल की बालाय खारी के फिर दो भाग हैं (१) कुतर मालवा (२) अन्तर पठार। अन्तर पठार में हीरा पाया जाता है। अधिक बराबर तलहटियों में खेती होती है।

पहाड़ियाँ और नदियाँ—

पहाड़ियाँ १७०० से १८०० फ़ीट तक ऊँची हैं। इन पहाड़ियों में कुछ प्रसिद्ध भी हैं जिनके ऊपर दुर्ग बने हैं। इनमें अजयगढ़, बजरंगगढ़, देवपहाड़ और मुर्जा मुख्य हैं। केन और वैर्मा दो मुख्य नदियाँ हैं। इनके सिवा और भी बहुत से नदी नाले हैं।

जलवायु तथा वर्षा—

गर्मियों में अधिक गर्म और जाड़े में अधिक ठंड रहती है। वर्षा साल में लगभग ५० इंच होती है।

जनसंख्या—

कुल राज्य में ४८८ गाँव हैं जिनमें अजय गढ़ सबसे बड़ा है जिसकी जनसंख्या लगभग ५ हज़ार है।

व्यवसाय—

मुख्य व्यवसाय खेती है। लगभग ४०७ वर्ग मील में खेती होती है। इसमें से केवल ६,४०० एकड़

ज़मीन में सिंचाई होती है। लगभग १४४ वर्ग मील घने जंगल हैं। १४१ वर्ग मील भूमि ऐसी है जो खेती करने योग्य है। ७५ वर्ग मील भूमि बेकार है। दो फ़सलें खरीफ़ या सिपारी और रबी या अनहारी उगाई जाती हैं। खरीफ में धान, ज्वार, तिल, उर्द और कोदों पैदा होती है। रबी में गेहूँ, जौ, चना आदि पैदा किए जाते हैं। ईख की भी थोड़ी खेती होती है।

विन्ध्याचल की श्रेणी में हीरा निकाला जाता है। यह हीरा पृथ्वी में गहरे गड्ढे खोदने पर मिलता है। यह पत्थर मठ भूमि में पाया जाता है। सालाना इसकी खुदाई का राज्य की ओर से ठीका होता है। यहाँ के निवासी गर्मियों में गज़ी गाढ़े के कपड़े बुनते हैं और जाड़े में कम्बल बनाते हैं।

गेहूँ, चावल, महुवा, हर्रा, चिरौंजी, लाख, गोंद, मोम, शहद, रुई, तेलहन इत्यादि वस्तुएँ लगभग १७ लाख के बाहर भेजी जाती हैं। और नमक, चीनी, गुड़, मिट्टी का तेल, कपड़ा और दूसरी बनी हुई वस्तुएं लगभग २५ लाख की बाहर से मंगाई जाती हैं।

राज्य का संक्षिप्त इतिहास—

अजय गढ़ के राजे पन्ना महाराज छत्रसाल के वंश के हैं। जब महाराज पन्ना ने अपने राज्य को विभाजित किया तो अपने दूसरे पुत्र जगतराज को ३३ लाख की रियासत दी जिसकी राजधानी जैतपुर थी। इसमें बाँदा और अजयगढ़ के ज़िले सम्मिलित थे। जगतराज ने गुमानसिंह को अपना उत्तराधिकारी बनाया।

पहाड़सिंह—

गुमानसिंह अभी लड़का ही था इसलिये उसके चचा ने गद्दी छीन ली। गुमान के भाई खुमान ने ज़ोर मारा और पहाड़ से लड़ाई हुई, किन्तु कोई लाभ न हुआ। १७६१ में पहाड़सिंह बीमार पड़ा। उसने खुमानसिंह और गुमानसिंह दोनों को काला पहाड़ पर मिलने के लिये बुलाया। और गुमानसिंह को बाँदा व अजयगढ़ दिया, खुमान को चरखारी का राज्य दिया।

गुमानसिंह (१७६१-९२)—

१७६३ ई० में शुजाउद्दौला की सेना ने गुमान के राज्य पर हमला किया। पन्ना के राजा सहायता को बुलाए गए। सभों ने मिलकर बैरियों को मार भगाया। फिर १७८९-९० में हिम्मत बहादुर और अलीबहादुर ने बुन्देल खण्ड की लूट खसोट शुरू की।

बख़्तसिंह (१७९२-१८३७)—

गुमान सिंह १७९२ में मरा। उसके बाद उसका भतीजा बख़्तसिंह गद्दी पर बैठा, किन्तु अलीबहादुर ने उसे निकाल बाहर किया। १८०३ ई० में बुन्देलखण्ड अंग्रेज़ों के हाथ आया तो बख़्तसिंह ने अपना मसला छेड़ा। अंग्रेज़ों ने ३०,००० रु० सालाना की पेंशन मंज़ूर की। १८०७ में कोटरा और पवाम परगनों की सनद अंग्रेज़ों ने बख़्श दी और १८०८ में पेन्शेन बन्द कर दी गई। लक्ष्मण दोवा के ठीक-ठीक न चलने पर उसको १८०९ में अंग्रेज़ों ने निकाल दिया और उसका राज्य भी बख़्तसिंह को दे दिया। अजयगढ़ का क़िला भी इस समय बख़्तसिंह के हाथ आया। यही अजयगढ़ बाद को राज्य की राजधानी बना।

१८१८ में राजा को एक दूसरी सनद दी गई जिसमें कोट, पवाय और अजयगढ़ के परगनों के राजाओं की पूरी तौर से जाँच करके राजा को दिए गए और तय किया गया कि जब तक राजा या उसके वंशज अंग्रेज़ सरकार के साथी रहेंगे तब तक न तो उनसे कुछ मालगुज़ारी ली जावेगी और न उनके राज्य का भाग ही लिया जावेगा।

१८३७ में बख़्तसिंह के मरने पर माधोसिंह राजा हुआ। वह भी १८४९ में मर गया।

महीपति सिंह (१८४९-५३)—

माधो के बाद महीपत सिंह राजा हुआ। १८५३ में उनका देहान्त हुआ तो उनका पुत्र विजय सिंह राजा हुआ, किन्तु दो साल बाद वह भी इस दुनिया से चल बसा।

इस समय कोई भी वंश वाला गद्दी का हक़दार न रह गया था इस लिये यह प्रश्न बोर्ड ऑफ डाईरेक्टर्स के पास भेजा गया। इसी समय देश में

बलवा हो गया। १८५७ में बलवा के आरम्भ होते ही विधवा रानी ने मिस्टर चेस्टर बाँदा के कलक्टर की सहायता के लिये बन्दूकें, २०० दियासलाई लगाने वाले और कुछ घुड़सवार भेजे।

रणजोरसिंह (१८५८)

विजयसिंह के दोगले पुत्र रणजोरसिंह गद्दी पर बैठाये गये। १८७७ में रानी की सहायता का ध्यान रखते हुये गोद लेने की सनद राजा को अंग्रेज़ों से मिली। राजा दिल्ली असेम्बुलेज़ गये। वहाँ उन्हें सवाई की पदवी मिली। महाराज बड़े बुद्धिमान् और विद्वान् हैं। राजा ने बहुत सी पुस्तकें "ग़दर, चीते का शिकार" आदि लिखी हैं। १८८७ में राजा को डायमुल हब्स और फाँसी के मामलात में भी अख़्तियार दिया गया। १८९७ में राजा को के० सी० आई० ई० की उपाधि मिली।

राजा के तीन पुत्र हैं। सबसे बड़े पुत्र राजा बहादुर भूपालसिंह १८६६ में पैदा हुये।

शासन विभाग—

राज्य ५ तहसीलों में बँटा है। राजधानी व मुख्य दफ़्तर अजयगढ़ में है। अजयगढ़, बगल, बरवारा, गंज और महेवा ये पाँचों तहसीलें हैं।

राजा, दीवान, नम्बरदार और पंचायतों द्वारा शासन करता है। राजा के पास ७५ सवार, ३५० पैदल और ४४ बन्दूक़ चलाने वाले हैं। ९ बन्दूक़ें हैं, ७० पुलिस व २११ चौकीदार हैं।

आय-व्यय—

राज्य की आय ३,६४,००० रु० है।

यहाँ के वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस महाराजा सवाई भूपालसिंह बहादुर (बुन्देला) हैं। आपको ११ तोपों की सलामी लगती है। आप चेम्बर आफ़ प्रिंसेज़ के मेम्बर हैं।



पन्ना राज्य

स्थिति और सीमा—

पन्ना राज्य सेन्ट्रल इण्डिया एजेन्सी में बुन्देलखण्ड का एक राज्य है। यह राज्य २३·५०' से २५'२' उत्तरी अक्षांशों और ७६'४५' से ८०'४२' पूर्वी देशान्तरों के बीच स्थित है।

इस राज्य के उत्तर में बांदा ज़िला, अजयगढ़ और भसौंदा के राज्य हैं। पूर्व में कोठी, नागोद और अजयगढ़ हैं। दक्षिण में जबलपुर और दमोह के ज़िले हैं और पश्चिम में छतरपुर, चरखारी, विजावर और अलीपुर हैं। मलहरा की तहसील के तीन ओर सी० पी० का प्रान्त और उत्तर की ओर विजावर राज्य है। सोहावल और कोठी के बीच वीरसिंहपुर है।

क्षेत्रफल—

इस राज्य का क्षेत्रफल २,५९६ वर्गमील है।

प्राकृतिक विभाग—

दो मुख्य भाग हैं (१) पन्ना श्रेणी के इधर उधर का पहाड़ी प्रदेश (२) केन और उसकी सहायक नदियों का समतल मैदान। प्रथम भाग की भूमि पहाड़ी है और घने बनों से ढकी है। दूसरा भाग जिसे हवेली की घाटी कहते हैं। यहाँ की भूमि कछारी और उपजाऊ है। पहाड़ी प्रदेश के दृश्य और खास कर केन की घाटी के किनारे किनारे के दृश्य बड़े ही सुन्दर हैं।

पहाड़ियाँ—

पन्ना श्रेणी ही मुख्य पहाड़ी प्रदेश है, जो दक्षिण-पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर फैली हुई है। मदारतुङ्ग की पहाड़ी १५५७ फीट ऊँची है। इस पहाड़ी में एक पीर की मज़ार है, जहाँ मुसलमान यात्री आते हैं। भन्डर पहाड़ में जाटपुर का क़िला है। नैनागिर की पहाड़ी में जैन मन्दिर हैं।

नदियाँ—

केन, धसान और टोंस मुख्य मुख्य नदियाँ हैं। बाघिन, असरावल, सितावल, पटानी और बरमे यहाँ की दूसरी नदियाँ हैं। धरम सागर एक बड़ा ताल है। इसके सिवा और भी छोटे छोटे ताल हैं।

जलवायु और वर्षा—

ग्रीष्म ऋतु में गर्मी अधिकता से पड़ती है और शीतकाल में कड़ाके का जाड़ा पड़ता है। वर्षा ५२ इंच सालाना होती है।

खनिज पदार्थ—

हीरा, मकान बनाने के पत्थर, लोहा और चूना पाया जाता है।

वन और जानवर—

अचार, अमिलतास, बेरी, आँवला, बकायन, बहेड़ा, बाँस, छिउल, करौंदा, मौलसली, सागौन, शीशम, घोट, तेन्दू, धौं, साज आदि के बन हैं।

पहले यहाँ हाथी पाए जाते थे। और यहाँ के हाथी बहुत प्रसिद्ध थे, किन्तु अब नहीं पाए जाते। शेर, चीता, तेंदुवा, काले हिरन, मृगा, रीछ, भेड़िया आदि जंगली जानवर पाए जाते हैं।

जनसंख्या और भाषा—

यहाँ की जनसंख्या २,१२,१३० है। कुल गाँव और टाउन मिलाकर राज्य में १००९ हैं। ९३५ गाँवों की जन संख्या ५०० से कम है। ५२ गाँवों की संख्या ५०० से १००० तक है, १८ की संख्या १००० से २००० तक की है। ३ नगरों की संख्या पाँच हज़ार से अधिक है। यहां की भाषा बुन्देलखण्डी हिन्दी है।

भूमि—

मार, कावर, पडुवा, राकड़ भूमि है जो हार वा जँवार दो भागों में विभाजित है।

हीरा—

पन्ना के समीपवर्ती प्रदेश में हीरा मिलता है। जहां कहीं हरे पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े मिलते हैं वहीं इस हीरे की स्थिति समझी जाती है। पहले तो

राजा को इससे बड़ी आय थी। १७५० ई० में राजा को चार लाख की आय हुई, किन्तु अब लगभग ६ या सात हज़ार सालाना की आय है। जो हीरे ६ रत्ती से अधिक होते हैं वह राज्य के समझे जाते हैं। पानेवाले को केवल चौथाई मिलता है। किन्तु ६ रत्ती से कमवाले हीरों में पाने वाले को तीन चौथाई मिलता है और राज्य को एक चौथाई मिलता है। प्रत्येक महीने इसका नीलाम होता है।

इतिहास

चम्पतराय उदय सिंह या उदय जीत के वंशज थे। उदय जीत राजा रुद्र प्रताप महाराज ओरछा के तीसरे पुत्र थे। पिता की मृत्यु के पश्चात् महेवा की जागीर उदयजीत को मिली। उदयजीत के पुत्र प्रेमचन्द हुए। प्रेम से कुँअरसेन, कुँअरसेन से मानसिंह और भगवन्त राय हुए। भगवन्त राय से कुलनन्दन, कुलनन्दन के चार पुत्र हुए जिनमें चम्पतराय सब से छोटे थे।

चम्पतराय ने अपने साथियों को इकट्ठा करके मार-काट आरम्भ कर दिया। इन लोगों ने मुग़ल अफ़सरों और सेनाओं को भी परेशान किया। ये लोग किसानों को खेतों और गाँवों से निकाल बाहर करते थे। १६३६ में खान दौरान बहादुर नसरत जंग, अब्दुल्ला खाँ, फीरोज़ जंग को साथ लेकर चम्पत राय के मुकाबले के लिये चला, किन्तु उसका परिश्रम बेकार हुआ। चम्पतराय ने शाह की सेनाओं को हराया और अपने कब्ज़े में कई गाँव कर लिये। १६३९ में जब पृथ्वीराज पकड़ा गया तो चम्पतराय और उसके पुत्र बचकर निकल गए। उसके बाद बाँकी खाँ भेजा गया। यद्यपि उसने धोका देकर सालिवाहन को मारना चाहा। किन्तु निष्फल हुआ। इसी समय ज्येष्ठ सुदी तीज सम्बत् १७०७ को महाराज छत्रसाल का जन्म हुआ।

चम्पतराय ने अब और अधिक बल के साथ अपना कार्य्य आरम्भ किया। और मालवा, सिरोंज को जीत लिया। उज्जैन के सूबेदार ने मुक़ाबिला करना चाहा किन्तु निष्फल हुआ। इस प्रकार चम्बल से टोंस तक चम्पतराय का राज्य बढ़ गया। अन्त काल शाहजहाँ ने पहाड़सिंह बुन्देला को ओरछा की गद्दी पर बैठा दिया जिससे कठिनाइयों का अन्त हो जाय। पहाड़सिंह ने चम्पतराय को शाहजहाँ से मिला दिया और शाह ने खुशी खुशी मित्रता कर ली और कुम्हार गढ़ का क़िला दे दिया। किन्तु फिर भी चम्पतराय ने अपना कार्य्य न बन्द किया। इसलिये शाहजहाँ ने उसे किसी प्रकार रास्ते से हटाना चाहा। चम्पतराय को विष देने का भी यत्न किया गया, किन्तु निष्फल हुआ।

जब शाहजहाँ के पुत्रों में गद्दी के लिये झगड़ा होने लगा तो चम्पतराय ने औरङ्गज़ेब की सहायता की। औरङ्गज़ेब स्वयं चम्पतराय की सहायता चाहता था क्योंकि दारा चम्बल के उत्तरी किनारे पर दृढ़ता के साथ अपनी सेना सहित जमा था। औरङ्गज़ेब ने चम्पतराय की सहायता से उसके राज्य से होकर नदी के पार अपनी सेना उतार दी। २८ मई सन् १६५८ को सामूगढ़ के स्थान पर लड़ाई हुई जिसमें दारा की हार हुई। औरङ्गज़ेब ने चम्पतराय से प्रसन्न होकर सभाकरन (राजा दतिया) का इलाक़ा चम्पतराय को दे दिया। सभाकरन बिगड़ गया और उससे और चम्पतराय से ठन गई। चम्पतराय ने फिर अपना पुराना कार्य्य लूटने-मारने का आरम्भ किया। कई एक लड़ाइयों के बाद अन्त में एक दिन नामदार खाँ ने उसे घेर लिया। जब चम्पतराय ने बचने की आशा न देखी तो अपनी स्त्री से कहा कि वह उसे मार कर पकड़े जाने से बचा ले। रानी तो वीर क्षत्राणी थी ही, पति की आज्ञा स्वीकार कर ली। रानी ने अपने पति की तलवार निकाल कर पहले अपने पतिदेव के हृदय में भोंका और फिर स्वयं अपने हृदय में भोंक लिया। इस प्रकार इस वीर जोड़े का अन्त हुआ।

चम्पतराय के सालिवाहन, अंगदराय, रतन सिंह, छत्रसाल और गोपाल पाँच पुत्र थे। सालिवाहन १६५० में मारा जा चुका था। इस समय छत्रसाल की अवस्था केवल १३ साल की थी।

छत्रसाल (१६६२-१७३२)—

समय अच्छा न देख कर छत्रसाल ने औरङ्गज़ेब से सन्धि करनी चाही और युद्धक्षेत्र में नामवरी

पैदा करके अपने वंश की स्थिति को सुधारना चाहा। इसी ध्येय को सामने रख कर छत्रसाल ने जयपुर के 'सवाई जैसिंह की सेना में अपना नाम लिखा लिया। किन्तु छत्रसाल को उनकी सूरत का बदला ठीक न मिला तो फिर उन्होंने नौकरी छोड़ दी और अपने पिता के व्यवसाय पर चलने की दृढ़ प्रतिज्ञा की।

इस समय शिवाजी औरङ्गज़ेब के विपरीत कार्य्य कर रहे थे इसलिये छत्रसाल ने उनसे मिलने का प्रयत्न किया। शिवा जी तो यह पहले ही से चाहते थे, उन्होंने शीघ्र ही बात मान ली और अपनी तलवार छत्रसाल को दे दी।

शीघ्र ही औरंगाबाद के वीर बल्देव [illegible] के राजा धरमंगद और दूसरे सरदार छत्रसाल के साथी बन गए। १७६१ ई० में छत्रसाल ने मालवा और बुँदेलखण्ड में लूट मार की और बहुत से स्थानों पर अपना कब्ज़ा जमा लिया। सीरौंज को छत्रसाल ने अपनी राजधानी बनाया। अब और दूसरे बुँदेले सरदार भी साथी बन गए। मुग़ल सूबेदारों ने छत्रसाल की बढ़ती ताक़त रोकनी चाही, किन्तु छत्रसाल ऐसे सूरमा के आगे उनकी दाल न गली और उन्हें नीचा खाना पड़ा। थोड़े समय में ही छत्रसाल सारे बुन्देलखण्ड का राजा बन गया और कालिंजर क़िले पर भी अपना अधिकार जमा लिया।

औरंगज़ेब इस समय दक्षिण की लड़ाइयों में फँसा था। उसे मरहठों और राजपूतों का भी सामना करना था। ऐसी हालत में छत्रसाल बुन्देला बिलकुल स्वतंत्र अपना कार्य्य कर रहा था। छत्रसाल ने बेतवा से टोंस तक और जमुना से जबलपुर तक अपना राज्य बढ़ा लिया। औरंग और मऊ महेवा में रहकर अपना राज्यशासन करने लगा तो औरंगज़ेब को फ़िक्र हुई, किन्तु ४ मार्च १७०७ को उसकी मृत्यु हो गई।

बहादुरशाह ने छत्रसाल की बढ़ती दशा देखकर १७२६ ई० में मुहम्मद खाँ बंगश और खां बंगश गजनफ़र जंग की अध्यक्षता में ८०,००० सवार और १०० हाथी भेजे। इस सेना ने जैतपुर का क़िला ले लिया। छत्रसाल ने ऐसी सेना का अकेले मुक़ाबिला करना अच्छा न जानकर बाजीराव पेशवा से सहायता चाही। बाजीराव ने शीघ्र ही मांग पूरी की और १ लाख सवार सहायता पर भेजे। मोहम्मद खां बंगश को मजबूर होकर जैतपुर क़िले में शरण लेनी पड़ी। ६ महीने तक क़िले का घेरा पड़ा। और ८०) रु० सेर तक आटा बिक गया। अन्त में मोहम्मद खां बंगश का पुत्र आया और बातचीत शुरू की। वह छत्रसाल के शरण आया तो उसकी जान बची।

इसके बाद ही छत्रसाल ने अपने राज्य के तीन भाग कर दिये। बड़े पुत्र हृदयशाह को पन्ना, कालिंजर और शाहगढ़ ३८ लाख की जायदाद मिली। दूसरे पुत्र जगतराज को ३३ लाख की जागीर मिली जिसमें जैतपुर, अजयगढ़ और चरखारी राज्य हैं। पेशवा को झाँसी, सिरौंज, सागर और कालपी ३१ लाख की जागीर मिली।

८६ साल की अवस्था में सन् १७३२ ई० में छत्रसाल की मृत्यु हो गई। अब भी पन्ना, अजयगढ़, चरखारी, बिजावर, जासो, जिगनी, लुगासी और सरीला आदि राज्यों में छत्रसाल के वंश का राज्य है।

हृदयशाह (१७३२-३६)—

बड़ा पुत्र हृदयसिंह पन्ना का राजा हुआ। इसी साल से पन्ना एक स्वतंत्र राज्य बना। १७३२ में हृदय ने रीवा पर हमला किया और १७३६ में रीवा नगर पर अधिकार जमा लिया। यहाँ उसने बुन्देला दरवाज़ा बनवाया और रीवा राज्य के विरसिंहपुर पर भी अधिकार जमाया जो अब भी पन्ना राज्य में है। माघ सुदी नौमी सन् १७६५ को हृदयशाह परलोक सिधारा। उसके आठ पुत्र और एक दोगला पुत्र था।

सुभागसिंह (१७३६-५२)—

ज्येष्ठ पुत्र सुभाग या सभासिंह राज्य का मालिक हुआ। इसके समय में राज्य की अवनति हुई। आषाढ़ बदी एकादशी संवत् १८०६ को उसकी मृत्यु हो गई और उसका पुत्र अमानसिंह गद्दी पर बैठा।

अमानसिंह (१७५२-५८)—

अमानसिंह के दो भाई हिन्दूपत और खेतसिंह थे। राज्य के बारे में झगड़ा छिड़ गया और चित्र-

कूट के समीप दुर्गा तालाब की लड़ाई में अमानसिंह मारा गया। यह राजा अपने दान के लिये प्रसिद्ध है। चित्रकूट के मन्दिरों के लिये इसने एक लाख की भूमि दी।

हिन्दूपत (१७५८-७६)—

अमान के बाद हिन्दूपत राजा हुआ। इसी समय शुजाउद्दौला का बुन्देलखण्ड पर आक्रमण हुआ। दूसरे राजाओं के साथ साथ हिन्दूपत को भी खिराज देनी पड़ी। हिन्दूपत ने पन्ना में जुगलकिशोर का मन्दिर, महाराजगंज का क़िला और कालिञ्जर क़िले में एक महल बनवाया। अगहन बदी नौमी को उसकी मृत्यु हो गई।

अनिरुद्ध (१७७६-८०)—

हिन्दूपत के बाद उसका नाबालिग़ पुत्र अनिरुद्ध गद्दी पर बैठा। बेनी हज़ूरी और खेमराज चौबे राजकाज का प्रबन्ध करते थे।

१७७७ में लार्ड हेस्टिंग्ज़ ने रघुनाथराव को पेशवा बनाने के लिये सहायता देनी चाही। इसलिये बङ्गाल से एक सेना बम्बई के लिये करनल लेसली की अध्यक्षता में भेजी गई। जब सेना बुन्देलखण्ड में घुसी तो अनिरुद्धसिंह की सेना ने अँग्रेज़ी सेना को रोका। मऊ के स्थान पर राजा की हार हुई। करनल लेसली के मरने पर जनरल गाडर्ड ने बेनी हज़ूरी से सहायता के लिये अपील की, किन्तु सहायता के लिये राजा ने इन्कार किया। इसी समय राज्य के अन्दर आपस में झगड़ा हो गया और अनिरुद्ध मारा गया। सरनतसिंह, घोखलसिंह और दूसरे भाई गद्दी के लिये लड़ने लगे। अन्त में घोखलसिंह गद्दी पर बैठा।

घोखलसिंह (१७८५-९८)—

इसके गद्दी पर बैठते ही घरेलू झगड़े और अधिक बढ़ गये और आपस की फूट देख हिम्मत बहादुर गोसाईं और अलीबहादुर ने मिलकर पन्ना पर धावा मारा और उसे अधिकार में कर लिया। अलीबहादुर बाँदा का नवाब हो गया। दूसरी दिसम्बर १८०२ में बेसीन की सन्धि हुई जिसके अनुसार पेशवा की बुन्देल खण्ड की जायदाद ब्रिटिश के हाथ चली गई। समय अच्छा जानकर हिम्मतसिंह ने भी अँग्रेज़ों से सन्धि कर ली।

किशोरसिंह (१७९३-१८३४)—

१८०३ ई० में अँग्रेज़ों का अधिकार भलीभाँति स्थापित हो चुका था। इस समय किशोरसिंह नाम के लिये राजा था। वह देश निर्वासित था। १८०७ में अँग्रेज़ों ने सनद देकर उसे राजा माना और गद्दी पर बैठा दिया। किशोर बड़ा ही निर्दयी राजा था। इसलिये कई मर्तबे अँग्रेज़ों को रुकावट डालनी पड़ी। अन्त में १८३२ में राजा ने छतरपुर के कुँअर प्रतापसिंह के हाथ में राज की बागडोर दे दी। दो साल बाद राजा को राज्य से बाहर निकालना आवश्यक समझा गया। हरवंश गद्दी पर बैठा किन्तु वह भी १८४९ में मर गया। इसके कोई पुत्र न था इसलिये छोटा भाई नृपतसिंह गद्दी पर बैठा।

नृपतसिंह (१८१९-७०)—

किशोरसिंह की मृत्यु होने पर उसकी दोनों रानियाँ सती हुईं। इसलिये अँग्रेज़ सरकार ने नृपत से कहा कि जब तक सती की प्रथा राज्य से न उठेगी तब तक अँग्रेज़ सरकार नृपत को राजा नहीं मान सकती। १८५७ में नृपत अँग्रेज़ों का पक्का साथी निकला। यद्यपि उसके राज्य में ही प्रजा इस बात में उसके विरुद्ध थी। जब जैतपुर की बाग़ी रानी ने दमोह का ज़िला ले लिया तो इस के लिए जबलपुर के कमिशनर ने राजा पन्ना को लिखा कि रानी को मार भगाये। राजा ने शीघ्र ही अपने बहनोई कुँवर शामले जू देव को राज्य-सेना के साथ भेजा। रानी को मजबूर होकर प्रान्त छोड़ना पड़ा। दो साल तक यह ज़िला राजा के अधिकार में रहा। मेजर इलिस भी पन्ना में राजा की शरण में रहा। कालिंजर का क़िला इस समय राजा के अधिकार में ही था, उसने विप्लवकारियों से जाकर छीन लिया था। बाद को लेफ्टिनेन्ट रिमिन्गटन भी राजा की सहायता को पहुँच गया।

नवम्बर १८५७ में रिमिन्गटन ने राजा के बारे में यह लिखा, "यह क़िला (कालिंजर) चारों ओर से विप्लवकारियों से घिरा है केवल पन्ना की ओर

खाली है। पन्ना में राजा बड़ी चतुरता और योग्यता के साथ शान्ति स्थापित किये हुए है। राजा को इसके लिये कोटि-कोटि बार धन्यवाद है। यही एक राजा है जो अँग्रेजों का पक्का हितैषी और साथी है। राजा अँग्रेजों के साथ जान निछावर करने को तैयार है। राजा पब्लिक में अँग्रेज़ों के साथ निकलने में नहीं हिचिकता और बराबर साथ-साथ रहता है। यही कारण है जिससे बागियों की हिम्मत यहाँ आक्रमण करने की नहीं पड़ती।

इस नेकी के बदले में राजा को २०,००० की खिलअत और सिमरिया का परगना मिला। १८६६ में राजा को 'महेन्द्र' की टाइटिल मिली। १८६२ ई० में गोद लेने की सनद दी गई। इटारसी से जबलपुर तक राजा ने भूमि रेल के लिए दे दी। १८७० ई० में राजा शिकार खेलते हुए शेर द्वारा मारा गया। पुत्र रुद्र गद्दी पर बैठे।

रुद्रप्रतापसिंह (१८७०-६३)—

१८७५ में महाराज रुद्रप्रतापसिंह के० सी० एस० आई० बनाए गये। यह उपाधि १८७६ में राजा को सप्तम एडवर्ड द्वारा कलकत्ता में प्राप्त हुई। १८७७ में एक झंडा और सुनहरा मेडिल मिला। राजा १८६३ ई० में पुत्रहीन सुरलोक सिधारे। उनके भाई लोकपालसिंह राजा बने। महाराज लोकपालसिंह के समय में कोई खास घटना नहीं हुई। लोकपाल के बाद माधोसिंह गद्दी पर आये। किन्तु खुमानसिंह की हत्या कराने पर, खुमानसिंह के पुत्र यादवेन्द्रसिंह गद्दी पर बैठाये गये।

यादवेन्द्रसिंह (१६०२)—

महाराज यादवेन्द्र की अवस्था १६०७ में केवल चौदह साल की थी। राज-काज पोलिटिकल एजेण्ट की निगरानी में दीवान तथा एक कौन्सिल करती थी।

राज्य सम्बंधी सभी कार्यों में राजा का निर्णय अन्तिम होता है। राजा की सहायता के लिये दीवान होता है। क्रिमिनल मामलों में राजा के अधिकार कम हैं और अंतिम निर्णय भारत सरकार के हाथों में है। महाराज बड़े साहसी और उत्साही व्यक्ति हैं। आप सार्वजनिक कार्यों में काफ़ी दिलचस्पी से कार्य करते हैं।

राजा के सम्बन्धी—

महाराज के छोटे भाई राघवेन्द्र सिंह और भारतेन्द्रसिंह हैं। महाराजा रुद्रप्रताप की दोनों रानियाँ हैं और राव राजा खुमानसिंह की दोनों रानियाँ हैं। जिनमें से एक महाराज वर्तमान की माता हैं। महाराज की एक बहन राजू राणा हैं।

शासनप्रणाली—

पन्ना, पवोई, महोदर, मलहर, बिरसिंहपुर, धरमपुर और अक्टोहन ये सात तहसीलें हैं।

आय—

सालाना आय ८,६६,००० रुपये है।

व्यय—

कुल व्यय ४ लाख रु० है।

सेना—

१८६ पैदल, ३१ सवार, १४ तोपों, ८ लाल-पिटारा या हथियारबन्द हैं। राज्य में १६ बन्दूकें हैं।

वर्तमान नरेश, कैप्टन हिज़ हाईनेस महाराजा महेन्द्र सर यादवेन्द्रसिंह बहादुर के० सी० एस० आई०, के० सी० आई० ई०, (बुन्देले राजपूत) हैं। आपको ११ तोपों की सलामी लगती है। आप चैम्बर आफ़ प्रिन्सेज़ के मेम्बर हैं।

चरखारी राज्य

स्थिति और विस्तार—

चरखारी राज्य बुन्देलखण्ड एजन्सी में है। सनद वाले राज्यों में से यह भी है। यद्यपि यह राज्य बहुत टूटा-फूटा है तो भी इसके अधिकांश टुकड़े २४°४०′ २५°५४′ उत्तरी अक्षांशों तथा ७६°२२′ और ८०°३०′ पूर्वी देशान्तरों के बीच स्थित हैं।

सीमा—

यह राज्य ६ अलग-अलग भागों से मिल कर बना है। इसके आठ भाग हमीरपुर ज़िले में हैं और नवाँ धसान नदी के किनारे पर है। इसके उत्तर-पूर्व में छतरपुर राज्य, दक्षिण में विजावर राज्य और पश्चिम में धसान नदी है जो इसको ओरछा राज्य से अलग करती है।

इस राज्य का क्षेत्रफल लगभग ८८० वर्गमील है। कहा जाता है कि चरखारी या चरखार (लकड़बघा) से बिगड़ कर बना है। जो चरखारी नगर के पास पहले बहुत पाये जाते थे।

प्राकृतिक विभाग—

यह राज्य सेन्ट्रल इण्डिया के निचले प्रदेश में स्थित है। इसमें बड़े-बड़े समतल मैदान हैं इन मैदानों के बीच-बीच में दन्दानेदार निचली पहाड़ी चोटियाँ हैं। यहाँ चरखारी में केवल एक रञ्जीत नाम की पहाड़ी है। इस पहाड़ी पर मङ्गलगढ़ का क़िला बना हुआ है। यह क़िला नीचे की झील से ३०० फ़ीट ऊँचा है।

नदी और झीलें—

धसान, केन और उर्मल ये तीन नदियाँ इस राज्य में बहती है; किन्तु इन नदियों से सिंचाई का काम नहीं लिया जाता। छोटी-मोटी झीलें और ताल यहाँ बहुत हैं; किन्तु रतनसागर, जैसागर और विजयसागर (चरखारी) के सिवा और किसी में भी साल भर बराबर पानी नहीं रहता।

जलवायु और वर्षा—

यहाँ की जलवायु गर्म है वर्षा ४४ इंच सालाना है।

जनसंख्या—

इस राज्य की जनसंख्या १,२०,३५१ है। मुख्य नगर चरखारी की जनसंख्या लगभग १२ हजार के है। २० गाँवों की जनसंख्या २,००० और १,००० के बीच की है। ४७ गावों की जनसंख्या ५०० और १,००० के बीच की है और शेष ४३७ गाँवों की जनसंख्या ५०० के नीचे है। इनमें ६५ प्रतिशत हिन्दू, ४ प्रतिशत मुसलमान और बाकी जैनी और दूसरे मत वाले हैं। यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती है।

राज्य का संक्षिप्त इतिहास—

इस राज्य का इतिहास १७६८ से आरम्भ होता है। १७३२ ई० में पन्ना महाराज छत्रसाल ने अपने राज्य को विभाजित किया। इन भागों में से ३३ लाख का एक भाग जगतराज को मिला। इस भाग की राजधानी जैतपुर थी। १७५८ में जगतराज का देहान्त हो गया। जगतराज ने गुमानसिंह को अपने राज्य का उत्तराधिकारी बनाया था, किन्तु पहाड़सिंह ने इसका विरोध किया और गुमानसिंह और उसके भाई खुमानसिंह को भाग कर चरखारी के क़िले में शरण लेनी पड़ी।

१७६१ ई० में पहाड़ सिंह ने उनके साथ संधि कर ली और गुमान सिंह को अजयगढ़ व बाँदा का जिला दिया। खुमान सिंह को चरखारी राज्य मिला जहाँ की मालगुज़ारी उस समय ६ लाख थी।

खुमान सिंह (१७६१-८२)—

इस प्रकार चरखारी राज्य के प्रथम राजा खुमानसिंह कहे जा सकते हैं। क्योंकि इसी समय से इस राज्य के ठीक ठीक इतिहास का पता चलता है। महाराज खुमानसिंह के समय में करामतखाँ और हिम्मतबहादुर गोसाईं ने बुन्देलखण्ड पर आक्रमण किया। इनके साथ एक बड़ी सेना थी। चरखारी, पन्ना और दूसरे बुन्देला सरदारों ने संयुक्त होकर आक्रमणकारियों का मोर्चा लिया। बाँदा से १२ मील की दूरी पर मुगस स्थान पर घमासान लड़ाई हुई। बुन्देलों ने अपने बैरियों के दाँत खट्टे कर दिये। करामत खाँ युद्ध में

मारा गया तथा हिम्मत बहादुर ने भाग कर अपनी जान बचाई। इस युद्ध में खुमान सिंह ने बड़ी बहादुरी दिखलाई और अच्छा नाम युद्ध-क्षेत्र में पैदा किया।

विजय विक्रमाजीत (विजयबहादुर १७८२-१८२६)—

कुछ समय पश्चात् खुमानसिंह और उसके भाई गुमानसिंह से खटपट हो गई। १७८२ ई० में खुमानसिंह पनरोरी के स्थान पर लड़ाई में बुरी तरह से घायल हुआ और उसकी मृत्यु हो गई। उसका पुत्र विजय विक्रमाजीत गद्दी पर बैठा किन्तु उससे भी बाँदा के सरदार अर्जुनसिंह से बराबर लड़ाई होती रही और अंत काल विक्रमाजीत को चरखारी छोड़ कर भाग जाना पड़ा।

१७८६ ई० में विजय विक्रमाजीत ने अलीबहादुर और हिम्मत बहादुर के साथ बुन्देलखण्ड पर आक्रमण किया। जिसके फल स्वरूप एक सनद द्वारा चरखारी का दुर्ग और चार लाख मालगुजारी की भूमि उसे प्राप्त हुई। १८०३ ई० में अंग्रेज पहले पहल बुन्देलखण्ड में आये और बुन्देला सरदारों में सर्व-प्रथम विक्रमाजीत ने अंग्रेज़ों से सन्धि कर ली। इसके फलस्वरूप १८०४ ई० में विक्रमाजीत को उसके राज्य की सनद अंग्रेज़ सरकार द्वारा मिली। एक दूसरी सनद सन् १६११ ई० में दी गई।

सनद द्वारा इक़रारनामे में दिये हुए ११ ज़िले, परगने, गाँव और क़िले राजा को मिले और अंग्रेज़ सरकार ने वादा किया कि जब तक राजा और उसके उत्तराधिकारी अंग्रेज़ सरकार के ताबेदार रहेंगे तव तक उनका राज्य स्वरक्षित रक्खा जावेगा और किसी प्रकार की हानि न होने पावेगी। राजा ने मौंधा का क़िला बनवाया, चरखारी में मेहमान घर व झील बनवाई। राजा भाषा का बड़ा प्रेमी था। उसने स्वयं कविता लिखी है। जब वह झाँसी के क़िले में निर्वासित था तो उसने विक्रमवीर दोहावली पुस्तक लिखी थी।

रतनसिंह १८२०-६१—

सन् १८२६ ई० में विक्रम की मृत्यु हो गई और रतनसिंह गद्दी पर बैठा। महाराज रतनसिंह ने १८५३ ई० में अन्ना साहब गोरे को अपना दीवान बनाया। अब तक कभी भी राज्य में ऐसे चतुर मनुष्य की नियुक्ति नहीं हुई थी। नियुक्ति के कुछ ही समय बाद राज्य में बहुत सुधार किये गये। १८५६ में एक स्कूल खोला गया जहाँ अँग्रेज़ी, फ़ारसी, संस्कृत भाषाएँ पढ़ाई जाती थीं।

१८५७ ई० के विप्लव में रतनसिंह ने अपने भरसक अँग्रेज़ों की सहायता की। मिस्टर कार्ने जो उस समय महोबा के कलक्टर थे, उन्होंने रतनसिंह से सहायता माँगी। रतनसिंह ने बड़ी प्रसन्नता के साथ मदद दी और सौ आदमी और एक बंदूक़ हमीरपुर लाएड साहब की सहायता को भेजी। जब विप्लवी रानी ने जैतपुर पर कब्जा किया तो राजा ने शीघ्र ही मोर्चा लिया और परास्त करके रानी को निकाल बाहर किया।

१८५७ में ताँतिया टोपी चरखारी पर आ धमका और मार्च के महीने में राजा को बेवश होकर क़िले में घुसकर जान बचानी पड़ी। क़िले के अन्दर बहुत से जान बचाकर भागे हुए अँग्रेज़ थे उनमें मिस्टर कार्ने महोबा के कलक्टर भी थे।

राजा को विप्लवकारियों ने ताँतिया की बात मानने पर बाध्य किया। उन लोगों ने तीन लाख रुपया माँगा। कुँवर जैसिंह ताँतिया के पास रहने की माँग की और सारे छिपे हुए अङ्गरेजों को चाहा। राजा ने और सभी बातें मान लीं किन्तु शरण आए हुए अङ्गरेजों को निकालने से इन्कार किया। ताँतिया ने न माना और घेरा डाले रहा, किन्तु इसी समय झाँसी के घेरे की ख़बर आई जिससे ताँतिया को विवश होकर वहाँ जाना पड़ा। इसी बीच मिस्टर कार्ने को एक प्रसिद्ध बुन्देला सर्दार के भेष में राजा ने पन्ना भेज दिया।

इस भलाई के बदले में राजा को २०,००० रु० की भूमि, खिलअत और ११ तोपों की सलामी का अधिकार, इनाम में मिला।

जैसिंह देव १८६०-८०—

१८६० में राजा मरे और उनके नाबालिग़ पुत्र जैसिंह देव गद्दी पर बैठे। रानी बख़्त कुँवर जैसिंह देव की माँ के हाथ राज्य-भार सौंपा गया किन्तु जब रानी से तथा मौलवी सिराजहुसेन और आना साहब गोरे से झगड़ा हो गया तो कर्नल थामसन को राज-काज सौंपा गया १८६६ में करनल थामसन वापस बुला लिये गए और आना साहब दीवान के हाथ बागडोर दे दी गई। साल भर बाद ही दीवान साहब सुरलोक सिधारे उनके बाद ताँतिया साहब गोरे उनके सुपुत्र ने बागडोर अपने हाथ में ली। इन्होंने बहुत से सुधार किये। १८६८ में हाई स्कूल की इमारत, अस्पताल, सड़कें और जैसागर ताल बनवाए गये।

१८७४ में जैसिंह के हाथ राज-काज की बागडोर सौंप दी गई। राजा अच्छी बुद्धि का न था, साथ ही राजा कट्टर सनातनधर्मी था। १८७७ में राजा दिल्ली असेम्बुलेज में गये और वहाँ से वृन्दावन आए। यहीं बाक़ी जीवन राजा ने समाप्त किया। इसी बीच राज्य के अन्दर काफी गड़बड़ी पैदा हो गई।

१८७६ ई० में कैप्टेन एफ० एच० मेटलैण्ड राज्य के सुपरिन्टेन्डेन्ट बनाए गए। राजा के अधिकार कम कर दिये गए और दूसरे साल सभी अधिकार छीन लिये गए। ६ मार्च सन् १८८० ई० को राजा जैसिंह ने धतूरे का फल खा लिया। जिससे राजा की मृत्यु हो गई।

राजा जैसिंह के कोई वंश न था और न उन्होंने जीते जी किसी को गोद ही लिया था। उनकी विधवा रानी ने मलखान सिंह को गोद लिया। यह नाने-जुझारसिंह के पुत्र थे। गोद के समय इनकी अवस्था केवल ६ साल की थी। ब्रिटिश गवर्नमेन्ट ने गोद स्वीकार कर लिया। और राज्य को एक अँग्रेज अफ़सर के सुपुर्द कर दिया।

१८८६ ई० में अँग्रेज अफ़सर वापस बुला लिया गया और राज्य बुन्देलखण्ड के अँग्रेज प्रतिनिधि के सुपुर्दगी में कर दिया गया।

१८६४ में राजा को राज-काज सौंप दिया गया। राव बहादुर दीवान जुझारसिंह जूदेव सी० आई० ई० मिनिस्टर का कार्य करते हैं। १८६४ के बाद राज्य में बहुत से सुधार किए गए। सेटिलमेन्ट का कार्य हुआ, पुलीस का सुधार हुआ और दूसरे प्रजा-कार्य हुए। १८६७-६८ में राज्य में अकाल पड़ा जिसका इन्तज़ाम राजा ने बड़ी चतुरता से किया।

१६०२ में राजा को के० सी० आई० ई० की उपाधि मिली। दूसरे साल दिल्ली के शाही दरबार में राजा गए। १६०५ ई० में जब इन्दौर में शहज़ादा और शहज़ादी आईं तो आप भी गये थे।

राजा की खानदानी पदवी हिज़ हाईनेस महाराजाधिराज सिपह दारुलमुल्क है। और ग्यारह तोपों की सलामी दगाई जाती है।

शासन प्रणाली—

राजा मदारुल मुदाम (मंत्री) और नायब दीवान की सहायता से राज्य करता है। राज-काज में हिन्दी भाषा का प्रयोग होता है। उर्दू केवल फ़ौजदारी के मामलों में प्रयोग होती है। राज-काज के लिये मदारुल मोदामी, कोतवाली और माल में ख़ास ख़ास विभाग हैं, राज्य में २६ सवार, १८१ पैदल और २४ बंदूक़ें हैं जिनको चलाने के लिये ८५ व्यक्ति नौकर रक्खे गये हैं।

राजनैतिक विभाग—

राज्य चार परगनों में विभाजित है। (१) बावनचौरासी परगना (२) ईसानगर का परगना (३) रानीपुर (४) सतवारा का परगना। प्रत्येक परगना एक तहसीलदार के अधिकार में है जो उसका प्रबन्ध करता है।

राज्य के लोगों का व्यवसाय—

यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती है। खरीफ़ में ज्वार, मकई और कोदों पैदा की जाती है। रबी में गेहूँ, चना और जौ पैदा होते हैं। काकुन और साँवा की भी पैदावार होती है।

लगभग चालीस वर्ग मील में जंगल है। जंगलों में लोग जानवरों को चराते हैं। लकड़ी जलाने और मकान बनाने के काम आती है। जंगल में खैर, तेंदू, घोटहर, ईंगू, धव, सागौन, सलई, बाँस आदि पेड़ पाए जाते हैं। खेरवा और कोंडर जाति जंगलों में रहती है और खैर, मधु तथा और दूसरी वस्तुएँ जो जंगलों से प्राप्त होती हैं उन्हीं का व्यवसाय करते हैं।

रानीपुर परगना में हीरे की खानें पाई जाती हैं। प्रजा को भी इन खानों के खोदने का अधिकार है, किन्तु प्रत्येक पाये हुये हीरे के मूल्य का चौथाई राजा को देना पड़ता है। राज्य दर्बार इन हीरों का मूल्य निर्णय करता है।

आय और व्यय—

राज्य की आय ६,३०,००० रु० है जिसमें से १.४६ लाख राज्यशासन और राजा के ऊपर खर्च होता है। ७६,००० फ़ौज पर तथा ३७,००० मालगुज़ारी वसूल करने में खर्च किया जाता है। राज्य की आर्थिक स्थिति अच्छी है और किसी प्रकार का क़र्ज़ नहीं है।

नरसिंहगढ़

इस राज्य के संस्थापक परसराम के इष्टदेव नृसिंह जी थे। इसी से इसका नाम नृसिंह या नरसिंहगढ़ पड़ गया। इस समय भी यहाँ नृसिंह जी का मन्दिर है। नृसिंहगढ़ राज्य का क्षेत्रफल ७३४ वर्गमील है और जन-संख्या १,१३,८७३ है। इस राज्य का प्रायः सभी भाग मालवा पठार पर स्थित है। केवल कुछ भागों में विन्ध्याचल की बाहरी पहाड़ियाँ हैं। एक पहाड़ी पर नृसिंहगढ़ का क़िला बना हुआ है। इसकी सब से ऊँची चोटी १८६० फुट है। इस राज्य की प्रधान नदी पार्वती, कालीसिन्ध है। पार्वती नदी पूर्वी सीमा के पास होकर बहती है। कालीसिन्ध की सहायक नदी मेवाज़ है। छोटी-छोटी नदियाँ सूकर और दूधी हैं। इस राज्य का बहुत बड़ा भाग खुला हुआ लहरदार मैदान है। यह काली मिट्टी से ढका हुआ है। इसमें ज्वार, बाजरा, मकई, गेहूँ, गन्ना, कपास, अफ़ीम आदि तरह-तरह की फ़सलें होती हैं। इस राज्य में लगभग १४० वर्ग मील बन है। कुछ भागों में केवल घास उगती है और जानवर पालने के काम आती है। केवल अफ़ीम (पोस्त) और गन्ने के खेतों को सींचने की जरूरत पड़ती है।

इस राज्य में एक भी रेलवे नहीं है। यदि भिलसा से नागदा-मथुरा लाइन को मिलाने के लिए रेल खुली तो यह नरसिंहगढ़ राज्य में हो कर जायगी। प्रधान पक्की सड़कें दो हैं। एक आगरा से बम्बई को जाती है। दूसरी सीहोर से ब्याओरा को जाती है।

नरसिंह नगर को इस राज्य के संस्थापक परसराम ने १६८१ ई० में बसाया था। यह स्थान समुद्र तल से १६५० फुट ऊँचा है। यह नगर ब्याओरा-सीहोर सड़क पर स्थित है और सीहोर से ४४ मील दूर है। एक झील के पास नगर का दृश्य बड़ा सुन्दर है। जिस घाटी में नगर बसा है वह चारों ओर से पहाड़ों से घिरी हुई है। एक पहाड़ी पर क़िला बना हुआ है। दो पहाड़ियों पर महादेव और हनुमान जी के मन्दिर हैं। वर्षा काल के बाद हरियाली हो जाने पर दृश्य और भी अधिक मनोहर हो जाता है। यहां लगभग १०,००० मनुष्य रहते हैं। यहीं विक्टोरिया हाई स्कूल, अस्पताल, कोतवाली और डाक बंगला है। राज्य की आमदनी ७,४२,००० है और खर्च ४ लाख है। इस राज्य की सीमा राजगढ़ राज्य से इस प्रकार मिली हुई है कि नक़शे में यह बहुत ही जटिल मालूम होती है। फिर भी इसके उत्तर में राजगढ़, खिल्चीपुर और इन्दौर राज्य हैं। दक्षिण में ग्वालियर और भोपाल राज्य हैं। पूर्व की ओर मक़सूदनगढ़ और भोपाल है। पश्चिम की ओर ग्वालियर और देवास राज्य हैं। नरसिंहपुर के शासक राजगढ़ के शासकों की तरह उमात राजपूत हैं और उमातसिंह या उमाजी के वंशज हैं।

अमर और समर दो भाई थे। वे राजपूताना और सिन्ध के रेगिस्तान में रहते थे। अमरकोट के प्रसिद्ध क़िले का नाम इसी से पड़ा। उमात राजपूत उन्हीं की सन्तान हैं। मालवा का उमतवाड़ा प्रदेश उन्हीं की स्मृति का सूचक है। १२२६ ई० में इन्हें परमार राजपूतों से हारना पड़ा। फिर भी १३५१ ई० तक राज करते रहे। चित्तौड़ के राना ने इनको रावत की पदवी दी। सिकन्दर लोदी के समय में रावत करन सिंह उज्जैन का सूबेदार था। रावत कृष्ण सिंह के मरने पर उनका बड़ा बेटा डूंगर सिंह उत्तराधिकारी हुआ। डूंगर सिंह ने डूँगरपूर गाँव बसाया जो राजगढ़ से १२ मील दक्षिण पूर्व की ओर है। वह शाही सेना से लड़ता हुआ स्वर्ग गति को प्राप्त हुआ। आगे चल कर इन्हीं के वशंज परसराम ने नरसिंहगढ़ नगर बसाया और १६८१ ई० में इसी नाम के राज्य की नींव डाली। १७६१ ई० में यहां मरहठों का जोर बढ़ गया और यहां के राजा को होल्कर महाराज को कर देना पड़ा। १८२४ ई० में यहाँ के वीर राजा चैनसिंह ने अंग्रेज़ों का मुक़ाबिला किया और लड़ाई में मारा गया। १८७७ ई० में जिस समय दिल्ली दरबार हो रहा था उसी समय यहाँ के राजा प्रताप सिंह सीहोर (मालवा) के दरबार में शामिल हुए। इन्होंने महारानी विक्टोरिया से भी भेंट की थी।

वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस राजा विक्रम सिंह (उमत राजपूत) हैं। आपको ११ तोपों की सलामी दी जाती है और आप चेम्बर आफ प्रिन्सेज़ के मेम्बर हैं।

सैलाना

सीमा तथा क्षेत्रफल—

सैलाना नामक प्रधान नगर पहाड़ी के मुख (नीचे) पर बसा है। इसी नगर के पीछे इस राज्य का नाम सैलाना पड़ा। यह राज्य छोटे मोटे बहुत से छिटके हुए भागों से मिल कर बना है। यह टुकड़े इस्लाम राज्य से इस प्रकार मिले हैं कि इसकी सीमा ठीक ठीक नहीं बताई जा सकती। तो भी इस राज्य के भिन्न भिन्न भाग गवालियर, इन्दौर, धार, झाबुआ, जोरा, बांसवारा और कुशलगढ़ राज्यों से मिले हुए हैं। इस राज्य का क्षेत्रफल लगभग २६७ वर्गमील है।

प्राकृतिक विभाग—

प्राकृतिक रूप से राज्य के दो भाग हैं। पूर्वी बड़ा भाग मालवा के पठार में है। राज्य का यह भाग चौड़ा, ढालू और खुला हुआ है। यहाँ वहाँ निचली समतल पहाड़ियाँ हैं। भूमि बड़ी ही उपजाऊ है और कृषक बड़े ही चतुर हैं।

राजधानी से पश्चिम दूसरा भाग है। यह भाग पूर्वी भाग से बिलकुल अलग है। यह लगभग पहाड़ियों, जङ्गलों और नदियों से भरा है। यहाँ की भूमि पहाड़ी और कम उपजाऊ है। भील जाति यहाँ के मुख्य निवासी हैं। उनके खेती करने की विधि भी पूर्वी लोगों से अलग है। यद्यपि सारा का सारा पश्चिमी भाग पहाड़ी है तो भी अधिक ऊँची पहाड़ियाँ नहीं हैं। केवल कवलखा माता की पहाड़ी १६२६ फीट ऊँची है। चोटी पर कवलखा देवी का मन्दिर है।

राज्य में होकर केवल दो नदियाँ माही और मलेनी बहती हैं। माही अमझेरा (ग्वालियर) के समीप से निकल कर बजरङ्ग गढ़ गाँव होकर पश्चिम की ओर घूम जाती है। यह नदी केवल पानी पीने के काम आती है। मलेनी सैलाना नगर के दक्षिण से निकल कर पश्चिम की ओर घूम जाती है और जसवन्त निवास महल के नीचे होकर बहती है। इनके सिवा सिमकोदी और रतनागिरी नदियाँ हैं जो मिलकर १५ मील तक बहती हैं और सिंचाई का काम देती हैं। जंगलों में छोटे छोटे वृक्ष और झाड़ियाँ हैं। काले हिरन, तेंदुवा, रीछ, भेड़िया आदि जानवर बनों में पाए जाते हैं।

संक्षिप्त इतिहास—

यहाँ के राजा राठौर घराने के हैं। यह रतलाम राज्य के रतनावत या सतवात शाखा से हैं। उदयसिंह के वंशज दलपत सिंह के पुत्र महेश दास के बड़े पुत्र रतन सिंह थे। शाहजहाँ बादशाह के समय में रतन सिंह ने उन्नति की और १६४८ के लगभग मालवा में उन्हें कुछ भूमि मिली। रतलाम नामक गाँव में रतन सिंह ने डेरा जमाया और रतलाम नामक राज्य की नींव डाली। २० अप्रैल सन् १६५८ में रतनसिंह उज्जैन (धर्मतपुर) के युद्ध में मारे गए। उनके बाद रामसिंह (१६५८-८२), शिवसिंह (१६८२-८४), केशवदास (१६८४), छत्रसाल (१६८४) आदि राजा हुए। १७०८ में छत्रसाल ने बड़े पुत्र हेतसिंह के मर जाने से दुखित हो राजपाट छोड़ दिया।

जैसिंह (१७३०-५७)—

छत्रसाल ने अपना राज्य तीन भागों में विभाजित किया—केशरीसिंह को रतलाम, प्रताप सिंह को रावती (सैलाना) और हेत सिंह के पुत्र वैरीसाल को धामनौद का राज्य दिया। किन्तु झगड़ा पड़ गया और वैरीसाल अपनी जागीर केशरी सिंह को सौंप जैपुर चला गया। तब केशरी सिंह और प्रताप सिंह में बड़ा वैमनस्य पैदा हो गया। अन्त में १७८६ में केशरी सिंह मारे गए। केशरी के छोटे पुत्र जैसिंह ने अपने बड़े भाई को दिल्ली से बुलाया और दोनों ने

मिलकर प्रताप सिंह को सागौद स्थान पर हराया। इस प्रकार रावटी (सैलाना) जागीर जैसिंह के हाथ आई। १७३६ में जैसिंह ने रावटी को छोड़ वर्तमान राजधानी सैलाना की नींव डाली।

१७५७ और १८५० के बीच के राजे—

१७५७ में जैसिंह मरे। उसके पश्चात् यशवंतसिंह राजा हुये, फिर अजबसिंह ने (१७७२-८२) तक राज्य किया और फिर मोखामसिंह (१७८२-६७) लक्ष्मणसिंह (१७६७-१८२६) ने राज्य किया। इसके पश्चात् रतनसिंह (१८२६-२७),नाहरसिंह (१८२७-४२) और तख़्तसिंह (१८४२-५०) आदि का राज्य रहा।

दूलेसिंह (१८५०-६५)—

दूलेसिंह की अवस्था कम होने के कारण राज्य शासन अंग्रेज सरकार करती रही। १८५७ में विप्लव हुआ तब राज्य शासन की बागडोर रतनसिंह की विधवा स्त्री के हाथ में सौंप दी गई। विप्लव काल में शांति स्थापित रखने के कारण रीजेन्सी के सभी मेम्बरों को ख़िलअत मिली। १८५९ में दूलेसिंह को शासन करने का अधिकार मिल गया। १८८४ में राजा ने जसवंतसिंह को गोद लिया। १६०१ में यह बात तै हुई कि सैलाना राज्य रतलाम को ६,००० रु० सालाना देगा और रतलाम राज्य किसी भी वस्तु पर जो सैलाना से रतलाम जायगी या आवेगी कर न लगायेगा। १८८७ में महारानी के जयन्ती के अवसर पर सिवा अफ़ीम कर के सभी माफ़ कर दिये गये।

जसवन्तसिंह (१८६५)—

१३ अक्टूबर सन् १८६५ को दूलेसिंह की मृत्यु हो गई। उसके पश्चात् जसवन्तसिंह गद्दी पर बैठे। आप ने डेली कालेज इन्दौर में शिक्षा पाई। गद्दी के समय राज्य पर क़र्ज़ वहुत था। राजा जसवन्तसिंह ने क़र्ज़ को बड़ी चतुरता से चुकाया ही था कि १८६६-१६०० में अकाल पड़ा, जिससे राज्य की आर्थिक स्थिति फिर बिगड़ गई।

महाराज जसवंतसिंह ने राज्य के प्रत्येक विभाग में सुधार किया और समयानुकूल बना दिया। १६०० में राजा को कैसरहिन्द का सोने का तमग़ा मिला। १६०४ में इण्डियन एम्पायर के नाइट कमान्डर बनाए गये।

महाराज के पाँच पुत्र हैं—(१) दिलीपसिंह (२) भारतसिंह (जो मुल्तान के राज्यों के राजा होंगे) मानधातासिंह जो अडवानिया के जागीरदार हैं, रामचन्द्र और अज्ञातशत्रु हैं।

राज्य दो तहसीलों में विभाजित है। प्रत्येक तहसील एक तहसीलदार के आधीन है। राजा दीवान की सहायता से राज्य-शासन करता है। राजा की सहायता के लिये १६८ सिपाही, १५ बन्दूक़ची और ५ बन्दूक़ें हैं।

राज्य में लगभग १,१६,५५२ एकड़ बन हैं। ४१,८०० एकड़ भूमि में खेती होती है। रबी और खरीफ़ की फ़सलें पैदा होती हैं। जलवायु गर्म है। वर्षा लगभग ७५ इंच सालाना है। अगहन में ज्वार, तिल, उर्द, मूँग, धान, कोदों आदि व बैसाख में गेहूँ, जौ, चना, मटर, अल्सी-सरसों आदि की उपज होती है। लगभग ४० बीघे में ऊख की भी खेती होती है।

राज्य की जनसंख्या ३५,२२३ है और सालाना आय २,६१,००० रु० है।

वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस सर राजा दिलीपसिंह के० सी० आई० ई० (राठौर राजपूत) हैं।

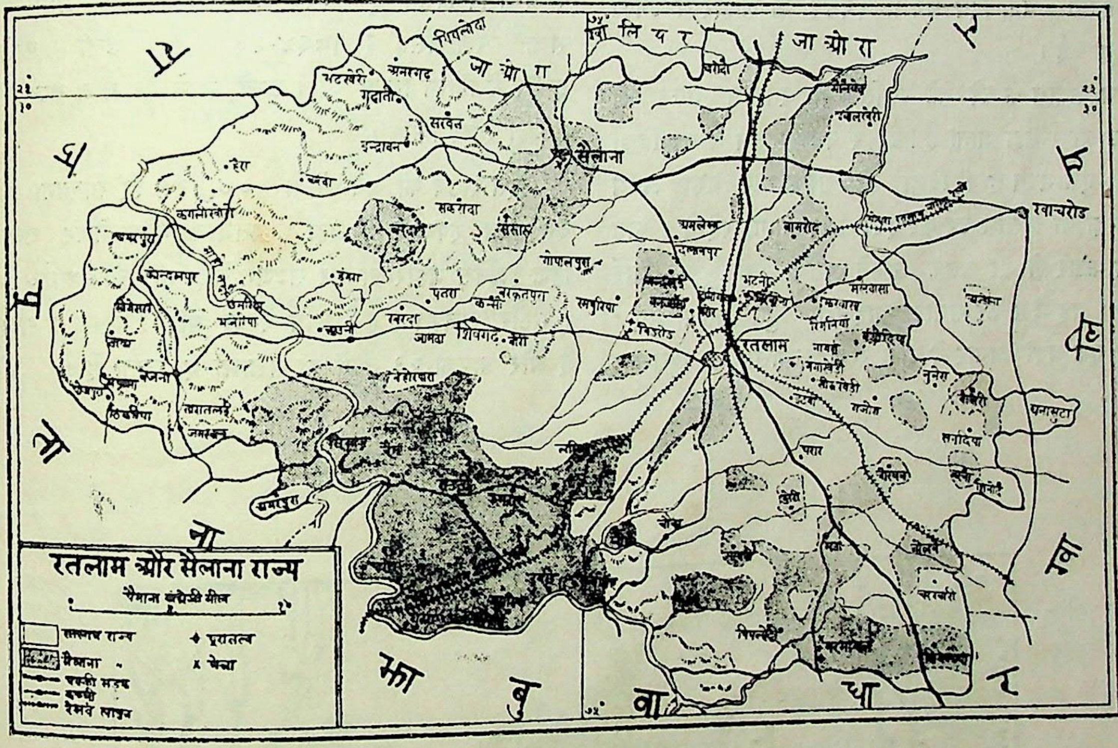
आपको ११ तोपों की सलामी लगती है और आप चैम्बर आफ प्रिन्सेज़ के मेम्बर हैं।

रतलाम

मालवा प्रदेश में रतलाम प्रधान राजपूत-राज्य है। रतलाम का राज्य कई स्थानों पर सैलाना राज्य से मिला हुआ है। उत्तर में इसका कुछ भाग जाओरा प्रतापगढ़ राज्यों को छूता है। इसके पूर्व में ग्वालियर दक्षिण में धार, इन्दौर और कुशलगढ़ राज्य हैं। पश्चिम की ओर बाँसवारा और कुशलगढ़ हैं। रतलाम राज्य का क्षेत्रफल ६६३ वर्ग मील है। इसमें से ४५५ वर्ग मील छोटी छोटी जागीरों में बँटा हुआ है।

हरियाली से ढँक जाते हैं। और ऋतुओं में वे अक्सर सूखे पड़े रहते हैं।

पहाड़ी भाग में विन्ध्या की छोटी छोटी पहाड़ियाँ हैं। किसी भी पहाड़ी की उँचाई २,००० फुट से अधिक नहीं है। पहाड़ियाँ अक्सर अलग अलग मैदान के ऊपर ५०० फुट ऊँची उठी हुई हैं। इस राज्य की प्रधान नदी माही है। यह अमझेरा से निकल कर उत्तर की ओर बहती है और बाजना के पहाड़ी प्रदेश को पार करती है। इस राज्य



रतलाम राज्य सब का सब मालवा पठार में स्थित है। फिर भी यह दो प्राकृतिक भागों में बँटा हुआ है। पूर्वी पठारी भाग को मालवी प्रदेश और पहाड़ी भाग को डूँगरी कहते हैं। पूर्वी भाग खुला हुआ और समतल मैदान है। इसका ढाल उत्तर की ओर है। यहाँ खेती खूब होती है। इस भाग का क्षेत्रफल ३१५ वर्ग मील है। पश्चिमी भाग पहाड़ी और जङ्गली है। इसका क्षेत्रफल ५८७ वर्ग मील है। वर्षाकाल में पहाड़ और मैदान दोनों ही

में माही एक मामूली नदी है। माही की सहायक जामड़ नदी पश्चिम की ओर बहती है। मलेनी (जो जाओरा और रतलाम के बीच में बहती है), कुदेल छोटी हैं और उत्तर-पूर्व की ओर चम्बल नदी में गिरती हैं। इस राज्य में छोटे छोटे ताल भी बहुत हैं।

रतलाम राज्य के कई जङ्गली भागों में तेंदुआ, चीता, गीदड़, भेड़िया और दूसरे जङ्गली जानवर पाये जाते हैं।

रतलाम के राजा सूर्यवंशी राठौर हैं। मारवाड़ (जोधपुर) के प्रसिद्ध राजा मालदेव (१५३२-८४) (जो सम्राट अकबर के समकालीन थे) के बाद उदयसिंह मारवाड़ के राजा हुए। उदयसिंह के बाद १५६५ से १६२० तक राजा सूरजसिंह ने राज किया। राजा सूरजसिंह ने अपने छोटे भाई दलपतसिंह को झालोर, बलहेरा, खेरदा और पिसागुन की जागीर सौंप दी। दलपतिसिंह के बाद राजा महेशदास झालोर की गद्दी पर बैठे। उन्होंने सम्राट जहाँगीर को अपनी सेवाओं से बहुत प्रसन्न किया। दौलताबाद के क़िले को जीतने में उन्होंने बड़ी वीरता दिखलाई। उनके दो भाई मारे गये, वे स्वयं घायल हो गये। इससे उनकी जागीर बहुत बढ़ गई। उनको फुलिया में ८४ गाँव और जहाजपुर में ३२५ गाँव मिले। वे सेह हज़ारी (३,००० घुड़सवारों के सेनापति) बना दिये गये। १६४४ में लाहौर में उनकी मृत्यु हो गई।

महेशदास के बड़े बेटे रत्नसिंह ने रतलाम राज्य की नींव डाली। कहा जाता है कि १२ वर्ष की उम्र में यह दिल्ली पहुँचे। एक मस्त हाथी दिल्ली की सड़क पर बड़ा ऊधम मचा रहा था। लोग डर कर इधर-उधर भाग रहे थे। यह अकेले कटार ले कर उसके सामने आया और उसे मार डाला। यह देख कर सम्राट शाहजहाँ बहुत प्रसन्न हुए। उनको एक बड़ी जागीर दे दी। राजा रत्नसिंह ने खुरासान (फ़ारस) और उजबेक सीमा प्रान्त की लड़ाइयों में भी बड़ी वीरता दिखलाई।

फतेहाबाद की लड़ाई में राजा रत्नसिंह ने अपूर्व वीरता दिखलाई। इसी युद्ध में उनका देहान्त हो गया। आगे चल कर कुछ औरङ्गजेब के कोप से और कुछ मरहठों के हमलों से रतलाम राज्य का विस्तार बहुत कम हो गया।

रतलाम के राजा छत्रसाल ने औरङ्गजेब का साथ दिया और गोलकुण्डा और बीजापुर की लड़ाइयों में बड़ी वीरता दिखलाई। १८०० ई० के बाद एक विचित्र अराजकता फैली। होल्कर और धार के राजा की ओर से यहाँ हमले हुए और फसलें नष्ट हो गईं। उधर सिन्धिया महाराज की फ़ौजें कर वसूल करने के लिये चढ़ आईं। १८१६ में यह राज्य अङ्गरेजी कम्पनी की छत्रछाया में आ गया। राजा बलवन्तसिंह (१८२५-५७) बड़े विद्या प्रेमी थे। राजा रञ्जीतसिंह (१८६४-९३) को डेली कॉलेज इन्दौर में शिक्षा मिली थी। उनके मरने पर राजा सज्जनसिंह ने यहाँ राज्य किया।

इस राज्य की जन-संख्या १०७,३२१ है, सालाना आय दस लाख रुपया है। यहाँ के वर्तमान नरेश मेजर जनरल हिज़ हाईनेस महाराजा सर सज्जनसिंह, जी० सी० आई० ई०, (राठौर, राजपूत) हैं। आप चैम्बर ऑफ़ प्रिन्सेज़ के सदस्य हैं और आपको २३ तोपों की सलामी दी जाती है।



सीतामऊ

सीतामऊ राज्य का क्षेत्रफल केवल २०२ वर्ग मील है। इसके उत्तर में ग्वालियर और इन्दौर, दक्षिण में जाओरा और देवास, पूर्व में झालावार और पश्चिम में ग्वालियर राज्य है। कहा जाता है कि मीना सरदार सीताजी ने एक गांव बसाया था। उस गांव का नाम सीतामऊ हुआ। इसी से बिगड़ कर सीतामऊ नाम बना, जो इस समय इस राज्य का नाम है।

सीतामऊ का पूरा राज्य मालवा पठार पर स्थित है। अधिकतर भाग लहरदार रेगर (काली) मिट्टी का मैदान है। इसके बीच बीच में चपटी चोटी वाली छोटी छोटी पहाड़ियां उठी हुई हैं। पहाड़ियों पर अर्द्धसूखी छोटी छोटी झाड़ियां और कुछ पेड़ हैं।

चम्बल, शिव और सांसरी यहां की प्रधान नदियां हैं। लेकिन इस राज्य में चम्बल और उसकी सहायक नदियों शिव, सांसरी और सिप्रा की लंबाई केवल ३५ मील है।

सीता मऊ राज्य के शासक राठौर राजपूत हैं। इस राज्य का प्रारंभिक इतिहास बहुत कुछ रतलाम राज्य से मिला हुआ है।

रतलाम राज्य के शासक जोधपुर के महाराणा उदयसिंह के वंशज हैं। उदयसिंह के सातवें पुत्र महेशदत्त १६३४ में शाही दर्बार में नौकर हुए। कुछ समय के बाद महेशदास अपनी मां को लेकर नर्मदा नदी पर ओंकारनाथ के दर्शन को गए। मार्ग में सीतामऊ नामक गांव में वृद्धा माता बीमार पड़ीं और उनका स्वर्गवास होगया। महेश दास ने वहां के भूमिपति से भूमि मृतक संस्कार क्रिया के हेतु मांगी, किन्तु न मिली। इस पर उन्होंने छिपे तौर पर कुछ भूमि ली और वहां पर अपनी मां का मृतक संस्कार किया और आक्रमण द्वारा सीतामऊ के जमींदार से बदला लिया।

महेशदास के बाद रतनसिंह, रामसिंह और शिवसिंह राजा हुए। १६६५ में केशव दास राजा हुए। उन्होंने सीतामऊ को अपनी राजधानी बनाई, केशवदास के बाद गाजासिंह और फतेहसिंह राजा हुए। १७५३ में महाराज दौलतराव सिंधिया ने फतेहसिंह को उसके राज की सनद दी और राजा फतेहसिंह ने ४१,५०० रु० (सलीमशाही) सालाना देने का वादा किया।

राजसिंह (१८०२-६७)—

महाराज राज सिंह के समय में मरहठों ने बड़ा उपद्रव मचाया और ६०००० रु० सालाना चौथ लेने लगे, यद्यपि सनद केवल ४२ हजार ही की थी। १८२० में जान मैलकम ने मामला तै किया और सीतामऊ के राज को ६०,००० रु० सालाना चौथ देनी पड़ी। किन्तु राजा अँग्रेज़ों का साथी बना लिया गया और मरहठों के उपद्रव की शङ्का जाती रही। १८६० में राजा ने अपनी पुरानी सनद मरहठों के सामने पेश की जिससे उनकी सालाना चौथ में ५,००० रु० की माफ़ी मिली। १८५७ के विप्लव काल में राजा अँग्रेज़ों का साथी बना रहा। इस दोस्ती के बदले में राजा को २,००० रु० की एक खिलअत मिली।

१८८५ में राजा ने रेल आदि के लिये भूमि देना स्वीकार किया। राजसिंह बड़ा ही चतुर, सुजान और दयालु राजा था। राजसिंह की मृत्यु के बाद भवानी सिंह गद्दी पर बैठा। उसके पश्चात् २८ मई सन् १८८५ को बहादुरसिंह गद्दी पर बैठे। इस समय सिंधिया ने गद्दी पर बैठने का नजराना माँगा। इस पर अँग्रेज सरकार ने रोक डाली और कहा ऐसा नज़राना लेने का केवल अँग्रेज़ सरकार को ही अधिकार है। अँग्रेज़ सरकार ने कर को भी आधा अर्थात् ३५,००० रु० कर दिया और ३५०० रु० की एक खिलअत राजा को दी। १८८७ ई० में राजा ने महारानी के जुबली के अवसर

पर लकड़ी और अफ़ीम को छोड़ सभी कर माफ़ कर दिये।

बहादुरसिंह के बाद सारदूलसिंह गद्दी पर बैठे। इस समय राज्य में १८९९ में बड़ा भारी अकाल पड़ा जिसके कारण प्रजा की सहायता के लिये राजा को एक लाख पच्चीस हज़ार का क़र्ज़ लेना पड़ा।

सारदूलसिंह के मरने पर भारत सरकार ने राजा के कोई वंश न होने के कारण काछी बरौदा के ठाकुर के पुत्र रामसिंह को चुना और १९०० में गद्दी पर बैठाया। भारत सरकार ने ४०,६०० रुपया नज़राना लिया। १०१२५ रुपये की राजा को खिल-अत भारत सरकार ने दी जो नज़राने की रक़म में काट दी गई। २८ फ़रवरी सन् १९०५ में राजा को राज्य-प्रबन्ध का अधिकार दिया गया। १९०५ में राजा, राजकुमार और राजकुमारी वेल्स से मिलने इन्दौर गए।

राजा दीवान की सहायता से राज्य-प्रबन्ध करता है। राज्य सीतामऊ, भगोर और तीरोड तीन तहसीलों में बँटा है। यह तहसीलें तहसीलदार और नायब तहसीलदारों के प्रबन्ध में हैं। राजा के पास कुछ राजपूत सवार और १४४ पुलीस हैं जो राज्य-प्रबन्ध में राजा की सहायता करते हैं। राज्य की जनसंख्या लगभग २५००० है। राज्य के २० प्रतिशत भाग में खेती होती है। रबी खरीफ़ दो फसलें लोग तैयार करते हैं। ज्वार, बाजरा, कपास, गेहूँ, चना, जौ, अलसी आदि वस्तुएं पैदा होती हैं। राज्य की सालाना आय लगभग १ लाख २६ हज़ार और व्यय लगभग ८०,००० रु० है।

राज्य की जनसंख्या २८,४२२ है और सालाना आय २,७१,००० रुपये है।

वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस राजा सर रामसिंह के० सी० आई० ई० (राठौर राजपूत) हैं। आपको ११ तोपों की सलामी लगती है और आप चैम्बर आफ प्रिन्सेज़ के मेम्बर हैं।



बरवानी राज्य

बरवानी राज्य का पहले अवासगढ़ नाम था, किन्तु जब से बरवानी नगर राजधानी हुई तब से इस राज्य का नाम भी बरवानी पड़ गया। इस राज्य का क्षेत्रफल लगभग १,१७८ वर्गमील है। इसके उत्तर में धार राज्य, पूर्व में इन्दौर राज्य, दक्षिण और पश्चिम में खानदेश का ज़िला है।

यद्यपि यह राज्य विन्ध्याचल और सतपुड़ा पहाड़ों के पहाड़ी प्रदेश में स्थित है तो भी इसके तीन प्राकृतिक भाग हैं। (१) उत्तरी या नर्मदा का प्रदेश (२) जलगांव प्रदेश (३) सतपुड़ा प्रदेश। जालगांव प्रदेश में समतल मैदान हैं, किन्तु सतपुड़ा प्रदेश पहाड़ी है। इस राज्य में नर्मदा की घाटी में सुन्दर दृश्य दिखाई पड़ते हैं। नर्मदा नदी राज्य के अन्दर ५२ मील बहती है। इसके किनारे घाटी की भूमि बड़ी उपजाऊ है। नर्मदा नदी के किनारे किनारे घाट और मन्दिर हैं। इसी के किनारे कपिल मुनि का आश्रम था। मोहारा स्थान में कपिल और नर्मदा के संगम पर शिवरात्रि के अवसर पर बड़ा मेला लगता है। यहाँ सिद्धेश्वर और अमरेश्वर महादेव के मन्दिर हैं। मोरकाटा के समीप हरनफाल स्थान पर नर्मदा नदी बहुत कम चौड़ी है। गोही, ओमरी, गोमी, मोगरी, बैगोरखोदर, देव, नहाली, रुपावल आदि नदियाँ नर्मदा की सहायक हैं। लगभग ६८० वर्ग मील जंगल हैं।

जलवायु—

सालाना वर्षा नर्मदा प्रदेश में २१·४, जालगाँव प्रदेश में २३·५ और सतपुड़ा प्रदेश में १६·५ इंच है। लगभग २,५०,००० एकड़ भूमि में खेती होती है। अगहनी और बैसाखी दो खास फसलें होती हैं। लगभग ८५ फी सदी लोग खेती पर निर्भर करते हैं। केवल बारवानी, राजपुर और अंजर नगरों के निवासी दूसरा व्यवसाय करते हैं। इन स्थानों में पुतलीघर हैं जहाँ कपास साफ की जाती है। इसके सिवा खादी, कम्बल, दरी, निवाड़, चूड़ियाँ इत्यादि वस्तुएँ भी राज्य में बनाई जाती हैं।

संक्षिप्त इतिहास—

यहाँ के राजे सिसोदिया राजपूत हैं और उदयपुर के घराने से इनका सम्बन्ध है।

माल सिंह, बीरम सिंह, कनक सिंह, भीम सिंह, अर्जुन सिंह, वागजी सिंह, परसन सिंह आदि राजे हुए जिनके बारे में कुछ अधिक ज्ञात नहीं है। १६१७ में लिमजी गद्दी पर बैठे। उन्हीं के समय में गोविन्द पंडित ने अवासगढ़ राज्य का इतिहास लिखा। १६४० में चन्द्र सिंह राजा हुए। इन्होंने अवासगढ़ के क़िले को अच्छा न देख बरवानी को अपनी राजधानी बनाई। चन्द्र सिंह के बाद सूर सिंह, जोध सिंह, परबत सिंह, मोहन सिंह, अनूप सिंह, उमेद सिंह आदि राजे हुए। १७६४ में मोहन सिंह द्वितीय गद्दी पर बैठे। इन्हीं के समय में सर जान मैलकम ने मालवा का बन्दोबस्त किया। १८३६ में जसवन्त सिंह राजा हुए। १८५७ में इसके पश्चात् विप्लव हुआ तो ताँतिया टोपी ने राज्य को लूटा। १८६१ ई० में जसवन्त सिंह का शासन ठीक न होने के कारण अँग्रेज़ सरकार ने राज्य ले लिया, किन्तु फिर १८७३ में बागडोर राजा के हाथ दे दी गई। जसवन्त सिंह के मरने के बाद उनके भाई इन्द्रजीत सिंह १८८० में गद्दी पर बैठे। और १८८६ में राज्य का पूरा शासन उनके हाथ सौंपा गया। किन्तु ८ साल बाद ही उनकी मृत्यु हो गई।

रणजीत सिंह (१८९४)—

इन्द्रजीत के पश्चात् राणा रणजीत सिंह गद्दी पर बैठे। आपने डेली कालेज इन्दौर और मेओ कालेज अजमेर में शिक्षा पाई। यद्यपि अठारहवीं सदी में राज्य का बहुत बड़ा भाग निकल गया किन्तु कभी भी इस राज्य ने किसी को भी कर नहीं दिया और न कभी किसी से टाँका ही लिया। राजा दीवान की सहायता से शासन करता है। माल और न्याय के मामलों में राजा को सर्वोत्तम अधिकार प्राप्त हैं, किन्तु फ़ौजदारी व हत्या इत्यादि में राजा के अधिकार कम हैं। राज्य बरवानी, अंजर, राजपुर, सिलावद, पाटी, पाँसेमल, खेटिया, निवाली आदि परगनों में विभाजित हैं। प्रत्येक परगना एक कमासदार के अधिकार में है।

राज्य की जनसंख्या १,४१,११० है और सालाना आय १०,८३,००० रु० है।

वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस राना देवी सिंह हैं। आप चैम्बर आफ़ प्रिन्सेज के मेम्बर हैं और आपको ११ तोपों की सलामी लगती है।

राजगढ़

स्थिति—

राजगढ़ मध्य भारत में २३°२७′ अक्षांश से २४°११′ अक्षांश (उत्तर) तक और ७६°२३′ से ७७°१४′ देशान्तर (पूर्व) में स्थित है। इसका क्षेत्र-फल ९४१ वर्ग मील है। अंग्रेज़ी सरकार की ओर से सुथालिया रियासत (२२ वर्ग मील) भी इसी में शामिल समझी जाती है। इसके उत्तर में कोटा और ग्वालियर, दक्षिण में ग्वालियर और देवास, पूर्व में भोपाल तथा पश्चिम में खिलचीपुर रियासतें हैं।

रियासत के उत्तरी हिस्से में पहाड़ियाँ हैं और दक्षिणी हिस्सा मालवा के पठार का हिस्सा है। पार्वती नदी इसके पूर्वी सीमा के पास से होकर बहती है। नेवाज नदी रियासत में होकर बहती हुई पार्वती नदी से मिल जाती है। उत्तर की पहाड़ियों में विन्ध्याचल के बलुवा चट्टानों की अधिकता है और दक्षिण के पठार की मिट्टी दकन की मिट्टी का सिलसिला है। जङ्गलों में और पेड़ों के साथ बांस की अधिकता है। हिरन, तेंदुआ और जङ्गली सुअर काफी पाये जाते हैं। जलवायु शमशीतोष्ण है। औसत वर्षा २९ इञ्च होती है।

इतिहास

राजगढ़ और नरसिंह गढ़ के राजा ऊमत राजपूत हैं। ऊमत राजपूत परमार वंश की एक शाखा है। परमार वंश मालवा, उज्जैन और धार रियासतों में पिछली ६ शताब्दियों से राज कर रहे हैं। परमार वंश उस अग्निकुल में से है जिनका आदि निवास आबू पर्वत पर बताया जाता है।

राजा मांगराव के १२ रानियाँ थीं और ३५ पुत्र थे। उनमें से मुख्य अमरासिंह और समरा सिंह ने अपना राज्य राजपूताना और सिंध के रेगिस्तान में क़ायम किया। अमरकोट का प्रसिद्ध क़िला जिसमें अकबर पैदा हुआ था अमरासिंह के नाम पर बना था। उसके वंशज उभट राजपूत मालवा में राज्य करते रहे।

सन् १२२६ के लगभग अमरा और समरा राजपूत अपने जाति भाई सोधा लोगों से हार गये और उनकी मातहती में रहने लगे। सोधा लोग उन ३५ भाइयों में से एक थे जो परमार वंशीय राजा मगराव के पुत्र थे।

उमत इतिहास के अनुसार सारंगसेन ने सन् १३४७ में धार में अड्डा जमाया। सारंगसेन ने सिन्ध और पार्वती नदी के बीच की भूमि ले ली और चित्तौड़ के राना की ओर से उसे रावत की पदवी मिली। इसकी चौथी पीढ़ी में रावत किशन सिंह सिकन्दर लोदी की ओर से उज्जैन का गवर्नर नियुक्त किया गया। किशनसिंह को मालवा में २२ गाँव मिले। उसके बाद उसके पुत्र डूंगरसिंह ने राजगढ़ से १२ मील दूर डूंगरपुर बसाया। सन् १६०३ ईस्वी में वह तालेन के पास मार डाला गया और उसके ६ पुत्रों में से सबसे बड़े उदय जी ने नरसिंहगढ़ से १२ मील दूर रतनपुर को अपनी राजधानी बनाया। उदय जी को अकबर की ओर से सनद मिली। उदयसिंह का उत्तराधिकारी छतरसिंह १६३८ में शाही फ़ौज से लड़ते हुए मारा गया। उसका नाबालिग पुत्र मोहनसिंह अजबसिंह नामक दीवान की देख-रेख में गद्दी पर बैठा। अजबसिंह भी शाही फ़ौज से लड़ाई में मारा गया और राजकाज उसका पुत्र परसराम सँभालने लगा। परसराम ने पाटन में एक क़िला बनवाया। कुछ समय बाद मोहनसिंह परसराम पर शक करने लगा और आपसी झगड़े बढ़ने लगे। नतीजा यह हुआ कि राज्य के दो हिस्से हो गये। एक राजगढ़ दूसरा नरसिंहगढ़।

मोहनसिंह के बाद राजगढ़ की गद्दी पर उसका पुत्र अमरसिंह बैठा। उसके समय में उसके भाई सूरतसिंह को सुथालिया ग्राम के आसपास की

जागीर लिख दी गई। सूरतसिंह के वंशज अभी तक उस पर काबिज हैं। अमरसिंह के समय में जयपुर के सवाई जयसिंह ने राजगढ़ पर हमला किया। अमरसिंह नौ लाख रु० देने का वचन दिया तो सवाई ने राजगढ़ का घेरा छोड़ दिया। पर अमरसिंह ६ लाख ही दे सका बाक़ी ३ लाख के लिये अपने लड़के को गिरवी रख दिया। यह देख कर राजगढ़ के एक ज़मींदार ने तीन लाख देकर राजकुमार को छुड़ा लिया। यह राजकुमार अभयसिंह कुछ दिनों बाद अपने नौकरों द्वारा मार डाला गया। उसके बाद नरपतसिंह और नरपतसिंह के बाद उसका भाई जगतसिंह राजा हुआ। जगतसिंह ने १७४७ से १७७५ तक राज्य किया। उसके दस लड़के थे। सब से बड़ा हमीरसिंह राजा हुआ। बाक़ी ८ भाइयों को जिनके सन्तानें थीं, एक-एक गाँव की जागीरें दी गई। हमीरसिंह ने १५ वर्ष राज्य किया। आख़िरी दिनों में मरहठों ने हमला किया और तीन लाख की माँग पेश की। हमीरसिंह के न दे सकने पर उसका पुत्र प्रतापसिंह पकड़ लिया गया। कोटा के राजा की ज़मानत पर प्रताप सिंह छोड़ दिया गया और तभी से राजगढ़ सिन्धिया को कर देने लगा। प्रतापसिंह के दो बहिनें थीं। एक का विवाह उदयपुर और दूसरी का झाबुआ के राज-घरानों में हुआ। प्रतापसिंह के बाद उसका बेटा पृथ्वीसिंह राजा हुआ। सिन्धिया का कर चढ़ गया था इसलिये सिन्धिया की फ़ौज ने राजगढ़ पर क़ब्ज़ा कर लिया, पर अपील करने पर और ६ लाख हर्जाना देने पर राजगढ़ वापस कर दिया गया। पृथ्वीसिंह ने अपने भाई नवलसिंह को गोद लिया। इसने १५ वर्ष राज्य किया। सन् १८१८ में अँग्रेज़ी सेटलमेन्ट के समय टालेन और कुछ गाँव सिन्धिया को दे दिये गये। तभी से राजगढ़ और अँग्रेज़ी राज्य का सीधा नाता जुड़ गया। सन् १८३१ में नवलसिंह ने आत्महत्या कर ली। उसके बेटे रावत मोतीसिंह ने ४८ वर्ष राज्य किया। वह सागर में लार्ड विलियम बैंटिंग के दरबार में हाज़िर था। ८५,००० चन्दौरी रुपये सालाना देकर उसने सिन्धिया से टालेन वापस करा लिया। सन् १८५५ में रियासत की तरफ़ से २,५०० रुपया सागर-बम्बई सड़क बनाने के लिये दिया गया।

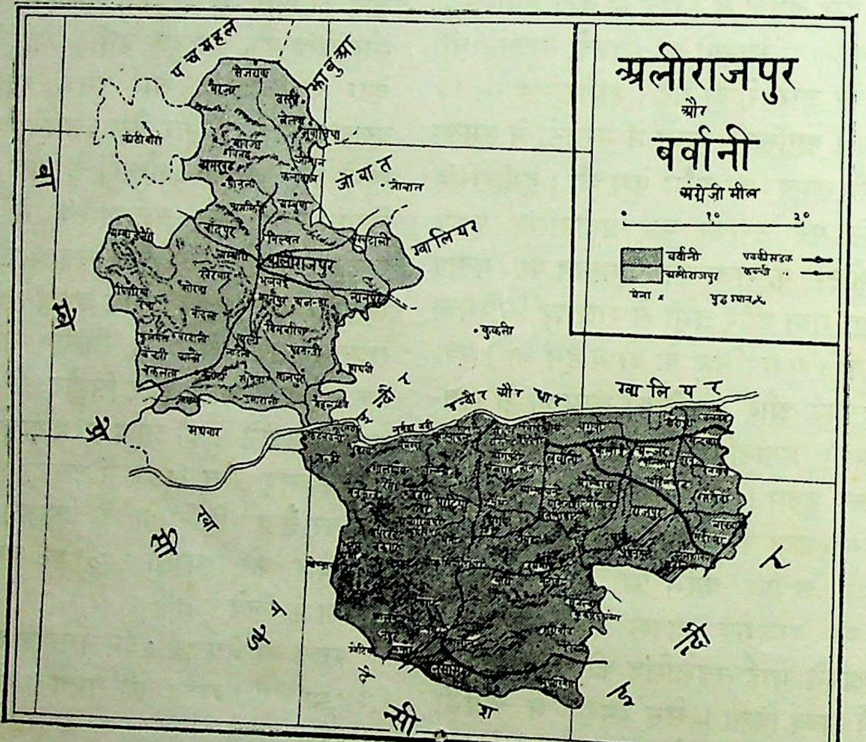
ग़दर के समय राजगढ़ दरबार ने किसी तरफ़ साथ न दिया। विप्लवकारी ५ लाख रुपया लूट ले गये। सन् १८३७ में मोतीसिंह को ११ तोपों की सलामी मंजूर हुई। १८७० में वह बहुत सख्त बीमार पड़ा। एक मुसलमान फ़क़ीर ने उसे अच्छा कर दिया उसी के प्रभाव से वह मुसलमान होकर नवाब मुहम्मद अब्दुल वसीह खाँ कहलाने लगा। १८८० में नमक पर से यातायात कर हटा लेने के बदले अँग्रेज़ी सरकार की ओर से ६६८॥) सालाना मिलने लगा। मोतीसिंह उर्फ़ अब्दुल वसीह खाँ के बाद उसका बेटा बलवन्तसिंह और उसके बाद उसका बेटा बख़्तावरसिंह गद्दी पर बैठा। उसने अपने पूर्वजों के रक्खे हुये मुसलमान नौकरों के साथ अच्छा बर्ताव किया। उसके पुत्र बलभद्रसिंह ने राजा होने पर अफ़ीम को छोड़ कर और सब चीजों पर से याता-यात कर हटा दिया। लार्ड डफ़रिन के समय में उसे रावत से राजा की पदवी मिली। उसने खिलचीपुर तक सड़क बनवाई और सिहोर से बियाओरा तक सड़क बनवाने में दो लाख रुपये ख़र्च किये। उसकी मृत्यु के बाद सन् १६०२ में उसका चाचा बानसिंह गद्दी पर बैठा। सिन्धिया के अलावा यह रियासत झालावार को लगभग ६००) रु० सालाना कालपीठ परगना के लिये देती है।

राज्य का क्षेत्रफल ६६२ वर्गमील और जन-संख्या १,३४,८६१ है। राज्य की सालाना आय ६,५०,००० रुपये है।

वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस राजा विक्रमादित्य सिंह (उमन राजपूत) हैं। आपको ११ तोपों की सलामी लगती है और आप चैम्बर ऑफ प्रिन्सेज के मेम्बर हैं।

अलीराजपुर राज्य

कहा जाता है कि आनन्ददेव अथवा उदयदेव राठौर एक बार शिकार खेल रहे थे। वे एक ख़रगोश के पीछे पड़े। ख़रगोश एक पहाड़ी पर चढ़ गया। राजा भी उसके पीछे पीछे पहाड़ी की चोटी पर पहुँचे। शिखर पर पहुँच कर खरहा लापता हो गया। राजा तो दिन भर का थका माँदा था ही, सो गया। रात को स्वप्न हुआ कि देवी कह रही है कि ऐ राजा ! तू अपना क़िला इस स्थान पर बनवा। जब सवेरे राजा उठा तो जहाँ खरहा लोप हो गया था उस स्थान को एक बहुत ही रमणीक स्थान पाया। वहाँ राजा ने ससाखूंथ गाड़ दिया और वहीं आनन्दावली नामक क़िला बनवाया जो अली के नाम से बाद को प्रसिद्ध हुआ। उसी दुर्ग के नाम पर राज्य का नाम अलीराजपुर पड़ा। पुरानी राजधानी अली जो लगभग १४३७ में बनी थी अब बर्बाद हो गई और वर्तमान राजधानी राजपुर है।



राज्य का क्षेत्रफल लगभग ८३६.६३ वर्गमील है। इसके उत्तर में पंचमहल ज़िला और बारिया राज्य है। दक्षिण में नर्मदा नदी है जो इस राज्य को बरवानी राज्य व खानदेश से अलग करती है। पूर्व में ग्वालियर, इन्दौर, झाबुआ और जोबाट राज्य हैं। पश्चिम में छोटा उदयपुर और रीवा काँथ एजेन्सी है। राज्य के अन्दर छोटी छोटी पहाड़ियों की पंक्तियाँ हैं। इन पहाड़ियों पर घने बन हैं। पहाड़ियों के बीच घाटियों में छोटे छोटे मैदान हैं। सबसे ऊँची चोटी राज्य के अन्दर २,२०० फीट है। नर्मदा, रटनी और सुखाद ये तीन नदियाँ हैं। यहाँ की जलवायु गर्म है। वर्षा साल में ३५ इंच होती है। ६० फी सदी आदमी खेती पर निर्भर करते हैं। खरीफ़ व रबी दो फसलें होती हैं। जुवार, बाजरा, उर्द, मूँग, तिल, गेहूँ, जौ, चना, ऊख आदि की पैदावार होती है। भील, भीलास नामक जातियाँ जंगलों में रहती हैं।

और जंगली वस्तुओं द्वारा अपना जीवन व्यतीत करती हैं।

राज्य का संक्षिप्त इतिहास—

अलीपुर राज्य के शासक राठौर घराने के राजपूत हैं। पहले पहल दीपसेन मोतीमोल नामक गाँव परगना भावरा में आकर बसे। उन्होंने एक गढ़ बनाया जिसके खँडहर अब भी मौजूद हैं। उसके बाद इस वंश की इक्कीसवीं पीढ़ी में उदयदेव या आनन्ददेव पैदा हुए और अली का क़िला बनवाया। इस समय भारत में सैयदों का राज्य था। आनन्ददेव के बाद गूगलदेव राजा हुए। गूगलदेव के बाद छठीं पीढ़ी में दीपदेव और सबलदेव हुए। सबलदेव ने सोंडवा ठाकुर वंश की नींव डाली। वर्तमान राजा इसी वंश के हैं।

जसवन्तसिंह (१८१८-६२)—

मकरानी मुसाफिर राना के समय में मंत्री के पद पर था इसलिये जसवन्तसिंह के बचपन काल में राज्य की बागडोर उसी के हाथ रही। केसरीसिंह ने गद्दी लेनी चाही और उपद्रव किया, किन्तु अँग्रेज सरकार ने जसवन्तसिंह का साथ दिया। १८५७ ई० में राज्य में कोई खास घटना नहीं हुई। राजा अँग्रेजों का सहकारी बना रहा। १८६२ ई० में राजा जसवन्तसिंह की मृत्यु हो गई और गंगादेव गद्दी पर बैठा, किन्तु अयोग्य होने के कारण अँग्रेज़ों ने निकाल दिया और छोटे भाई रूपदेव को राज्य सौंपा गया।

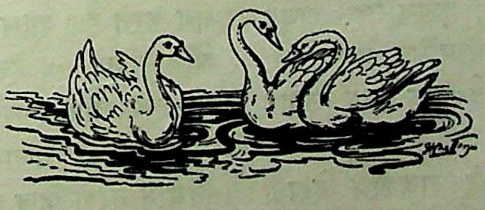
रूपदेव (१७७१-८१)—

१८८१ ई० के बाद विजयसिंह राजा हुआ। इस समय राना के बैरियों ने राज्य में उपद्रव किया, किन्तु जान बुडुल्फा ने सेना ले जाकर सब को दबा दिया।

प्रतापसिंह (१८६१)—

१८१२ ई० में विजयसिंह मरे। उनके बाद कोई उत्तराधिकारी न होने के कारण प्रतापसिंह गद्दी पर बैठे। इनको भारत सरकार ने स्वयं अपनी राय से गद्दी पर बैठाया। महाराज प्रतापसिंह भगवानसिंह साँडवाना के पुत्र हैं। १२ सितम्बर सन् १८८१ ई० में आप पैदा हुए और १० जून सन् १८९१ ई० में गद्दी पर बैठे। आपने डेली कालेज इन्दौर में शिक्षा पाई। १९०१ ई० में नानपुर और खतसाली के परगने प्रयोग के रूप में आपके हाथ सौंपे गए। १९०२ ई० में राजा अव्वल दर्जे के मजिस्ट्रेट बनाए गए। १९०४ ई० में राज्य की बागडोर भी हाथ में दे दी गई। राजा प्रतापसिंह मंत्री की सहायता से राज्य करता है। राजा की सहायता के लिये १० सवार एक दफादार और लगभग २०० पुलीस हैं। राज्य की जनसंख्या १,०१,९६३ है और सालाना आय ५,०६,००० रुपये है।

वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस राजा सर प्रताप सिंह के० सी० आई० ई० हैं। आप चैम्बर आफ़ प्रिन्सेज के मेम्बर हैं और ११ तोपों की सलामी आपको लगती है।



झाबुआ राज्य

लखाना वंशीय झब्बू नामक व्यक्ति ने सोलहवीं सदी में झाबुआ नगर की नींव डाली। उसी नगर के नाम पर इस राज्य का झाबुआ नाम पड़ा। इस राज्य के उत्तर में कुशलगढ़ और सैलाना राज्य हैं। दक्षिण में जोबत, अलीराजपुर व धार राज्य हैं। पूर्व में धार व ग्वालियर, पश्चिम में बम्बई प्रान्त के पँचमहल ज़िले हैं। राज्य का क्षेत्रफल लगभग १,३३६ वर्ग मील है। प्रायः सारा राज्य पहाड़ी पठारों और बनों से घिरा है। विन्ध्याचल पहाड़ की श्रेणियाँ राज्य में फैली हुई हैं जो १८०० फीट ऊँची हैं। पहाड़ियाँ घने बनों से ढकी हैं। पहाड़ियों के बीच की घाटियों में सैकड़ों छोटी छोटी नदियाँ हैं जो माही और अनास की सहायक हैं। इस राज्य की जन-संख्या लगभग १,४५,५२२ है।

इस राज्य की जलवायु आसपास के राज्यों से इस बात में भिन्न है कि गर्मियों में अत्यन्त गर्मी व जाड़ों में अत्यन्त शीत पड़ती है। वर्षा लगभग ३० इंच सालाना है। लगभग २½ हज़ार एकड़ भूमि में खेती होती है। खरीफ़ और रबी दो फसलें होती हैं। खरीफ़ में कपास, ज्वार, बाजरा, मकई, मूंग, उर्द आदि बोए जाते हैं। रबी में गेहूँ, चना, जौ, अलसी, सरसों, मसूर आदि की फसल होती है।

संक्षिप्त इतिहास

झाबुआ राज्य के शासक राठौर वंश के हैं। भीमानजी अकबर के समय में मुग़ल सेना में नौकर थे और कई एक युद्धों में कार्य्य कर चुके थे जिसके बदले में उन्हें मालवा में ५२ ज़िले मिले। १५८४ में भीमानजी की मृत्यु हो गई। भीमानजी के पश्चात् केशवदास, करनसिंह, मानसिंह, कुशलसिंह, अनूप सिंह, शिवसिंह, बहादुरसिंह, भीमसिंह, प्रतापसिंह, रतनसिंह आदि राजों ने १८४० ई० तक राज्य किया।

गोपालसिंह (१८४०-६५)—

गोपाल के लड़कपन में रानी राजकाज देखती रही। जब १८५७ में विप्लव हुआ तो राजा की अवस्था केवल १७ साल की थी। फिर भी राजा ने भागे हुए अँग्रेज़ अफ़सरों की बड़ी सहायता की। और राज्य में शान्ति स्थापित रखने में बड़ी दिलचस्पी से काम किया। इस कार्य्य के बदले में १८७८ ई० में राजा को १,२५,००० की खिलअत मिली। १८५६ ई० में राजा गोपाल को स्वतन्त्रता पूर्वक राज्य करने का अधिकार मिला। १८६३ ई० में राजा ने राज्य के अन्दर रुई का कर लेना बन्द कर दिया। १८७१ ई० में इन्दौर और झाबुआ राज्य में आपस में गाँवों का बदला हुआ। पेटलावद इन्दौर को और थांडला झाबुआ को मिला। सन् १८६३ ई० में राजा ने उदय सिंह को गोद लिया।

उदयसिंह (१८६५)—

२२ जनवरी सन् १८६५ ई० को राजा गद्दी पर बैठा। राजा को १८६८ ई० में राज-प्रबन्ध की आज्ञा मिली। १८९९ और १९०० ई० के भीषण अकाल के समय राजा को अँग्रेज़ सरकार द्वारा सींधिया से एक लाख और तीन लाख सतहत्तर हज़ार भारत सरकार से कर्ज़ लेना पड़ा। राजा ने इस रुपये का अच्छा उपयोग किया और प्रजा के सुख के लिए अच्छा प्रबन्ध किया।

राजा दीवान की सहायता से शासन करता है। हत्या-काण्डों को छोड़ सभी प्रकार के मुक़दमों का फैसला राजा के हाथों से होता है। राज्य झाबुआ, रम्भापुर, रानापुर और थाँडला चार परगनों में बँटा है। प्रत्येक परगना एक तहसीलदार के आधीन है। राजा के पास कोई सेना नहीं है, किन्तु रक्षा के लिये लगभग ६० सवार, कुछ पैदल सिपाही और दो बन्दूकें हैं। यह सिपाही महल के पहरेदारों का काम करते हैं। शासन प्रबन्ध के लिये राज्य में २४० कानिस्टेबिल, ७ हेड कानिस्टेबिल, ५ इन्सपेक्टर और एक चीफ़ इन्सपेक्टर है।

राज्य की सालाना आय ४,२८,००० रु० है। वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस राजा उदयसिंह (राठौर राजपूत) हैं। आप चैम्बर आफ़ प्रिन्सेज़ के मेम्बर हैं और आपको ११ तोपों की सलामी दी जाती है।



कलात

बलोचिस्तान एजेन्सी में प्रधान राज्य कलात है। लासबेला इसी का करद राज्य है। कलात राज्य के उत्तर में चागई जिला पूर्व में सिन्ध और मरी-बुगती फिरकों का प्रदेश है। इसके दक्षिण में अरब सागर और पश्चिम में ईरान (फारस) है। कलात हिन्दुस्तान के और देशी राज्यों से भिन्न है। कलात वास्तव में कई सरदारों का गिरोह है। कलात के खान उन सब के प्रधान हैं। सरवान (उच्च प्रदेश), झालावान (निचला प्रदेश), कच्छी, मकरान और खरान इस राज्य के प्रधान अंग हैं। इस राज्य का क्षेत्रफल ७३,२७८ वर्ग मील है। इस की जनसंख्या ३,४३,००० है। यहां के अधिकतर लोग सुन्नी मुसलमान हैं। कलात के खान और ब्रिटिश सरकार से दो सन्धियां हुईं। एक सन्धि १८५४ में हुई। दूसरी सन्धि १८७६ में हुई। इस सन्धि से कलात के खान ने ब्रिटेन की आधीनता स्वीकार कर ली। खान ने क्वेटा, नुश्की और नसीराबाद, बोलनदर्रे की जमीन सदा के लिये पट्टे (लीज़) पर देदी। तार निकालने और रेलवे ले जाने का अधिकार भी ब्रिटिश सरकार को दे दिया। खान को राज-प्रबन्ध के लिये वज़ीर आज़म से बड़ी मदद मिलती है। यह प्रान्तीय सरकार का कोई न कोई पेन्शनयाफ्ता पदाधिकारी होता है। कलात में एक पोलिटिकल एजेंट रहता है। गवर्नर जनरल का एजेंट इसी एजेंट द्वारा ब्रिटिश सरकार की ओर से राजनैतिक देख भाल करता है। कलात राज्य की आमदनी साढ़े चौदह लाख है। इस में से तीन लाख रुपया सरकारी कर्मचारियों पर व्यय होता है।

****

लासबेला

कलात का मातहत एक छोटा राज्य है। लासबेला का क्षेत्रफल ७१३२ वर्गमील है। इस राज्य के बहुत बड़े भाग में पुराली नदी की घाटी और उसका डेल्टा है। हब नदी का दक्षिणी मार्ग लासबेला को सिन्ध से अलग करता है। इस राज्य की जनसंख्या ६५,००० है। इसमें अधिकतर सुन्नी मुसलमान हैं। लासबेला की आमदनी लगभग ४ लाख है। यहां का शासक जाम कहलाता है। बलोचिस्तान का चीफ एजेन्ट यहां पर राजनैतिक नियंत्रण रखता है।

उत्तरी-पश्चिमी सीमाप्रान्त के देशी राज्य

अम्ब

सिन्दी के पश्चिमी किनारे पर यह केवल एक गांव है। पंजाब को ब्रिटिश राज्य में मिलाने के समय यह जागीर यहाँ के नवाब को सौंप दी गई थी। इस नवाबी में तानावाल और कुछ स्वाधीन पठान प्रदेश हैं। सब प्रदेश का क्षेत्रफल २०४ वर्गमील है।

✳✳✳✳

चित्राल

यह दक्षिण में लोराई चोटी से उत्तर में हिन्दू-कुश तक फैला हुआ है। इस राज्य का क्षेत्रफल ८,००० वर्गमील है। पहाड़ी प्रदेश होने पर भी चित्राल की घाटियाँ बड़ी उपजाऊ हैं। इनमें अच्छी खेती होती है। यहाँ का राजबंश अपने को तैमूरलंग का बंशज बतलाता है। कहते हैं तैमूर का एक वंशज यहाँ आया और उसने सिकन्दर के राजवंश की कन्या से ब्याह किया। उसी के पुत्र ने चित्राल राज-वंश की नींव डाली। यह ३०० वर्षों से 'इस प्रदेश पर राज्य करता चला आ रहा है। इस बीच में इसे अपने पड़ोसियों से लगातार लड़ाइयां लड़नी पड़ी हैं। १८८५ में चित्राल और ब्रिटिश सरकार का सम्बन्ध स्थापित हुआ। १८८९ में गिलगिट एजेन्सी बनी। इसी समय यहाँ के शासक अमीनुल मुल्क ने अपनी विदेशी नीति और सीमा की रक्षा ब्रिटिश सरकार को सौंप दी। इस राज्य की २५० मील की सीमा अफगानिस्तान से मिलती है। उत्तरी चित्राल की सीमा सोवियट रूस के समानान्तर चलती है। मलाकन्द का पोलिटिकल एजेन्ट चित्राल की विदेशी नीति को निर्धारित करता है। यहाँ के शासक को मेहतर कहते हैं। लेकिन प्रजा उनको बादशाह कहती है। वर्तमान मेहतर मुहम्मद नसीरूल मुल्क ने पेशावर के इस्लामिया कालेज से बी० ए० पास किया। इसमें वे सर्व प्रथम रहे। इन्हें फारसी की शायरी का बड़ा शौक है। २००० शेरों की उन्होंने एक पुस्तक भी लिखी है।

चित्राल के मेहतर ब्रिटिश सरकार के पक्के राज-भक्त हैं। बड़ी लड़ाई और अफगानिस्तान की लड़ाई में चित्राल ने बड़ी मदद दी। १९३४ में अफगानिस्तान और हिन्दुन्तान की सीमा निश्चित करने के लिये जो कमीशन बना उसमें ब्रिटिश सरकार की ओर से एक प्रतिनिधि चित्राल के मेहतर थे।

✳✳✳✳

दीर

यह राज्य बड़ा पहाड़ी है। पंजकोरा और उसकी सहायक नदियां यहीं होकर बहती हैं। इस राज्य का क्षेत्रफल ३००० वर्गमील है। दीर के नवाब यहां के सरदारों के मुखिया हैं। यहां के अधिकतर लोग यूसुफजई पठान हैं। जो प्राचीन निवासी पठान नहीं हैं वे दीर कोहिस्तान में रहते हैं। दीर से मला-कन्द तक मोटर की सड़क बन गई है।

✳✳✳✳

स्वात

इस राज्य का क्षेत्रफल ४८०० वर्गमील और जन-संख्या २,००,००० है। यहाँ के शासक मियांगुल गुलशहज़ादा सर अब्दुल वदूद स्वाद प्रसिद्ध आरबुन्द साहब के वंशज हैं। स्वात की राजधानी सैदूशरीफ (नगर) है जो मलाकन्द से ३८ मील दूर है। सैदूशरीफ से मलाकन्द को एक सड़क बनी हुई है।

✳✳✳✳

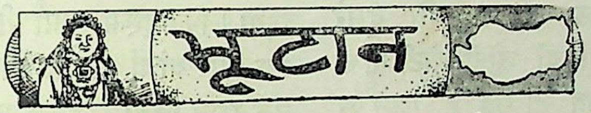


शिकम

इस राज्य के उत्तर और उत्तर-पूर्व में तिब्बत, दक्षिण-पूर्व में भूटान, दक्षिण में दार्जिलिंग का जिला और पश्चिम में नैपाल है। इस राज्य का क्षेत्रफल २,८१८ वर्गमील और जनसंख्या १,१०,००० है। यहां भूटिया, लेपचा और नैपाली लोग रहते हैं। कुछ लोग बौद्ध और कुछ हिन्दू हैं। शिकम होकर तिब्बत की चुम्बी घाटी को सीधा मार्ग गया है। हिमालय की जो प्रधान श्रेणी पश्चिम से पूर्व को जाती है वही श्रेणी शिकम और तिब्बत के बीच में सीमा बनाती है। प्रधान श्रेणी से निकल कर दक्षिण की ओर आने वाली सिंह लीला और चोला (पर्वत) शाखायें शिकम को नैपाल और भूटान से अलग करती हैं। सिंह लीला पर्वत पर ही २८१४६ फुट ऊँची किंचिंचिंगा चोटी स्थित है। चोला श्रेणी सिंह लीला से भी अधिक ऊँची है। यह डोंक्याला के पास प्रधान श्रेणी से अलग होती है।

कहा जाता है कि शिकम पूर्वी तिब्बत (लासा के पास) से आकर यहां बस गये। १७९२ ई० में नैपाल के गुरखा लोगों ने शिकम पर हमला किया। एक चीनी फौज ने उन्हें पीछे हटा दिया। १८१४ ई० में नैपाल की लड़ाई के समय अंग्रेज़ों ने शिकम से मित्रता कर ली। लड़ाई समाप्त होने पर नैपाल का जो पूर्वी भाग लिया गया वह शिकम को दे दिया गया। शिकम ने आगे चलकर दार्जिलिंग का पहाड़ी जिला १२,००० रु० वार्षिक के बदले अंग्रेज़ों को दे दिया। पहले यह राज्य बंगाल सरकार की देख भाल में था। १९०६ से इसकी देखभाल भारत सरकार के हाथ में है।

धान, मकई और छोटी नारंगी यहाँ की प्रधान उपज है। यहां होकर कई व्यापार-मार्ग तिब्बत को गये हैं। हाल में यहां अच्छी सड़कें भी बन गई हैं। सालभर में ४० या ५० लाख रुपये का व्यापार हो जाता है। इस राज्य की आमदनी ५½ लाख रुपये है।

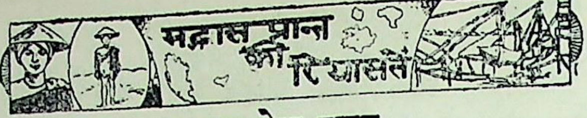


भूटान

हिमालय की प्रधान श्रेणी और बंगाल तथा आसाम के मैदान के बीच में भूटान का पहाड़ी राज्य पूर्व से पश्चिम तक १४० मील लम्बा है। इसका क्षेत्रफल १८,००० वर्गमील और जन-संख्या ३ लाख है।

भूटान के पहाड़ी ढालों पर सिन्दूर, बांझ देवदार आदि कई तरह के पेड़ों के बन हैं। ऊँची उपजाऊ घाटियों में धान और मक्का की खेती होती है। पहले भूटान में टेकपा लोग रहते थे। १६५० ई० के लगभग यहां तिब्बत के लोग आ डटे। १७७२ ई० में जब भूटिया लोगों ने कूच बिहार के राजा पर चढ़ाई की तो उसने अँग्रेज़ों से सहायता मांगी। भूटानियों ने आसाम पर भी कई हमले किये। जो अँग्रेजी राजदूत उनके दरबार में गया उसने सन्धि पर हस्ताक्षर कर दिये जिससे आसाम के द्वार (प्रदेश) भूटान को मिल गये। लेकिन अँग्रेज़ी राजदूत के लौटने पर सन्धि तोड़ दी गई और द्वार के प्रदेश अँग्रेज़ी राज्य में मिला लिये गये। १८६५ में भूटान का कुछ और भाग अँग्रेज़ी राज्य में मिला लिया गया। लेकिन इसके बदले में भूटान को हर साल ५०,००० रु० मिलने लगा। १९०४ ई० में जब ब्रिटिश फौज ने लासा (तिब्बत) पर चढ़ाई की तब भूटान ने बड़ी मदद दी। भूटान में सड़क की पैमायस हो गई। और भूटान का राजा फौज के साथ गया। उसने तिब्बत और ब्रिटेन में सन्धि करवा दी। १९१० से भूटान को १ लाख रुपया मिलने लगा। भूटान ने विदेशी नीति ब्रिटेन को सौंप दी और ब्रिटिश एजेन्ट अपने यहां रख लिया।

भूटान में धर्म-राजा धार्मिक मामलों का प्रबन्ध करते हैं। वे बुद्ध भगवान के अवतार माने जाते हैं। धर्म राजा के मरने पर दो वर्ष तक प्रतीक्षा की जाती है। इसी बीच में राजवंश में जो बालक पैदा होता है वह धर्म राजा माना जाता है। भूटानियों के विश्वास के अनुसार धर्म राज भूटान के राजवंश में ही जन्म लेता है। देवराजा देश का प्रबन्ध करता है।



ट्रावन्कोर राज्य

यह मद्रास प्रेसीडेन्सी में एक देशी राज्य है। यह ८.४ से १.२२ उत्तरी अक्षांसों तक और ७.१२ से ७७.३८ पूर्वी देशान्तरों तक फैला हुआ है। इसके उत्तर में कोचीन राज्य, पूर्व में मदूरा और टिने-वली के जिले हैं और दक्षिण तथा पश्चिम में हिन्द महासागर है। इस राज्य की लम्बाई १७८ मील और चौड़ाई ७५ मील है। इसका क्षेत्रफल ७६२५ वर्ग मील है। यहाँ की जनसंख्या ४००६०६२ है। यह राज्य १८,००,००० रु० सालाना ब्रिटिश सरकार को कर देता है। राज्य-शासन के ख्याल से राज्य को ३१ तास्लुकों में बाँट दिया गया है। त्रिनेन्द्रुम यहाँ का मुख्य नगर और राजधानी है।

ट्रावनकोर दक्षिणी भारतवर्ष का एक बहुत ही बड़ा रमणीक देश है। जो पर्वत इसको कारोमंडल के किनारे से अलग करते हैं, वे ८००० फुट तक ऊँचे हैं और सुन्दर बहुमूल्य बनों से ढके हैं। समतल मैदान में १० मील की एक नारियल और दूसरे पेड़ों की पट्टी है। ऊँची पहाड़ियाँ छोटी छोटी नीची पर्वत श्रेणियों में विभाजित हो गई हैं जिन पर मन्दिर और चर्च बने हुए दिखाई पड़ते हैं। यह पहाड़ी प्रदेश भिन्न भिन्न भाँति के हैं। जहाँ भिन्न प्रकार की जलवायु पाई जाती है। और तरह तरह के वृक्ष और जंगल पाए जाते हैं। सचमुच बहुत से स्थान ऐसे हैं जिनका भली भांति निरीक्षण अब तक नहीं हुआ है। कुछ प्रदेश योरुपीय और देशी मालदारों को दिये गए हैं कि वह लोग उन स्थानों को उन्नति दें। इसीलिए चाय और काफी की पैदावार दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है। लगभग १०,००० एकड़ भूमि में चाय और काफी की अच्छी पैदावार होती है। सब से अधिक ऊँची चोटी अनैमल की है जो ८,८५७ फुट ऊँची है और दूसरी चोटियाँ ८२०० फुट ऊँची है। अधिक ऊंचे स्थानों पर चाय बहुत होती है, उसके नीचे वाले प्रदेशों में मिर्च, रबर, अदरक और मैसूर के पेड़ हैं। दोनों स्थानों पर बहुमूल्य बन पाए जाते हैं।

यहां की मुख्य नदी पेरियर है। यह नदी लगभग ६० मील तक नावों के चलने योग्य है। पाम्बई, अधिनक्वाएल और कल्लद दूसरी प्रसिद्ध नदियाँ हैं। और इनके सिवा भी बहुत सी छोटी छोटी नदियां हैं। किनारे किनारे झील हैं जो नहरों द्वारा मिली हैं और नावों के चलाने का काम देती हैं।

चावल, चाय, नारियल, काफी, मसाले, शहद, मोम, मिर्चा आदि वस्तुओं की पैदावार होती है। यहाँ उत्तरी-पूर्वी और दक्षिणी-पश्चिमी दोनों मानसूनों से वर्षा होती है। साल में ८९ इञ्च वर्षा होती है।

इस राज्य का प्राचीन इतिहास प्रायः अज्ञात है किन्तु कहानियों और कहावतों द्वारा पता चलता है कि परशुराम ने सारे मलयालम-तट को अपने अधिकार में कर लिया। उसके बाद नम्बूरिस नामक ब्राह्मण ने अपने अधिकार में ६८ वर्ष ईसा के पूर्व तक रक्खा। तब ब्राह्मणों ने क्षत्रिय सरदारों को बारह बारह साल के लिये राज्य करने को चुनना आरम्भ किया। यह रिवाज लगभग चार सौ सालों तक जारी रही। चीरामन पीरूमल ने राज्य को सरदारों में बांट दिया। फिर इरूमा वर्मा पीरूमल ने १६८७ से १७१७ तक और वांचों मार्तण्ड पीरूमल ने १७२९ से १७५८ तक राज्य किया। इसके पास काफी सेना थी। यह सेना योरोपीय ढंग पर तयार की गई थी और पुर्तगीज, डच और इटैलियन अफ़सर इसका निरीक्षण करते थे।

जब १७८६ से १७९२ तक टीपू से और अँग्रेजों से युद्ध हुआ तो ट्रावनकोर राज्य अँग्रेजों का साथी बना रहा। जब टीपू ने १७८८ में मालावार पर छापा मारा तो राजा ने घबड़ाकर अँग्रेजों से संधि कर ली और सहायक सेना रख ली। यह सेनाएँ अभी राज्य में पहुँच भी न पाई थी कि टीपू ने ऐकोटा और कोडंगलूर के किले पर अपना अधिकार बताते हुए ट्रावनकोर पर धावा किया किन्तु वह भगा दिया गया। उसी साल फिर उसने दोबारा आक्रमण किया किन्तु फिर वह हरा कर बाहर निकाल दिया गया। १७९५ में राजा और अँग्रेजों से दूसरी संधि हुई। इसके अनुसार टीपू द्वारा छीने गए तीन जिले राजा को वापस दिए गए। जो सेना दी गई उसका खर्च राजा के जिम्मे रक्खा गया। राजा से प्रतिज्ञा कराई गई कि राजा अन्य किसी योरोपीय जाति से संधि न करेगा और न

उनको रहने का स्थान देगा। और आवश्यकता पड़ने पर अँग्रेजों की सहायता करेगा। राजा बाल राम वर्मा (जिसके साथ यह संधि हुई थी) की मृत्यु हो गई। उसके बाद उसका भतीजा उसी नाम से गद्दी पर बैठा। १८०५ में फिर एक संधि अँग्रेजों ने राजा से की। इसके अनुसार राजा बिना अँग्रेजों की आज्ञा के किसी से संधि या लड़ाई नहीं कर सकता था और किसी भी योरोपीय को बिना कम्पनी की आज्ञा के सेना में नहीं रख सकता था। इसी राजा के समय में कुछ गड़बड़ी हुई। किन्तु फिर शांति स्थापित हो गई।

सन् १८११ में राजा राम वर्मा की मृत्यु हो गई। लक्ष्मी रानी गद्दी पर बैठी। किन्तु उसने राज्य शासन कर्नल मुनेरा रेज़ीडेन्ट के हाथ सौंप दिया। १८१४ में रानी मरी। उसके बाद उसकी बहिन पार्वती रानी, लक्ष्मी रानी के पुत्र राम वर्मा की रीजेन्ट बनी। राम वर्मा ने १७ साल तक राज्य किया उसके बाद छोटा भाई मार्तण्ड वर्मा १८४६ में गद्दी पर बैठा फिर वाँची बाल राम वर्मा ने १८८० तक राज्य किया। १८८० में वांची बाल राम की मृत्यु के बाद राम वर्मा राजा हुआ। १८९२ में अँग्रेज़ सरकार ने राजा को एक सनद दी। जिसके अनुसार राजा मालावार रीति व रिवाज़ के अनुसार राज घराने की लड़की के बड़े पुत्र को गद्दी दे सकता है।

यह एक अद्भुत रिवाज मालावार का है कि घर की लड़की का पुत्र जायदाद का अधिकारी होता है। लड़के या किसी और मर्द का पुत्र शादी कर सकता है। नम्बूरी के बीच यह रिवाज़ है कि केवल बड़ा पुत्र शादी कर सकता है और जायदाद का मालिक हो सकता है दूसरा नहीं। इसके विपरीत पूर्वी किनारे पर लड़कियां बिना शादी किए हुये किसी अवस्था तक रह सकती हैं यहां तक कि बिना ब्याहे सारा जीवन व्यतीत कर देती हैं। नायर लोगों के बीच लड़कियों का ब्याह लड़कपन में कर दिया जाता है। बड़े होने पर वे लड़कियां अपनी जाति में या ब्रह्मण जाति में से अपना वर चुन सकती हैं और पहले वाले पति को मना करने या दावा करने का कोई अधिकार नहीं हैं। मलावार की भांति इस नीति में भी जायदाद का अधिकारी बहिन का पुत्र होता है। यदि किसी के बहिन नहीं होती तो उसे बहिन ढूँढ़नी पड़ती है। यद्यपि ट्रावनकोर के राना क्षत्रिय कहलाते हैं तो भी उनकी गद्दी इसी प्रथा के अनुसार होती है।

आय और व्यय। ट्रावनकोर राज्य की सालाना आय २ करोड़ २५ लाख रु० और सालाना व्यय १ करोड़ ७५ लाख रु० है।

ट्रावनकोर राज्य का सालाना व्यय

१—शिक्षा	=३९.५९ लाख=	२२.४०
२—प्रजा कार्यों में	=२९.७२ लाख=	१६.८१
३—दान	=२३.४७ लाख=	१३.२८
४—राज महल	=१४.५८ लाख=	८.२५
५—न्याय विभाग	=१०.१२ लाख=	६.१४
६—पेंनशन	=१०.०७ लाख=	५.७०
७—सफाई तथा औषधालय	=९.७४ लाख=	५.५१
८—भेंट	=८.११ लाख=	४.५७
९—पुलीस	=२.६७ लाख=	३.२१
१०—सेना	=५.४१ लाख=	३.०६
११—शासन	=४.१४ लाख=	२.३४
१२—और दूसरे कार्यों में	=१५.३३ लाख=	४.६७

ट्रावनकोर राज्य उन्नतशील राज्यों में से एक राज्य है अब राज्य का ध्यान शिक्षा तथा शिल्प को उन्नति देने की ओर आकर्षित है। कारखानों तथा खेती बारी को उन्नति देने के लिये जलप्रपातों से 'बिजली प्राप्त करने का प्रयत्न किया जा रहा है। ट्रावनकोर चाय तथा रबर का घर है। मुलायम लकड़ी जो यहां के जंगलों में प्राप्त होती है। उसका उपयोग भी आरम्भ हो गया है। राज्य में कवीलन के समीप चीनी मिट्टी पाई गई है। इसलिये राज्य की ओर से कारखाना खोला जा रहा है। इससे सभी भांति का मिट्टी की वस्तुएँ तैयार की जावेंगी और राज्य की आय की बृद्धि होगी। राज्य के अन्दर सड़कों तथा नदियों में होकर आने जाने की अच्छी सुविधा है। राज्य में सड़कें काफी संख्या में पाई जाती है। राज्य की राजधानी पुनिया के हवाई मार्ग पर है और वायुयानों का स्टेशन है। मछली मारने का भी व्यवसाय ट्रावनकोर राज्य में बहुत होता है और यहां से मछलियां बाहर देशों को भेजी जाती हैं। घरेलू रोजगार

और धंधे भी राज्य में बहुत से हैं। जिनमें खद्दर, गाढ़ा बुनना, बेलबूटे काढ़ना और लकड़ी पर नक्काशी निकालने के काम प्रधान हैं।

ट्रावनकोर प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर हैं यहां भारत वर्ष के सभी भागों से लोग घूमने के लिये आते हैं। पश्चिमी घाट पर अरब तथा हिन्द महासागर से आने वाली हवायें वर्षा लाती है। इसलिये सदैव यह पहाड़ी भाग हरा भरा रहता है। यहां की नदियां सरोवर, उथली झीलों तथा राज्य नहरों की सुन्दरता बढ़ाती हैं।

राज्य की ओर से जंगलों में जानवरों को मारे जाने से बचाने के लिये अच्छा प्रबन्ध किया गया है। राज्य की ओर से एक गेम सैंकचुअरी बनाई गई है जिसकी उपमा भारतवर्ष में और कहीं नहीं हैं। यह परिपाल झील के किनारे पर स्थित है। यहां पर यात्री जंगली जानवरों का दृश्य देखने आते हैं। हाथी, जंगली भैंसे, सांभर, चीते तेंदुए तथा शेर यहां पर अपने स्वभाविक भाव से घूमते हुये दिखाई पड़ते हैं।

कोचीन

कोचीन का देशी राज्य मद्रास प्रान्त के आधीन है। मलावार का जिला इस राज्य को उत्तर-पूर्व और पश्चिम से घेरे हुए है, दक्षिण में ट्रावनकोर का राज्य और दक्षिण-पश्चिम अरब सागर है। कोचीन नामक नगर जो मलावार जिले में अँग्रेज़ी राज्य है और पहले इसी राज्य की राजधानी था, उसी नगर के नाम पर इस राज्य का नाम कोचीन पड़ा। यह राज्य ७ भागों में बँटा है। इसका क्षेत्रफल १४१७ वर्गमील और जन-संख्या १२०५०१६ है।

राज्य के अन्दर छिछली झीलें हैं। जो गरमी के दिनों में सूख जाती हैं और कभी कभी तो केवल २।फ़ुट ही गहरी रह जाती हैं। इन झीलों में पानी पश्चिमी घाट की छोटी छोटी नदियों द्वारा आता है। वर्षा ऋतु में इन नदियों में बहुत बाढ़ आती है और कभी कभी तो ये नदियां २४ घंटे में १६ फ़ुट बढ़ जाती हैं। राज्य की मुख्य नदियां पोनानी, टाटा मँगलम, करुवानूर, सलाकूदी और अलवई हैं। राज्य की मुख्य उपज चावल और नारियल है। यहां लग-भग ५० तरह का चावल पैदा होता है। चावल के सिवा कपास, कहवा, पान, ईख, मिर्च, दाल, अदरख आदि की भी उपज होती है।

कोचीन के शासक चेरामन पीरुमल के वंशज हैं। पीरू ने इस राज्य की नींव डाली। १५०२ ई० में पुर्तगाल वालों को राज्य में रहने की आज्ञा मिली। उन्होंने अपने क़िले बनाये और वे व्यापार करने लगे। १६६३ ई० में कोचीन के राजा से और डच लोगों से सन्धि हो गई तो पूर्तगीज़ निकाल बाहर किये गये। १७७६ ई० में हैदर अली ने राज्य पर अपना अधिकार जमाया। १७९१ ई० में राजा और ब्रिटिश ईस्ट इन्डिया कम्पनी के बीच सन्धि हुई जिसके अनुसार कोचीन के राजा ने अँग्रेज़ी की अधीनता स्वीकार कर ली और अंग्रेज़ों को सालाना कर देने का भी बचन दिया।

हिजहाईनेस राजा श्री सर राम वर्मा, जी० सी० एस०, आई०, जी० आई०, ई० सी० १८५२ में पैदा हुए १८९५ में वे गद्दी पर बैठे और १८१४ में उन्होंने गद्दी त्याग दी। उसके पश्चत् द्वितीय श्री सर राम वर्मा जी० सी० आई० ई० गद्दी पर बैठे। आप का जन्म ६ अक्टूबर १८५८ में हुआ था और २१ जनवरी १९११ महाराज में आप बड़े समारोह के साथ गद्दी पर बैठाए गए। प्रधान मंत्री दीवान सर आर० के० सनमुखम् चेट्टी के० सी० आई० ई० हैं।

कोचीन राज्य के बनों में बहुमूल्य लकड़ी पाई जाती है। इन वनों में आवनूस, चीर और दूसरी काली लकड़ियों के वृक्ष हैं। राज्य के अन्दर बहुत सी सड़कें हैं और एक रेलवे लाइन शोरनोर से इरना-कुलम राजधानी तक जाती है। और जंगलों से लकड़ी आदि के ढोने के लिये एक भाफ वाली ट्राम्बे का भी प्रयोग होता है।

राज्य की सालाना आय लगभग ८० लाख रुपये हैं।

पद्दू कोट्टाई

यह राज्य उत्तर-पश्चिम में त्रिचनापली और दक्षिण में रामनद जिलों से घिरा हुआ है। इसके पूर्व में तंजौर का जिला है। प्राचीन समय में इस राज्य का उत्तरी भाग चोल राज्य में और दक्षिणी भाग पांडव राज्य में शामिल था। कर्नाटक की लड़ाइयों के समय (१७५२) से ही यहां के टोंडमान राजा ने अँग्रेजों की बड़ी सहायता की है। १७५६ में यहाँ से भोजन भेजा गया और यहाँ के सिपाही ईस्ट-इंडिया कम्पिनी के सेनापति महम्मदयूसूफ के साथ हो गये। हैदरअली और अँग्रेजों की लड़ाइयों में भी इस राज्य ने अँग्रेजों की सहायता की। १८०६ में इस राज्य में हैदरअली (टीपू०) के राज्य का कुछ हिस्सा मिला दिया गया। इस राज्य के ⅓ भाग में वन है। लेकिन यहाँ के वन की लकड़ी बहुत अच्छी नहीं है। इस राज्य की प्रधान फसल धान है। इस राज्य में कारबार की कमी है। लेकिन सड़कें अच्छी हैं। प्रधान नगर राजधानी पद्दू कोट्टा है। इस राज्य का क्षेत्रफल ११७९ वर्गमील जनसंख्या ४ लाख और आमदनी २१ लाख रुपया है।

✱✱✱✱

बंगनापल्ली

मद्रास प्रान्त का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल २७५ वर्गमील जन संख्या ५०,००० और आमदनी ३½ लाख रुपया है। यह राज्य दो टुकड़ों में बटा हुआ है जो एक बार हैदराबाद से मैसूर में शामिल किये गये और फिर मैसूर से हैदराबाद में मिला दिये गये। १८०० ई० में निज़ाम ने इस राज्य की देख भाल ईस्ट इंडिया कम्पनी को सौंप दी। चोलम (ज्वार) यहाँ की प्रधान उपज है। यहाँ का नवाब ब्रिटिश सरकार को किसी प्रकार का कर नहीं देता है न यह ब्रिटिश सरकार के लिये फौज रखता है। इस राज्य की आमदनी ३ लाख रुपया है। यहाँ के नवाब को ९ तोपों की सलामी दी जाती है।

✱✱✱✱

सन्दूर

दक्षिण भारत में सन्दूर ही एक एक ऐसा राज्य है जो ट्रावनकोर रेजी डेन्ट द्वारा सीधे भारत सरकार से सम्बन्ध रखता है। अठारहवीं सदी के आरम्भ में मराहठा सरदार सिद्ध जी राव ने इस राज्य को बेदार वंश के एक पालीगर से जीता था। कर्नाटक और मैसूर की लड़ाइयों ने यहाँ के राजा मरार राव ने अँग्रेजों का पक्का साथ दिया। १८७६ ई० में ब्रिटिश सरकार ने भी इन्हें राजा मान लिया। इस राज्य में मेंगनीज और दूसरे खनिज बहुत हैं। यहाँ के वनों में मैसूर की तरह चन्दन के पेड़ पाये जाते हैं। इस राज्य का क्षेत्रफल १६७ वर्गमील और जनसंख्या १४,००० है। यहाँ की आमदनी १½ लाख रुपया है। यहाँ के वर्तमान शासक राजा श्रीमन्त यसवन्त राव हिन्दराव घोर पादे सेनापति हैं। आप १९०८ में पैदा हुए १९२८ में गद्दी पर बैठे और १९३० में राजप्रबन्ध की बाग डोर अपने हाथों में ली। राज प्रबन्ध के लिये एक काउन्सल है। कानून बनाने वाली भी एक सभा है। जिसमें ग़ैर सरकारी सदस्यों का बहुमत है। सन्दूर नगर में चीफ कोर्ट है जिसका सब से बड़ा जज न्यायाधीश कहलाता है।

✱✱✱✱

भाव नगर

खम्भात खाड़ी पर काठियावाड़ के प्रायद्वीप में में यह राज्य स्थित है। इस राज्य का क्षेत्रफल २९६१ वर्गमील और जनसंख्या ५,००,००० से ऊपर है।

इस राज्य में सिहोर और कुँदला पहाड़ियों की श्रेणियाँ फैली हुई हैं। कुछ भाग में नमक ही नमक है।।कुछ भाग में काली मिट्टी पाई जाती है। यहाँ मुख्य नदियाँ शतरंज, बगप और मलन है। इन नदियों से सिंचाई का काम होता है। यहाँ की मुख्य उपज अनाज, कपास, ऊख और नमक है। यहाँ की सालाना आय १८५ लाख रु० है। दक्षिणी तट और भीतरी भाग की जलवायु अच्छी है और जगहों में गरमी अधिक पड़ती है। यहाँ साल भर में २५ इंच वर्षा होती है। राज्य की राजधानी भाव नगर है।

यहाँ के शासक गोहल राजपूत हैं। यहाँ के शासकों ने समुद्री डाकुओं के नाश करने में ब्रिटिश गवर्नमेन्ट की सहायता की। इसलिये ब्रिटिश सरकार ने यहाँ के शासकों से १८६० और १८६६ ई० में संधि की। जिससे यह एक दूसरे के मित्र हो गए। यहाँ के वर्तमान शासक हिज हाईनेस महाराजा रावल श्रीकृष्ण कुमार सिंह जी हैं। आप १९१९ में गद्दी पर बैठे और १९३१ में आपने राज्य के शासनकी बागडोर अपने हाथों में ली।

इस राज्य की प्रधानता इसके बन्दरगाहों के कारण है। यहाँ के बन्दरगाहों द्वारा साल में ३ करोड़ रु० का माल बाहर से भीतर आता है। नवानगर बन्दरगाह में ६००० जहाज़ सालाना आते हैं और दूसरे बन्दरगाहों पर २००० सालाना जहाज़ आया जाया करते हैं। बन्दरगाहों से, रूई, तेल, घी ऊन, सूती कपड़ा इत्यादि बाहर भेजा जाता हैं। धातु, चावल, कपड़ा और लकड़ी बाहर से आती है। काठियावाड़ प्रान्त का ६१ प्रतिशत व्यापार यहीं के बन्दरगाहों द्वारा होता है।

राज्य के अन्दर ३२५ मील राज्य की रेलवे है। राज्य में २० प्रिन्टिङ्ग प्रेस, ६२ फ्लावर मिल्स, १३ तेल के कारखाने और आठ साबुन केकारखाने हैं।

सरप्रभाशंकर पट्टानी ने प्रजा की दशा सुधारने के लिये बड़ा प्रयत्न किया और ऐसा सुधार किया है जिससे प्रजा का बोझ बहुत कुछ हलका होगया है। ४ प्रतिशत सूद पर कर्ज़ राज्य की ओर से प्रजा को दिया जाता है।

राज्य का शासन और न्याय विभाग दोनों अलग हैं। राज्य के अन्दर कला कौशल सम्बन्धी एक कालेज है जिसमें ५०० विद्यार्थी हैं। कई औषधालय हैं। प्रत्येक जिले में एक औषधलय हैं। इसके अलावा ६ हाई स्कूल, एक लड़कियों का हाईस्कूल ३८५ मिडिल वर्नाक्यूलर और प्रायमरी स्कूल हैं।

यद्यपि इस राज्य की गणना भारतीय प्रधान राज्यों में नहीं है तो भी यह एक बड़ा प्रधान शाली राज्य है। राज्य की आर्थिक दशा बहुत अच्छी है। सर प्रभाशंकर पट्टानी राज्य को ओर से तीनों गोल मेज़ों में सम्मिलित हुए। यहाँ के शासक सारेरनवर्ष के हित के लिये अपना स्वार्थ त्यागने के लिये तत्पर हैं।

****

ध्रंगधर राज्य

ध्रंगधर राज्य काठियवाड़ प्रायद्वीप के उत्तर में स्थित है। इसका क्षेत्रफल ११६७ वर्गमील और जनसंख्या ८८,१६१ है। राज्य की सालाना आय २५,००,००० रु० है। राज्य का कुछ भाग पहाड़ी है और कुछ समतल है। समतल भाग में बहुत-सी छोटी छोटी नदियाँ बहती हैं। कई एक झीलें भी हैं।

ध्रंगधर के शासक झाला वंश के क्षत्रिय हैं। इस वंश का इतिहास १०९० से आरम्भ होता है। उस समय हरपाल देव झाल ने गुजरात के राजा करन सोलंकी की बड़ी सहायता की। उसके बदले में सोलंकी की हरपाल देव को २३०० गाँव इनाम दिये। पहले यह गाँव एक ही राज्य में थे। किन्तु अब ये

लिम्बदी, बाँकनेर, वधन लखतर, चूदा और सैला राज्यों में विभाजित है तो भी ध्रंगधर राज्य सब का अगुवा माना जाता है। १७३० ई० ध्रंगधर का क़िला बनाया गया। १७६२ में ध्रंगधर राजधानी हो गया।

यहाँ के वर्त्तमान शासक मेजर हिज़ हाईनेस राजा साहब श्री सर घनश्यामसिंह जी अजीतसिंह जी के० सी० आई० ई० के० सी० एस० आई हैं जो भाला राजपूत घराने के अगुवा हैं। १८८९ में आप पैदा हुए। आपने राजकुमार कालेज, राजकोट में शिक्षा पाई और ऊँची शिक्षा प्राप्ति के लिये इँगलैंड भी गए। वहाँ से लौटने पर आप अपने पिता की अध्यक्षता में राजनीति और राज-प्रबन्ध का अध्ययन करते रहे। १९११ में आप गद्दी पर बैठे। महायुद्ध में आप ने रुपये और सेना से ब्रिटिश सरकार की सहायता की।

आपके समय में राज्य की आय में वृद्धि हुई है। कारण यह है कि आपने प्रजा को मौरूसी हक़ खेतों में प्रदान किया है। इसलिये प्रजा जी तोड़कर खेतों में मेहनत करती है और सुन्दर फसल उगाती है। परती ज़मीन को राज्य की ओर से साफ करके खेत बनाए जाते हैं और खेत तयार होने पर प्रजा को दे दिये जाते हैं। जो नये नये गाँव हैं उनकी दशा बड़ी ही उन्नतिशील है।

राज्य में बालक और बालिकाओं को मुफ़्त शिक्षा दी जाती है। ऊँची शिक्षा के लिये राज्य की ओर से वज़ीफ़ा दिया जाता है। राज्य का अपना कृषि-विभाग है। और बहुत सी वाटिकाएँ हैं। इनमें प्रजा को बिला रोक टोक घूमने का अधिकार है। राज्य के भिन्न भिन्न भागों के अस्पतालों में मुफ़्त दवा की जाती है। किङ्ग एडवर्ड हास्पिटल एक बहुत बड़ा अस्पताल है। यहाँ सभी प्रकार की औषधियाँ और रसायन बनाई जाती हैं। यहाँ श्री प्रैकूवर्ब जनाना अस्पताल भी है।

ध्रंगधर के उत्तर कच्छ का रन है। इसका कुछ भाग राज्य के अधिकार में है। पहले राज्य को नमक बनाने का अधिकार था। किन्तु बाद में यह अधिकार ले लिया गया। १९२२ में अधिकार दिया गया किन्तु बहुत से रोकें लगाई गईं अब ब्रिटिश सरकार प्रतिवर्ष ५,००,००० मन नमक राज्य से मोल ले लेती है। यहाँ पर सोडा, पोटाश और बारूद बनाने के कारखाने हैं। श्री शक्ति अलकाली कारखाना इसके लिये प्रसिद्ध है।

ध्रंगधर अपनी कपास के लिये प्रसिद्ध है। राज्य इस कपास के बीज को साफ रखने के लिये बड़ा प्रबन्ध करती है। यहाँ पर कपास ओटने के कारखाने हैं। यहाँ रुई अदली बदली भी जाती है। यहाँ पीसने, मकान बनाने और धार तेज करने वाले पत्थर मिलते हैं जो बड़ी संख्या में बाहर भेजे जाते हैं। राज्य में लगभग ५४ मील के राज्य की अपनी रेलवे लाइनें हैं।

गोंडल राज्य

गोंडल राज्य काठियावाड़ के मध्यवर्ती भाग में स्थित है। यहाँ का क्षेत्रफल १०२४ वर्गमील और जनसंख्या २,०५,८४६ है। यहाँ की जलवायु अच्छी है। साल में २५ से ३० इँच तक वर्षा होती है। राज्य की भूमि समतल है। केवल एक ओसाम की पहाड़ी है। यहाँ कई छोटी छोटी नदियां हैं। नाहर नदी उनमें सब से बड़ी नदी है। राज्य की प्रधान उपज ज्वार, बाजरा, गेहूँ, चना, जौ, मूंगफली और कपास है।

इस राज्य के शासन जदेजा राजपूत हैं। इनकी उपाधि हिज़ हाईनेस ठाकुरसाहब की है। कुम्भ जी प्रथम ने इस राज्य की नींव डाली और २० गाँवों का राज्य स्थापित किया। कुम्भ जी द्वीतीय ने अपने राज्य की सीमा बर्तमान सीमा तक जोतकर बढ़ाया। ठाकुर साहब संग्राम जी की मृत्यु के पश्चात् हिज़ हाईनेस श्री भगवतसिंह जी, जी० सी० आई० ई०, एफ० आर० सी० पी० ई०, महाराजा ठाकुर साहब १८६९ ई० में गद्दी पर बैठे। १८६४ में आप ने राज्य शासन की बागडोर अपने हाथों में ली। १९३४ में आप की स्वर्ण जयन्ती बड़े समारोह के साथ राज्य में मनाई गई। इस समय स्वर्ण तुलादान दिया गया। आपने राजकोट राजकुमार कालेज और एडिनबरा

यूनिवर्सिटी में शिक्षा प्राप्त की। आपने तमाम योरुप, इँगलैंड और रूस का भी भ्रमण किया है। आपने एरियन मेडीकल साइन्स का इतिहास, इँगलैंड यात्रा पर एक जर्नल और एक गुजराती कोष लिखा है।

एक शिक्षा प्रेमी व्यक्ति होते हुए महाराज ने राज्य की शिक्षा की ओर ध्यान दिया। आजकल राज्य में १९१ स्कूल हैं जिनमें ८,४२४ लड़कियाँ और ११,२४६ लड़के शिक्षा पाते हैं। वर्नाक्यूलर स्कूलों में ६७० लड़के शिक्षा पा रहे हैं। महाराज ने शिक्षा सम्बन्धी बातों में १ करोड़ रु० लगाया है। १९१७ में प्राइमरी शिक्षा, ७ से ११ साल तक की लड़कियों के लिये मुफ़्त और ज़बरिया कर दी गई। व्यायाम भी लड़के लड़कियों सभी को करना पड़ता है। गोंडी नदी पर ग्रेसिया कालेज की बिलडिङ्ग है। यहां गरीब लड़कों की फ़ीस, रहने और पढ़ने का मुफ़्त प्रबन्ध है।

राज्य के अन्दर औषधालयों का अच्छा बर्तमान पद्धति के अनुसार प्रबन्ध है। महारानो साहबा ने मिडवाइफ (दाई) की ट्रेनिङ्ग में बड़ा भाग लिया और आज वे एक अच्छी संख्या में पाई जाती हैं। राज्य में पानी के लिये अच्छा प्रबन्ध है। १९२४ में गोंडल में बिजली का प्रयोग हुआ। इसके तार भूमि के अन्दर होकर जाते हैं। अपलेटा नगर में भी ऐसा ही प्रबन्ध है। इसमें लगभग २५ लाख रु० लगे हैं। टेलीफोन भी ३०० मील तक है और १६५ कनेक्शन हैं।

नगर नए ढँग से बनाए जा रहे हैं। गोंडल, ढोरजी, उपलेटा, मयाबदार आदि नगरों में सड़कें, पार्क, बाटिकाएँ, खेलने के स्थान, सब्ज़ी मंडियाँ तथा बाज़ार सभी बातें मौजूद हैं। किन्तु किसी प्रकार का भी टैक्स, कर या चुंगी इन नगरों में नहीं है।

राज्य में ३०० मील लम्बी पक्की सड़क है। इन सड़कों के दोनों ओर पेड़ हैं। लोहे के खम्भों के साथ साथ रेलिंग भी लगाई गई है। मीलों के चिन्ह, विश्राम-स्थान, मोटरों के खड़े होने की जगहें इत्यादि वस्तुएँ बिल्कुल नए ढंग पर बनाई गई हैं।

इस राज्य की राजधानी गोंडल नगर है। यह क़िलेबन्द नगर एक शाखा रेलवे का स्टेशन है जो भावनगर-गोंडल-जूनागढ़-पोरबन्दर रेलवे पर स्थित है।

यद्यपि राज्य में इतने अधिक सामाजिक सुधार हो रहे हैं (जिन पर बड़ा भारी व्यय हो रहा है) किन्तु राज्य में न तो चुंगी लगती है और न कर। तो भी आय और व्यय सदैव सम रहता है। राज्य की सालाना आय ७८,००,००० रु० सालाना है जिसमें से ५०,००,००० रु० व्यवसायों में लगे हुए रुपए के ब्याज से आता है बाकी रक़म मालगुज़ारी की है। यहां की प्रजा सुखी है उनको "अघात हक़" अर्थात् पूरे तौर से मालिक होने का हक़ प्राप्त है। इस प्रकार प्रजा के सुखी होने से राजा भी सुखी है। किसानों को सभी प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त हैं। १८८४ में १,१५,००० एकड़ भूमि परती थी किन्तु अब केवल १२,००० एकड़ भूमि परती रह गई।

महाराज ने पुलीस विभाग का सुधार बिलकुल नए ढंग पर किया है। किन्तु पुलीस का काम बहुत कम पड़ता है। राज्य के अन्दर न्याय और शांति का राज्य है। राज्य के भीतर क़ानून द्वारा पर्दे का रिवाज हटा दिया गया है और महारानी जी राजपूत बड़े घराने की पहली महिला हैं जिन्होंने पर्दे की रस्म तोड़ी है।

राज्य की मुख्य उपज कपास है। जो यहां से बम्बई भेजी जाती है और वहां से जापान और इँगलैंएड को रवाना की जाती है। गोंडल, उपलेटा, पनेली और मोविया में कपास धुनने तथा साफ करने के कारखाने हैं। गोंडल की गल्ले की मंडी बहुत प्रसिद्ध है और आजकल मूंगफली की उपज तथा व्यापार काफी उन्नति पर है।

गोंडल में दरी बनाने का एक बड़ा भारी कारखाना है जहां काश्मीरी दरियां बहुत ही सुन्दर बनाई जाती हैं। इसके अलावा और भी छोटे मोटे बहुत से कारखाने हैं। गोंडल में लकड़ी का सामान, खिलौने, बेल बूटों के काढ़ने का काम तथा सोने चांदी का काम भी बहुत अच्छा होता है। पीतल और तांबे का सामान भी अच्छा बनाया जाता है। गोंडल में रसायन बनाने का काम होता है। ये वस्तुएँ, बम्बई, कलकत्ता, देहली ही नहीं वरन् अमरीका और अफ्रीका भी जाती हैं। गोंडल में एक सिलवर जुबली टेक्निकल इन्स्टीट्यूट बन रहा है।

इसमें ३,००० व्यक्ति कार्य्य कर रहे हैं। साथ ही साथ राज्य के खनिज पदार्थों को काम में लाने का प्रबन्ध हो रहा है।

वर्तमान नरेश ठाकुर साहब की अधीनता में राज्य सभी दशाओं में उन्नति कर रहा है। यहां शांति और न्याय का राज्य है। प्रजा सुखी है। सचमुच लार्ड सिडेनहम के शब्दों में हम राज्य के वर्तमानकाल को "भगवत सिंह जी का स्वर्णकाल" कह सकते हैं।

****

जूनागढ़

जूनागढ़ राज्य पश्चिमी काठियावाड़ में स्थित है। इसके दक्षिण-पश्चिम में अरब सागर है। इसका क्षेत्र-फल ३३३७ वर्गमील है। यहां की जलवायु समशीतोष्ण और स्वास्थ्यप्रद है। केवल गिरनार के बड़े बन की जलवायु अच्छी नहीं है। यहाँ साल में ४० इञ्च वर्षा होती है। राज्य के भीतर ११ नदियां हैं जो राज्य के भीतर सिंचाई का काम देती हैं। यहाँ की भूमि उपजाऊ है। कपास, ज्वार, बाजरा, चना, जौ आदि की उपज होती है। तटवर्ती एक पट्टी में कुओं के सहारे साल में तीन फसल होती हैं। गिरनार-बन की लकड़ी बड़े काम की है। यहाँ चरागाह अच्छे हैं। कुछ घास के मैदान रिजर्व हैं जहां शेर पाए जाते हैं। यही भारतवर्ष में एक ऐसा स्थान है जहाँ शेर हैं। नवाब साहब इन बचे हुये शेरों को बचाने के लिये लोगों को बहुधा शिकार नहीं खेलने देते। यहाँ की जन-संख्या ५,४५,१५२ है। जूनागढ़ राजधानी गिरनार पहाड़ी पर स्थित है। इस पहाड़ी की सब से ऊँची चोटी ३,६६६ फुट है। यह स्थान सारे काठियावाड़ प्रदेश में सब से अधिक रमणीक है। यह प्रदेश किसी समय में सौराष्ट्र के नाम से प्रसिद्ध था। यहां पर प्राचीन काल के मन्दिर और मूर्तियां हैं। श्रीकृष्ण भगवान के समय के और उनके चरित्र के बहुत से चिन्ह अब भी यहाँ पाए जाते हैं। यहीं पर सोमनाथ का प्रसिद्ध मन्दिर और दुर्ग है। यहीं पर पवित्र गिरनार की पहाड़ी है। यहाँ महाराजा अशोक के समय का एक स्तूप है! यहाँ कपराकोडिया की गुफायें और अमरकोट के मन्दिर प्रसिद्ध हैं। काठियावाड़ का यह सब से बड़ा राज्य है और भारतवर्ष के मुसलमानी राज्यों में इस का चौथा नम्बर है। यद्यपि यह एक मुसलमानी राज्य है तो भी यहाँ राज्य-शासन में धार्मिक कट्टरपन नहीं है।

१४७२ ई० में अहमदाबाद के मोहम्मद बुग़रा ने इस जूनागढ़ को राजपूतों से जीत लिया। सम्राट अकबर के समय में यह दिल्ली राज्य के आधीन हो गया। १७३८ ई० में शेर खाँ बाबी ने गुजरात में एक स्वतंत्र राज्य स्थापित किया। जूनागढ़ के शासक पहले पहल सन् १८०७ में अँग्रेज सरकार के मित्र बने और आपस में संधि हुई। तब से आज तक वैसा ही मित्रता का भाव चला आता है। वर्तमान शासक कैप्टेन हिज़ हाईनेस सर महावत खां जी, जी० सी० आई० ई०, के० सी० एस० आई०, की गणना काठियावाड़ के प्रथम श्रेणी के नरेशों में होती है। आप १९०० में पैदा हुए और पिता की मृत्यु पर १९११ में गद्दी पर बैठे। आप शिक्षा प्राप्ति के लिये इङ्गलैण्ड भेजे गए। किन्तु साल भर बाद माता के आग्रह पर लौट आए और मेओ कालेज अजमेर में शिक्षा प्राप्त की। १९२० में आप के हाथ में राज्य-प्रबन्ध की बागडोर सौंप दी गई। १९३१ में आप को कैपटेन, जी० सी० आई० ई० तथा के० सी० एस० आई० की उपाधि प्राप्त हुई। आप बड़े साफ और अच्छे स्वभाव के हैं। छुट्टी का समय बाहर न बिता कर आप अपने राज्य में ही बिताते हैं। आपको राज्य के अन्दर अपनी सभी जाति की प्रजा प्रिय है।

हिज़ हाईनेस को राज्य के अन्दर सर्वाधिकार हैं। आपकी सहायता के लिये एक सभा है जिसके सदस्य कार्य्य के न्यूनता और अधिकता पर निर्भर करती है। वर्तमान समय में केवल ५ मेम्बर हैं। सभा के सभापति दीवान हैं। राज्य प्रबन्ध में जब कभी कोई मुख्य त्रुटि या घोर अन्याय होता है तभी हिज हाईनेस नवाब के सामने प्रार्थना पत्र जाता है। राज्य १३ मोहालों अथवा ज़िलों में विभाजित है और उनमें ८४३ गाँव हैं।

राज्य के अन्दर खेती का ही मुख्य व्यवसाय है। यहाँ अच्छे किसान रहते हैं और यहाँ की भूमि भी उपजाऊ है। राज्य की ओर से किसानों को अगौढ़ी दी जाती है। तथा नये नये खेती के औज़ार भी दिये जाते हैं। राज्य के शासक सदैव बाग़बानी के बड़े शौक़ीन रहे हैं। इसी कारण यहाँ सुन्दर वाटिकाएँ हैं। यहाँ आम बहुत प्रसिद्ध है। राज्य के भीतर राज्य की ओर से जानवरों का एक फार्म है जहां गिर जानवर, भैंस और काठा घोड़े आदि रक्खे जाते हैं।

राज्य के अन्दर जूनागढ़ रेलवे २३० मील लम्बी इसी राज्य की है। जेतालसर राजकोट रेलवे जो ४६$\frac{3}{4}$ मील लम्बी है उस में भी राज्य का ६ आना भाग है। इसके सिवा राज्य के भीतर कच्ची और पक्की सड़कें भी हैं जिनके द्वारा मोटर पर राज्य के किसी भी भाग में जाया जा सकता है। राज्य के भीतर डाक का प्रबन्ध स्वयं राज्य की ओर से है। काठियावाड़ के राज्यों में केवल इसी राज्य के पास एक वायुयान है।

राज्य के अन्दर १६ बन्दरगाह हैं। जिनमें बेरावल और नवा बन्दर प्रसिद्ध हैं।

राज्य की सालाना आय लगभग १ करोड़ रुपया है। राज्य के ऊपर किसी प्रकार का ऋण नहीं है। रेलवे बन्दरगाहों बिजली आदि के कामों में राज्य ने २५० लाख रुपये लगा रक्खे हैं।

****

राधनपुर

राधनपुर राज्य पश्चिमी भारतीय राज्यों में प्रथम श्रेणी का राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल १,१५० वर्गमील और जन-संख्या ६०,५३० है। राज्य की सालाना आय लगभग ८ लाख है। राज्य में कुल १७३ गाँव हैं। इस राज्य के शासक बाबी घराने के हैं। यह लोग हुमायूँ बादशाह के समय से ही राज्य करते चले आए हैं। राज्य के वर्तमान शासक हिज़ हाईनेस नवाब साहब मुर्तज़ा खाँ जोरावर खाँ बाबी बहादुर हैं। आपका जन्म १० अक्टूबर सन् १८९९ में हुआ। आपने राधनपुर हाई स्कूल और राजकुमार कालेज राजकोट में शिक्षा प्राप्त की। १९३७ ई० में आप गद्दी पर बैठे, आप चैम्बर आफ प्रिन्सेज़ के मेम्बर हैं और आप को ११ तोपों की सलामी दी जाती है। राज्य को किसी प्रकार का कर ब्रिटिश सरकार को नहीं देना पड़ता।

राज्य की राजधानी राधनपुर नगर में है। यह नगर गुजरात प्रान्त का व्यापारिक केन्द्र है। राज्य की मुख्य उपज गेहूँ, कपास, जौ, चना, अरहर, ज्वार, बाजरा, उर्द, मूंग आदि है। सामी नगर में रुई साफ़ करने के तीन कारखाने तथा रुई दबा कर गाँठ बनाने का एक कारखाना है। मुँजपुर में भी रुई साफ़ करने व गाँठ बनाने का कारखाना है। सँकेश्वर में भी ऐसे ही कारखाने हैं और यह जैनियों का तीर्थ स्थान है। गोतर्क में मुसलमानों के महाबली पीर की दरगाह है। लोटी में बोटेश्वर महादेव का मन्दिर और फतेहपुर में टटलेश्वर महादेव का मन्दिर है। राज्य में एक अनाथ आश्रम है जो हसीन बख्त साहब मोहब्बत विलास के नाम से प्रसिद्ध है।

हिज़ हाईनेस नवाब साहब ने लोगों की सुविधा के लिये एक बैंक खोल रक्खा है जो थोड़े ब्याज पर और दूसरी प्रकार की सुविधाओं पर लोगों को आराम देता है।

****

नवानगर राज्य

बम्बई प्रान्त में काठियावाड़ में कच्छ की खाड़ी के दक्षिणी किनारे पर नवा नगर प्रथम श्रेणी का एक देशी राज्य है। उत्तर में कच्छ की खाड़ी दक्षिण में काठियावाड़ का येराथ डिवीज़न, पूर्व में मोर्वी, राज-

कोट, धरोल और गोंडल राज्य और पश्चिम में अरब सागर है। इस राज्य का क्षेत्रफल ३,७९८ वर्गमील है और जन-संख्या ४,०९,१९२ है।

बनू और बर्द की खाड़ियों को छोड़कर शेष राज्य की भूमि समतल है। सिंचाई का कार्य्य कुओं द्वारा होता है। एक तालाब जिसका क्षेत्रफल लगभग ६०० वर्गमील है। यहाँ से नवा नगर को पीने के लिये पानी जाता है। राज्य में संगमरमर और ताँबा पाया जाता है। यहां कच्छ की खाड़ी में कुछ मोती भी निकाला जाता है। राज्य में बाजरा, ज्वार, गेहूँ, चना, कपास, धान, और तेलहन को उपज होतो है।

यहां के शासक जदेजा राजपूत हैं। १५४० ई० में जाम रावल ने नवा नगर की नींव डाली। इस वंश के राजपूत अपनी पुत्रियों को पैदा होते ही मार डालते थे क्योंकि अपनी बहिन या बेटी यह लोग किसी को देना नहीं चाहते थे। अँग्रेज़ सरकार और जदेजा सरदार के बीच लिखा पढ़ी शुरू हुई कि इस खराब रिवाज को बन्द कर दिया जाय। ब्रिटिश अफ़सर सदैव इस की ताक में रहें कि वह ऐसी हत्या न करें। अँग्रेजों के देख भाल के कारण अब यह रिवाज बन्द हो गया है।

महाराज रणजीतसिंह जी ने जो "रनजी" के नाम से प्रसिद्ध हैं उन्होंने नवा नगर राज्य को उन्नति दी। यह उनके परिश्रम का ही फल है जो आज हम राज्य को इतनी उन्नति पर देख रहे हैं। उनको पदवी जाम को है। महाराज का नाम इंगलैंड में क्रीकेट के खिलाड़ी के होने के कारण काफ़ी प्रसिद्ध है। ज्येष्ठ पुत्र गद्दी का मालिक होता है। राजा के पास २,३०३ सैनिक हैं। और राजा को ११ बन्दूकों की सलामी का हुक्म है। राजा १०,५०० रुपया सालाना भेंट ब्रिटिश सरकार, बड़ौदा के नरेश को और नवाब जूनागढ़ को देते हैं। राज्य की सालाना आय लगभग ९० लाख है। यहां के वर्तमान नरेश लेफ्टिनेन्ट कर्नल हिज़ हाईनेस महाराजा श्री सर दिग्विजय सिंह जी, जी० सी० आई० ई० के० सी० एस० आई० महाराजा जाम साहब हैं। आप को १५ बन्दूकों की सलामी लगती है।

महाराज, दीवान तथा तीन मंत्रियों की सहायता से राज्य करते हैं। राज्य ग्यारह भागों में विभाजित है। यहाँ वर्षा का सदैव काल रहता है। वर्षा जो होती है वह खेती के लिये काफ़ी नहीं होती इसलिये लगभग सभी खेतों में पक्के कुँए बँधाए गये हैं जो सदैव सिंचाई का काम दें। पिछले १५ वर्षों में लगभग डेढ़ लाख एकड़ भूमि में खेती वाली भूमि मिलाई गई है। इस भूमि में सिंचाई का अच्छा प्रबन्ध है। काल के समय प्रजा को सहायता देने के लिये कुछ रुपया राज्य की ओर से अलग रख दिया गया है जो काल पड़ने पर ही सहायता रूप में प्रजा को दिया जाता है। इसके सिवा प्रजा को राज्य की ओर से तक़ावी भी दी जाती है। राज्य में खेती का हर पंद्रहवें साल बन्दोबस्त होता है।

खेती के साथ ही साथ रोज़गार और दूसरे व्यवसायों की ओर भी ध्यान दिया जा रहा है। यहाँ पर सूती व रेशमी कपड़े का ही मुख्य रोज़गार है। जाम नगर रेशम और सोने के बेल बूटों के लिये प्रसिद्ध यहां पर इतर तथा खुशबूदार तेल भी बनाया जाता है। भारतीय स्त्रियों के सिरों तथा माथों पर लगाने के लिये यहां कनकू तथा सेंदुर तैयार किया जाता है। राज्य में तरह २ का सँग मरमर पाया जाता है। यहां का बेदी बन्दर बड़ा ही सुन्दर व उपयोगी है वायर लेस तथा रेलवे स्टेशन इत्यादि सभी प्रकार की सुविधाएँ यहां मौजूद हैं। राज्य की एक रेलवे लाइन सारे राज्य में फैली है और राज्य को मध्य भारत से जोड़ती है। इसके सिवा राज्य भर में सड़कों तथा टेली फोनों का जाल बिछा है।

प्राइमरी तथा सेकेंन्ड्री शिक्षा राज्य में मुफ़्त दी जाती है। लगभग प्रत्येक गांव में प्राइमरी स्कूल है। अस्पतालों में लोगों को बिना मूल्य के दवा दी जाती है। प्रत्येक ज़िले में एक अस्पताल तथा प्रत्येक गाँव किसी न किसी डिस्पेन्सरी के समीप पड़ता है। जाम नगर में एक आधुनिक अस्पताल है। इसके सिवा राज्य में एक मज़बूत सेना है।

कच्छ

कच्छ एक देशी राज्य है और काठियावाड़ में स्थित है। इसके उत्तर में रन को झील या खाड़ी है। दक्षिण में हिन्द महासागर और कच्छ की खाड़ी पश्चिम की ओर सिन्ध नदी की पूर्वी शाखाएँ हैं। इस प्रकार कच्छ एक प्रायद्वीप है। यहां का क्षेत्रफल ७,६१६ वर्गमील और जन संख्या ४,८४,५४७ है।

कच्छ का भीतरी भाग पहाड़ी है। पहाड़ पूर्व से पश्चिम की ओर फैले हुये हैं। ऊँची नीची पहाड़ी चट्टानें राज्य के अधिकांश भाग को घेरे हुये हैं। राज्य के सारे प्रान्त में ज्वाला मुखी पर्वतों के चिन्ह पाये जाते हैं। गांवों के समीप की भूमि अच्छी है। जहाँ गेहूँ, जौ, बाजरा दाल और कपास आदि की उपज होती है। पहाड़ी और बलुही भूमि होने के कारण खेती कम भाग में होती है। यहाँ का पानी खारा है और कठिनता से प्राप्त होता हैं। यह पानी निचली पहाड़ी श्रेणियों की तह में पाया जाता है। रेतीले प्रदेश के निवासी को पानी का बड़ाही कष्ट है। वर्षा का भी कोई ठिकाना नहीं है, कभी पानी बरसता है और कभी बिलकुल नहीं बरसता इसलिये बहुधा काल पड़ता है और प्लेग की बीमारी से भी इस प्रान्त को बड़ा भारी धक्का पहुँचाता है।

गरमी के दिनों में यहाँ गरमी पड़ती है। अप्रैल और मई के महीनों में यहाँ बालू और गर्द के बड़े तूफान आते हैं। यहां आते २ मानसून बिलकुल सूख जाता है। इसलिये यहाँ बहुधा पानी नहीं बरसता। भुज यहाँ की राजधानी ५०० फुट ऊँची सी भुज नामक पहाड़ी पर स्थित है। यहाँ पर बहुत छोटी २ नदियाँ हैं। जो बरसात के दिनों में भरी रहती हैं किन्तु और दिनों में बिलकुल सूख जाती हैं। वर्षा में यह सभी नदियां रनकी खाड़ी में गिरतीं हैं। इनके किनारे कुएँ और छोटी नदियां हैं जहां का पानी नमकीन है।

जदेजा राजपूत यहाँ के मुख्य निवासी जागीरदार हैं ये लोग अपने को कच्छ के राजा के खानदानी कहते हैं। और बतलाते हैं कि १ हजार वर्ष पहले हमारे पूर्वज सिन्ध प्रान्त के राजा थे। उसी वंश से उसी वंश के यहां के राजा भी हैं। सभी राजपूत राना के सम्बन्धी कहलाते हैं। और सभी राजा को कर देते हैं। ये लोग राजा को सम्मति देना अपना प्राचीन कर्तव्य समझते हैं। इनकी जायदाद लड़कों में विभाजित हो जाती है। जदेजा राजपूतों का कहना है कि जब वे कच्छ में आये तो मुसलमान थे। बाद में इन लोगों ने हिन्दुओं के रीत व रिवाज और धर्म को ग्रहण कर लिया। इन लोगों के यहां अब भी मुसलमानी रिवाज पाए जाते हैं। यह लोग पश्चिम भारतीयों से अधिक चतुर, योग्य, बहादुर, मज़बूत और सुडौल होते हैं। यहाँ के शिल्पकारों की चतुरता भुज नगर के महलों और मांडवी के राजमहल से भली भाँति प्रगट होती है। रेशम और सूती कपड़ों पर चाँदी सोने का काम में यहाँ के कारीगर बड़े चतुर हैं। और बेल बूटे का काम बड़ा अच्छा होता है। किनारे के रहने वाले अच्छे मल्लाह हैं। रन एक नमक के रेगिस्तान की भांति है यहां का क्षेत्रफल ९ हजार वर्गमील है। कहा जाता है कि यह पहले समुद्र का एक भाग था। कुछ दैवी कारणों से यह समुद्र से अलग हो गया है। यहाँ काछी और गुजराती भाषाओं का प्रयोग होता है।

इतिहास

तेरहवीं सदी में सूम्मा जाति ने कच्छ पर हमला किया। इसी वंश में खेन्गाई आदि राजा हुये और उन्होंने १६९७ तक राज्य किया। फिर प्रागजी ने अपने भाई को मार कर राज्य ले लिया और उस वंश का राज्य १७६० तक रहा। रात्र घोद जी के समय में चार बार सिंधी लोगों का आक्रमण हुआ। फतेह मोहम्मद सिंधी ने १८१३ तक राज्य किया। इसी समय पहले पहल अँग्रेज सरकार से बात चीत आरम्भ हुई। इस समय पर प्राचीन मुख्य राज्य वंशज और राज्य पर जबरदस्ती अधिकार करने वालों में झगड़ा पड़ गया। हँसराज जो माँडवी का गवर्नर था और प्राचीन घराने का था उसने ब्रिटिश सरकार से सहायता माँगी।

फतेह मुहम्मद के कई पुत्र थे। हसन मियाँ

अपने पिता के अधिकांश भाग पर राज्य करने लगा। जगजीवन जो फतेह मुहम्मद का प्रधान मंत्री था। उसने भी कुछ भाग पर अधिकार जमाया। इस प्रकार हिन्दू और मुसलमानों में झगड़ा हो गया। कुछ समय के बाद जगजीवन मारा गया। तथा अरब और दूसरे सरदार दरबार से निकाल दिये गये। इसी बीच इब्राहीम मियां, हसन के भाई की भी किसी ने हत्या कर डाली। राज्य में बड़ी क्रान्ति फैल गई और कुछ समय तक मार काट के बाद भरमूल जो राव गद्दी पर बैठे।

भरमूल जी की बढ़ती हुई ताकत देख कर अँग्रेजों से न रहा गया। और उन्होंने १८१५ ई० में १०,५०० की एक सेना भेजी। जब यह सेना भूज राजधानी के समीप पहुँची तो संधि हो गई। जिसके अनुसार भरमूल जी राजा बनाया गया। अन्जार दूसरे आधीन प्रदेशों के साथ अँग्रेजों को दिया गया। किन्तु शर्तों के पूरा न होने पर १८१९ में उसका पुत्र (बालक) देशाल जी द्वितीय गद्दी पर बैठाया गया।

१८२२ में दूसरी संधि हुई। जिसके अनुसार जो जगहें अँग्रेज सरकार को मिली थीं। उसे राव को वापस दे दिया गया। और राव ने कुछ सालाना अँग्रेज सरकार को देने को कहा।

देसाल जी द्वितीय ने सती, गुलामों की तिजारत और छोटे बच्चों के मारने की बुरी प्रथाओं को राज्य से निकलने में बड़ा प्रयत्न किया। अब ये बुरी प्रथाएँ वहां नहीं के बराबर हैं। इसके बाद महाराज प्रागमल जी गद्दी पर बैठे। यह एक बड़े अच्छे शासक थे। इन्होंने मांडवी में एक हार्बर और रिजर्वायर बनाया। १८७६ में महाराजा राव खेंगर जी त्रितीय राजगद्दी पर बैठे। आप को शिक्षा सम्बन्धी बातों का बड़ा चाव है और आप ने शिक्षा के प्रचार के लिये बड़ा प्रयत्न किया।

वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस महाराजाधिराज मिर्ज़ा महाराव श्री सर खेन्गारजी सवाई बहादुर जी० सी० एस० आई० जी० सी० आई० ई० हैं। आपको १७ तोपों की सलामी दी जाती है।

****

पोरबन्दर राज्य

यह राज्य काठियावाड़ के दक्षिण में स्थित है। अरब सागर के किनारे किनारे यह एक लम्बी पट्टी है जो कहीं भी २४ मील से अधिक चौड़ी नहीं है। बड़ी पहाड़ी से पूर्व की ओर यह ढालू है। तटीय सीले स्थान "घेड" कहलाते हैं। बाकी भूमि समतल है। भदर, सोरती, मिन्सर और ओजात यहां की प्रधान नदियां हैं।

इस राज्य का क्षेत्रफल ६४२ वर्गमील और जन-संख्या १,१६,००० है। यहां की मुख्य उपज ज्वार, बाजरा, चना, जौ, तेलहन और नमक है। यहां चूना भी निकलता है। यहां की जलवायु अच्छी है और सालाना वर्षा २५ से ३० इंच तक होती है। यहां की राजधानी पोरबन्दर समुद्र तट पर है और रेलवे द्वारा राजकोट से मिला हुआ है। यहां के प्रधान बन्दरगाह पोरबन्दर, नवी बन्दर, माधौपुर और मिआनी हैं।

यहां के वर्तमान शासक हिज़ हाईनेस महाराजा राना साहब श्री सर नटवरसिंह जी बहादुर के० सी० एस० आई० प्राचीन जेनवस राजपूत हैं। आपने राजकुमार कालेज में शिक्षा प्राप्त की। १९१८ में डिप-लोमा की परीक्षा में आप प्रथम हुए। आपका ब्याह रूपलिव साहब एम० बी० ई० सुपुत्री महाराज लिम्बी से हुआ। आप कई बार महारानी साहबा के साथ योरुप गये। १९३२ में आप भारतीय क्रीकेट टीम लेकर इंगलैंड गए।

१८ वर्ष के शासन के बाद आपने आज प्रजा के अन्तःकरण में अपना स्थान बना लिया है। आपने प्रजा की दशा सुधारने के लिये बहुत से सुधार किए। १९३६ से आपने लोगों की एक सभा बनाई है जो राज मंत्री कहलाते हैं। यह लोग शासन प्रबन्ध और प्रजा के दुःख निवारण कार्य्यों में राजा का हाथ बटाते हैं। राजा स्वार्थ बहुधा देहात में जा जा प्रजा की दशा का अनुमान करता है और जो कुछ प्रजा-कष्ट उसे

दीख पड़ता उसके निवारण का प्रयत्न आप शीघ्र करते हैं। कुँआं इत्यादि के लिये सहायता राज की ओर से दी जाती है। क़र्ज़ का बोझ हलका करने के लिये १९३० में अग्रीकलचरिस्ट एक्ट और लड़कपन का व्याह रोकने के लिये चाइल्ड मैरेरिस्ट्रेन्ट ऐक्ट पास किए गए हैं। प्रजा को हर प्रकार से उन्नति करने के लिये राज्य-बैंक से रुपया मिलने की अच्छी सुविधा कर दी गई है।

भारत में यह एक प्रधान सामुद्रिक राज्य है। पोरबन्दर के जहाज़ बनाने वाले कारीगर प्रसिद्ध हैं और वहां के व्यापारियों के जहाज़ दूर दूर तक यात्रा कर आए हैं। यहां से कपास मूंग फली, नमक, घी, सिमेन्ट, चूना आदि प्रधान वस्तुएँ बाहर भेजी जाती हैं और चीनी, बिसात खाने का सामान, मिट्टी का तेल, लोहा, फौलाद, खजूर, नारियल और रसाइन वस्तुएँ बाहर से आती हैं।

शिक्षा का प्रबन्ध बहुत अच्छा और नए ढंग पर हो रहा है। यहां बनारस यूनिवर्सिटी के संस्कृत परीक्षा का केन्द्र है। स्वयं महारानी साहबा ने स्कूलों की इमारतों के बनाने के लिये ६ हज़ार रुपये दिये हैं। भावसिंह जी अस्पताल जो पोरबन्दर में सब से पहला भारत का अस्पताल है जहां बड़े २ चीरफाड़ का कार्य बिजली द्वारा होता है और दूसरे बहुत से अस्पताल प्रजा की सहायता के लिये राज्य में स्थापित हैं। पिछले दस सालों के अन्दर राज्य के बड़े २ महानुभावों और दानियों ने १ करोड़ रु० प्रजा कार्य्य के लिये दिया है। यहां लड़कियों के लिये एक आर्य महिला विद्यालय है। पोर बन्दर में इम्पीरियल बैंक की एक शाखा है। इसके सिवा राज्य के भी बैंक हैं।

पोर बन्दर में म्युनिसिपैल्टी है यह नगर का प्रबन्ध करती है और अपने आय-व्यय का भी स्वयं नगर के टैक्स से ही प्रबन्ध कर लेती है। यहां इन्डियन सिमेन्ट बनती है और प्रत्येक सप्ताह में ७०० टन सिमेन्ट तयार होती है। यहां पर एक महाराना स्पिनिंग ऐन्ड वीविंग मिल है। पोरबन्दर के पत्थर भारत में ही नहीं वरन् बरमा और सीलोन में हैं। अफ्रीका और अरब में भी प्रसिद्ध हैं। यहां पर दियासलाई बनाने का भी कारखाना है। ये सभी उन्नतियां महाराज के कारण ही हुईं।

यहां का राज्य प्राचीन ढंग पर चल रहा है यहां की प्रजा अपने शासक की बड़ी ताबेदार है। यहां के निवासी पहले से ही बड़े चतुर और व्यापारिक रहे हैं। वे प्रायः नई दुनिया में फैले हैं। पोरबन्दर के निवासी पूर्व और दक्षिणी अफ्रीका, मिस्र, फ्रान्स, अबीसीनिया, लंका, जावा, चीन, जापान, फिजी आदि स्थानों में व्यापार करते मिलेंगे।

१९३६ में लार्ड विलिंग्डन पोरबन्दर गए और वहां राजा के सुन्दर शासन को देख कर बड़े प्रसन्न हुए।

****

ईदर राज्य

पश्चिमी देशी राज्यों में ईदर का दूसरा नम्बर है। इसको 'नानी मारवाड़' भी कहते हैं। यह गुजरात के उत्तर में स्थित है इसके उत्तर में सिरोही तथा मेवाड़, पूर्व में डुंगरपुर और दक्षिण-पश्चिम में अहमदाबाद का ज़िला और बड़ौदा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १,६६९ वर्गमील है और जनसंख्या २,६२,६६० है। राज्य की सालाना आमदनी २१ लाख है। इस राज्य का दक्षिणी-पश्चिमी भाग रेतीला समतल मैदान है, शेष भाग में पहाड़ियाँ और बन हैं। ये बन झाड़ झङ्काड़ों से घिरे हैं। वर्षा ऋतु में यहाँ का दृश्य बड़ा ही मनोहर हो जाता है। यहां की भूमि उपजाऊ है। यहां की मुख्य उपज अनाज, तेलहन और ऊख है। यहां मकान बनाने के पत्थर निकाले जाते हैं। राज्य की राजधानी ईदर नगर है।

यह राज्य बड़ा ही प्राचीन है। यहां शताब्दियों कन्नौज के राजा जयचन्द के बंशज राज्य करते रहे। इसी बंश के शासक जोधपुर, बीकानेर, रतलाम और दूसरे रठौर राज्यों में हैं। जोधपुर घराने के आनन्द सिंह जी और राय सिंह जी दो भाइयों ने १७२९ में इस राज्य को जीता। १९०८ ई० में

हिज़ हाईनेस महाराजाधिराज लैफ्टिनेन्ट जनरल सर प्रताप सिंह (जी० सी० बी० जी० सी० एस० आई०, जी० सी० वी० ओ०, एल०एल० डी०, ए० डी० सी० टू हिज़ मैजेस्टी दि किङ्ग इम्परर) गद्दी पर बैठे और १९११ तक राज्य किया। फिर महाराज सर दौलत सिंह जी ने १९३१ तक राज्य किया। उसके पश्चात् वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस महाराजाधिराज हिम्मत सिंह जी गद्दी पर बैठे।

आपका जन्म १८९९ ई० में जोधपुर में हुआ और मेयो कालेज में आपने शिक्षा पाई। आप डिपलोमा की परीक्षा में प्रथम आये और आपको वाइसराय मेडिल प्राप्त हुआ। आपने पिता के साथ योरुप का भी भ्रमण किया। आप सभी प्रकार के खेलों में भाग लेते हैं और बड़े उत्साही हैं। राज्य के प्रधान मन्त्री राय बहादुर जगन्नाथ भंडारी एम० ए०, एल० एल० बी० हैं। वर्तमान नरेश को राज्य के सुधार का बड़ा ध्यान है।

हिम्मत नगर में एक स्टेट माडल फार्म है। राज्य के अन्दर एक कृषि विभाग खोला गया है जो किसानों को नये फार्म के बीजों के प्रयोग करने का उत्साह देता है। ग्राम सुधार योजना के अनुसार किसानों को नए ढंग से खाद का बनाना और नए ढंग से खेती करना बताया जाता है। यह कार्य्य गाँवों के मुखियों के ज़िम्मेदारी पर होता है। राज्य के अन्दर एक टीचर्स एग्रीकलचरल ट्रेनिङ्ग स्कूल खोला गया है जहाँ पर अध्यापकों को कृषि सम्बन्धी ट्रेनिङ्ग दी जाती है और फिर यह लोग स्कूलों में जाकर बच्चों को कृषि सम्बन्धी शिक्षा देते हैं। राज्य के भीतर बीज-गोदाम खुले हैं जहां से किसानों को बीज दिया जाता है। प्रत्येक स्कूल में कुछ भूमि खेती के लिए भी है जहां पर लड़कों को खेती करना सिखलाया जाता है। सिंचाई के लिये योजनायें तयार की जा रही हैं और प्रत्येक वर्ष २०,००० रु० नए कुएें बनाने व पुराने कुओं की मरम्मत के लिये राज्य से दिया जाता है। महाराजाधिराज ने प्रजा का बोझ हलका करने के लिये बहुत से कष्टदायक कर माफ़ कर दिये हैं।

शिक्षा पर अधिक ज़ोर दिया जा रहा है। प्रत्येक वर्ष १,००,००० से ऊपर रुपये लड़कों और लड़कियों की शिक्षा के लिये खर्च किया जाता है। अधिकतर ज़ोर रोज़गार सम्बन्धी शिक्षा पर दिया जाता है। और प्रत्येक वर्ष लोगों को वजीफा देकर दर्बार राज्य बाहर शिक्षा प्राप्ति के लिये भेजता है। रोजगार सम्बन्धी यहां १४१ संस्थाएँ हैं।

कारबारी विकास के लिये महाराज भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। राज्य के बाहर के लोगों को भी इसी लिये यहां कारबारों में हिस्सा लेने की आज्ञा दी गई है।

ईदर, हिम्मत नगर, बदाली आदि नगरों में म्यूनिसिपैलिटियां कायम हो गई हैं। गांवों के अन्दर ग्राम-पञ्चायत को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। सामाजिक सुधार के लिये भरसक राज्य की ओर से प्रयत्न हो रहा है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ईदर राज्य वर्तमान शासक के आधीन भलीभांति सभी ओर उन्नति कर रहा है।

विजय नगर

विजय नगर पश्चिमी भारतीय राज्यों में एक राज्य है इसका क्षेत्रफल १३५ वर्गमील और जन-संख्या ८,९९१ है। यहां के शासक राठौर राजपूत हैं। वर्तमान नरेश राव श्री हमनीर सिंह जी हिन्दू सिंह जी हैं। आप ३ जनवरी १९०४ में पैदा हुये और १९२४ में गद्दी पर बैठे। आपने मेयो कालेज अजमेर में शिक्षा प्राप्त की। यहां की सालाना आमदनी ९३,८६९ रु० है।

मोरवी राज्य

यह राज्य पश्चिमी भारतीय राज्य एजेन्सी का एक राज्य है। यह काठियावाड़ के उत्तरी भाग में है। इसमें यहां कच्छ की खाड़ी में एक अच्छा दर्बार है और कच्छ के रन का कुछ भाग राज्य के अन्दर है। इस राज्य का क्षेत्रफल १,३०,००० है। राज्य की सालाना आय ६०,००,००० रुपया है। यहां ज्वार, बाजरा, चना, जौ, मक्का, ऊख है। राज्य की भूमि समतल है। यहाँ माछु नदी है जिसके किनारे पर यहां की राजधानी मोरवी स्थित है। तटवर्ती जलवायु अच्छी है। बाकी स्थानों पर गर्मी पड़ती है। साल में २२ इञ्च वर्षा होती है।

१७२० के लगभग कयान जी कच्छ गये और उन्होंने मोरवी राज्य की नींव डाली। वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस महाराज श्री लुखधिर जी जदेजा घराने के राजपूत हैं। जदेजा राजपूतों ने गुजरात का इतिहास बनाने में बड़ा भाग लिया है। महाराजा श्री लुखधिर जी १८७६ में पैदा हुये और १९९२ ई० में अपने पिता सर वाग जी बहादुर जी० सी० आई० ई० की मृत्यु पर गद्दी पर बैठे। आपने भारत और इङ्गलैण्ड में शिक्षा प्राप्त की। अपनी चतुरता, विद्वत्ता परिश्रम और प्रजा प्रेम के कारण आप प्रजा के बीच में बहुत विख्यात हो गये हैं। आप प्रत्येक शासन-विभाग का निरिक्षण करते हैं। आपके दोनों पुत्र हिज़ हाईनेस युवराज श्री महेन्द्र सिंह जी और महाराज कुमार श्री कालिका कुमार जी शासन प्रबन्ध सीखते हैं। और राज-काज में हाथ बँटाते हैं।

महाराज ने यह सोचकर कि खेती ही भारतवर्ष का मुख्य व्यवसाय है इसकी उन्नति के लिये किसानों को सुविधा पैदा कर दी कि कृषक कुछ थोड़ा रुपया देकर खेतों के मौरूसी काश्तकार बन सकते हैं। लगान ऐसा रक्खा गया है जिससे किसानों को अदा करने में कष्ट न हो। एक ऐग्रीकल्चरल बैंक खोला गया है जो किसानों को खेती की उन्नति के लिये, तथा सिंचाई के लिये कुआँ या तालाब के लिये रुपया देता है। २५ लाख रुपया काल पड़ने पर प्रजा की सहायता के लिये अलग रख दिया है। महाराजाधिराज ने गद्दी पर बैठने के पहिले ही किसानों का सारा क़र्ज़ माफ कर दिया था और अभी एक क़ानून द्वारा किसानों की जायदादें जो क़र्ज़ के बदले रेहन और बै थीं वापस दिलाई गई हैं। १९२२ से १९३७ तक में महाराज ने ३० लाख लगान की माफी दी है। जबकि लगान केवल १० लाख सालाना है। फिर भी एक कमेटी ऐसी बनाई गई है जो किसानों के क़र्ज़ की जाँच कर रही है। जब इसकी जाँच खतम हो जावेगी तो सारा किसानों का क़र्ज़ राज्य की ओर से अदा कर दिया जावेगा और फिर धीरे २ किस्त कर के किसानों से बिना किसी खर्च या सूद के वापस किया जावेगा। इसके सिवा महाराज ने अभी १७ लाख का एक फण्ड खोला है जिसके व्याज का रुपया प्रजा के हित के लिये खर्च होगा।

शिक्षा सम्बन्धी उन्नति यहाँ काफी हो रही है। बालकों और बालिकाओं को प्राइमरी और सेकेन्ड्री शिक्षा मुफ़्त में प्रदान की जाती है। राज्य में ९७ स्कूल हैं। मोरवी में मर्दों के लिये सर बाघजी हास्पिटल और महारानी श्री नन्दकुनवर्ष जनाना अस्पताल लड़कों तथा स्त्रियों के लिये है। नगर में एक सिटी डिस्पेन्सरी है। इसके सिवा दूसरे प्रान्तों में दस डिस्पेन्सरियाँ हैं। राज्य की ओर से १,१०,००० रु० सिलवर जुबली फन्ड में दिया है और ३ लाख रु० जार्ज पंचम के सिलवर जुबली अस्पताल के लिये दिया है। अभी हाल ही में १,००,००० रु० ऐन्टी टुबर क्लोसिस फण्ड के लिये दिया है।

नौलखी का हार्बर काठियावाड़ में सर्व प्रसिद्ध प्राकृतिक बन्दरगाह कच्छ की खाड़ी में स्थित है। इस बन्दरगाह का सम्बन्ध राजपूताना और उत्तरी भारत से मिटर गेज़ रेलवे लाइन द्वारा है। १९३७ ई० में इस बन्दरगाह में ८६ सामुद्रिक और ५५ तटीय जहाज़ आए गए और ७५,००० टन सामान का व्यापार हुआ। बरतानियाँ द्वीपसमूह और योरुप से जितना माल काठियावाड़ के और दूसरे बन्दरगाहों पर आता है उससे अधिक इस बन्दरगाह द्वारा आता है। यहां मारवी रेलवे लाइन राजकोट और वधन के बीच है।

बाँकनेर राज्य

बाँकनेर पश्चिमी भारतीय देशी राज्य एजेन्सी का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ४१७ वर्गमील और जनसंख्या ४४,२८० है। इस राज्य में १०१ गाँव सम्मिलित हैं। यहां की भूमि हलकी और पहाड़ी है। जलवायु गर्म है तथापि स्वास्थ्यदायक है। २२ इञ्च सालाना वर्षा होती है। कपास, ऊख, चना, जौ, गेहूँ, बाजरा, अजुवार प्रधान उपज है। कपास, सूती कपड़े, घी और कुछ थोड़ा गल्ला बाहर भेजा जाता है।

यहाँ के शासक बड़े घराने के झाला राजपूत हैं। पहले धंधर और बांकनेर के राज्य एक थे। १६०५ ई० में सरतन जी ने सहियस और बरियस को मिलाकर इस राज्य की नींव डाली। १८८१ ई० में राजासाहब बाने सिंह जी के मरने पर वर्तमान महाराज कैप्टेन हिज़ हाईनेस महाराना श्री अमर सिंह जी के० सी० एस० आई०, के० सी० आई० ई०, गद्दी पर बैठे आपका जन्म १८७९ ई० में हुआ है। लड़कपन के कारण राज्य एजेन्सी के प्रबन्ध में रहा। १८ मार्च सन् १८९९ ई० में महाराज ने बालिग हो कर राज्य शासन की बागडोर अपने हाथों में ली। १९११ में आप कारोनेशन दर्बार में देहली गये। महायुद्ध के समय आपने अपनी सारी सत्ता ब्रिटिश राज्य को सौंप दी और फ्राँस में जाकर लड़ाई के समय आपने सहायता दी। पिछले वर्ष भी आप कुछ नरेशों के साथ कारोनेशन दर्बार में गये।

शासन-प्रबन्ध के लिये आपकी सहायता के लिये एक सभा है। राज्य में न्याय विभाग, शासन विभाग से स्वतंत्र है। राज्य में प्रजा उपज के रूप में अपना लगान चुकाती है। आवश्यकता पड़ने पर प्रजा को सहायता दी जाती है। सिंचाई का भी प्रबन्ध राज्य के भीतर है। प्रजा की सम्मति लेने के लिये राज्य के भीतर एक राज-सभा १९२१ से बनाई गई जिसमें १३ राज्य दर्बारी और पांच बाहरी चुने हुये सदस्य हैं। उनकी बैठक हर तीसरे महीने होती है। वर्तमान नरेश ने जैसे ही राज्य प्रबन्ध अपने हाथ में लिया वैसे ही एक बड़ा भारी काल राज में पड़ा जिसके कारण ५ लाख रुपया कर्ज राज को लेना पड़ा। उस समय राज्य की आय तीन लाख के लगभग थी। अब राज्य की आय ७,२५,३०० रुपया है। और राज्य की आर्थिक दशा अच्छी है।

शिक्षा की ओर भी राज्य ने प्रशंसनीय कार्य्य किया है। राज्य में एक हाई स्कूल, एक लड़कियों के लिये मिडिल स्कूल और तीन वर्नाक्यूलर स्कूल लड़कों के लिये हैं। बाकी २२ प्राइमरी स्कूल हैं। प्राइमरी शिक्षा अनिवार्य और बिना मूल्य दी जाती है। हाई स्कूल में फीस नाममात्र है। वह फीस और कुछ रुपये मिलाकर ६,००० रुपया सालाना वजीफा के तौर पर उच्च शिक्षा के लिये लोगों को प्रदान की जाती है। राज्य में एक स्पताल और कई डिस्पेन्सरी है।

राज्य के अन्दर गाढ़ा और खद्दर खूब बनाया जाता है। बांकनेर का चीना सूत भी बनता है। यहां पर कपास ओटने, और बिनौला निकालने के कारखाने हैं। बांकनेर में श्री अमर सिंह जी काटेन मिल है। जिसमें कई हज़ार व्यक्ति कार्य्य करते हैं। मिट्टी के सामान बनाने के लिये भी बांकनेर में एक बड़ा कारखाना है जहां ईटें खपड़े और दूसरी वस्तुयें बनाई जाती हैं। राज्य के अन्दर चूना और पत्थर भी निकाला जाता है। यहां पर एक प्रकार का काला संगमरमर भी निकलता है।

बाँकनेर नगर जो राजा की राजधानी है। यह पटलियो वकलो और माछू नदी के सङ्गम पर स्थित है। पूर्व को छोड़ कर बाकी सभी ओर यह नदियों से घिरा है। यह मोरवी रेलवे का स्टेशन भी है। बांकनेर से लगभग ७ मील दूरी पर जदेशर एक स्थान है। यहाँ पर महादेव जी का मन्दिर है। और दूर २ से यात्री लोग दर्शन को आते हैं। इस नगर की जलवायु अच्छी और स्वास्थ्यदायक है इसी लिये लोग यहाँ पर स्वास्थ्य सुधारने के लिये आते हैं। यहाँ पर इसी कारण राज्य की ओर से एक अच्छा सेनीटोरियम खोला गया।

राजकोट

पश्चिमी भारतीय देशी राज्यों में एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल २८३ वर्गमील और जनसंख्या ७५,५४० है। राज्य की सालाना आय १२,५०,०००रु० है। यहाँ के वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस ठाकुर साहब श्री धरमेन्द्र सिंह जी हैं। आप ४ मार्च सन् १९१० में पैदा हुये और २१ अप्रैल सन् १९३१ में गद्दी पर बैठे। आपने राजकोट राजकुमार कालेज में शिक्षा प्राप्त की। फिर लन्दन में शिक्षा ग्रहण की। आपको ९ तोपों की सलामी दी जाती है।

राज्य-प्रबन्ध सेक्रेटेरियट तरीक़े पर होता है। राज्य के प्रबन्ध में सहायता के लिये प्रजा प्रतिनिधि सभा है जिसमें चुने हुये प्रतिनिधि आते हैं। एक सभा कानून बनाने वाली भी है।

राजकोट नगर में म्यूनिसिपैल्टी है और यह नगर व्यापार तथा कारोबार का केन्द्र है। यहाँ पश्चिमी देशी राज्य एजेन्सी केन्द्र है। यहाँ पर तीन रेलवे लाइनें आकर मिलती हैं। शिक्षा की दृष्टि से राजकोट नगर काठियावाड़ में सबसे ऊँच है। यहाँ धरमेन्द्र सिंह जी आर्ट और साइन्स कालेज, राजकुमार कालेज, मर्दों तथा स्त्रियों के लिये ट्रेनिङ्ग कालेज तथा लड़कियों के लिये हाई स्कूल हैं। राज्य के दीवान दर्बार श्री वीर बाला हैं।

✳✳✳✳

धरोल

वेस्टर्न इंडिया एजेन्सी में एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल २८,२०७ वर्गमील और जनसंख्या २७,६३९ है। इस राज्य की सालाना आय २,४४,९९५ रु० है। राज्य में कुल ७१ गाँव हैं। इस राज्य की नींव जाम हरदोल जी ने १५९५ में डाली थी। यहाँ के शासक जदेजा राजपूत हैं और अपने को श्रीकृष्ण भगवान के वंशज बतलाते हैं। यहाँ गत नरेश ने अपनी गद्दी १९३७ में त्याग दी और उनके पौत्र हिज़ हाईनेस ठाकुर साहब जोरावर सिंह जी १९३७ में गद्दी पर बैठे और राजकुमार कालेज राजकोट में शिक्षा प्राप्त की। आपको गोद लेने की सनद प्राप्त है। ज्येष्ठ पुत्र राज्य-अधिकारी होता है। यहां पर कृषि का बन्दोबस्त भगवताई तरीके पर होता है। राज्य में न्याय विभाग में एक न्यायाधीश, हुजूर कोर्ट आदि की कचहरियाँ हैं। राज्य में दो औषधालय हैं जहाँ पर लोगों को दवाई मुफ़्त में दी जाती है। राज्य में अँग्रेजी तथा वर्नाक्यूलर शिक्षा मुफ़्त में दी जाती है।

धरौल नगर यहाँ की राजधानी है। नगर में बिजली है और तीन कपास साफ करने के कारखाने हैं। धरौल और राजकोट के बीच मोटर सर्विस है। राज्य के अन्दर नगरों में म्यूनिसिपैल्टियाँ बन रही हैं।

✳✳✳✳

लिम्बदी

लिम्बदी वेस्टर्न इण्डिया स्टेट्स एजेन्सी में एक देशी राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३४३·९६ वर्गमील और जन संख्या ४०,०८८ है। राज्य की सालाना आय ९,००,००० रु० है। राज्य के वर्तमान शासक झाला राजपूत हैं। इस राज्य की नींव हरपाल देव ने डाली थी। यहां के वर्तमान नरेश महाराना श्री दौलत सिंह जी के० सी० एस० आई०, के० सी० आई० ई० ठाकुर साहब हैं। आप १८६८ में पैदा हुये और १४ अप्रैल १९०८ में गद्दी पर बैठे। आप चैम्बर आफ प्रिन्सेज के मेम्बर हैं और आपको ९ तोपों की सलामी दी जाती है।

✳✳✳✳

बालासिनोर

बालासिनोर गुजरात एजेन्सी का एक राज्य है। इस राज्य का सम्बन्ध बड़ौदा रेज़ीडेन्ट द्वारा सीधे भारत सरकार से है। इस राज्य का क्षेत्रफल १८९ वर्गमील और जन संख्या ५२,५२५ है। राज्य की सालाना आय २,७५,००० रु० है। यहाँ के शासक बाबी घराने के हैं। यह ब्रिटिश सरकार को ९,७६६ रु० ९ आ० ८ पा० और ३,१७७ रु० ११ आ० १ पा० बड़ौदा राज्य को सालाना कर रूप में देता है। यहां के वर्तमान शासक बाबी जमीअत खां जी श्री मनवरखां जी हैं। १८९९ ई० में आप गद्दी पर बैठे। यहां के नवाब चैम्बर आफ प्रिन्सेज़ के सदस्य हैं और नवाब साहब को ९ तोपों की सलामी दी जाती है।

✱✱✱✱

बांसदा

बड़ौदा रेज़ीडेन्सी गुजरात एजेन्सी का यह एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल २१५ वर्गमील और जन-संख्या ४८,८०७ है इस राज्य की सालाना आय ७½ लाख रुपया है। यहां के शासक चन्द्रबंशी, सोलांकी राजपूत हैं और सिद्धराज जैसिंह के वंशज हैं। यहां के वर्तमान शासक महारावल श्री इन्द्रसिंह जी हैं। आप १६ फरवरी सन् १८८८ में पैदा हुये और १९११ में गद्दी पर बैठे। यहां के शासकों को गोद लेने की सनद प्राप्त है। आप चैम्बर आफ प्रिन्सेज़ के मेम्बर हैं और आपको ९ तोपों की सलामी दी जाती है।

✱✱✱✱

बरिया

बरिया गुजरात एजेन्सी का एक देशी राज्य है। इसका सम्बन्ध बड़ौदा रेज़ीडेन्सी द्वारा सीधे भारत सरकार से है। इस राज्य का क्षेत्रफल ८१३ वर्गमील है और जनसंख्या १,५९,४२९ है। यह राज्य पंचमहल ज़िले के बीचो बीच स्थित है। यहां की राजधानी देवगढ़ बरिया है। इस राज्य की सालाना आय १२ लाख है। इस राज्य के शासक चौहान राजपूत हैं और गुजरात के पावाती शासकों के बंशज हैं, जिनकी राजधानी चम्पनेर थी। यहां के वर्तमान नरेश लैफ्टीनेन्ट कर्नल हिज़ हाईनेस महारावल श्री सर रणजीत सिंह जी के० सी० एस० आई० हैं। आप १० जुलाई सन् १८८६ में पैदा हुये और राजकुमार कालेज राजकोट, देहरादून तथा इङ्गलैण्ड में आपने शिक्षा ग्रहण की। आपका व्याह भूतपूर्व पिपला नरेश की पुत्री से हुआ। १९०८ ई० में गद्दी पर बैठे। आपने महायुद्ध के समय फ्राँस तथा फ़्लैंडर्स में युद्ध में सम्मिलित हुये। आप तीसरी अफ़गान वार में भी गये। आपको खेलने तथा शिकार करने का शौक़ है और आपको ९ तोपों की सलामी दी जाती है।

खम्भात

खम्भात काठियावाड़ में एक राज्य है। यह काठियावाड़ में प्रथम श्रेणी का राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३९२ वर्गमील, जनसंख्या ८७,७६१ है। इस राज्य की सालाना आय लगभग १३ लाख रु० है। इस राज्य की नींव मिर्जा जफर नाजिम सानी मोमिन खां प्रथम ने डाली थी। वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस नजीम उद्दौला मुमताजुलमुल्क मोमिन खां बहादुर दिलावर जंग नवाब मिर्ज़ा हुसेन यावर खां बहादुर उसी वंश के शासक हैं। आपका जन्म १६ मई १९११ में हुआ, और २१ जनवरी १९१५ में आप गद्दी पर बैठे और १३ दिसम्बर १९३० में आपने राज्य प्रबन्ध का भार अपने ऊपर उठाया। आपने राजकुमार कालेज राजकोट में शिक्षा पाई उसके पश्चात् आपने १ साल योरुप का भ्रमण किया।

राज-प्रबन्ध में आपकी सहायता के लिये एक दीवान तथा मंत्री हैं। इस प्रकार ३ मनुष्यों की यह सभा राज्य-प्रबन्ध करती है।

यहां के वर्तमान दीवान राव साहब पुरुषोत्तम जोगी भाई भट्ट तथा प्राइवेट मंत्री मीर इक़बाल हुसेन साहब हैं। हिज़ हाईनेस को ११ तोपों की सलामी दी जाती है। और आप चैम्बर आफ़ प्रिन्सेज़ के सदस्य हैं।

****

छोटा उदयपुर

छोटा उदयपुर बड़ौदा रेज़ीडेन्सी का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ८९० वर्गमील और जनसंख्या १,४४,६४० है। इस राज्य की सालाना आय लगभग १३ लाख रु० है। इस राज्य के शासक चौहान राजपूत हैं और वे अपने को पावागढ़ के पट्टाई रावल के वंशज बतलाते हैं।

यहां के वर्तमान शासक हिज़ हाईनेस महारावल श्री नटवर सिंह जी फतेह सिंह जी हैं। आपका जन्म १६ नवम्बर सन् १९०६ में हुआ। अगस्त १९२३ में आप गद्दी पर बैठे और २० जून १९२८ में आप ने राजकाज की बागडोर अपने हाथों में ली। आपने राजकुमार कालेज राजकोट में शिक्षा प्राप्त की। आपका विवाह भूतपूर्व पिप्पला नरेश की पुत्री से हुआ। आपको खेल का बडा चाव है। इसी हेतु बहुत सी संस्थाओं के सदस्य भी हैं। आपको ९ तोपों की सलामी दी जाती है।

यह राज्य बड़ौदा राज्य को ७,८०५ रुपये सालाना कर देता है। और चोरँगल, गाड, भक, खरेदा, चोरामल राज्यों से टाँका पाता है।

राज्य के अन्दर रेलवे लाइनें और सड़कें उपयुक्त संख्या में हैं। बड़े २ नगरों में टेलीफोन कनेक्शन भी हैं। राजधानी में बिजलीघर तथा नलों द्वारा पानी का प्रबन्ध है। यहाँ पर एक डाक बँगला भी है। यहाँ के वर्तमान दीवान राव बहादुर धीरज लाल एच० देसाई हैं।

****

धरमपुर

बड़ौदा रेज़ीडेन्सी, गुजरात एजेन्सी का राज्य है। यहाँ का क्षेत्रफल ७०४ वर्गमील और जनसंख्या १,१२,०३१ है। इस राज्य की सालाना आय ४½ लाख रु० है। यहाँ के शासक महाराज रामचन्द्र जी के वंशज माने जाते हैं। यह लोक सूर्य वंशी सिसोदिया राजपूत हैं। यहाँ के वर्तमान शासक हिज़ हाईनेस महाराणा श्री विजय देव जी, मोहन देव जी हैं। आप तीसरी दिसम्बर सन् १८८४ में पैदा हुये और १९२१ में गद्दी पर बैठे। आप प्रिन्सेज़ आफ चैम्बर के मेम्बर हैं। और आपको ९ तोपों की सलामी दी जाती है।

****

दाँग

बड़ौदा रेज़ीडेन्सी, गुजरात एजेन्सी में सहया-द्रिस और सूरत ज़िले के बीच यह राज्य स्थित है। इसमें १४ राज्य सम्मिलित हैं। जिसमें से १३ भिल और एक कोकानी राज्य है।

✱✱✱✱

जौहर

यह राज्य बम्बई प्रान्त कोनकन में थाना एजेन्सी का एक राज्य है। यह राज्य दो भागों से मिलकर बना है। बड़ा भाग थाना ज़िले का उत्तरी-पश्चिमी भाग है और दूसरा छोटा भाग उत्तर-पूरब में है। यहां का क्षेत्रफल ३१० वर्गमील और जनसंख्या ५७,२८८ है। राज्य का अधिकांश भागहै। पठार चिनचुतारा, गोंडे, धोंघ मेअर और शिर आदि दर्रे हैं। दिहाजी, सुरया, पिन्जाली और वाघ आदि नदियाँ हैं। जून से अक्टूबर तक वर्षा होती है। दिसम्बर तक पानी की नमी रहती है। जनवरी फरवरी में भूमि सूख जाती है। और गर्मी बढ़ने लगती है। मार्च से जून तक कड़ी गर्मी पड़ती है। साल के अधिकांश भाग में जलवायु खराब रहती है। जिसके कारण लोगों को बुखार अधिक आता है। लकड़ी और पत्थर बहुत पाया जाता है।

१२९४ तक यहां राजा वारली रहे। उसके बाद कोली हुए। मरहठों और पुर्तगालों से इनसे युद्ध हुआ। १८८४ ई० में मल्हारराव पटाँग शाह कोली वंश के राजा थे। यहाँ के राजा को अधिकार है कि यह अपनी प्रजा के हर प्रकार के मुक़द्में का फैसला कर सकते हैं। बड़ा पुत्र राज्य का अधिकारी होता है। मल्हार राव की गद्दी नशीनी नज़राना देने पर हुई। उसके बाद नीमशाह गद्दी पर बैठा जिसको दिल्ली के बादशाह ने राजा की पदवी दी। ५ जून १३४३ ई० के दिन से इस राज्य का नया युग आरम्भ होता है, यहाँ जवहर से १० मील पर भोपागढ़ का क़िला देखने योग्य है। राज्य में बालकों के पढ़ने के लिये पाठशाले औषधालय भी खोले गए हैं। इस राज्य के शासकों को ९ तोपों की सलामी दी जाती है।

इस राज्य के वर्तमान शासक पातंगशाह उर्फ यशवन्त राव विक्रमशाह हैं। आप अभी छोटे हैं।

✱✱✱✱

लूनवाड़ा

बड़ौदा, गुजरात एजेन्सी एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३८८ वर्गमील और जन-संख्या ९५,१६२ है। इस राज्य की सालाना आय ५½ लाख रु० है। यहाँ के शासक सोलाँ की राजपूत हैं और अन्हिलवाड़ा के सिद्धराज जैसिंह के वंशज हैं। यहां की भूमि अच्छी और उपजाऊ है। यहां पर बहुमूल्य लकड़ी के जंगल हैं। यहां के वर्तमान शासक लैफ्टिनेन्ट महाराणा श्री वीर भद्रसिंहजी हैं। आपने दूसरी अक्तूबर सन् १९३० में राज की बागडोर अपने हाथों में ली। आप चैम्बर आफ प्रिन्सेज के मेम्बर हैं और आप को ९ तोपों की सलामी दी जाती है।

✱✱✱✱

राजपिप्पला राज्य

राजपिपला बम्बई प्रान्त में रेवा कान्थ एजेन्सी का एक राज्य है। इसके उत्तर में नर्मदा नदी, दक्षिण में बड़ौदा राज्य और सूरत का ज़िला, पूरब में खान देश प्रान्त और पश्चिम में बरौंच का ज़िला है। इस राज्य का क्षेत्रफल १५१७ वर्गमील और जन-संख्या २,०६,११४ है। राज्य की सालाना आय-

३०,००,००० रु० है। राज्य के दो तिहाही भाग में सतपुड़ा पहाड़ की श्रेणियां फैली हुई हैं, जिनको राज पिप्पला की पहाड़ियाँ कहते हैं। ये श्रेणियाँ ३,००० फुट से कहीं भी अधिक ऊँची नहीं हैं। यह पहाड़ियां नर्मदा और ताप्ती के बीच जल विभाजक का काम करती हैं। नर्मदा और कर्जल इस राज्य की मुख्य नदियाँ हैं। यहां की भूमि बड़ी उपजाऊ है। कपास, तेलहन, ज्वार, बाजरा, यहां की प्रधान उपज हैं। राज्य में बहुमूल्य पत्थर भी निकलते हैं।

यहां के शासक गोहेल राजपूत हैं। वर्तमान नरेश मेजर हिज़ हाईनेस महाराजा श्री विजयसिंह जी के० सी० एस० आई० ३० जनवरी १८९० में पैदा हुए। राजकुमार कालेज देहरादून और इम्पीरियल केडेट कार्प्स देहरादून में शिक्षा प्राप्त की। आपने योरुप और अमरीका का खूब भ्रमण किया है। आप व्यायाम सम्बन्धी बातों में बड़ी दिलचस्पी लेते हैं। आप मालंवारो क्लब लंदन, हरलिंघम क्लब लंदन, विलिंगडन स्पोर्ट्स क्लब बम्बई, कलकत्ता क्लब आदि के आप मेम्बर हैं। पोलो, रेसिंग, शूटिंग आदि सभी में आप भाग लेते हैं। १९३४ से आप डर्बी के विजेता हैं। १९२६ में आयर्लैंण्ड के डर्बी में, १९२७ में बेलजियम में आप विजयी हुए। आपको १३ तोपों की सलामी दी जाती है।

आपने अपनी प्रजा को अपने अनुभवों के अनुसार सुख देने का प्रयत्न किया है। आप अपनी प्रजा को बड़े प्रेम की दृष्टि से देखते हैं और उनके कष्टों को अपना कष्ट समझते हैं।

सुधार

आपने सभी राज-नौकरियां पेंशन वाली कर दी हैं और एक सभा (लैजिस्लेटिव काउन्सिल) क़ानून बनाने के लिये बनाई है। ऐसे क़ानून बनाए हैं जिनसे 'इनाम' वाले गांवों में किसानों पर सख़्ती न हो सके। बेगार की प्रथा आपने राज्य से उठा दिया है।

राजपिप्ला एक खेतिहर राज्य है। यहां की मुख्य उपज कपास है। १९२० तक गोधरी कपास राज्य में बोई जाती थी जिसकी न तो उपज ही अच्छी होती थी और न अच्छे दामों पर ही बिकती थी। महाराज ने क़ानून बनाकर गोधरी कपास का बोना राज्य में बन्द करा दिया और १०२७ ए० एल० एफ० का कपास का बीज मंगाकर किसानों से बोने को कहा। जिसमें बड़ा भारी लाभ हुआ। प्रत्येक वर्ष अच्छे से अच्छा बीज किसानों को देने का प्रयत्न किया जाता है। ऐसा करने से राज्य की आय १३ लाख सालाना से ३० लाख सालाना हो गई है। पहले किसानों को अपना माल बेचने के लिये चालीस-पचास मील जाना पड़ता था किन्तु अब उनका माल घर बैठे बिक जाता है। १९२९ के पहले राज्य में केवल ६० या ७० हज़ार एकड़ कपास बोई जाती थी और अब १,५०,००० एकड़ कपास बोई जाती है।

राज्य के अन्दर ४० मील राजपिप्पला स्टेट रेलवे और २० मील आर० एस० रेलवे है। इसके सिवा राज्य भर में कच्ची और पक्की सड़कें हैं। सड़कें बिलकुल नए ढंग पर बनाई जा रही हैं। राज्य में एक बिजलीघर है जहां से पिप्पला नगर और पास के गांवों को बिजली जाती है। हाइड्रो एलेक्ट्रिक की दो योजनाएँ करजन और नर्मदा नदियों से तयार की गई हैं जिससे राज्य का बड़ा लाभ होगा।

महाराज ने शिक्षा की ओर भी अच्छा सुधार किया है। प्राइमरी शिक्षा मुफ़्त दी जाती है। सेकेन्डरी और उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों को भी बहुत कम फीस देनी पड़ती है। विद्यार्थियों को वजीफा दिया जाता है। विधवाओं और दूसरे असहायों की सहायता का प्रबन्ध राज्य की ओर से है।

राजधानी में एक हाई स्कूल, दो एँग्लो वर्नाक्यूलर स्कूल तथा १०२ वर्नाक्यूलर स्कूल हैं जहां मुफ़्त में शिक्षा दी जाती है।

राजधानी में एक अस्पताल है जहां सभी भांति की सुविधाएँ हैं। इसके सिवा पांच और दूसरे छोटे अस्पताल हैं जहां लोगों का इलाज मुफ़्त में किया जाता है।

सचीन राज्य

सचीन राज्य बम्बई प्रान्त के गुजरात प्रदेश में स्थित है। यह राज्य सूरत के ज़िले में है और यहाँ का क्षेत्रफल ४९ वर्गमील है, इस राज्य को जनसंख्या १८,९०३ है। यहाँ की जलवायु स्वास्थ्यदायक है और सालाना वर्षा ४७ इंच है। गेहूँ, जौ, चना, बाजरा, ज्वार, कपास, ऊख आदि की पैदावार होती है। खद्दर, गाढ़ा, आदि मोटे कपड़े राज्य में बुने जाते हैं।

सचीन के नवाब हबशी या अबीसीनियन जाति के हैं। यह तो ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता कि इनके पूर्वज कब भारत में आए किन्तु बहुत समय से यह लोग पश्चिमी तट पर रहते थे। और दण्डराजपुर और जँजीरा के सिदिस कहलाते थे।

यह लोग अहमद नगर, बीजापुर, और मुग़ल जलसेना के ऐडमिरल्स रहा करते थे। महाराज औरङ्गजेब इनको ४,५०,००० रु० सालाना सूरत की मालगुजारी से देता था। औरङ्गजेब के मरने के बाद यह लोग बदमाश हो गये और अँग्रेज़ों के जहाज़ों को छोड़कर सभी जहाज़ों को लूटते और बर्बाद करते थे। मुग़ल-मरहठा और मरहठा-ब्रिटिश युद्ध के समय इस वंश के सर्दार जँजीरा में रहे और समय समय पर अपने हित के लिये एक दूसरे की सहायता करते रहे। अठारहवीं सदी के अन्त में बालू मियाँ को उसी वंश के एक सर्दार ने जँजीरा से निकाल दिया। बालूमियां ने मरहठों और अँग्रेज़ों से सहायता के लिये दरख़्वास्त की जिसके फलस्वरूप बालूमियां को सचीन मिला। जँजीरा पेशवा को दे दिया गया किन्तु जँजीरा पर पेशवा का कभी भी अधिकार नहीं होने पाया। सचीन पर बालूमियाँ के घराने के लोगों का अधिकार है और जँजीरा उसी वंश के छोटे घराने वालों के अधिकार में है।

१८८३ में नवाब सिदी अब्दुल क़ादिर मोहम्मद याक़ूत खाँ जो सुन्नी मुसलमान हैं गद्दी पर बैठे। इन्होंने राजकुमार कालेज में शिक्षा पाई। नवाब को नौ तोपों की सालामी दी जाती है। नवाब अपनी प्रजा के जीवन मरण के भी मुक़दमे कर सकता है और नवाब को गोद लेने का अधिकार है। राज्य की सालाना आय लगभग २,७०,००० रु० है। राज्य के अन्दर लड़कों के पढ़ाई के लिये स्कूल हैं। राज-काज में पटेल, हवलदार, फ़ौजदार आदि अफ़सर सहायता देते हैं।

यहाँ के वर्तमान शासक हिज़ हाईनेस नवाब सिदी मोहम्मद याक़ूत खां हैं। आप १९०९ में पैदा हुये और १० नवम्बर १९३० में गद्दी पर बैठे। आप प्रिन्सेज़ आफ चैम्बर के मेम्बर हैं।

संत

बड़ौदा तथा गुजरात एजेन्सी का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३९४ वर्गमील और जन-संख्या ८३,५३८ है। इस राज्य की सालाना आय ४,१३,५१२ रुपया है। यहां के शासक परमार राजपूत हैं। यह राज्य ५,३८४ रु० ९ आना १० पाई ब्रिटिश सरकार को कर देता है। यहाँ के वर्तमान शासक महाराणा श्री जोरावार सिंह जी प्रताप सिंह जी हैं। आप १८८१ में पैदा हुये और १८९६ में गद्दी पर बैठे। आप चैम्बर आफ प्रिन्सेज़ के मेम्बर हैं और आप को ९ तोपों की सलामी दी जाती है।

रेवाकांठा एजेन्सी

यह राजनैतिक एजेन्सी बम्बई सरकार के अधिकार में हैं। छोटे बड़े सभी मिलाकर इस एजेन्सी में ६१ राज्य हैं। तीन राज्य ऐसे हैं जो किसी को कर नहीं देते। ५ राज्य ब्रिटिश सरकार को कर देते हैं, एक राज्य छोटा उदयपुर को कर देता है और शेष राज्य बड़ौदा के गायकवाड़ को कर देते हैं।

इस एजेन्सी के उत्तर में मेवाड़ और बाँसवाड़ा के राज्य, पूर्व में झालोद, दोहद, पंचमहल के जिले, अलीराजपुर, भोपावार एजेन्सी और खानदेश का प्रान्त, दक्षिण में बड़ौदा राज्य और सूरत का जिला, पश्चिम में भडोंच का जिला, बड़ौदा राज्य, खेरा अहमदाबाद इत्यादि हैं। एजेन्सी की लम्बाई १४० मील, चौड़ाई १० से ५० मील तक है। क्षेत्रफल ४७६२ वर्गमील है और जनसंख्या ५,४३,४५२ है। राज्य की आय लगभग २,४०,००० रु० पौंड है।

माहो और गुजरात के समीप का प्रदेश बराबर और खुला है। यहाँ दो मुख्य श्रेणियाँ हैं। राजपिप्पला की पहाड़ी जो सतपुड़ा पहाड़ी का पश्चिमी भाग है और विन्ध्याचल की श्रेणियाँ हैं। यहाँ की मुख्य नदियाँ नर्मदा और माही हैं। माही १२० मील इस एजेन्सी में बहती है। पूर्व की ओर यह नदी जंगल और पहाड़ों में होकर बहती है। किन्तु पश्चिम में समतल खुले मैदान हैं। नर्मदा जङ्गलो पर्वतीय प्रदेश से इस एजेन्सी में दाखिल होती है। इसके किनारे जङ्गल हैं और किनारे पर चट्टानों के बड़े बड़े करारे हैं। अंतिम भाग में चालीस मील तक नर्मदा अधिक चौड़ी है। यह तट नीचा है और यहां की भूमि उपजाऊ है।

रेवाकांठा का अधिकांश भाग जङ्गल से घिरा है। जङ्गलों में भाँति २ के वृक्ष पाए जाते हैं। यह रिज़र्व जङ्गल भी हैं जो सिवा बहुत अधिक आवश्यकता के और कभी नहीं काटे जाते। दूसरे बन तीस साल में काटे जाते हैं। जङ्गलों में शेर, तेंदुआ, साँभर, रीछ, नील गाय, हिरन, जङ्गली सुवर, भैंसे आदि जानवर पाए जाते हैं।

प्रथम अन्हिलवाड़ा वंश के समय में लगभग सारा रेवाकांठा प्रान्त बारियस के आधीनता में था। बारियस कोलों और भिलों का सरदार था। ग्यारहवीं, बारहवीं और तेरहवीं सदी में जब मुसलमानों का आक्रमण हुआ तो यह लोग और दक्षिण खदेड़ दिये गए और इनकी जगह पर राजपूतों का राज्य हुआ। पहले पहल राजपिप्पला के राजा ने अपना अधिकार जमाया। सोलहवीं सदी में अहमदाबाद के सुलतान ने सारे रेवाकांठा को अपने आधीन कर लिया। इस के पश्चात् मरहठों का अधिकार हुआ।

समय समय पर छोटे छोटे घराने विवश होकर अपना राज्य छोड़ देते थे और नया राज्य स्थापित करते थे। यह लोग मरहठों की अध्यक्षता में बड़ी गड़बड़ी मचाते थे गायकवाड़ शाँति स्थापित करने में असमर्थ हुआ तो १८२१ ई० में अंग्रेज़ों से संधि हुई। जिसके द्वारा अँग्रेज़ों को शाँति स्थापित करने का अधिकार मिला और पहले पहल १८२६ ई० में रेवाकांठा की एजेन्सी स्थापित हुई। १८२९ ई० में पोलीटिकल एजेन्ट की जगह मिला दी गई किन्तु १८४२ ई० में फिर रेवाकांठा एजेन्सी कायम की गई और सभी सरदारों और राजों के अधिकारों को बताया गया।

१८५३ में कैरा के कलक्टर से बालासिनोर राज्य लेकर इस में मिलाया गया। १८६२ में सिंधिया ने ग्वालियर के समीप के प्रदेश के बदले में पंचमहल अँग्रेज़ों को दे दिया गया। १८७६ में पंच महल 'जिला बनाया गया। इसका अफ़सर रेवाकांठा स्टेट्स के ऊपर भी अधिकार रखता है।

रेवाकांठा के ६१ राज्यों में केवल राज पिपला ही प्रथम श्रेणी का राज्य है। यह सब से अधिक बड़ा और प्रसिद्ध राज्य है। यहां के राजा को दयमुल हब्स और फांसी का भी अधिकार है। यहाँ के राजा ब्रिटिश प्रजा के मुकदमे भी कर सकते हैं। छोटा उदयपुर, बारिया, सुन्थ, लुनाबाड़ा, बालासिनोर राज्य दूसरे श्रेणी के हैं। और अन्दर के मामलों में स्वतंत्र हैं। कदाना और संजेली राज्य कर नहीं देते।

सँखेदामे वास में २६ राज्य हैं। जिन का क्षेत्रफल २११ वर्गमील है। जनसंख्या ५३,२१४ है और सालाना मालगुजारी २,९८,००० रुपया है। पाँडु मेहवास में २२ रियासतें हैं जिसका क्षेत्रफल १३८ वर्गमील,

जनसंख्या २०,३१२ और सालाना आय ७०,५०० रुपया है। डोरका मेवास में ३ राज्य हैं जिनका क्षेत्रफल ९ वर्गमील, जनसंख्या ४,५७६ और सालाना आय १६,५०० रुपया है।

एजेन्सी में लड़कों के पढ़ने के लिये स्कूल, और लाइब्रेरियाँ हैं। कई एक औषधालय भी हैं।

राज्य में कोल और भिल की जातियां हैं। यह जातियां खेती करती हैं किन्तु चार महीने से अधिक यह लोग खेती का गल्ला नहीं चला सकते। साल के शेष दिन यह लोग जङ्गली फल, लाह, गोंद, शहद और मोम पर निर्वाह करते हैं।

सरगना राज्य और डांग राज्य

सरगना राज्य नासिक ज़िले की सीमा पर स्थित है। डांग राज्य सदयादिरिस और सूरत प्रान्त के बीच स्थित हैं। इनमें कुल १४ राज्य हैं। १३ राज्य भीलों के हैं और एक कोकानी राज्य है। इनमें कदना भेडखा, सुरगना और छाभबेगाड़ा ख़ास ख़ास राज्य है।

नरसिंहगढ़

नरसिंहगढ़ का राज्य सेन्ट्रल इडिएया में भोपाल एजेन्सी के आधीन है। इस राज्य का क्षेत्रफल ७३४ वर्गमील और जनसंख्या १,१४,००० है। राज्य की सालाना आय ७,४२,००० रु० है।

अजब सिंह के पुत्र परसराम थे। १६६० ई० में वह अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् राजगढ़ के रावत के मन्त्री हुये। १६८१ में परस राम ने रावत को बाध्य किया कि वह राज्य को दो भागों में बाँट दें। इस प्रकार नरसिंहगढ़ एक अलग राज्य स्थापित हुआ राज्य १८,२७,५०० रु० सालाना भेंट ब्रिटिश सरकार द्वारा होलकर को देता है। राज्य को १२०० रु० सिंधिया से और ५,१०० रु० देवास राज्य से मिलता है। यह सभी लेन देन के कार्य्य ब्रिटिश सरकार के एजेन्ट द्वारा होते हैं।

राजा उमत राजपूत कहलाते हैं। और उन्हें ११ तोपों की सलामी दो जाती है। राज्य की सेना में १० तोप, २४ तोप चलाने वाले, ९८ सवार, ६२५ पैदल सिपाही हैं। यहां के वर्तमान शासक हिज हाईनेस राजा विक्रम सिंह हैं।

पंजाब प्रान्त की रियासतें

पटियाला राज्य

पटियाया राज्य पंजाब के राज्यों में सर्व प्रधान है। यह सिक्ख राज्यों में न केवल सब से बड़ा वरन् सबसे अधिक प्रसिद्ध है। यह राज्य तीन भागों में बटा है। सबसे बड़ा राज्य सतलज नदी के दक्षिण में स्थित है।

यहाँ का क्षेत्रफल ५९४२ वर्गमील है और जन-संख्या १७,००,००० है। इस राज्य की सालाना आमदनी १,५०,१८,००० रु० है। राज्य में एक लम्बा चौड़ा मैदान है। सारे मैदान की भूमि उपजाऊ नहीं है फिर भी अधिकांश भाग उपजाऊ है। इसका एक बहुत बड़ा भाग सरहिन्द और पश्चिमी जमुना नहर और उसकी शाखाओं से सींचा जाता है। यहाँ बहुमूल्य खनिज पदार्थ पाए जाते हैं। यहाँ देवदारु, बलूत, चींड़ और बाँस के जङ्गल हैं। राज्य के ६० प्रतिशत लोग खेती के काम में लगे हैं। गेहूँ, जौ ईख, कपास, तम्बाकू, मक्का, सरसों, अदरक और आलू यहाँ की मुख्य उपज है। तेंदुआ, साँभर, नील गाय, भाँति २ के हिरन, चीतल, गुरल भेड़िया आदि जानवर पाए जाते हैं। चिड़ियाँ भी भाँति भाँति की पाई जाती हैं। पहाड़ियों की जलवायु बहुत अच्छी है।

पटियाला राज्य के शासक अपने को चन्द्रवंशी बताते हैं और कहते हैं कि हम महाराजा गज के वँशज हैं जिन्होंने सातवीं शताब्दी में गज़नी, अफ़गा-निस्तान की नींव डाली। गज के बाद चौथी पीढ़ी में महाराज भट्टी हुए जिनके वँशज आज पटियाला, जैसलमेर और करौली में शासक हैं। यद्यपि पटि-याला नरेश सिक्ख धर्म को मानते हैं। तथापि वे राजपूत हैं।

इस राज्य का नाम 'पटियाला' इसी राज्य की राजधानी पटियाला के नाम पर पड़ा है। इस नगर की नींव १८ वीं सदी में राजा अलासिंह ने डाली। जब सिक्खों ने सरहिन्द पर अधिकार जमाया तो पटियाला राज्य स्वतंत्र हो गया।

महाराज साहबसिंह के समय में जब महाराणा रणजीतसिंह की ताक़त बढ़ रही थी तो ब्रिटिश सरकार ने पटियाला महाराज से मित्रता की और पटियाला राज्य को अपनी संरक्षता में ले लिया। यह सन्धि १८०९ में हुई थी।

महाराज साहब सिंह के पुत्र महाराज करन सिंह ने अँग्रेज़ों की बड़ी सहायता की और कई बार युद्ध पर गये उसके बदले में राज्य का विस्तार और भी अधिक बढ़ गया उसके बाद महाराज नरेन्द्र सिंह ने १८५७ के विद्रोह में अँग्रेज़ों का भरपूर साथ दिया। और विद्रोह को दबाने में आप ने अच्छा भाग लिया यदि महाराज पटियाला विद्रोह के समय में अँग्रेज़ों के साथी न होते तो आज भारतवर्ष का इतिहास कुछ और ही होता। यह महाराज पटियाला ही थे जिन्होंने दिल्ली को विद्रोहियों के हाथों से छीना और उन्हें मार भगाया। उसी के बदौलत पटियाला नरेश को ब्रिटिश साम्राज्य का प्रेमपात्र माना जाता है। कोई भी ऐसी लड़ाई भारत सरकार ने नहीं लड़ी जिसमें पटियाला नरेश का हाथ न रहा हो। सरहद, मिश्र, मेसोपोटा-मिया, गोली पोली आदि स्थानों में पटियाला के वीर सैनिक लड़ाई पर गए। पटियाला राज्य को अपनी सेना पर घमंड है।

भूतपूर्व महाराज लैफ्टिनेन्ट जनरल हिज़ हाई नेस भूपेन्द्र सिंह जी० सी० एस० आई०, जी० सी० आई० ई०, जी० जी० वी० ओ०, जी० बी० ई० एल० एल० डी०, ए० डी० सी० ने ब्रिटिश सरकार की योरुपीय महायुद्ध में बड़ी सहायता की। आपने लग-भग २८,००० सैनिक और एक करोड़ से ज्यादा रु० दिया। १९१८ में स्वयं आप सरहद पर तीसरे अफ़-गान युद्ध के समय गये। आप को जीवन में बड़ी सफलता प्राप्त हुई। आप चैम्बर आफ़ प्रिन्सेज़ के चान्सलर रहे। आप की मृत्यु गत २३ माच को हुई।

राज्य के अन्दर प्राइमरी शिक्षा मुफ़्त दी जाती है। महेन्द्र कालेज पंजाब के प्रथम श्रेणी के कालिजों में गिना जाता है। राज्य के अन्दर १५१ स्कूल और

११,१३० विद्यार्थी हैं। शिक्षा-विभाग में राज्य की ओर से १,५०,००० रुपया खर्च किया जाता है। राज्य की प्रजा को आर्थिक और सामाजिक दशा को सुधारने के लिये राज दरबार में एक अलग सभा है। राज्य में बहुत से औषधालय हैं जहां सभी प्रकार की वर्तमान सुविधाएँ हैं।

पिता की मृत्यु के पश्चात् वर्तमान नरेश महाराजा यादवेन्द्र सिंह गद्दी पर पधारे। आप को राज्य की बागडोर सौंप दी गई है। आप १९१३ में पैदा हुए और आप का व्याह सराय केला के सरदार की पुत्री से हुआ। आप को १७ तोपों की सलामी दी जाती है।

शासन के विचार से पटियाला राज्य ५ निज़ामतों (जिलों) में विभाजित है। (१) पटियाला, (२) बरनाला, (३) सुनाम, (४) बांसी (५) नरनाल। प्रत्येक निज़ामत एक नाज़िम के आधीन है। यद्यपि सर्वाधिकार हिज़ हाईनेस के हाथों में सुरक्षित हैं तो भी उनका प्रयोग शासन कमेटी करती है। यह कमेटी राजा को उसके कार्यों में सहायता देती है। कमेटी में हिज़ हाईनेस की सरकार के मन्त्रीगण और महल के अफ़सर रहते हैं। इस सभा का अध्यक्ष प्रेसीडेन्ट होता है जो राजा के न होने पर सभा संचालन करता है। राज्य में एक हाईकोर्ट है जिसमें प्रधान न्यायाधीश को मिला कर तीन जज हैं।

राज्य के अन्दर काफी संख्या में सड़कें हैं। ग्रैंड ट्रंक रोड जो दिल्ली से पेशावर को जाती है वह इस राज्य से होकर जाती है। राज्य के अन्दर दो रेलवे लाइनें हैं। एक राजपुरा से भटिंडा को और दूसरी सरहिन्द से ऊपर को जाती है। इन लाइनों की लम्बाई १३८ मील है। और यह राज्य के खर्च से ही बनी हैं, इनके सिवा एन० डब्लू० आर०, ई० आई० आर०, बी० बी० सी० आई० बीकानेर-सदुरपुर-रिवारी रेलवे तथा जे० बी० रेलवे लाइनें राज्य में होकर जाती हैं। राज्य में डाक का अपना अलग प्रबन्ध है। मुख्य मुख्य नगर टेलीफोन द्वारा मिले हुये हैं।

फेडरेशन के बारे में जितनी बात चीत हुई उनमें पटियाला नरेश का प्रमुख नाम रहा है। आगे भी यह राज्य अपनी स्थिति और अपनी बहादुर प्रजा की बदौलत एक प्रमुख स्थान रक्खेगा।

पटियाला राज्य एक कृषि प्रधान राज्य है इस लिए राज्य में २,४१,६३८ एकड़ में कपास की खेती होती है।

घरेलू कार्यों तथा खद्दर व गाढ़ा बनाने से जो कपास बचती है सभी बाहर भेज दी जाती है। यहां पर एक सूती मील खोलने की योजना की जा रही है। २३,०८९ एकड़ भूमि में ऊख की खेती होती है। ४०० मन प्रति एकड़ के हिसाब से ऊख की उपज होती है। इस प्रकार राज्य में एक करोड़ मन ऊख की उपज होती है। यह सभी ऊख गुड़ आदि बनाने से राज्य में खप जाती है। महाराज एक चीनी मिल (सूगर फैक्ट्री) खोलने की योजना सोच रहे हैं। राज्य में पाधन तथा सबथू की खानों में तांबा सीसा और चांदी पाई जाती है। राज्य के नरनाल जिले में रंग विरंगे सँगमरमर के पत्थर, चूना, तथा लोहा पाया जाता है। माला पहाड़ का ठीका दिया जा चुका है। यहां से चूना मिलता है और यहां एक सीमेन्ट फैक्ट्री खोली गई है जहां सौ टन सीमेन्ट प्रतिदिन तैयार होगी। इसके सिवा राज्य की ओर से घरेलू रोजगार तथा धंधों को भी प्रोत्साहन दिया जा रहा है। साबुन बनाना, सूत तथा रेशम कातना, बनियाइन तथा मोजे बनाना, लोहे व लकड़ी का सामान बनाना, तथा ऊन कातना यहां के घरेलू धन्धे हैं।

भावलपुर राज्य

भावलपुर राज्य पंजाब सरकार के आधीन है। किन्तु यह पंजाब प्रान्त और राजपूताना के बीच में स्थित है। इस राज्य के उत्तर-पूर्व में सिरसा का जिला है। पूर्व और दक्षिण में बीकानेर जैसलमेर के राज्य हैं। दक्षिण-पश्चिम में सिंध का प्रान्त और उत्तर-पश्चिम में सिंध और सतलज नदियाँ हैं।

इस राज्य का क्षेत्रफल १६,४३४ वर्गमील है जिसमें से ९८८० मील रेगिस्तान है। नदी के किनारे किनारे आठ से चौदह मील तक चौड़ी एक कछारी भूमि की पट्टी है। इसी पट्टी में खेती होती है। राज्य के मध्यवर्ती भाग में पहाड़ियाँ हैं और पूर्व की ओर मरु प्रदेश हैं। राज्य में १०० फिट से ५०० फुट तक बालू के टोले हैं। यहाँ की जनसंख्या ९,८४,६१२ है। भावलपुर नगर इस राज्य की राजधानी है। यहाँ की जनसंख्या लगभग १५ हज़ार है। भावलपुर नगर में रेशम के कपड़े बुनने का एक कारखाना है। राज्य के अन्दर कई एक नहरें बनाई गई हैं। सतलज में समानान्तर दो नहरें बना दी गई हैं। इनके सिवा दो और दूसरी नहरें ११३ मील लम्बी और दूसरी ७७ मील है। ये नहरें सिंचाई का काम देती हैं। राज्य के अन्दर इन्डस वैलो स्टेट रेलवे है। भावलपुर में सतलज नदी पर एक सुन्दर पुल बना है।

भावलपुर के नवाब सिंध से आये। जब दुर्रानी राज्य का अन्त हो रहा था और शुजा क़ाबुल से निकाला गया। उस समय भावलपुर का स्वतंत्र राज्य बना। महाराज रणजीत सिंह की उन्नति देखकर भावल खाँ को नवाब ने कई बार अँग्रेज़ों से प्रार्थना की कि अँग्रेज़ सरकार उसे अपनी आधीनता में ले ले और उसकी रक्षा करे। सबसे पहली संधि १८३३ ई० में हुई। इससे नवाब अपने राज्य के अन्दर स्वतन्त्र होगया और सिंध और सतलज में आने जाने का अधिकार भी उसे मिल गया। १८३८ में दूसरी संधि के अनुसार काबुल शाह शुजा को दिया गया। भावलपुर नगर और राज्य की रक्षा का भार ब्रिटिश सरकार ने लिया और भावलपुर राज्य ने प्रतिज्ञा की कि सदैव अँग्रेज़ सरकार के आधीन रहेगा और ब्रिटिश सरकार की सलाह से सदैव कार्य्य करेगा। नवाब बिना ब्रिटिश सरकार की आज्ञा के किसी दूसरे राज्य से युद्ध या संधि न करेगा।

नवाब ने ब्रिटिश सरकार सहायता अफ़ग़ानिस्तान के युद्धों में की जिसके इनाम में सबज़लकोट और भोंठा के ज़िले दिये गये। साथ ही नवाब को एक लाख सालाना की पेंशन मिली। १८६३-६६ तक राज्य में उथल पुथल रही यह उथल पुथल नवाब के सख़्ती के कारण थी। उसे नवाब ने दबा दिया। १८६६ ई० में नवाब की एकाएक मृत्यु हो गई और उनके पुत्र सादिक मुहम्मद खां गद्दी पर बैठे। इस समय नवाब की अवस्था केवल चार साल की थी। इस लिये राज्य की रक्षा के लिये अँग्रेज़ सरकार ने अपना इन्तज़ाम किया। १८७९ ई० में नवाब के बालिग होने पर राज्य की बागडोर नवाब के हाथों में दे दी गई। नवाब ६ मेम्बरों की सभा की सहायता से राज्य करता है। जिनका निकालना या रखना नवाब के अधिकार के बाहर है और उसे भारत सरकार ही कर सकती है। सरहद पर युद्ध के समय में नवाब सदैव बड़ी सहायता करते हैं।

नवाब भावलपुर की गिन्ती पंजाब के सर्दारों में तीसरा स्थान है। महाराज पटियाला के बाद आपही का नम्बर है। नवाब किसी प्रकार का कर नहीं देता और नवाब के राज्य की आय ३५,६३,००० रुपये सालाना है। नवाब के पास १२ तोप, ६६ तोप चलाने वाले २०० सवार और २४९३ पैदल सिपाही और पुलीस हैं। भावलपुर राजधानी के चारों ओर मिट्टी की दीवाल है और नवाब का महल वर्गाकार है। हाल ६० फीट लम्बा और ५६ फीट ऊँचा है। अन्दर ७० फीट गहरा तहखाना है। ऊपर कमरों की ऊँचाई ११० फीट तक है। राज्य में लाहौर कराची ब्रांच और नार्थ वेस्टर्न रेलवे है।

यहाँ के वर्तमान नवाब हिज़ हाईनेस सादिक मुहम्मद खाँ हैं। आप १९०४ में पैदा हुये और १९०७ में गद्दी पर बैठे। आपको १७ तोपों की सलामी दी जाती है।

खैरपुर—अपर सिन्ध (ऊपरी)

सिन्ध प्रान्त का एक राज्य है। इसके पूर्व में जोधपुर और जैसलमेर के राज्य हैं। और सब ओर यह सिन्ध प्रान्त के जिलों से घिरा हुआ है। इसका क्षेत्रफल ६०५० वर्गमील और जन-संख्या २७,२०० है। यह राज्य भी अपने पड़ोस वाले प्रदेश की तरह रेगिस्तान है। साल में ४ इञ्च वर्षा होती है। यहां अधिक से अधिक तापक्रम छाया में ११७ अंश और कम से कम ३० अंश पाया जाता है। जहां सिंचाई की सुविधा है वहां गेहूँ, कपास और दूसरी फ़सलें होती हैं। गाय भी अच्छी होती हैं। सक्खर की नहरों के खुल जाने से इस राज्य को लाभ हुआ। यहां से कपास, तेलहन, चमड़ा, तम्बाकू, मुल्तानी मिट्टी और सोडा बाहर भेजा जाता है। यहां रेशमी, सूती, ऊनी कपड़े, कालीन और मिट्टी के बर्तन बनाने का काम होता है। सिंध के कल्होर वंश के नष्ट हो जाने पर यहां बिलोचिस्तान के तलपर बलोचों का राज्य हो गया। यह लोग शिया मुसलमान हैं। अधिकतर निवासी सुन्नी मुसलमान हैं। हिन्दू लोग अल्प संख्या में हैं। खैरपुर राज्य की प्रधान भाषा सिन्धी है। कुछ लोग अँग्रेज़ी और हिन्दुस्तानी भी बोल सकते हैं। १८८३ ई० में ब्रिटिश सरकार ने इस राज्य को स्वीकार कर लिया। इस राज्य की आमदनी १५ लाख रुपया है। यहां के शासक (जो तलपुर कहलाते हैं) को १५ तोपों की सलामी दी जाती है। यहां के वर्तमान शासक हिज़ हाईनेस मीर मुहम्मद खां हैं।

झींद

झींद, पटियाला और नाभा तीनों राज्य सतलज के इसपार मिलकर फुलकियन राज्य कहलाते हैं। यह सिस सतलज राजों से सब से अधिक प्रसिद्ध हैं। जंगल, घग्गर, नादक, पवध और कुरुक्षेत्र में यह राज्य फैला हुआ है।

झींद राज्य का इतिहास १७६३ से आरम्भ होता है। जब सिक्ख लोगों ने सरहिन्द नगर पर अधिकार जमाया और सारे झींद राज्य को आपस में बाँटा। झींद महाराज हिज़ हाईनेस सर रणबीर सिंह जी० सी० आई० ई०, के० सी० एस० आई० १८७९ में पैदा हुये और १८८७ में गद्दी पर बैठे। आप फुलकियन वंश के हैं। विप्लव काल और महायुद्ध के समय झींद के राजा ने अँग्रेजों की बड़ी सहायता की उसके बदले उन्हें लगभग ६०० वर्गमील ज़मीन मिली।

राज्य की उपज गेहूँ, जौ और चना है। राज्य में चाँदी और सोने के अच्छे गहने बनाये जाते हैं, चाँदी सोने का काम भी अच्छा होता है। चमड़े का काम भी यहाँ अच्छा होता है और कई एक कारखाने हैं। राज्य में लकड़ी के सामान बनाने के भी बहुत से कारखाने हैं। यहां कपड़ा बुनने का काम भी अच्छा होता है। राज्य में नार्थ वेस्टर्न रेलवे लाइन है। संगरूर इस राज्य की राजधानी है।

महाराजाधिराज की सहायता के लिये एक काउन्सिल वजारत है जो राज्य के सभी राजकीय विभागों का प्रबन्ध करती है। यहाँ के महाराजाधिराज को १३ तोपों की सलामी दी जाती है।

इस राज्य का क्षेत्रफल १२५९ वर्गमील, जन-संख्या २,७१,७२८ है। इस राज्य की सालाना आमदनी १५ लाख रु० है।

नाभा

सिस-सतलज (सतलज नदी के इस किनारे वाले) वाले राज्यों में से नाभा एक राज्य है। यह पंजाब सरकार के आधीन है। इस राज्य का क्षेत्रफल लगभग १,००० वर्गमील और जन-संख्या २,६१,८२४ है। मुख्य उपज, ऊख, रुई, तम्बाकू और अनाज की है।

इस राज्य के शासक तिलोक ज्येष्ठ पुत्र फूल जो सिधू जाट के वंश से हैं। फूल ने नाभा प्रान्त में एक गाँव की नींव डाली। झींद के राजा और पटियाला नरेश भी उसी वंश से हैं। ये तीनों घराने फुलकियान के नाम से प्रसिद्ध हैं। १८०७-८ के पहले का इतिहास बहुत कम मूल्य रखता है। किन्तु जब महाराज ने जमुना नदी के उत्तर के सारे प्रान्त पर अधिकार करना चाहा तो नाभा नरेश ने अँग्रेजों से सहायता को अपील की। जब कर्नल आक्टर लोनी नाभा में आया तो राजा ने उसका बड़ा सत्कार किया और मई सन् १८०९ में नाभा राज्य और दूसरे सिस सतलज राज्यों के साथ ब्रिटिश की संरक्षता में सम्मिलित कर लिया गया। राजा जसवन्तसिंह ब्रिटिश सरकार के सच्चे सहायक थे। किन्तु उनकी मृत्यु के के पश्चात् उनके पुत्र राजा देवेन्द्रसिंह १८४५ ई० में प्रथम सिक्ख युद्ध के समय में सिक्खों के साथ अधिक प्रेम दिखलाया और सेना के खाने पीने के सामान पहुँचाने में गड़बड़ी की। यद्यपि बाद में सारे नाभा राज्य की सारी शक्ति ब्रिटिश सहायता में। लगा दी गई किन्तु तो भी राजा की जांच की गई और राजा को ७५,००० रु० सालाना की पेंशन देकर अलग कर दिया गया। और ज्येष्ठ पुत्र भारपुर सिंह को गद्दी पर बैठाया गया।

१८५७ के ग़दर में राजा अँग्रेज सरकार का सच्चा साथी बना रहा। जिसके बदले में राजा को १,५०,००० रु० की भूमि प्रदान की गई और राजा से प्रतिज्ञा कराई गई कि वह सदैव खतरे के समय में उसी प्रकार ब्रिटिश सरकार की सहायता करेगा। राजा बहादुर के पश्चात् भगवानसिंह राजा हुए किन्तु १८७१ में वे भी मर गए। राना के कोई वंश न था। इसलिये ५ मई सन् १८६० ई० की सनद के अनुसार हीरासिंह फुलकियान वंश के जिन्द के जागीरदार राजा चुने गए। यह सिधू जाट जाति के थे और १८४३ में पैदा हुए थे।

नए राजा को ब्रिटिश सरकार को कुछ नजराना गद्दी नशीनी के लिये देना पड़ता है। राजा को अपनी प्रजा के जीवन-मरण की आज्ञा देने का अधिकार है।

राज्य की सेना में १२ रणक्षेत्र वाली व १० दूसरी तोपें हैं १० तोपें चलाने वाले ५६० सवार और १२१० पैदल सिपाही हैं। राज्य की सालाना आय लगभग २८,२६,००० रुपये हैं।

यहाँ के वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस महाराजा प्रतापसिंह मालवेन्द्र बहादुर हैं। आप १९ फरवरी १९२८ में गद्दी पर बैठे। महाराज को १३ तोपों की सलामी दी जाती है।

कपूर्थला

यह राज्य पंजाब प्रान्त में जालन्धर द्वाब में स्थित है। कपूर्थला राज्य तीन भिन्न भिन्न भागों से मिलकर बना है यहाँ के शासक के पूर्वज सिस (इस पार) तथा ट्राँस सतलज (उस पार) और बारी द्वाब पर भी पहले राज्य करते थे। अहलू गांव बारी द्वाब में स्थित है। इसी गाँव से अहलू वालियाँ घराने की उपज हुई। जब सन् १८४६ में जालन्धर द्वाब अँग्रेजों के अधिकार में आया तो उत्तरी राज्य अहलू वालिया वंश के अधिकार में रहे और वे कुछ सालाना कर अँग्रेजों को देते रहे जैसा कि वे रणजीतसिंह को देते थे। बारी द्वाब के राज्य अब भी इस वंश के अगुवा के अधिकार में हैं। यहाँ का प्रबन्ध अंग्रेजों के हाथ में है।

१८५७ में वर्तमान नरेश के पूर्वजों ने अँग्रेजों की सहायता की। उसके बदले में उनको अवध के राज्य मिले। कपूर्थला के शासक सिक्ख हैं। ये लोग अपने को जैसलमेर के राना कपूर के वंशज बताते हैं। राज्य में थोड़ी ही संख्या में सिक्ख हैं। यहाँ के अधिकतर निवासी मुसलमान हैं।

राज्य की मुख्य उपज, गेहूँ, चना, कपास, मक्का, और ईख है।

इस राज्य के सुलतानपुर नगर में कपड़े पर छपाई का काम अच्छा होता है। इस राज्य में होकर ग्रान्डट्रंक सड़क और नार्थ वेस्टर्न रेलवे जाती है। एक ब्रांच लाइन जालन्धर से फ़ीरोज़पुर को पूर्वी राज्य में होकर जाती है।

इस राज्य का क्षेत्रफल ६२० वर्गमील और जन-संख्या ३,१७,००० है। राज्य की सालाना आय लगभग २५ लाख है। यहाँ के वर्तमान शासक कर्नल हिज़ हाईनेस महाराजा सर जगजीतसिंह बहादुर जी० सी० एस० आई०, जी० सी० आई० ई०, जी० बी० ई० हैं। आप १८७२ में पैदा हुए और १८७७ में गद्दी पर बैठे। आपको १५ तोपों की सलामी दी जाती है।

****

मंडी राज्य

यह पंजाब प्रान्त के आधीन एक देशी राज्य है। इस राज्य के पूर्व में कूलू, दक्षिण में सुकेत और उत्तर-पश्चिम में काँगड़ा का ज़िला है। इस राज्य का क्षेत्रफल १,२०० वर्गमील और जन-संख्या १,८१,११० है। इस राज्य की सालाना आय ५ लाख है। यह एक पहाड़ी राज्य है। इसके बीच होकर दो पहाड़ी श्रेणियाँ समानन्तर फैली हुई हैं। इन्हीं श्रेणियों की शाखाएँ सारे राज्य को घेरे हुए हैं। गोघर का धार ७,००० फुट और सिकन्दर का धार ६,३५० फुट ऊँचे हैं।

यहाँ के शासक चन्द्रवंशी राजपूत हैं। यहाँ के राजा सेन कहलाते हैं और दूसरे लोगों के नाम के साथ सिंह शब्द का प्रयोग होता है। यहां के शासक सुकेत राजों के घराने से हैं। १५२७ ई० में राजा अजबर सेन ने मंडी नगर की नींव डाली। यही मंडी के पहले राजा हुए।

सोबरांव का युद्ध १८४६ में हुआ। उसके पश्चात यहां के शासक लाहौर की संधि द्वारा अँग्रेज़ सरकार के अधीन हो गए।

यहां के वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस राजा जोगेन्द्र सेन १९१३ में गद्दी पर बैठे। उस समय मिस्टर जे० आर० एस० पार्सन सुपरिटेन्डेन्ट और महाराज किशन असिस्टेन्ट सुपिरिन्टेन्डेन्ट का काम करते थे।

राजधानी को छोड़कर और सारे राज्य की जलवायु ठंडी है। पहाड़ियों के नीचे की भूमि उपजाऊ है और वहां सभी प्रकार का अनाज पैदा होता है। यहां की मुख्य उपज चावल, मक्का, गेहूँ, और बाजरा, है। राज्य के ३⁄५ भाग में जंगल और घास के मैदान हैं। पर कई प्रकार की धातें पाई जाती हैं।

मंडी यहां की राजधानी है। नगर में बहुत से मन्दिर और देखने योग्य भवन हैं। यहां से लद्दाख और यारकन्द का व्यापार होता है।

****

सिरमौर राज्य

यह एक पहाड़ी राज्य है। यह हिमालय प्रदेश में स्थित है और अम्बाला डिवीज़न के कमिशनर के आधीन है। इस राज्य का इतिहास ग्यारहवीं शताब्दी से आरम्भ होता है। अठारहवीं सदी में गोरखा लोग राज्य के भीतरी झगड़ों को तै करने के लिये बुलाए गए, किन्तु अँग्रेज़ी सेना ने जाकर उन्हें निकाल बाहर किया। १८५७ में यहां के राजा ने अँग्रेजों का साथ दिया और सहायता की, दूसरे अफ़ग़ान युद्ध के

समय भी यहाँ के राजा ने भारत सरकार की सहायता लिये सरहद पर सेना भेजी।

वर्तमान समय में यहां के नरेश लेफ्टिनेन्ट कर्नल हिज़ हाईनेस महाराजा अमर प्रकाश बहादुर के० सी० एस० आई० हैं। आप १८८८ में पैदा हुए और १९११ में गद्दी पर बैठे।

राज्य की मुख्य उपज गेहूँ, चना, चावल, और मक्का है। यहां बहुमूल्य लकड़ी पाई जाती है। नाहन में ईख पेरने की एक मिल है। भारतीय सेना में भरती होने के लिये यहां से सैनिक आते हैं।

इस राज्य का क्षेत्रफल १,१९८ वर्गमील और जन-सख्या १,३८,५६४ है। राज्य की सालाना आय ८ लाख रु० है।

फरीद कोट

पंजाब प्रान्त के आधीन फरीदकोट एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ६४२ वर्गमील और जन संख्या १,३०,३७४ है। इस राज्य की सालाना आय लगभग १२ लाख है। यहां की भूमि समतल और बलुई है। यहां के शासक सिंधु—बरार घराने के जाट हैं। यह लोग मुग़ल सम्राट् अकबर के समय से यहां राज्य करते आए हैं। यद्यपि आपस के झगड़े और सिक्खों से लड़ाई-झगड़ा होने के कारण इनकी बहुत सी भूमि दूसरों के हाथों चली गई है तो भी ये लोग अब तक अपना राज्य बनाए हुए हैं।

यहां के वर्तमान नरेश फ़रज़न्द सआदत निशान हज़रते—क़ैसरे हिन्द बरारवंश राजा हर इन्द्रसिंह बहादुर हैं। आप का जन्म १९१५ में हुआ और आप १९१९ में अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् गद्दी पर बैठे। भारत सरकार की आज्ञा से राज काज एक काउन्सिल करती रही। इस काउन्सिल का एक प्रधान और चार मेम्बर हैं। यहां के महाराज को ११ तोपों की सलामी दी जाती है।

मलेर कोटला राज्य

मलेर कोटला राज्य पंजाब प्रान्त में स्थित है और उसी के आधीन है। यहाँ का क्षेत्रफल १६७ वर्ग मील और जन-संख्या ७१,१४४ है। इस राज्य की सालाना आय लगभग १,४५,००० है। इस राज्य के उत्तर में लुधियाना का जिला और शेष सभी ओर पटियाला राज्य है। राज्य की भूमि बलुई और समतल है।

यहां के नवाब अफ़ग़ान हैं। मुगल बादशाहों के समय में वे सरहिन्द के नवाब थे। जब अठारहवीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य का अन्त हुआ तो आपस के राज्यों में झगड़ा होने लगा। सिक्ख और मरहठों से भी झगड़ा हुआ। लेकिन यहां के नवाब ने लासवारी की लड़ाई में १८०३ में अँग्रेज़ों का साथ दिया। होल्कर का पीछा करने में भी १८०५ में यहां के नवाब ने अँग्रेज़ों का साथ दिया। उसके बाद जब जमुना और सतलज के बीच वाले प्रदेश में अँग्रेज़ों का अधिकार हुआ तो १९०९ में नवाब और अँग्रेज़ों के बीच सन्धि हुई। तब से यहां के नवाब अँग्रेज़ों के वफादार साथी हैं।

वर्तमान नवाब हिज़ हाईनेस अहमद अली खां बहादुर के० सी० एस० आई० हैं। आप १८८१ में पैदा हुये और १९०८ में गद्दी पर बैठे। आप महायुद्ध के समय अँग्रेज़ों की ओर से युद्ध क्षेत्र में गये। इससे आप को मेजर की उपाधि प्रदान की गई।

राज्य की मुख्य उपज कपास, ईख और अफीम है।

चम्बा

चम्बा पंजाब प्रान्त का एक राज्य है। इस राज्य के उत्तर-पश्चिम में काश्मीर राज्य और दक्षिण-पूर्व में कांगड़ा और गुरुदासपुर के ज़िले हैं। यह सारा राज्य पहाड़ी है। इस में लोग शिकार खेलने के लिए आते हैं। यहाँ पर बहुत से प्राचीन ताम्रपत्र पाए गए हैं। लगभग छठवीं शताब्दी में इस राज्य की नींव मारुत सूर्यवंशी राजपूत ने डाली थी। चम्बा नगर को साहित्य वर्मा ने लगभग ९२० में बसाया था। मुग़ल साम्राज्य के पहले यह राज्य स्वतंत्र रहा। फिर यह मुगल साम्राज्य के आधीन हो गया। किन्तु इस राज्य पर सिक्ख लोगों का प्रभाव नहीं पड़ा। १८४६ में यह राज्य अंग्रेजों के अधिकार में आया। पहले इसका पश्चिमी भाग काश्मीर राज्य के आधीन रहा किन्तु बाद को यह फिर इस राज्य को लौटा दिया गया।

इस राज्य का क्षेत्रफल ३२१६ वर्गमील तथा जनसंख्या ७८,३९४ है। इस राज्य की सालाना आय लगभग ७ लाख रु० है। यहां की मुख्य उपज बाजरा, मक्का और चावल है। राज्य में बहुमूल्य लकड़ी पाई जाती है। पहाड़ों पर कई प्रकार की धातुएँ पाई जाती हैं। किन्तु उनकी खुदाई अभी तक भली भाँति नहीं हुई है।

राज्य में अमृतसर पठान कोट तथा नार्थ वेस्टर्न रेलवे है।

महाराज वज़ीर वज़ारत की सहायता से राज्य प्रबन्ध करते हैं।

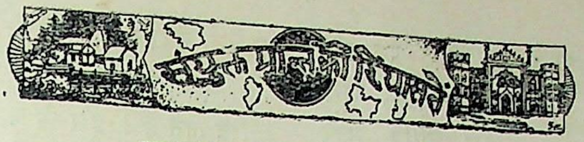
चम्बा नगर रावी नदी पर स्थित है। यहां पर बहुत से मन्दिर हैं जिनमें लक्ष्मी नारायण का मन्दिर सबसे अधिक प्रसिद्ध है।

कहलूर राज्य

यह शिमला पहाड़ी का एक राज्य है और पञ्जाब गवर्नमेन्ट के आधीन है। यहाँ का क्षेत्रफल ४४८ वर्गमील है। यहाँ की जनसंख्या ८६,५४६ है। गोरखों ने उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में इस राज्य पर आक्रमण किया। किन्तु अँग्रेजों ने उन्हें निकाल बाहर किया और राजा को फिर गद्दी पर बैठाया। जब पञ्जाब को ब्रिटिश सरकार ने जीता तो राजा को कहलूर का राज्य और सतलज नदी का दाहिना तट दिया। बाद को बासे बचरेटू का परगना भी राजा को दिया गया जिसके बदले में राजा अँग्रेज़ सरकार को १२,०००रु० सालाना देता है। १८५७ के ग़दर में राजा ने सरकार की सहायता की थी। उसके बदले में राजा को ७,५०० रु० की पोशाक मिली और ७ तोपों की सलामी का हुक्म हुआ जो बाद को ११ कर दिया गया। राजा हीराचन्द १८३५ में पैदा हुए और अक्टूबर सन् १८८२ में उनकी मृत्यु हुई। उसके बाद उनके पुत्र अमरचन्द राजा हुए। राज्य की मुख्य पैदावार अनाज, अदरख और अफीम है। राज्य की सालाना आय २ लाख रु० है।

पंजाब प्रान्त के अन्य छोटे छोटे राज्य

राज्यों के नाम और उनके शासक	क्षेत्रफल वर्गमील में	जनसंख्या	सालाना आमदनी रुपयों में	सलामी
१ बिलासपुर (कहलूर)-हिज़ हाईनेस राजा आनन्दचन्द्र	४५३	१०,९९४	२,९०,०००	११ तोपों की
२ बशहर—राजा पद्मसिंह सी० एस० आई०	३,८२०	१,००,१९२	३,५०,०००	९ "
३ नालागढ़ (हिन्डूर)–राजा जोगेन्द्र सिंह	२५६	५०,०१५	२,००,०००	...
४ क्योंथल (जूंगा)–राजा हेमेन्द्र सेन	११६	२५,५६०	१,५०,०००	...
५ सुकेत–हिज़ हाईनेस राजा लच्मण सेन	३९२	५८,४०८	२,७३,०००	११ "
६ कलशिया–राजा रविशेर सिंह	१८८	५,०९,८४८	४,१८,०००	...
७ पटाऊदी–नवाब मुहम्मद इफ्तिखारअली खां बहादुर	५२	१८,८७३	१,३५,०००	....
८ लोहारू-लेट नवाब मिरजा अमीनुद्दीन अहमद खां बहादुर फखरुद्दौला	२२६	२३,३३८	१,१९,०००	९ "
९ दुजाना-नवाब मुहम्मद इश्तिदारअली खां बहादुर	९१	२८,२१६	१,४९,०००	...
१० बघेल-राजा सुरेन्द्र सिंह	१२४	२६,३२५	८५,०००	....
११ जब्बल-राणा सर भगत चंद, के० सी० एस० आई० राजा ऑफ	२८८	२६,०२१	७,५५,०००	...
१२ बवात (सोलन)–राजा दुर्गासिंह	३६	९,७२५	१,५०,०००	...
१३ कुम्हार सेन-राणा विद्याधर सिंह	९०	१२,७८१	५७,०००	...
१४ भाज्जी (सूनी)–राना वीरपाल सिंह	९६	१५,४१३	७१,०००	...
१५ महलोग (पट्टा)–ठाकुर नरीन्द्रचंद	४३	८,१५५	१८,०००	....
१६ बालसन-राना अतर सिंह	५१	६,८६४	९५,०००	. .
१७ धामी-राना दलीप सिंह	२६	५,२३२	३०,०००	...
१८ कुठार-राना कृष्णचंद	२०	३,७६०	१४,०००	...
१९ कुनिहार-ठाकुर हरदेव सिंह	७	२,०६१	७,०००	...
२० मंगल-राना शिवसिंह	१२	१,२४८	९४,०००	...
२१ बीजा-ठाकुर पूरनचंद	४	९९४	१०,०००	...
२२ दरकोटी-राना रघुनाथ सिंह	५	५३१	१,७००	...
२३ थारोच-राना सूरतसिंह	६७	४,५६८	१,३०,०००	...
२४ संगरी-राय रघुवीर सिंह	१६	३,४९७	७,०००	...
२५ खनेटी-ठाकुर अमोगचंद	१९	२,७९७	...	...
२६ देलाठ-ठाकुर देवी सिंह	८	१.४००	...	...
२७ कोटी (क्यिारी कोटी)–राना रघुवीर चंद	४४	८,७८५	...	...
२८ थेवग-ठाकुर पदूमचंद	१४४	६,९१२	...	...
२९ मधन-ठाकुर रणधीर चंद	१३	४,३१५	...	...
३० भुंड-ठाकुर रणजीत सिंह	९	१,९६३	...	...
३१ रातेश-शमशेर सिंह	२	५५८	...	...
३२ राविन (रैनगढ़)–ठाकुर कीदर सिंह	६	९३९	...	...
३३ धादी- ठाकुर धरम सिंह	७	२१२	...	...



बनारस या काशी

बनारस या काशी अत्यन्त पुराना प्राचीन हिन्दू राज्य है। इस का उल्लेख प्राचीन हिन्दू और बौद्ध ग्रन्थों में आता है। १२ वीं सदी में शहाबुद्दीन गोरी ने इसे जीत कर एक अलग राज्य बना दिया था। मुगल राज्य के क्षीण होने और औरंगजेब के मरने पर राजा बलवन्त सिंह (इन के पिता बनारस जिले के गंगापुर नगर में रहते थे और बड़े ज़मीदार थे) ने फिर अपना राज्य जमा लिया। दिल्ली के बादशाह ने भी इन्हें राजा मान लिया। अगले ३० वर्षों में अवध के नवाब सफदर जङ्ग और उसके बाद शुजा-उद्दौला ने इस राज्य को नष्ट करने की पूरी कोशिश की। लेकिन वे इस में सफल न हुए। नवाबों के अचानक छापों से बचने के लिये काशी के दूसरी ओर गंगा-तट पर रामनगर में किला बनाया गया। १७७० ई० में राजा बलवन्त सिंह का स्वर्गवास हो गया और उनके बेटे राजा चेतसिंह काशी नरेश हुये। काशी राज्य नवाबी हमलों से भली भांति सम्भल न पाया था कि इतने में वारेन हेस्टिंग्स की लूट खसोट आरम्भ हो गई। वारेन हेस्टिंग्स के अत्याचारों से बचने के लिये राजा चेतसिंह को सदा के लिये अपना पैतृक राज्य छोड़ कर भागना पड़ा। चेतसिंह के चले जाने पर बलवन्त सिंह की लड़की का लड़का (महीप नारायण सिंह) गद्दी पर बिठाया गया। लेकिन वे पागल हो गये। राज्य का कुछ भाग ब्रिटिश राज्य में शामिल कर लिया गया। कुछ अलग बना रहा। १९११ ई० में पुराने राज्य का बड़ा भाग (जिसमें भदोही और चकिया के परगने शामिल हैं) फिर बनारस राज्य को मिल गया। १९१८ ई० रामनगर और पड़ोस के गाँव ब्रिटिश सरकार ने काशी नरेश को दे दिये। राजा के अधिकार भी दे दिये। इस राज्य का क्षेत्रफल ८७५ वर्गमील, जन-संख्या ४ लाख और आमदनी १८ लाख रुपया है। यहां के वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस महाराजा सर आदित्य नारायण सिंह बहादुर हैं। आप १९३१ में गद्दी पर बैठे। आप को १३ तोपों की सलामी दी जाती है।

रामपुर राज्य

रामपुर संयुक्त प्रान्त का एक देशी राज्य है। इस के उत्तर में नैनीताल का ज़िला, पूर्व में बरेली का ज़िला, दक्षिण में बदायूँ ज़िले की बिसौली तहसील और पश्चिम में मुरादाबाद ज़िला है। इस राज्य का क्षेत्रफल ८९९ वर्गमील और जन-संख्या ४,६४,९१९ है। हिमालय की तराई में स्थित होने के कारण यहाँ की जलवायु ठण्डी है। घाटियों में नमी होने के कारण जलवायु अच्छी नहीं रहती। साल में ३८.१ इंच वर्षा होती है।

यहाँ की भूमि समतल और उपजाऊ है। भूमि का ढाल उत्तर से दक्षिण की ओर है। और उत्तर की ओर समुद्रतल से ६३० फुट तथा दक्षिण की ओर ५४६ फुट है। रामगंगा, कोसी, गँगन यहाँ की मुख्य नदियाँ हैं। इनके सिवा घूग, पिलखर, नहल, नह, सेंझी, भकर, धिमरी, कछिया, हाथीचिंघार आदि छोटी छोटी नदियाँ हैं। राज्य के भीतर तराई में जंगल हैं। तराई के सिवा दिनदिन, धनपुर, विजयपुर, पिलखर, लालपुर, विक्रमपुर आदि के जंगल हैं। इन जंगलों में शिकार खेलने की आज्ञा नहीं है। तराई के जंगल घने हैं। तेंदुआ, साँभर, हिरण, सुवर, भेड़िया इत्यादि और भांति भांति के पक्षी पाए जाते हैं।

राज्य में ३,९०,१७५ एकड़ भूमि में खेती होती है और १११५ एकड़ जमीन बेकार है। यहाँ रबी और खरीफ दो फसलें होती हैं जिसमें गेहूँ, जौ, चना, मक्का, धान, बाजरा, ज्वार, उर्द, कपास और

ईख की उपज होती है। सिंचाई के लिये राज्य में काफी संख्या में नहरें हैं। कोसी, बहिल्ला, घूग, राजपुरनी, भकरा, केमरी और नहल आदि नहरें हैं। इन के अलावा कुवों और तालाबों से भी सिंचाई का काम होता है।

हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, राजपूत, जाट आदि जातियाँ राज्य में पाई जाती हैं। राज्य के ६२ फी सदी लोग खेतो का व्यवसाय करते हैं। ६८ प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो घरेलू रोज़गार और धंधों में लगे हैं। बाकी लोग या तो मज़दूर हैं। या राज्य के कर्मचारी हैं। राज्य की भाषा उर्दू है, स्वयं नवाब उर्दू के बड़े प्रेमी हैं। दरबार और अदालतों का काम उर्दू में ही होता है। लोगों की दशा रुहेलखंड के दूसरे ज़िलों के निवासियों की भांति है। कुछ लोग अधिक गरीब हैं, जो केवल कमाते खाते हैं और साल में किसी न किसी समय उन्हें कर्ज़ लेकर अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता है। मुसलमानी राज्य होते हुये भी हिन्दुओं के धार्मिक कार्य्यों में बाधा नहीं डाली जाती। सभी को अपने मतानुसार अपने धर्म को मानने की स्वतंत्रता है।

सड़कों और रेलवे लाइनों के खुल जाने से राज्य का सम्बन्ध ब्रिटिश राज्य से और भी अधिक बढ़ गया है, राज्य को इससे व्यापार में बड़ी सुगमता मिली है। गेहूँ, मक्का, चावल, गुड़, शक्कर, चमड़ा आदि वस्तुएँ बाहर भेजी जाती हैं। चमड़ा कानपुर रवाना किया जाता है। ऊख का शिरा भी कानपुर जाता है। चावल का व्यापार बड़े ज़ोरों पर होता है। टांडा, केमरी, बिलासपुर नगरिया आदिल आदि ऐसी जगहें हैं जहां चावल का बाज़ार बड़े ज़ोरों पर है। राज्य में एक पोल्ट्री फार्म है। जहां से अण्डे और चिड़ियों के बच्चे एक अच्छी संख्या में बाहर भेजे जाते हैं। कपड़ा कानपुर से और बिसात खाने का सामान और नमक कलकत्ता से मंगाया जाता है। एक बड़ी संख्या में दिल्ली और पंजाब से बकरियाँ आती हैं। रामपुर नगर में यह मुख्य भोजन का काम देती हैं। राज्य के अन्दर, तलवार, छुरी, चाकू, और बत्तीदार बन्दूकें बनाई जाती हैं। किन्तु ये वस्तुयें राज्य के बाहर नहीं जा सकतीं। केवल चाकू और सरौते बाहर जाते हैं। देहात के लोगों के सुभीते के लिये देहात में गांवों के बाज़ार लगा करते हैं जहाँ लोग बाज़ार के दिनों में जाकर आवश्यक सामान खरीद लेते हैं। इस के अलावा राज्य के भीतर बहुत से मेले भी लगते हैं जिनमें ईद और मोहर्रम के मेले मुसलमानों के प्रसिद्ध हैं और रतौंध का मेला हिन्दुओं का प्रसिद्ध है। इस मेले में राज्य के बाहर के लोग भी आते हैं और बहुत बड़ी भीड़ लगती है।

इतिहास

रुहेलखण्ड का प्रचीन नाम कठेर था। यहाँ क्षत्रियों का राज्य था जिसमें मुरादाबाद, सम्भल, बदायूँ, नैनीताल, बरेली आदि प्रदेश शामिल थे। १२५३ में यहाँ नासिर उद्दीन का आक्रमण हुआ फिर, १२६६ में गयास उद्दीन ने फिर हमला किया थोड़े समय के बाद बदायूँ, सम्भल, आउला में उपद्रव हो जाने के कारण जलालउद्दीन फ़ीरोज़ को १२९० में एक सेना भेजनी पड़ी किन्तु राजपूत क्षत्रियों ने फिर अपना अधिकार जमा लिया १,३७९ में उन्होंने बदायूँ के गवर्नर की हत्या कर डाली। इस समय हरसिंह क्षत्रिय राजपूतों का सर्दार था।

मुगल बादशाहों के समय में बदायूँ से केन्द्र हटाकर बरेली कर दिया गया। औरङ्गज़ेब की मृत्यु के बाद हिन्दू राजा स्वतंत्र हो गये। इनके सिवा अफ़गान सर्दार भी एक बड़ी संख्या में जागीर दार बने बैठे थे। इन अफगानों को लोग रुहेलों के नाम से पुकारते थे। रुहेला का अर्थ है पहाड़ के ऊपर के निवासी। मोहम्मद मोअज्जम शाह के समय में दाऊद खाँ अफ़गानिस्तान से भारत में आया और इस प्रान्त में आकर डेरा जमाया। दाऊद एक बड़ा सूरमा था। उसने शीघ्र लबहुत से ड़ाकू लोगों को अपना साथी बना लिया। इसी समय जब वह एक युद्ध में तो सैयद वंश के एक ६ वर्षीय बालक को उसने एक गाँव में पाया। इसी को दाउद ने अपना लड़का बनाया और इसका नाम अली मोहम्मद खाँ रक्खा।

अलीमोहम्मद खाँ

थोड़े समय के पश्चात् अलीमोहम्मद खाँ और कमायूँ के राजा ने मिलकर दाऊद की हत्या कर डाली। यद्यपि अली इस समय केवल चौदह साल

का था किन्तु दैविक बुद्धि और वीरता के कारण वह काफ़ी प्रसिद्ध होगया और बहुत से अफ़गान सर्दार उसके सच्चे सहायक बन गए। अली ने दाऊद की सारी जागीरों पर अधिकार जमा लिया और बरैली तथा मुरादाबाद के गवर्नरों से दोस्ती कर ली।

१७३९ में नादिर शाह का आक्रमण हुआ इस समय इसने रिछा अपना पर अधिकार जमाया। बरैली और मुरादाबाद के गवर्नरों ने नवाब को रोकना चाहा। इस पर युद्ध हुआ और दोनों गवर्नर मारे गये। इस प्रकार रुहेलखण्ड का अधिकांश भाग मोहम्मद खाँ के अधिकार में आ गया। उसके बाद नवाब ने पीलीभीत पर अधिकार जमालिया १७४३ में अली ने कमायूँ पर हमला किया और जीत कर गढ़वाल के राजा को ठेके पर दे दिया। इस प्रकार नवाब की उन्नति देख कर सफदर जंग वजीर अवध से चुपचाप न बैठा गया। उसने मोहम्मद शाह बादशाह को लिखा कि वह रुहेलों के विरुद्ध चढ़ाई करे। अली एक बादशाह के साथ चला गया और बादशाह ने उसे सरहिन्द की गवर्नरी पर नियुक्त किया। किन्तु जब १७३८ में अहमद शाह अब्दाली ने भारत पर आक्रमण किया तो अमीर मोहम्मद फिर रुहेलखण्ड लौट आया। इसके सभी पुराने साथियों ने साथ दिया। और इस प्रकार पुरानी जायदाद फिर मिल गई। १७४९ में अली मोहम्मद की मृत्यु हुई।

सादुल्ला तीसरा पुत्र अली के कथनानुसार मसनद पर बैठा किन्तु रुहेला सर्दारों में लड़ाई होने लगी। नवाब अवध ने आक्रमण किया किन्तु हफीज़ रहमत खाँ ने डट कर मुकाबिला किया। और १७५० में वजीर अवध को हराया। किन्तु फिर सफदर जंग ने मरहठों की सहायता से हमला किया। और रुहेलखण्ड को बर्बाद करता हुआ तराई तक खदेड़ ले गया किन्तु अहमदशाह के आक्रमण की बात सुनकर १५७२ में दोनों ओर से संधि हो गई जिसके अनुसार रुहेलों ने ४० लाख रुपया जुर्माना और ४ लाख रु० सालाना कर देने का वादा किया।

अहमदशाह अब्दाली रास्ते ही से वापस चला गया किन्तु अली के पुत्रों अब्दुल्ला खाँ और फैजुल्ला खाँ को छोड़ता गया। रहमत खाँ और उसके साथी अपने अधिकार छोड़ना नहीं चाहते थे इसलिये उन्होंने इस प्रकार अली की जागीर पुत्रों के बीच बाँटी जिससे आपस में झगड़ा हो जाय। कुछ दिनों की लड़ाई के पश्चात् फैजउल्ला खाँ नवाब बनाया गया। इसी समय से रामपुर का इतिहास आरम्भ होता है।

१७५८ में मरहठों ने पंजाब पर, फिर द्वाब पर और रुहेलखण्ड पर हमला किया। रुहेलों ने अवध के नवाब से मदद चाही और दोनों ने मरहठों को भगा दिया। कुछ ही समय बाद १७६१ में पानीपत का तीसरा युद्ध हुआ जिसमें मरहठों की हार हुई जिसमें शिकोहाबाद फैजउल्ला की और जलेसर और फ़ीरोज़ाबाद सादुल्ला को मिला। १७७१ में बिजनौर पर मरहठों का आक्रमण हुआ। इस समय रुहेलों की बड़ी बुरी दशा हुई। उन्होंने नवाब अवध से सहायता की अपील की पर उसने इन्कार कर दिया किन्तु ब्रिटिश लोगों के बीच में पड़ने के कारण नवाब अवध ने रुहेलों की सहायता करनी मान लिया। रुहेलों ने ४० लाख देने का बचन दिया। किन्तु दों में से किसी भी पार्टी ने बचन पूरा न किया। मरहठों ने रुहेलों की बुरी गत की।

कुछ समय पश्चात् नवाब अवध ने रहमत खाँ से ४० लाख रुपया माँगा। रुहेलों ने इन्कार किया इस पर अँग्रेजों ने भी सहायता दी और नवाबों ने रुहेलों पर हमला किया। रुहेलों की हार हुई। हफीज़ रहमत खाँ मारा गया और नवाब फैजउल्ला खाँ भाग कर बिजनौर के सरहद पर चला गया। किन्तु अँग्रेज़ों की सलाह से संधि हो गई। जिसके अनुसार नवाब फैज़उल्ला खाँ को उसकी जायदाद वापस दे दी गई। १७७५ ई० में नवाब फ़ैजउल्ला खाँ ने रामपुर नगर की नींव डाली और मुस्तफाबाद उर्फ रामपुर नाम रक्खा गया। लगभग २० साल राज्य करने बाद १७९३ में नवाब की मृत्यु हो गई।

नवाब मोहम्मद अली खाँ नवाब बनाया गया किन्तु रुहेल सर्दार उसके ख़िलाफ़ उसके गुलाम माहम्मद खाँ को नवाब बानाना चाहते थे। इसीलिये १४ अगस्त १७९३ को ५०० रुहेले राज महल पर चढ़ गये और नवाब को पकड़ ले गये और अंत में मार डाला। इस समय राज्य अँग्रेज अधिकारियों के हाथ में था। इसलिये एक सेना मोम्मद अली खाँ

खाँ के पुत्र (बालक) अहमद को गद्दी पर बैठाने को। भेजी गई । रुहेलों ने न तो अँग्रेजों की बात मानी और न नवाब अवध की । इस पर बिठूर नामक स्थान पर युद्ध हुआ जिससे रुहेलों की हार हुई। अहमद अली खां नवाब बनाया गया । गुलाम मोहम्मद मक्का चला गया। वहां उसकी मृत्यु हो गई।

एक संधि हुई जिसके अनुसार १० लाख मुनाफे की जायदाद छोड़ कर बाकी नवाब अवध के हाथ चली गई। नवाब फ़ैजउल्ला खाँ के खजाने का बाक़ी रुपया नवाब ने अँग्रेजों को देने का बचन दिया। नवाब अवध ने फैजउल्ला के घराने के लोगों को माफ कर दिया।

लगभग ४० साल राज्य करने के पश्चात् १८४० में नवाब अहमद अली खाँ की मृत्यु हो गई। नवाब अपने दया धर्म, बहादुरी और परोपकार के कारण अपने राज्य में बड़ा प्रसिद्ध था।

नवाब के कोई लड़का न था। इसलिये गुलाम मोहम्मद खाँ के बड़े पुत्र मोहम्मद सइयद खाँ का नाम मिस्टर राबिन्सन कमिश्नर रुहेलखण्ड ने पेश किया। मोहम्मद सईद खाँ बदायूँ के डिप्टी कलक्टर थे । लार्ड बैंटिंग ने यह बात मान ली और २० अगस्त सन् १८४० को नवाब मोहम्मद सय्यद खाँ गद्दी पर बैठे । आपने मालगुजारी के कानून और अदालतों में सुधार किया तथा सेना का संगठन किया । किसानों की दशा काफी सुधर गई थी। नवाब स्वयं एक अच्छा सैनिक और विद्यार्थी था। पहली अप्रैल १८५५ को नवाब की अचानक मृत्यु हो गई।

नवाब मोहम्मद सईद खाँ को उसके जीवन में ही अपने पुत्र को अपने बाद नवाब बनाने का अधिकार प्राप्त हो चुका था। इसलिये ज्येष्ठ पुत्र नवाब ईसुफ मोहम्मद अली खाँ गद्दी पर बैठे। आप भी पिता की भांति एक अच्छे शासक साबित हुए किन्तु आप आपने पिता से भी राजनीति क्षेत्र में बढ़ चढ़ गये। १८५७ के विप्लव काल में आपने अपने राज्य का ही प्रबन्ध नहीं किया वरन् मुरादाबाद जिले का भी चार्ज ले लिया था।

१८५७ में सारे भारतवर्ष में बग़ावत फैल गई। रुहेलखण्ड में भी गड़बड़ी फैली। रामपुर के पठान अपने रिश्तेदारों से जो बिजनौर, बरैली और मुरादाबाद में थे । छिपे छिपे विद्रोह सम्बन्धी लिखा पढ़ी कर रहे थे। नवाब की दशा बड़ी सोचनीय थी किन्तु फिर भी नवाब ने मुस्तैदी से काम लिया और हर प्रकार से अँग्रेजों की सहायता करता रहा। नवाब ने बड़ी चतुरता से काम लिया। और अपने आदमियों को लखनऊ, दिल्ली और बरैली के बीच डाकियों के कार्य्य में लगा दिया जिससे बागियों के सारे हाल मालूम होते रहें और फिर वह सारे हाल बड़ी होशियारी से गुप्तचरों द्वारा अँग्रेजों को भी पहुँचाता रहा।

नवाब ने दारुल ईशा नामक एक दफ़्तर खोला जहां पर सारा काम बगावत के समय का होता था। वहीं पर हर प्रकार की खबरें आती थीं और उनका प्रबन्ध भी किया जाता था। इसके प्रबन्धकर्ता मुन्शी सिलचन्द थे।

नवाब की सेवाओं की अँग्रेज अफ़सरों और कार्य्य कर्ताओं ने बड़ी तारीफ की जिसके बदले सरकार ने १,२८,५२७ रु० ४ आना सालाना की आमदनी का इलाक़ा और २०,००० रु० को पोशाक नवाब को दिया। नवाब को फरजन्द दिलपज़ीर की पदवी भी मिली । १८६१ में नवाब नाइट कमान्डर और लार्ड एलगिन के कौंसिल के मेम्बर बनाये गये। २१ अप्रैल सन् १८६५ ई० को नवाब की मृत्यु हो गई।

उसके बाद नवाब क़ालिब अली खाँ गद्दी पर बैठे। यह भी लार्ड लारेन्स की कौंसिल के मेम्बर बनाए गए । नवाब अर्बी और फार्सी के बड़े भारी विद्वान थे। १८७२ में नवाब मक्का गये उनकी गैरहाज़िरी में उस्मान खाँ राज प्रबन्ध करते रहे। १८७५ में आगरा में नवाब ने अष्टम एडवर्ड से भेंट की। और नाइट ग्रैन्ड कमान्डर की उपाधि तथा १५ तोपों की सालामी का हुक्मनामा मिला। २३ मार्च १८८७ को नबाब की मृत्यु हुई और नवाब मुश्ताक़ अली खाँ गद्दी पर बैठे। इनका स्वास्थ्य अच्छा न रहता था। जिसके कारण इनके समय में कोई विशेष बात नहीं हुई। १८८९ में इनकी मृत्यु हो गई और नवाब मोहम्मद हमीद अली खाँ बहादुर गद्दी पर

बैठे । लड़कपन होने के कारण राज-प्रबन्ध एक कौंसिल के हाथ था ।

१८९३ में नवाब अपनी शिक्षा पूर्ति के लिये दुनिया के भ्रमण को गये । इंगलैंड में जाकर आपने महारानी विक्टोरिया से भेट की । १८९४ में नवाब गद्दी पर एक शासक की हैसियत से बैठाये गये । एक कौंसिल राज्य शासन के लिये बनाई गई जिसके सभापति हिज़ हाईनेस हुये, वाइस प्रेसीडेन्ट साहेबज़ादा हमीदुज्ज़फर खाँ, मंत्री साहेबज़ादा अब्दुल मजीद खाँ, रेवन्यू मेम्बर सैय्यद अली खाँ, न्याय मेम्बर सैय्यद जैनुल आबदीन बनाये गये और साहब ज़ादा अब्दुल समद खाँ हिज़ हाईनेस के प्राइवेट सिक्रेटरी हुये । १८९४ में हिज़ हाईनेस की शादी जओरा के नवाब हिज़ हाईनेस स्माइल खाँ बहादुर की पुत्री से हुई । १८९६ में सलतनत की बागडोर नवाब के हाथों सौंप दी गई । कौंसिल तोड़ दी गई और मिनिस्टर की जगह बनाई गई । १९०३ में आप दिल्ली के दर्बार में बुलाये गये । वहाँ कारोनेशन मेडिल आपको मिला । इस प्रकार ब्रिटिश सरकार सभी मुख्य मुख्य अवसरों पर आपको बुलाती रही है । जून १९१० ई० में भारतीय सेना के आप कर्नल बनाये गये । १९१० में लार्ड मिंटो रामपुर आये और नवाब के शासन की बड़ी प्रशंसा की । भूतपूर्व नवाब साहब का पूरा नाम और उपाधि कर्नल हिज़ हाईनेस अलीशाह, फ़रज़न्द दिलपजीर, दौलत-इँगलीशिया मुखलिसुद्दौला, नसीरुलमुल्क, नवाब सर मोहम्मद हामिद अली खाँ बहादुर, मुस्तैद जंग, जी० सी० आई० ई० था ।

हिज़ हाईनेस के पास ४६६ सवार और लगभग २,००० पैदल सिपाही और २८ तोपें हैं । एक दस्ता नवाब के पास गोरखा सैनिकों का भी है ।

राज्य की सालाना आय ३७,०८,२७५ रु० है । राज्य के अन्दर एक अरेबिक कालेज है जहाँ भारतवर्ष के कोने कोने से विद्यार्थी आते हैं । राज्य के अन्दर बहुत से हाई स्कूल और मिडिल स्कूल लड़कों की तालीम के लिये हैं । भूतपूर्व हिज़ हाईनेस स्वयं एक शायर थे । और बड़े योग्य व्यक्ति थे । आपकी उदारता के कारण राज्य में शिक्षा की अच्छी उन्नति हुई है । रामपुर के वर्तमान शासक कैप्टेन हिज़ हाईनेस नवाब सर सय्यद रज़ा अली खाँ बहादुर, के० सी० एस० आई०, डी० लिट, एल० एल० डी० हैं । आप १९३० ई० में पिता की मृत पर गद्दी पर बैठे । आपको १५ तोपों की सलामी दी जाती है ।

✱✱✱✱

टेहरी अथवा गढ़वाल राज्य

यह राज्य हिमालय प्रदेश में स्थित है । राज्य के भीतर चारों ओर पहाड़ी श्रेणियां और चोटियाँ हैं । गंगोत्री और जमनोत्री पर्वत (जहाँ से गंगा और जमुना निकलती हैं) इसी राज्य में स्थित हैं । इस राज्य और गढ़वाल ज़िले का इतिहास एक ही है क्यों कि दोनों पर एक ही वंश का राज्य था । यहां के महाराज प्रद्युमान शाह गोरखा सेना से लड़ते हुए युद्ध में मारे गए । किन्तु नैपाल युद्ध के अन्त में उनके पुत्र को १८१५ में अँग्रेज़ों ने यहां का राजा बनाया । १८५७ के विप्लव काल में यहां के राजा ने अँग्रेज सरकार की बड़ी सहायता की । १८५९ में उनकी मृत्यु होगई । उनके कोई पुत्र न होने के कारण भवानी शाह (उनके निकट सम्बन्धी) गद्दी पर बैठाए गए । महाराज भवानीसिंह को अँग्रेज़ों ने गोद लेने की सनद प्रदान की । यहां की मुख्य उपज चावल है । यहां के जंगल बड़े ही बहुमूल्य हैं । बहुत लकड़ी बाहर भेजी जाती है । राज्य की राजधानी टेहरी है और गर्मियों में राजधानी प्रताप नगर (जो ८००० फुट की ऊँचाई पर स्थित है) हो जाती है । यहाँ के राजनैतिक एजेन्ट कमायूं के कमिशनर हैं । इस राज्य का क्षेत्रफल ४५०० वर्गमील और जन-संख्या ४,७०,१०९ है । राज्य की सालाना आय लगभग १९,४५,००० रु० है । राज्य के वर्तमान शासक, लैफ्टीनेन्ट कर्नल हिज़ हाईनेस महाराजा सर नरेन्द्र शाह के० सी० एस० आई० हैं । महाराज को ११ तोपों की सलामी दी जाती है ।

✱✱✱✱

ईस्टर्न स्टेट्स एजेंसी

कूचबिहार

यह राज्य उत्तरी बंगाल में स्थित है। यह जलपाई गुड़ी, ग्वालपाड़ा और रंगपुर ज़िलों से घिरा हुआ है। इसका क्षेत्रफल १३१८ वर्गमील, और जन-संख्या ६ लाख है इसकी आमदनी २७ लाख रु० है। कूच बिहार नगर कूचबिहार स्टेटरेलवे का एक प्रधान स्टेशन है। यह रेलवे ईस्टर्न बंगाल रेलवे लाइन से मिली हुई है।

बंगाल में और भागों की तरह कूचबिहार राज्य की जलवायु भी उष्णार्द्र है। धान, तम्बाकू, जूट (पाट) और तिलहन यहाँ की प्रधान उपज है। यह राज्य ६,७७,००० रु० ब्रिटिश सरकार को कर देता है। १७७३ ई० में इस राज्य और ईस्ट इंडिया कम्पनी (ब्रिटिश सरकार) से सन्धि हुई। यहाँ के राजा को १३ तोपों की सलामी दी जाती है।

****

त्रिपुरा

यह राज्य बंगाल में टिपरा जिले के पूर्व में स्थित है। यह एक पहाड़ी राज्य है और घने जंगलों से घिरा हुआ है। इसका क्षेत्रफल ४,११६ वर्गमील और जन-संख्या ४ लाख है। इस राज्य की आमदनी २१ लाख है। यहाँ के महाराजा की जागीर टिपरा, लेआखली और रंगपुर में स्थित है।

****

मयूरभंज

उड़ीसा का एक बहुत पुराना राज्य है। इस राज्य में बहुत पुराने समय के भग्नावशेष मिले हैं। पुराने समय में भंज राज्य का विस्तार कहीं अधिक था। खिनिंगकोहा (आधुनिक खिचिंग) उनकी राजधानी थी। मुग़ल बादशाहों ने भी इस राज्य को मान लिया था। यहां के राजाओं ने मरहठों के साथ कई बार लोहा लिया। जब १७६१ ई० में अँग्रेजों ने मिदनापुर जिला लिया तब से यहां के राजा ने उनसे मित्रता कर ली। १८२९ ई० में इस राज्य और ईस्ट इंडिया कम्पनी के बीच में सन्धि हो गई। क्योंझर राज्य में इसी राजवंश के राजा राज्य करते हैं।

****

बस्तर

यह राज्य मध्य प्रान्त के दक्षिणी पूर्वी कोने पर स्थित है। इसका क्षेत्रफल १३,०६२ वर्गमील और जन-संख्या ५,२५,००० है। इस राज्य की आमदनी ११ लाख रु० है। पहाड़ और जंगलों से घिरा होने के कारण यह राज्य मुसलमानों के आक्रमण से प्रायः सुरक्षित रहा। नागपुर के भोंसले महाराज के यहाँ से कुछ कर वसूल किया। वही कर आजकल यह राज्य ब्रिटिश सरकार को कर देता है। इस राज्य ११,००० वर्गमील भूमि बन से ढकी हुई है। बहुत थोड़े भाग में खेती होती है। इस राज्य की राजधानी जगदलपुर है। यह नगर इन्द्रावती नदी के किनारे है। यह नगर रायपुर से १८४ मील दूर है। यहाँ तक मोटर की सड़क आती है।

****

खरसवाँ राज्य

पूर्वी भारतीय राज्यों में खरसवाँ एक प्रमुख राज्य है। यहां के शासक पोराहाट के छोटे राजा के घराने के हैं। १७९३ ई० में कुछ सरदारों ने राज्य में बड़ी गड़बड़ी मचा दी। उस समय खरसवां-नरेश और सरायकेला के कुंअर साहब के बीच समझौता हुआ। उसी समय अँग्रेज़ों का ध्यान इस राज्य की ओर आकर्षित हुआ। ब्रिटिश सरकार ने यहां के राजा से संधि कर ली। तब से ये बराबर अँग्रेज़ों के आधीन रहें हैं और समय समय पर सहायता करते आए हैं। यह राज्य अँग्रेज़ों को किसी भांति का कर नहीं देता है। यहां के शासक छोटा नागपुर के कमिशनर के आधीन हैं। बंगाल नागपुर रेलवे इस राज्य में होकर जाती है। इसका क्षेत्रफल १५७ वर्गमील जन-संख्या ४५,००० और आमदनी १,५०,००० रु० है।

✱✱✱✱

नरसिंहपुर

यह उड़ीसा प्रान्त का एक राज्य है। इसके उत्तर में पहाड़ी है जो अंगूल और हिन्दोल से इसे अलग करती है। पूर्व में बारम्बा दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम में महानदी और पश्चिम में अंगूल है इस राज्य का क्षेत्रफल २०७ वर्गमील है। यहां की जन-संख्या ४१,००० है। राज्य की सालाना आय १११,१०५ रु० है और २१७६ सालाना कर अँग्रेज सरकार को दिया जाता है। ३०० साल का समय व्यतीत हुआ जब कि इस राज्य की नींव एक राजपूत ने डाली थी। तब से अब तक यह राज्य क़ायम है। राज्य में लड़कों की शिक्षा के लिये बहुत से स्कूल हैं। राजा की सेना में ३८३ सिपाही है और राज्य में १९६ पुलीस हैं।

यहां के वर्तमान नरेश राजा अनन्त नारायण मानसिंह हरी चन्दन महोपात्र हैं।

✱✱✱✱

सरगूजा राज्य

सरगूजा मध्य भारत का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ६०५५ वर्गमील और जन-संख्या २,४८,७०३ है। इस राज्य की सालाना आय लगभग दो लाख है। मनीपत एक उँचला प्रदेश इस राज्य की दक्षिणी सीमा बनाता है। इस राज्य के पुराने इतिहास का ठीक २ पता नहीं चलता है। किन्तु पालमऊ के क़िस्से कहानियों से पता चलता है कि यहाँ के वर्तमान शासक पालमऊ रक्षेल राजा के घराने के हैं। १७५८ में यहाँ मरहठा सेना आई। तभी यहाँ के नरेश को भोंसला राजा की आधीनता स्वीकार करनी पड़ी। अठारहवीं सताब्दी के अन्त में यहाँ के राजा ने अँग्रेज़ों के विरुद्ध पालमऊ के विद्रोहियां को सहायता दी। अँग्रेजी सेना ने राज्य के अन्दर जाकर शान्ति स्थापित की। फिर भी यहाँ के राजा और उसके सम्बन्धियों के बीच झगड़ा हो गया। १८१८ तक राज्य के अन्दर उथल-पुथल रही और शांति स्थापित न हो सकी। उसी साल बरार के राजा मुधोजी भोंसला की राय से इस राज्य को अँग्रेज़ों ने अपने अधिकार में कर लिया। तब से यह राज्य अब तक अँग्रेज़ों के आधीन है। यहाँ की मुख्य उपज, चावल, चना, जौ और दूसरे अनाज हैं।

यहाँ के वर्तमान नरेश महाराजा रामानुज सरनसिंह देव सी० बी० ई० हैं, आप १९१८ ई० में गद्दी पर बैठे।

✱✱✱✱

जाशपुर

छोटा नागपुर (बंगाल) का एक छोटा राज्य है । इसका क्षेत्रफल १९६३ वर्गमील और जन-संख्या लगभग २ लाख है । इसके उत्तर और पश्चिम सरगूजा राज्य, दक्षिण में गाँगपुर और उदयपुर राज्य और पूर्व में लोहारदगा ज़िला है । इस राज्य में ऊँचे और नीचे दोनों प्रकार के प्रदेश पाए जाते हैं । इस राज्य में छोटा नागपुर खुरिया, अपर खाट आदि के पठार हैं । ईब, कनहार और लोवा यहाँ की प्रधान नदियाँ हैं । पठारों में जंगल वन भी काफी संख्या में हैं । नगरों की भूमि उपजाऊ है और वहाँ की जलवायु अच्छी तथा स्वास्थ्यदायक है । रानीझूला की चोटी ३५२७ फुट और कोहियार ३९९३ फुट ऊंची हैं । जंगलों में शहद, लाख और टसर (रेशम) पाये जाते हैं । राज्य की सालाना आय ३,६०,००० रु० है । यह राज्य १८१८ में भोंसला मरहठा राजा द्वारा अंग्रेजों के अधिकार में आया ।

✱✱✱✱

नन्द गाँव

मध्य प्रान्त के रामपुर ज़िले में राज नन्दगाँव एक छोटा राज्य है । यह नन्द गांव, पान दादा मोहगांव और खमरिया चार परगनों से मिलकर बना है । यहां का क्षेत्रफल ८७१ वर्गमील है और जन संख्या १,८२,३८० है । ४४१ वर्गमील में खेती होती है । २८८ वर्गमील भूमि खेती के योग्य है । किन्तु अभी परती पड़ी है । यहां की मुख्य उपज धान, गेहूँ, चना, कोदो, तिलहन और कपास हैं । यहां मोटे कपड़े भी बुने जाते हैं ।

पहले पहल नागपुर के राना के पुरोहित को यह जागीर मिली थी । बाद को १७६५ और १८१८ में और अधिक इसका विस्तार हुआ । यहां का सरदार राजा एक बैरागी है । राज्य की सालाना आय ५,०९,६८५ रु० है किन्तु ६५,००० रु० सालाना अंग्रेज़ को देना पड़ता है ।

१८२३ में महन्त छासी दास मेर वह एक अच्छे शासक थे उनके बाद उनके पुत्र गद्दी पर बैठे । इनके लड़कपन में दीवान और इनकी मां ने राज्य का प्रबन्ध किया । बंगाल-नागपुर रेलवे नन्दगांव होकर जाती है जिससे यह नगर अच्छी उन्नति पर है । गत राजा के समय में राज्य के भीतर डाक बंगले, गल्ला गोदाम, सड़क और तालाब बनाए गए । राज्य की सेना में ७ हाथी १०० घोड़े, ५ ऊंट और ५०० पैदल सिपाही हैं । राज्य में स्कूल और औषधालय प्रजा की सहायता के लिये खुले हैं । यहां के वर्तमान शासक महन्त सरेश्वर दास हैं ।

कोल्हापुर और दक्षिण के राज्य

कोल्हापुर राज्य

बम्बई प्रान्त में कोल्हापुर एक राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल ३,२१७ वर्गमील और जन-संख्या ८५७,१३७ है।

यहां के वर्तमान नरेश लैफ्टिनेन्ट कर्नल हिज़ हाईनेस श्री राजाराम छत्रपति महाराज जी० सी० एस० आई०, जी० सी० आई० ई०, जी० सी० वी० ओ० हैं। आप महाराज शिवाजी के छोटे पुत्र के वंशज हैं। यहां के मल्लाह अंग्रेज़ी जहाजों को बहुधा लूट लिया करते थे। जिसके कारण बम्बई सरकार को बाध्य होकर १७६५ और १७९२ ई० में अंग्रेज़ी सेना राज्य में भेजनी पड़ी। अन्त में यहां के राजा ने १७८५ ई० के पश्चात् जितनी हानि ब्रिटिश जहाजों की हुई थी उसके देने का वचन दिया और कोल्हापुर तथा मालबन नगरों में कारख़ाने खोलने की भी आज्ञा दे दी।

घरेलू झगड़े और समीपवर्ती राज्यों से झगड़ा होने के कारण यह राज्य निर्बल हो गया। १८१२ ई० में यहां के राजा और ब्रिटिश सरकार से संधि हो गई जिसके अनुसार राजा ने कुछ राज्य के बन्दरगाह अंग्रेज़ों को दिया और अंग्रेज़ों ने वचन दिया कि वे भी संकट के समय राज्य की रक्षा करेंगे। महाराज ने भी यह बचन दिया कि वे किसी दूसरे राज्य पर आक्रमण न करेंगे और जब कभी भी दूसरे राज्यों से कोई झगड़ा पड़ेगा तो अंग्रेज़ों की आज्ञानुसार कार्य्य करेंगे।

राज्य की मुख्य उपज, ज्वार, चावल, और गन्ना है। राज्य में मामूली मोटा ऊनी व सूती कपड़ा बुना जाता है। इस राज्य में मिट्टी के अच्छे बर्तन बनाये जाते हैं। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को किसी प्रकार का कर नहीं देता है। राज्य ५ ताल्लुकों में बँटा है। राज्य के भीतर होकर दक्षिणी मरहठा रेलवे जाती है।

कोल्हापुर नगर धार्मिक पवित्रता के कारण दक्षिणी बनारस कहलाता है। यहां सुन्दर मन्दिर हैं। यह नगर शिक्षा का केन्द्र है। यहां पर साहू, स्पिनिंग तथा वीविंग मिल्स और चीनी बनाने के कारखाने हैं। कोल्हापुर बैंक उसकी शाखाएं और सिनेमा के कारखाने हैं। इस राज्य की सालाना आय १,२५,७०,३९८ रुपया है। यहां के महाराज को १९ तोपों की सलामी दी जाती है।

अकलकोट

बम्बई प्रेसीडेन्सी में अकल कोट प्राचीन सतारा जागीरों में से है। यह राज्य उत्तर-पूर्व और दक्षिण में निज़ाम के राज्य से घिरा है। और पश्चिम में शोलापुर का जिला है। इस राज्य का क्षेत्रफल ४९८ वर्गमील है और जन-संख्या लगभग ८९,०८२ है।

राज्य की भूमि अच्छी और उपजाऊ है। यहां जंगल और पहाड़ नहीं हैं। इस राज्य में होकर ग्रेट इन्डियनपेनिन् सुला रलवे जाती है। नदियां कई एक हैं। किन्तु सभी इतनी छोटी हैं कि उनमें साल भर पानी नहीं रहता। राज्य की जलवायु सुहावनी है। सालाना वर्षा लगभग ३० इंच है। यहां धान, बाजरा, ईख, चना, गेहूं, अल्सी आदि की पैदावार होती है। लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती है।

अठारवीं सदी के आरम्भ में सतारा के महाराज साहू ने अकलकोट को एक मरहठा सरदार को जागीर में दिया। वर्तमान राजा उसी मरहठा सरदार के वंशज हैं। पहले ये सरदार सतारा को समय पड़ने पर घुड़सवार दिया करते थे। किन्तु जब १८४९ में ब्रिटिश सरकार ने सतारा को ले लिया तो अकलकोट के राजा अंग्रेज़ों के आधीन हो गए और घुड़ सवारों

के स्थान पर २०,००० रु० सालाना कर अंग्रेज़ों को देना स्वीकार किया। राजा को गोद लेने का अधिकार है। १८६६ में शासन खराब होने के कारण राजा निकाल दिया गया और शासन अंग्रेज़ सरकार ने अपने हाथ में ले लिया। राजा के मरने के बाद जब तक दूसरा राजा नाबालिग़ रहा तब तक शोलापुर के कलक्टर प्रबन्ध करते रहे। फिर राजा को राज्य सौंपा गया। राजा दक्षिण भारत में उत्तम श्रेणी के सरदारों में गिने जाते हैं।

****

विजयनगरम् राज्य

भारतवर्ष के प्राचीन राज्यों में से एक राज्य है। यह ताल्लुक़ा मद्रास प्रेसीडेन्सी के विजया नगरम् ज़िले में स्थित है। इसका क्षेत्रफल ३००० वर्गमील है। यहां की जनसंख्या ८,४४,१६८ है।

यहां के वर्तमान शासक अपने को माधन वर्मा की सन्तान बताते हैं। वे ५९१ ई० में कृष्णा की घाटी में आकर बसे। इन्हीं के वंशज गोलकुण्डा राज्य के बड़े बड़े सरदार रहे। १६५२ में इनमें से एक 'पुष्पती माधन वर्मा' विजयानगरम् पर अधिकार जमाया। विजया राम राज इसी वंश के राजा थे, जो पुसी के बड़े मित्र थे। इस राज्य ने अपना ऐसा सिक्का जमाया कि उत्तरी सरकार में यह सबसे अधिक बलवान हो गया। पेड्डा विजया राम राज १७१० में गद्दी पर बैठे। १७१८ में उन्होंने पाटनर को हटाकर विजया नगरम् को राजधानी बनाया। उन्हीं के नाम से राज्य का यह नाम रक्खा गया। इन्होंने यहां का क़िला बनवाया और फ्रांसीसियों से मित्रता कर ली। उनके उत्तराधिकारी आनन्दराज ने अपनी नीति बदल दी और विजया नगरम् जो फ्रांस के अधिकार में था छीन कर अंगरेजों को दे दिया। राजा कर्नल फोर्ड के साथ मासली पट्टम और महेन्द्री भी गया। लौटते समय उसकी मृत्यु भी हो गई, उसके पुत्र विजया राम राज गद्दी पर बैठे। इन्होंने पर्ल किमेदी और राजमहेन्द्री पर हमला किया। और अपना अधिकार जमाया। दीवान सीताराम इस समय राज-काज देखते थे। उन्होंने राज्य को अच्छी उन्नति दी। किन्तु १७९३ ई० में वे हटा दिये गये। उनके चले जाने के बाद विजया राम राज को शासन करने में कठिनता हुई और वे पेशकश (कर) अंगरेजों को न दे सके। इसपर वे अङ्गरेज़ों से लड़े और लड़ाई में मारे गये।

इसके बाद पुष्पती लोग देश में बहुत प्रसिद्ध हो गये। सारा विजया नगरम् ज़िला इसी वंश वालों के अधिकार में था। घराने के अगुवा को मिर्ज़ा और मनिया सुल्तान की पदवी मिली और ईस्ट-इंडिया कम्पनी ने १९ तोपों की सलामी का हुक्म दिया। १८४८ में यह घटा कर १३ कर दी गई।

१८६२ में ब्रिटिश सरकार ने राजा की पदवी स्वीकार की। १८०२ में इस्तमरारी बन्दोबस्त हुआ तो पेशकश ७,५०,००० रुपया सालाना कर दिया गया। विजया राम गजपतीराज ने जब राज्य प्रबन्ध अपने हाथ में लिया तो राज्य की अच्छी उन्नति हुई।

राजा सचमुच राजा था, वह अपनी जगह के लिये बड़ा ही योग्य था, वह अपना कार्य्य बड़ी चतुरता से करता था। १८६३ में उसको लेजिस्लेटिव काउन्सिल आफ़ इंडिया का मेम्बर बनाया गया। १८६४ में उसे महाराजा और हिज़ हाईनेस की पदवियाँ मिली। १८७७ में के० सी० आई० ई० की पदवी मिली और राजा का नाम चीफ्स आफ़ इंडिया के बीच लिखा गया, महाराजा ने बहुत से कार्य्य पब्लिक के फ़ायदे के किये। उसने १०,००,००० रुपये दान किया। जो दीनों की सहायता में खर्च किया गया। १८७८ में महाराजा की मृत्यु हुई और आनन्द राज गद्दी पर बैठे। १८८१ ई० में आनन्द को राजा की पदवी मिली। १८८२ में राजा मद्रास यूनिवर्सिटी के फेलो बनाये गये। १८८४ में वह मद्रास काउन्सिल के गज़टेड मेम्बर बनाये गये।

विजयानगरम् की जमींदारी ११ ताल्लुक़ों में बँटी है। लगभग २,८५,००० एकड़ भूमि में खेती होती है। यहां के निवासी हिन्दू तेलगू हैं, राज्य की आय लगभग २७,००,००० रुपया है।

✱✱✱✱

माहीकाँठा

महीकांठा एजेन्सी में ईदर और ५१ दूसरे छोटे राज्य हैं। इस एजेन्सी के उत्तर में उदयपुर और डूंगरपुर राज्य है। दक्षिण में खेड़ा ज़िला, पूर्व में रेवाकांठा एजेन्सी और पश्चिम में बड़ौदा राज्य, अहमदाबाद का ज़िला और पालनपुर एजेन्सी है। इसका क्षेत्रफल ३१२४ वर्गमील और जनसंख्या २,०२,८११ है इस एजेन्सी की सालाना आय १४ लाख है। इस एजेन्सी के आधे भाग में ईदर राज्य है। दूसरे ११ राज्य भी साधारण महत्व के हैं, शेष सभी छोटे-छोटे राज्य हैं। वहां राजपूत या कोलि ठाकुरों का राज्य है। इस एजेन्सी में (१) पोल, (२) दान्ता, (३) मालपुर, (४) मांसा, (५) मोहनपुर, (६) वारसोरा, (७) पीठापुर, रनासन, पुराद्रा, खराल, गोरासर, खतोसाना, इलोल, अमालिपारा वालासना, डाभा, वासना, सुदासन, रूपाल, दाधलिया, मागोरी, वरागाम, साथम्ब, रमाज, डिरौल, खेरवाड़ा, करौली, वक्टापुर, प्रेमपुर, डेढ़रौता, ताजपुरी, हायसत, लासना, भालूसना, लिखी, हरोल, सगूना बीलेन्द्र, तेजपुरा, विसरौरा, पालेज, देहलौली, कासालपुरा, महमूदपुरा, ईजपुरा रामपुरा, रानीपुरा, गाबट, टिम्बडंबरी, मोटा कोटरना आदि राज्य है।

महीकांठा का उत्तरी-पूर्वी भाग ऊँचा, नीचा, जङ्गली और पहाड़ी है और दक्षिणी-पश्चिमी भाग में समतल मैदान और बन हैं। इस भाग के अधिकांश भाग में खेती होती है। यहां की भूमि दो प्रकार की है। (१) हलकी बलुई मिट्टी, (२) काली मिट्टी। यहाँ की मुख्य नदियाँ साबरमती और हाथमती हैं। इनके सिवा खारी, मेशवा, माजम, वारक आदि छोटी-छोटी नदियाँ हैं। रानी तलाव, करमा बाबी, बाबसूर आदि यहां के बड़े सरोवर हैं और सिंचाई का काम देते हैं। ज्वार, बाजरा, तिल, उर्द, मूँग, गेहूँ, जौ, चना, अफ़ीम तथा ईख की उपज यहां होती है।

यहां के प्रथम निवासी कोल और भिल जातियां थीं उसके पश्चात् सिंध राजपूतों ने यहां अपना अधिकार जमाया, फिर मुसलमानों का अधिकार हुआ उसके बाद यहां मुग़लों का अधिकार रहा। जब मरहठों का उत्थान हुआ तो मरहठों ने यहां अपना अधिकार जमाया, उसके बाद १८२० ई० से यहां ब्रिटिश सरकार का अधिकार है। १८५७ ई० में कुछ गड़बड़ी यहां उत्पन्न हुई किन्तु फ़ौज आने पर सभी झगड़े शांत हो गए।

हिज़ हाईनेस महाराज ईदर को यहाँ से ५२,४२७ रुपया सालाना मिलते हैं जिसमें से वे ३०,३४० रुपया ब्रिटिश सरकार द्वारा बड़ौदा राज्य को देते हैं।

✱✱✱✱

जंजीरा राज्य

बम्बई प्रान्त के कोनकन में जंजीरा एक छोटा राज्य है। यहां के शासक एक अबीसीनियन हबशो के वंशज हैं। इस राज्य ने मरहठों के आक्रमणों का बड़ी दिलेरी से सामना किया। जब ब्रिटिश के हाथ में कोनकन का प्रान्त आया तो उन्होंने भी इस राज्य के शासन में कुछ रोक टोक नहीं डाली।

यहां के शासक सुन्नी मुसलमान हैं और इनकी उपाधि नवाब की है। नवाब के पास मुसलमानी प्रथा के अनुसार गोद लेने की सनद है और ब्रिटिश सरकार को यह राज्य किसी प्रकार का भी कर नहीं देता है। सन् १८६८ तक यह राज्य स्वतन्त्र रहा, किन्तु अदालत माल में कुछ गड़बड़ी पैदा होने के

कारण १८६८ ई० में न्याय, पुलीस और फौजदारी का मोहकमा नवाब के हाथ से लेकर राजदूत को दे दिया गया।

यहां के भूतपूर्व नवाब हिज़ हाईनेस सिदी सर अहमद ख़ां जी० सी० आई० आर० थे। आप १८६२ में पैदा हुए थे। वर्तमान नवाब हिज़ हाईनेस सिदी मुहम्मद ख़ां हैं। आप १९१४ में पैदा हुए।

इस राज्य का क्षेत्रफल ३७७ वर्गमील और जनसंख्या १,०१,१२० है। इस राज्य की सालाना आय लगभग ६ लाख है। यहां की राजधानी जंजीरा है, जो बम्बई से ४४ मील दक्षिण की ओर है। हिज़ हाईनेस को ११ तोपों की सलामी दी जाती है।

✱✱✱✱

सुरगन राज्य

बम्बई प्रान्त में नासिक ज़िले के उत्तरी पश्चिमी भाग में स्थित है। इस राज्य का क्षेत्रफल ३६० वर्ग-मील और जनसंख्या १५,१८० है। यहां के वर्तमान नरेश प्रताप राव, शंकर राव देशमुख हैं। आप मरहठा घराने से हैं और नासिक के कलक्टर के आज्ञानुसार राज्य-प्रबन्ध करते हैं। इस राज्य की सालाना आय ३३,००० रुपया है।

✱✱✱✱

सावानूर राज्य

बम्बई प्रान्त में एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ७० वर्गमील और जनसंख्या १७,९०९ है। इस राज्य की सालाना आय लगभग एक लाख रुपया है।

इस राज्य की नींव एक पठान सर्दार ने (जो औरङ्गज़ेब बादशाह का जागीरदार था) डाली थी। अन्तिम मरहठा युद्ध के पश्चात् अँग्रेज़ों ने यहां के नवाब को यहां का शासक स्वीकार कर लिया। यह राज्य ब्रिटिश राज्य को किसी प्रकार का भी कर नहीं देता है। ज्वार, कपास यहां की मुख्य उपज है। यहां के वर्तमान नवाब कैप्टेन अब्दुल मजीद खां दिलेर जंग बहादुर हैं।

✱✱✱✱

जेतपुर भिलखा

जेतपुर काठियावाड़ प्रान्त का एक देशी राज्य है। यहां का क्षेत्रफल ७३४ वर्गमील और जनसंख्या ९२,५५३ है। राज्य में विद्यार्थियों की शिक्षा के लिये पाठशालायें तथा स्कूल हैं। राज्य की सालाना आय १,२०,००० रु० है। यह राज्य ७,५०० रु० ब्रिटिश सरकार को, ७,५०० रु० बड़ौदा राज्य को और ४,५०० रु० जूनागढ़ राज्य को कर देता है। राज्य की सेना में ४४ सवार, १८५ पैदल सिपाही तथा ९८५ पुलीस के सिपाही हैं।

✱✱✱✱

जाथ

बम्बई प्रान्त में जाथ सतारा एजेन्सी का एक देशी राज्य है। इसका क्षेत्रफल ८८४ वर्गमील और जन-संख्या ९२,००० है। यहाँ की सालाना आय ४,२५,००० रुपया है।

इस राज्य की उपज ज्वार, बाजरा, कपास, गेहूँ और चना है। राज्य के अन्दर विद्यार्थियों की शिक्षा के लिये स्कूल तथा पाठशालाएँ हैं।

यहाँ के शासक क्षत्रिय (मरहठे) हैं और देशमुख

तथा जागीरदार कहलाते हैं। और दक्षिण में वे प्रथम श्रेणी के राजों में गिने जाते हैं। यहाँ के शासकों को गोद लेने की सनद प्राप्त है। १८७४ ई० से यह राज्य ब्रिटिश सरकार के आधीन आया तब से बराबर यह राज्य अँग्रेजों का दोस्त बना रहा। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को ६,००० रु० सालाना कर देता है। १५०० रु० पंथ प्रतिनिध औंध के जागीरदार को भी यह राज्य कर देता है। यहां के वर्तमान नरेश, राजा श्रीमन्त विजयसिंह राव रामराव हैं। आप १२ जनवरी १९२९ में गद्दी पर बैठे। आप तीसरे गोलमेज़ कानफ्रेन्स में इँगलैण्ड गये थे।

****

सावन्तवादी राज्य

बम्बई प्रान्त में यह एक राज्य है। यहाँ का क्षेत्रफल ९२५ वर्गमील और जन-संख्या २,१७,२४० है। इस राज्य की सालाना आय लगभग ५,५०,००० रुपया है। राज्य गोवा पुर्तगाली राज्य के उत्तर में है। राज्य के अन्दर देखने योग्य दृश्य पाए जाते हैं। यहाँ के लेखों द्वारा पता चलता है कि इस राज्य का इतिहास छठवीं शताब्दी से आरम्भ होता है। उन्नीसवीं शताब्दी में यहां के बन्दरगाहों को सामुद्रिक लुटेरों ने लूटा और राज्य में बड़ी गड़बड़ी पैदा कर दी।

यहाँ के वर्तमान नरेश पंचम खेम सावन्त हैं जिनको बापू साहब भौंसला भी कहते हैं। राज्य की मुख्य उपज चावल है, चींड़ के बन राज्य के भीतर बहुत हैं। यहाँ के मरहठा निवासी भारतीय सेना में भरती होते हैं और अच्छे सैनिक होते हैं। इस राज्य की राजधानी सावन्तवादी या सुन्दर वादी या केवल वादी के नाम से प्रसिद्ध है।

****

जसदान

यह गुजरात प्रान्त में एक राज्य है। जसदान नगर का नाम स्वामी यशताना जो सतरप वंश के थे, उन्हीं के नाम पर पड़ा है। जूनागढ़ में जब गौरी वंश का राज्य था तो यहाँ एक मजबूत क़िला बनाया गया था और इसका नाम गोर गढ़ रक्खा गया था। राज्य में रेलवे लाइन व सड़कें इत्यादि हैं। यहाँ पर लड़कों और लड़कियों की शिक्षा के लिये स्कूल हैं। राज्य में प्रजा की सुविधा के लिये औषधालय भी हैं। इस राज्य का क्षेत्रफल २९६ वर्गमील और जन-संख्या ३६,६३२ है। इस राज्य की सालाना आय लगभग ६ लाख है। यहाँ के वर्तमान शासक दरबार श्री आला खाचर हैं।

****

जामखण्डी

यह कोल्हापुर एजेन्सी का एक राज्य है। यह राज्य बम्बई प्रान्त में स्थित है। इस राज्य का क्षेत्रफल ४९८ वर्गमील और जन-संख्या ११,४२,८२० है। इस राज्य की सालाना आय ९,१६,००० रुपया है। इस राज्य की मुख्य उपज गेहूँ, कपास, बाजरा, और अरहर इत्यादि हैं। इस राज्य में खद्दर, गाढ़ा और कम्बल बनाए जाते हैं। राज्य में बालक और बालिकाओं की शिक्षा के पाठशालाएँ तथा अँग्रेज़ी और मिडिल स्कूल हैं। यहां के शासक ब्राह्मण हैं और दक्षिण मरहठा प्रदेश में प्रथम श्रेणी में इनकी गणना होती है। इन को अप्पा साहब पटबर्धन कहते हैं। यहां के शासकों को गोद लेने की सनद प्राप्त है। यह राज्य अँगरेज़ों को २०,८४१ रु० सालाना कर देता है। यहाँ के नरेशों को अपने राज्य के सभी प्रकार के मुक़दमों के करने का अधिकार मिला है। यहाँ के वर्तमान शासक राजा श्रीमंत शङ्कर राव परशुराम राव, अप्पा साहब पट वर्धन है।

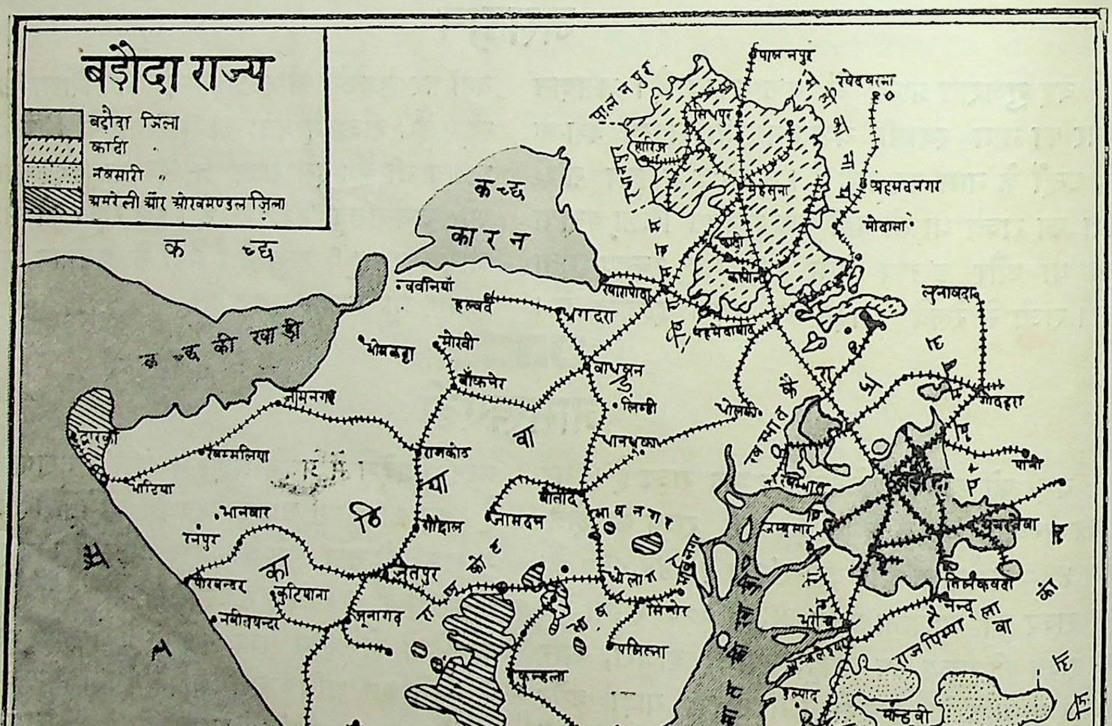
****

मनीपुर

आसाम प्रान्त में यह सब से बड़ा राज्य है। इस का क्षेत्रफल ८,६२० वर्गमील है। इस की जन-संख्या ४,४६,००० है। इस में ५८ फी सदी हिन्दू और ३५ फी सदी पहाड़ी मूल निवासी और प्रेत पूजक हैं। इस राज्य का बहुत बड़ा भाग पहाड़ी और जङ्गली है। इस के बीच में ५० मील लम्बी और २० मील चौड़ी एक घाटी है। बनों में कई प्रकार के पेड़ पाये हैं। घाटी की प्रधान उपज धान है। मनीपुर और बरमा में अक्सर झगड़े होते रहे। इन्हीं से बचने के लिये १७६२ ई० में यहां के राजा ने पहले पहल अङ्गरेज़ों से सहायता मांगी। बरमा की पहली लड़ाई के बाद मनीपुर का राज्य बरमा के हमलों से तो निश्चिन्त हो गया। लेकिन १८२६ ई० से इसे ब्रिटिश की आधीनता स्वीकार करनी पड़ी। एक बार ब्रिटिश चीफ़ कमिश्नर की हत्या हो जाने के कारण १८९० से १९०७ ई० तक यहां कड़ा ब्रिटिश शासन रहा। १९०८ में राजा फिर गद्दी पर बिठा दिया गया। १९१४ की लड़ाई में मनीपुर राज्य ने ब्रिटिश सरकार की सहायता की तब से यहाँ के राजा को महाराजा की उपाधि मिल गई। उन को ११ तोपों की सलामी दी जाती है।

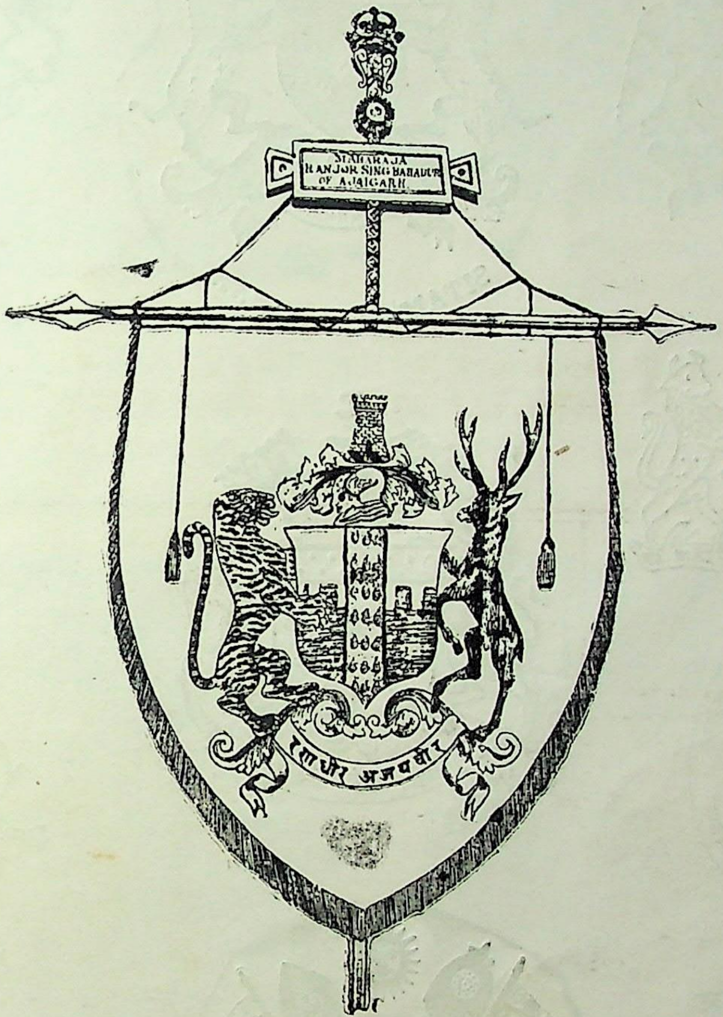
खासी राज्य

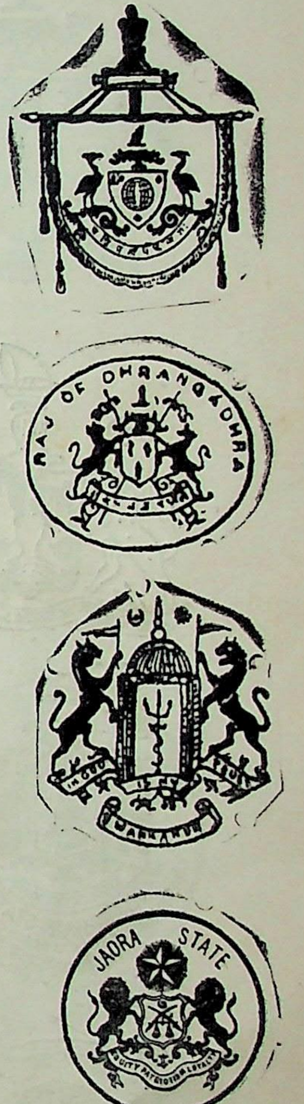
आसाम प्रान्त में इस नाम के २५ छोटे छोटे पहाड़ी राज्य हैं। इन सब का क्षेत्रफल मिलकर ३,६०० वर्गमील होता है। इनकी जन-संख्या १,८०,००० है। खिरीम और मिलीम सब से बड़े राज्य हैं। नोंगलीवाई सब से छोटा राज्य है। इस छोटे राज्य की जन-संख्या केवल २१३ है। इन राज्यों में एक प्रकार का प्रजा सत्तात्मक राज्य है। राजा चुना जाता है। वह अपने लोगों को बहुत कम छेड़ता है।

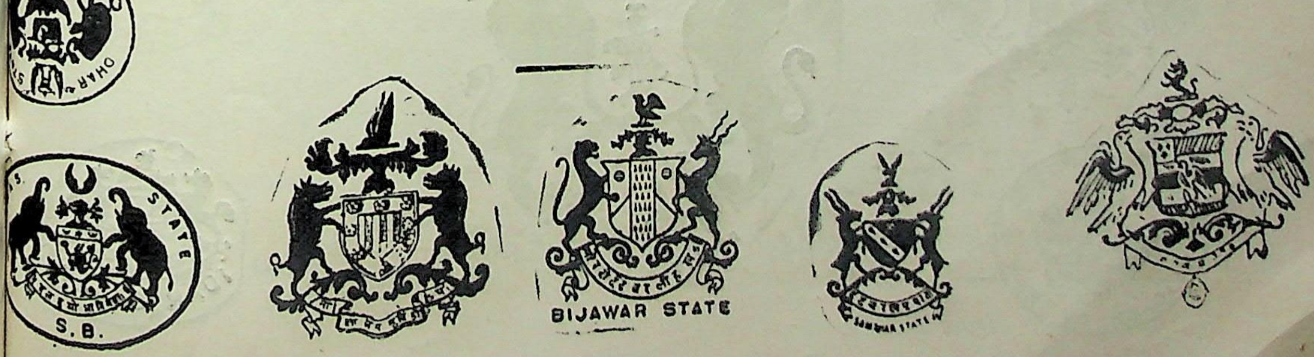


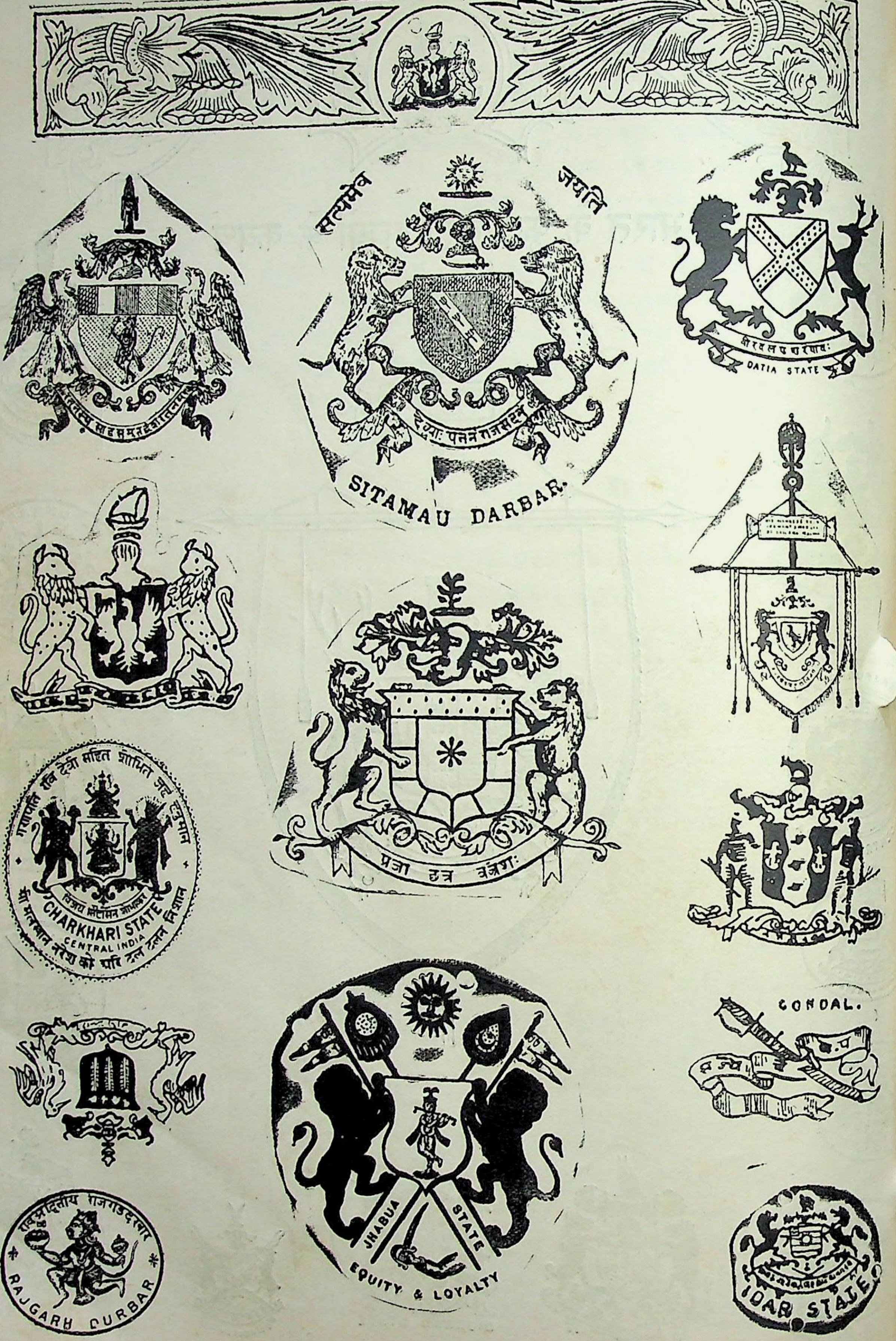
भारत के कुछ देशी राज्यों के कवच









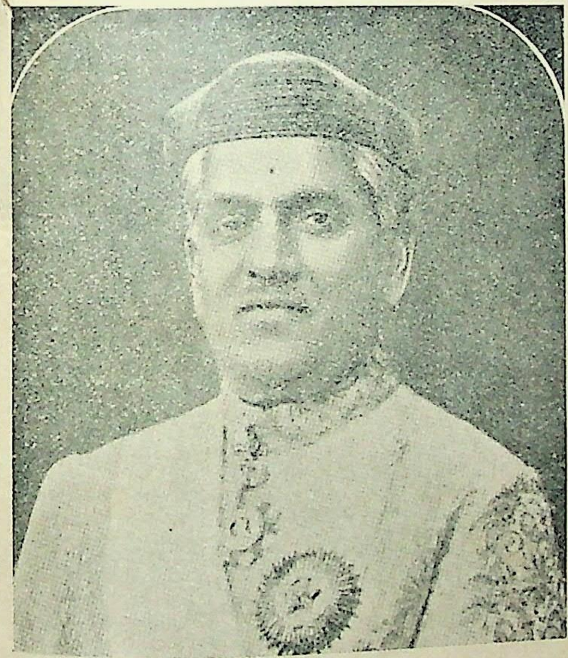

सत्यमेव जयति
SITAMAU DARBAR.
DATIA STATE
CHARKHARI STATE
CENTRAL INDIA
GONDAL.
JHABUA STATE
EQUITY & LOYALTY
RAJGARH DURBAR
IDAR STATE



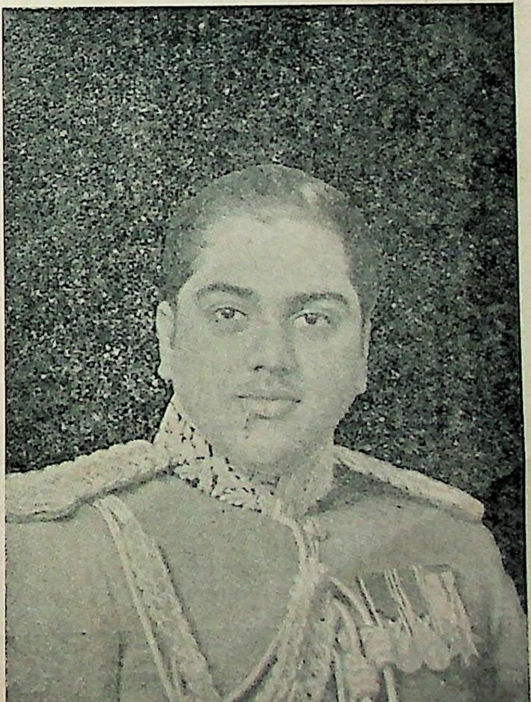
हिज़-हाईनेस रुस्तमे-दौरान, अरस्तु-ए-जमाँ लैफ्टिनेन्ट-जनरल मुज़फ्फ़रुल-मुल्क वाल ममालिक, नवाब सर मीर उस्मान अली ख़ाँ बहादुर, फतेहजंग सिपह सालार, निज़ामुद्दौला, निज़ामुल-मुल्क आसफ जाह जी० सी० एस० आई०, जी० बी० ई०, निज़ाम हैदराबाद।



हिज़ हाईनेस महाराजा सर श्री कृष्ण राजा वादियर बहादुर, जी० सी० एस० आई, जी० बी० ई०, महाराजा, मैसूर।



हिज़-हाईनेस फ़रज़न्दे-ख़ास-दौलते-इँगलीशिया महाराजा सर सयाजी राव गाइकवाड़, सेना खास खेल समशेर बहादुर, जी० सी० एस० आई, जी० सी० आई० ई०, महाराज, बड़ौदा।



हिज़-हाईनेस जीवाजी राव सींधिया महाराज ग्वालियर। आप २१ तोपों के सलामी वाले महाराजाओं में सबसे कम अवस्था के हैं।



हिज़-हाईनेस श्री महाराजा हरीसिंह जी बहादुर महाराज, काश्मीर ।



हिज़ हाईनेस महाराजा धिराज महाराणा श्री सर भूपाल सिंह जी बहादुर, जी० सी० एस० आई, महाराज, उदयपुर ।



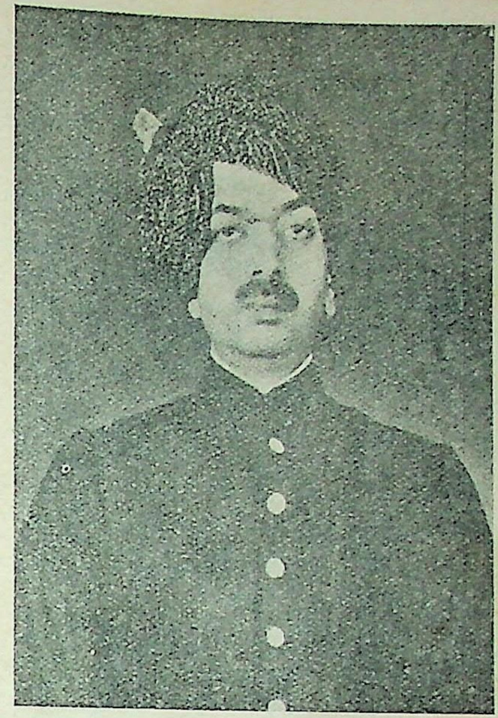
हिज़ हाईनेस रायान-राय महाराजाधिराज महारावल जी साहब श्री सर पृथ्वीसिंह जी बहादुर के० सी० आई-ई०, महाराज, बांसवाड़ा ।



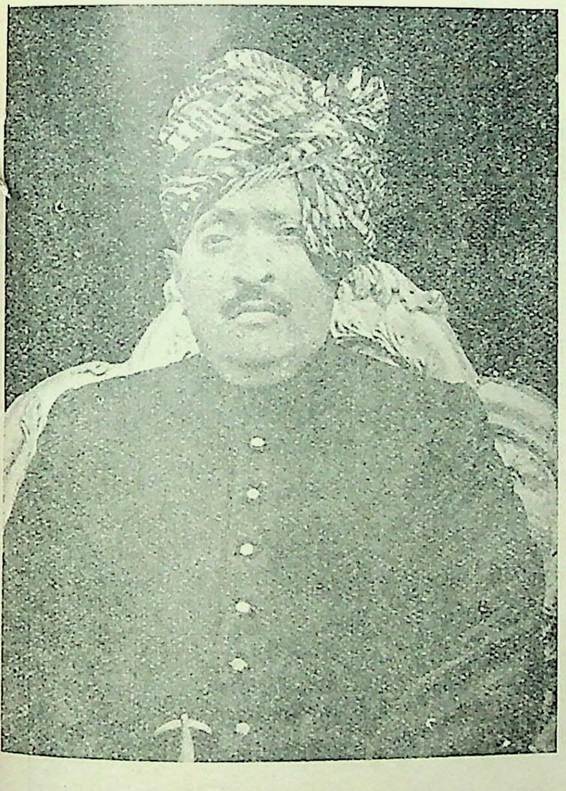
हिज़ हाईनेस राय-रायान महाराजाधिराज महारावल श्री सर लक्ष्मण सिंह जी बहादुर, के० सी० एस० आई, महाराज, डूंगरपुर ।



कैप्टेन हिज़-हाईनेस सरामद-राजाहाय-हिन्दुस्तान राज-राजेन्द्र महाराजाधिराज सर सवाई मानसिंह बहादुर, जी० सी० आई० ई० महाराज, जयपुर।



हिज़-हाईनेस उमेद राजाहाय, बुलन्द-मकान, महाराजाधिराज यज्ञनारायण सिंह जी बहादुर महाराज, किशनगढ़।



हिज़-हाईनेस महेन्द्र शिरोमणि देव, बुलन्द-राय महाराव राजा सर ईश्वरी सिंह बहादुर जी० सी० आई० ई० महाराज, बूंदी।



हिज़-हाईनेस सय्यदुद्दौला, वज़ीरुल-मुल्क नवाब हाफ़िज़ सर मुहम्मद सआदत अली ख़ाँ बहादुर सौलत-जंग, जी० सी० आई० ई०, नवाब टोंक।



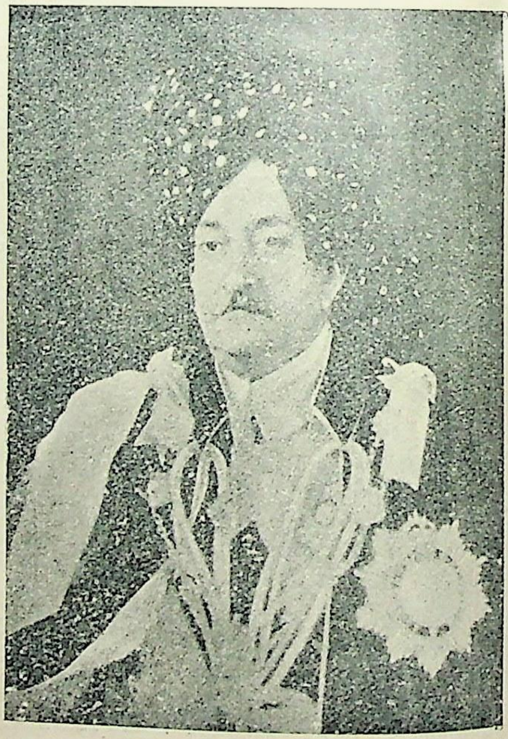
हिज़-हाईनेस महरावत सर रामसिंह जी बहादुर के० सी० एस० आई० महाराज ,प्रतापगढ़ ।



हिज़-हाईनेस महाजाधिराज महारावल सर जवाहिर सिंह बहादुर के० सी० एस० आई, महाराज, जैसलमेर ।



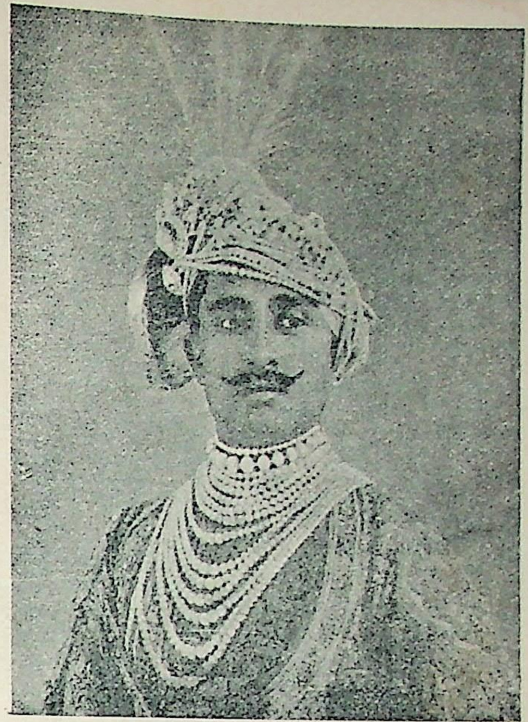
कर्नल हिज़-हाईनेस राज-राजेश्वर महाराजाधिराज सर उमेदसिंह बहादुर, जी० सी० एस० आई, जी० सी० आई, ई०, के० सी० वी० ओ०, महाराज, जोधपुर (मेवाड़) ।



हिज़-हाईनेस महाराजाधिराज महारावत सर श्री सरूपसिंह जी बहादुर, जी० सी० आई० ई०. के० सी० एस० आई, महाराज, सिरोही ।



हिज़ हाईनेस श्री महाराज ब्रजेन्द्र सवाई, ब्रजेन्द्रसिंह बहदुर, बहादुर जंग महाराज, भरतपुर।



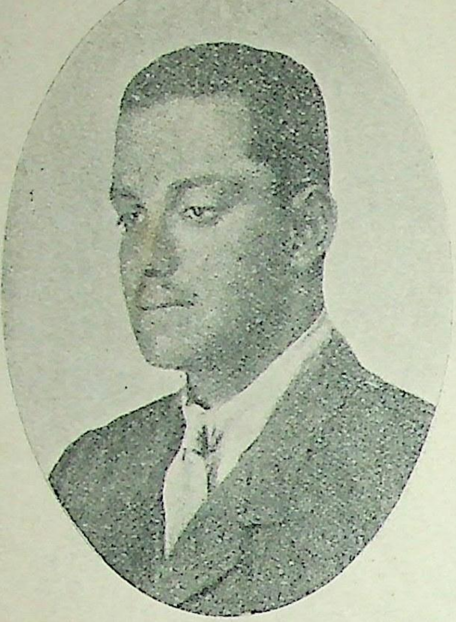
लेफ्टिनेन्ट-कर्नल हिज़ हाईनेस रईसुद्दौला सिपहदारुल मुल्क महाराजा-धिराज श्री सवाई महाराजा राना सर उदय-भानसिंह लेकेन्द्र बहादुर, दिलेर जंग, जयदेव, जी० सी० आई० ई०, के० सी० एस० आई०, के० सी० बी० ओ० महाराज, धौलपुर।



हिज़ हाईनेस महाराजा धिराज महाराजा सर भूमि-पाल देव बहादुर यादव कुल चन्द्रभाल के० सी० एस० आई० महाराज, करौली।



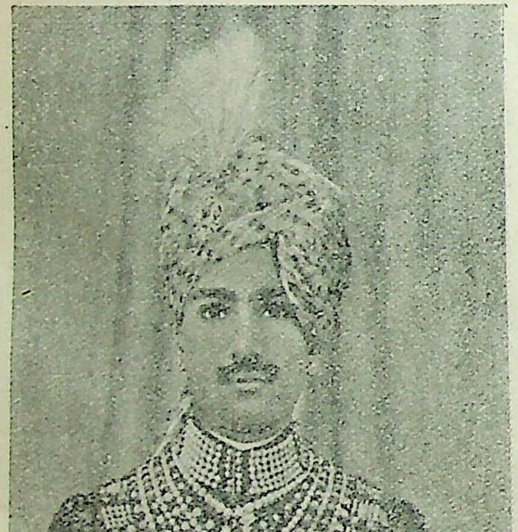
हिज़ हाईनेस लैफ्टिनेन्ट कर्नल महाराव सर उमेदसिंह जी बहादुर जी० सी० एस० आई०, जी० सी० आई० ई० महाराज, कोटा।



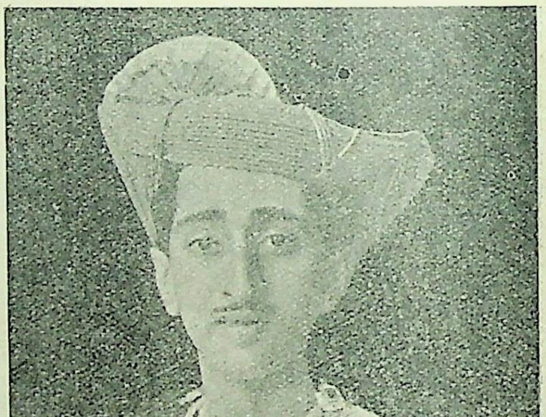
लैफ्टिनेन्ट हिज़ हाईनेस धरमदिवाकर महाराजा-धिराज महाराजा राणा श्री राजेन्द्रसिंह जी देवबहादुर महाराज, झालावार



लैफ्टिनेन्ट जनरल हिज़ हाईनेस महाराजाधिराज राजेश्वर नरेन्द्र शिरोमणि, महाराजा श्री गंगासिंह जी बहादुर, जी० सी० आई० ई०, जी०सी०वी०ओ०जीवी०ई०, के०सी०बी०, महाराज, बीकानेर



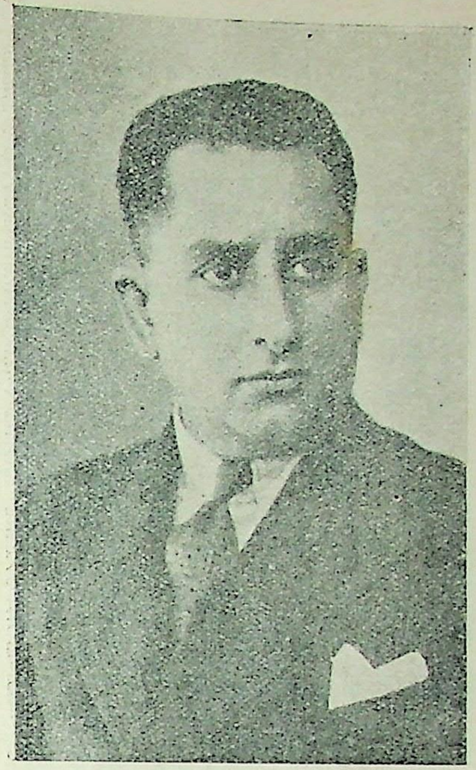
कर्नल हिज़ हाईनेस श्री सवाई महाराज तेजसिंह जी बहादुर जी० सी० एस० आई०, जी० सी० आई० ई०, महाराज, अलवर



हिज़ हाईनेस महाराजाधिराज राजराजेश्वर सवाई श्री यशवन्त राव होलकर बहादुर जी० सी० आई० ई० महाराज इन्दौर



हिज़ हाईनेस महाराजाधिराज सर गुलाबसिंह बहादुर
जी० सी० आई० ई०, के० सी० एस० आई०, महाराज रीवाँ



श्री सवाई महेन्द्र महाराजा सर वीर सिंह बहादुर
के० सी० एस० आई० महाराज, ओरछा



सौलत नवाब इफ्तखारुल-मुल्क मुहम्मद हमीद उल्ला खाँ
बहादुर, जी०सी०आई०ई०, सी०वी०ओ० नवाब भोपाल



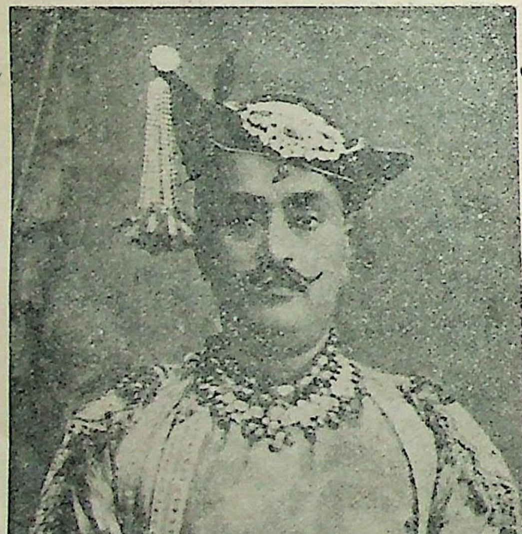
गोविन्द सिंह जू देव बहादुर जी० सी० आई० ई०,
के० सी० एस० आई० महाराज, दतिया



हिज़ हाईनेस महाराजा आनन्द राव पुवार साहब बहादुर महाराज, धार



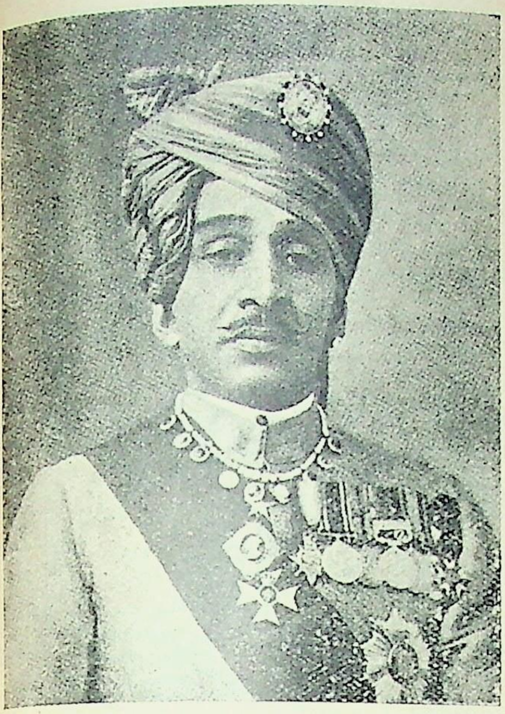
लैफ्टिनेन्ट कर्नल हिज़ हाईनेस फ़ख़रुद्दौला नवाब सर मुहम्मद इफ्तिख़ार अली खां बहादुर सौलत-जंग, जी० बी० ई०, के० सी० आई० ई०, नवाब जाओरा



हिज़ हाईनेस महाराजा सदा-शिवराव खासे साहब पुवार महाराज, देवास (छोटी गद्दी)



हिज़ हाईनेस महाराजा वीरसिंह जू देव बहादुर के० सी० आई० ई०, महाराज, समथर



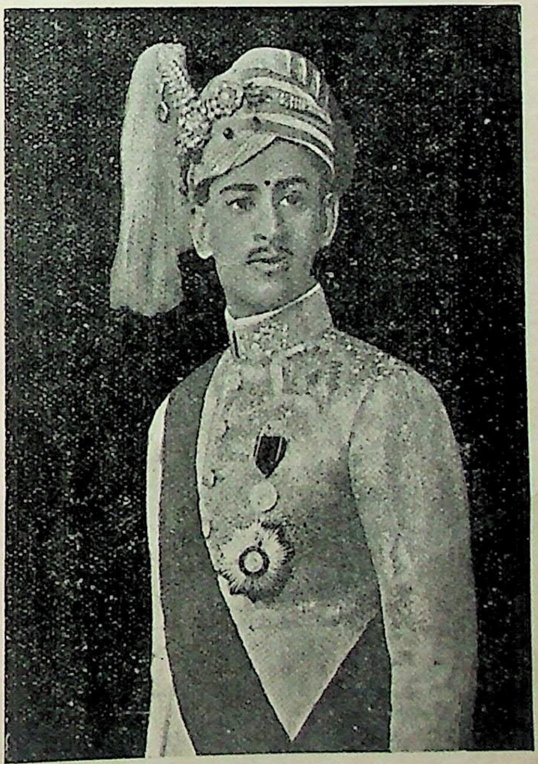
मेजर जनरल हिज़ हाईनेस महाराजा सर सज्जनसिंह जी० सी० आई० ई०, के०सी० एस० आई०, के० सी० वी० ओ०, महाराज, रतलाम।



हिज़ हाईनेस महाराज सर ताशीराम ग्याल के० सी० आई० ई०, महाराज, शिकम।



हिज़ हाईनेस सर उग्गेन-वाङ्गचुक, के० सी० एस० आई०, के० सी० आई० ई०, महाराज, भूटान।



हिज़ हाईनेस श्री पद्मनाभ दास वांची पाल सर राम वर्मा कुलेस रवारा कीर्तिपति महाराजा राजा रामराज बहादुर समशेर जंग जी० सी० आई० ई० महाराज, ट्रावनकोर।



हिज़ हाईनेस महाराजा कृष्णकुमार सिंह जी महाराज, भाव नगर।



हिज़ हाईनेस सर महाबत खाँ जी रसूल खाँ जी सोयम जी० सी० आई० ई०, के० सी० एस० आई, नवाब साहब जूनागढ़।



हिज़ हाईनेस श्री भगवन्त सिंह जी, जी० सी० आई० ई०, एम० डी०, सी० वी० ओ०, महाराज गोंदाल।



हिज़हाईनेस श्री सर राम वर्मा, जी० सी० आई०ई० महाराज, कोचीन।



हिज़ हाईनेस महाराजाधिराज श्री हिम्मत सिंह जी महाराज, ईदर ।



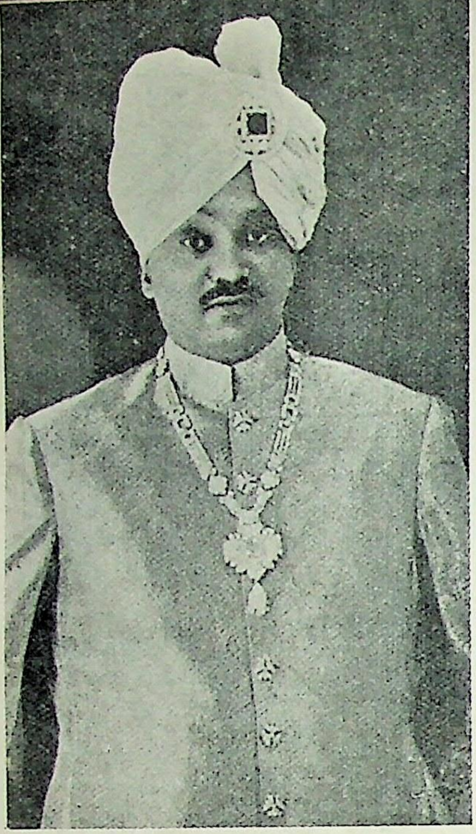
हिज़ हाईनेस महाराजा श्री सर नटवर सिंह जी बहादुर के० सी० एस० आई०, महाराज, पोरबन्दर ।



कैप्टेन हिज़ हाईनेस महाराणा सर श्री अमरसिंह जी के० सी० एस० आई०, के० सी० आई० ई० महाराणा, राना साहब, बांकनेर ।



मेजर हिज़ हाईनेस महाराजा श्री विजयसिंह जी के० सी० एस०, आई० महाराज, राज पिप्पला ।



मेजर हिज़-हाईनेस महाराजा श्री दिग्विजय सिंह जी जदेजा के० सी० एस० आई०, महाराज जाम साहब, नवानगर।



हिज़ हाईनेस महाराजा महाराणा श्री सर घनश्याम सिंह जी जी० सी० आई० ई०, के० सी० एस० आई, महाराज, ध्रांगधर।



हिज़ हाईनेस महाराजा श्री लुखधीर जी बहादुर, के० सी० एस० आई०, महाराज, मोरवी।



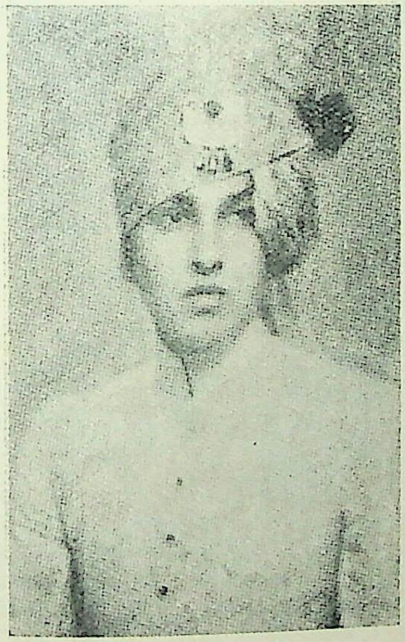
हिज़ हाईनेस महाराव श्री खेंगर जी सवाई बहादुर, जी० सी० एस० आई०, जी० सी० आई० ई०, महाराज, कच्छ।



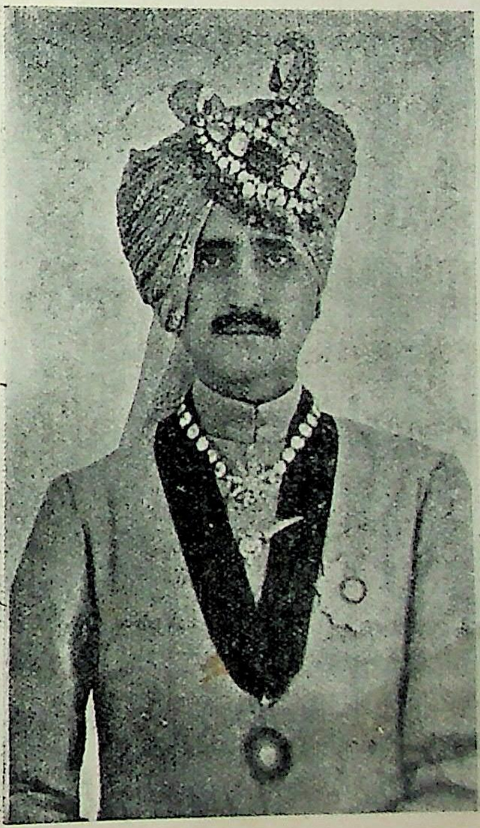
लेफ्टिनेन्ट-कर्नल हिज़ हाईनेस महाराजा सर श्री राजाराम शाहू छत्रपति, जी० सी० एस० आई०, जी० सी० आई० ई०, महाराज, कोल्हापुर।



लेफ्टिनेन्ट कर्नल हिज़ हाईनेस नवाब सर ताले मुहम्मद खां बहादुर जी० सी० आई० ई०, के० सी० वी० ओ० ए० डी० सी०, नवाब साहब, पालनपुर।



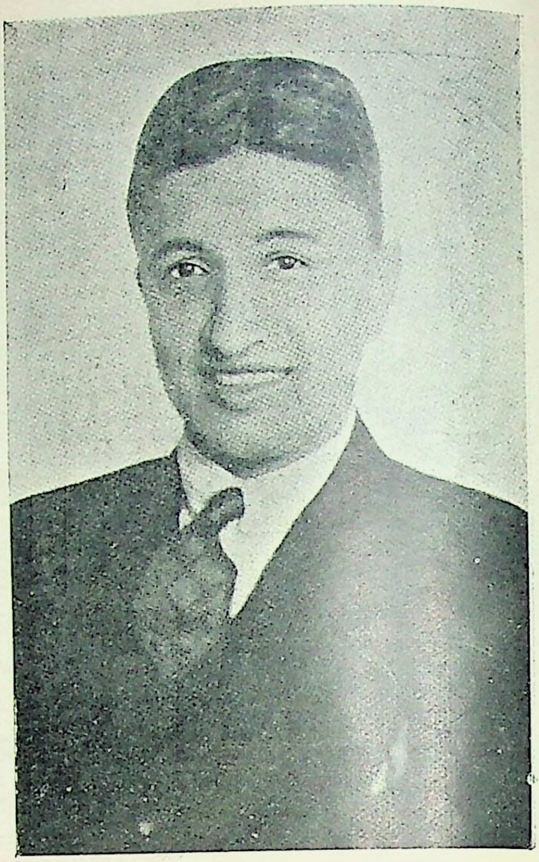
हिज़ हाईनेस जगद्दीपेन्द्र नारायण भूप बहादुर महाराज, कूचबिहार।



हिज़ हाईनेस नवाब साहब सर जलालुद्दीन खां बाबी बहादुर के० सी० आई०, नवाब, राधनपुर।



हिज़ हाईनेस बिशम-समर-बिजई महा महोदय उच्च श्रीयुक्त महाराज मानिक सर वीर बिक्रम किशोर देव बरमन बहादुर के० सी० एस० आई० महाराज, त्रिपुरा।



कैप्टेन हिज़ हाईनेस नवाब सय्यद रज़ा अली ख़ाँ बहादुर के० सी० एस० आई०, डी० लिट०, एल०, एल० डी०, नवाब रामपुर।



मेजर डाक्टर हिज़ हाईनेस रुकनुद्दौला नसरतेजंग सैफुद्दौला, हफ़ीज़ुल-मुल्क मुखलिसुद्दौला वामिनुद्दौला, अल-हाज नवाब सर सादिक़ मुहम्मद खाँ साहब बहादुर अब्बासी, बी० एल० एल० डी०, जी० सी० आई० ई०, के० सी० एस० आई०, के० सी० वी० ओ०, नवाब भावलपुर।



कैप्टेन हिज़ हाईनेस महाराजा सर आदित्य नारायण सिंह बहादुर, के० सी० एस० आई०, भूतपूर्व महाराज बनारस।



कर्नल हिज़ हाईनेस फ़रज़न्दे-दिलबन्द, राशिकुलतिक़ाद, दौलते-इन्गलीशिया, राजा-ए-राजान महाराजा सर रणबीर सिंह राजेन्द्र बहादुर, जी० सी० एस० आई०, जी० सी० आई० ई० महाराज, झिन्द।



हिज़ हाईनेस प्रतापसिंह महाराज, नाभा।



हिज़ हाईनेस यादवेन्द्र सिंह, महाराज पटियाला



हिज़-हाईनेस मीर फ़ैज मुहम्मद खाँ तालपुर, मीर खैरपुर।



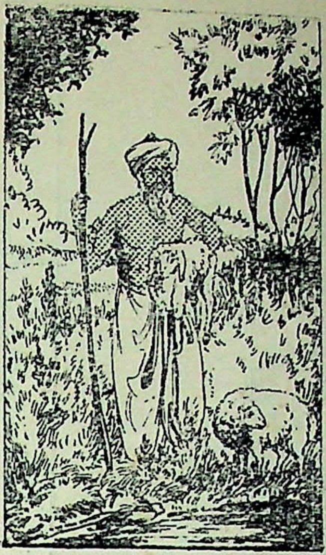
कर्नल हिज़ हाईनेस फरज़न्द-दिलबन्द, रशीकुल-तिक़ाद, दौलत-इन्गलीशिया राजै-रजान महाराजा सर जगजीत सिंह बहादुर, जी० सी० एस० आई०, जी० सी० आई० ई० महाराज, कपूरथला।



कैप्टेन हिज़-हाईनेस सर मीर अहमद यार खां, जी० सी० आई० ई०, नवाब, क़लात।



एक काश्मीरी कुली



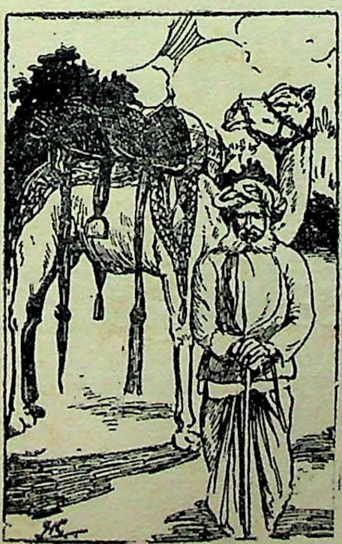
एक बलोची गड़रिया



आसाम के पूर्वी सीमा प्रदेश
का एक मिश्मी मुखिया



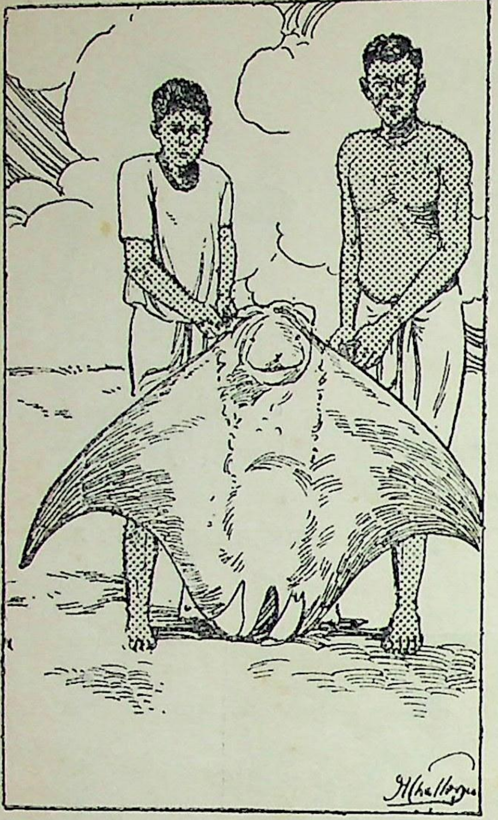
रामपुर राज्य की एक रुई ओटने वाली स्त्री



राजपूताना का एक ऊँटनी सवार



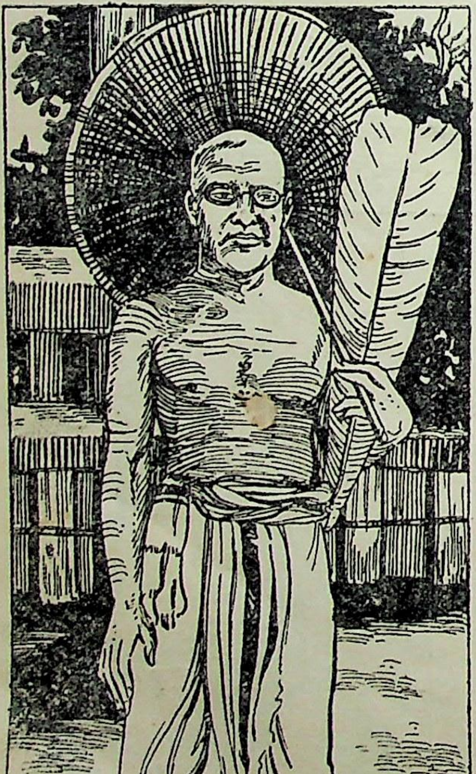
लद्दाख के व्यापार मार्ग का एक बौद्ध



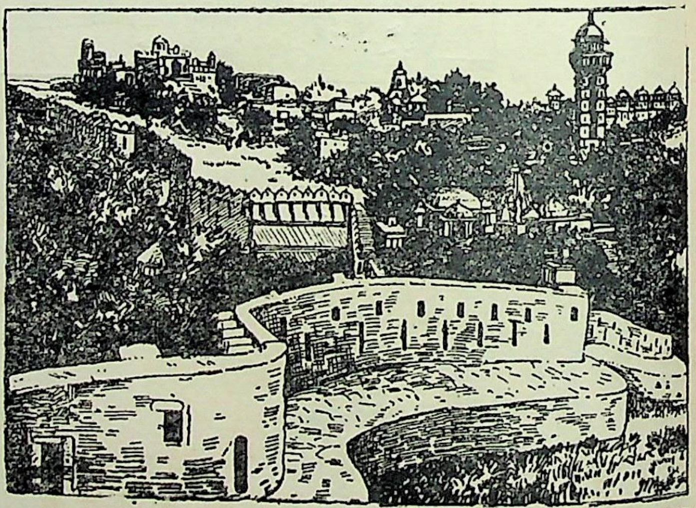
कोचीन राज्य के मछुए और उनकी विचित्र मछली



कलात के दो साधारण बलोची



ट्रावनकोर राज्य का एक ब्राह्मण



उदयपुर राज्य के प्रसिद्ध किले चित्तौड़गढ़ की दीवारें

देशी राज्य

अनुक्रमणिका

अकदिया—उत्तरी काठियावाड़ का एक छोटा राज्य है। इस राज्य में एक राज्य शामिल है। इसकी आमदनी १०००) रु० है। यह राज्य १३०) रु० ब्रिटिश सरकार को और २५ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

अकलकोट—बम्बई प्रान्त का एक छोटा करद राज्य है। इस राज्य के उत्तर, पूर्व, और दक्षिण में निज़ाम राज्य, पश्चिम में शोलापुर का जिला है। उसका क्षेत्रफल ४९८ वर्ग मील है। इसमें १०४ गांव हैं। जन-संख्या लगभग ६०,००० है। यहां की समशीतोष्ण जलवायु बड़ी सुन्दर है। सालभर में लगभग ३० इंच पानी बरसता है। ज्वार, बाजरा, धान, गेहूँ, चना, अलसी और गन्ना यहां की प्रधान उपज है। यहां कपड़ा बुनने, साफा और साड़ी बनाने का काम अच्छा होता है। इस राज्य की आमदनी लगभग ढाई लाख रु० है।

पहले यह राज्य अहमद नगर के मुसलमानी राज्य के अधीन था। मरहठों के उत्थान के समय सतारा के राजा ने यहां के राजा को फौजी सहायता के बदले यह जागीर सौंप दी। १८४९ में जब सतारा अँग्रेज़ी राज्य में मिला लिया गया तब यह जागीर भी अँग्रेज़ों के अधीन हो गई। यहां का राजा दक्खिन के प्रथम श्रेणी के सरदारों में गिना जाता है और १४,५९० रु० अँग्रेज़ी सरकार को कर देता है।

अंकेवल्लिया—काठियावाड़ का एक छोटा राज्य है। इसमें तीन गांव शामिल हैं। इसकी आमदनी १५,००० रु० है। १३०० रु० ब्रिटिश सरकार को और २२६ रु० जूनागढ़ राज्य को देने पड़ते हैं।

अंगद—रेवाकान्त (बम्बई प्रान्त) का एक छटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३½ मील है। इसकी आमदनी ६,००० रु० है। १७४० रु० बड़ौदा महाराज को कर देने पड़ते हैं।

अग्रबड़खेरा—मध्यभारत की भूपाल एजेन्सी का एक छोटा राज्य है। इस राज्य में बारह गांव शामिल हैं। इसकी जनसंख्या लगभग ५ लाख है। इन बारह गावों की जागीर श्रीमान सिन्धिया जी महाराज की ओर से मिली हुई है। यहां के ठाकुर साहब सिन्धिया महाराज को ५,८८० रु० सालाना कर देते हैं। राज्य की मालगुजारी लगभग ७,००० रु० है। यह राज्य २३'५७ उत्तरी अक्षांश और ७,७'३२ पूर्वी देशान्तर में स्थित है।
ठाकुर साहब को करबई से ३००) रु० और सिन्धिया महाराज की ओर से २३७०) रु० वार्षिक मिलता है।

अजबपुर—गुजरात का एक छोटा राज्य है। इसकी जनसंख्या लगभग ५०० है। यह राज्य हर साल ६६) रु० बड़ौदा को कर देता है।

अजयगढ़—यह राज्य इलाहाबाद से १३० मील की दूरी पर, उत्तर की ओर चरखारी और बांदा ज़िले से घिरा हुआ है इसके दक्षिण में पन्ना राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल ८०२ वर्ग मील और जनसंख्या ८०,००० है। इसकी आमदनी सवा दो लाख है। इस राज्य को महाराज छत्रसाल ने बसाया था। १८०९ ई० में यहाँ के महाराजा ने अँग्रेज़ों से सन्धि कर ली। यह राज्य ७०१० रु० कर देता है। यहाँ के सवाई महाराज को ९ तोपों की सलामी होती है।

अठगढ़—उड़ीसा प्रान्त में एक करद राज्य है। इस राज्य के पूर्व में कटक जिला, दक्षिण में महानदी, पश्चिम में तिगरिया राज्य और उत्तर-पश्चिम में ढेंकनाल राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल १६८ वर्गमील और जनसंख्या ५०,००० है। इस राज्य में २१० गाँव हैं। धान और ईख यहाँ की प्रधान उपज है। इस राज्य की आमदनी १,३४,०००) रु० है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को २८००) रु० कर देता है।

इस राज्य में ३४४ फौजी सिपाही और ११५ पुलिस के सिपाही और चौकीदार हैं। पहले अठगढ़ में उड़ीसा के राजा राज्य करते थे। एक राजा ने अपने प्रधान मन्त्री की बहिन से विवाह किया। और अपने साले को अठगढ़ की जागीर दे दी। यहाँ के राजा कायस्थ हैं।

अथमलिक—उड़ीसा का करद राज्य है। इसके उत्तर में राधाकोल, पूर्व में अंगुल, दक्षिण में महानदी, पश्चिम में राधाकोल और सोनपुर राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल ७३० वर्गमील है। इस राज्य में २७७ गाँव हैं, जनसंख्या ६४,००० है। राज्य की आमदनी २,४०,०००) रु० है। धान, तिलहन यहाँ की प्रधान उपज है। ४८०) रु० ब्रिटिश सरकार को कर दिया जाता है। यहाँ के शासक राजा किशोरचन्द्र देव सामन्त हैं।

अम्ब—यह जागीर हज़ारा ज़िले के धुर उत्तरी-पश्चिमी सिरे पर स्थित है। सिन्ध नदी इस राज्य को पठानों के स्वाधीन प्रदेश से अलग करती है। इस राज्य का क्षेत्रफल २०४ वर्गमील है। जब पंजाब अँग्रेज़ी राज्य में मिला लिया गया तो यह जागीर यहाँ के नवाब को अँग्रेज़ों की ओर से दे दी गई।

अमरपुर—रेवाकान्त में पांडु मेहवास का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १$\frac{3}{4}$ मील और आय ५००) रु० है। २००) रु० बड़ौदा राज्य को कर देना पड़ता है।

अमला—बम्बई प्रान्त के खानदेश ज़िले की डांग रियासत है। इसका क्षेत्रफल २०० वर्गमील है। आबादी ५,००० है। इस राज्य की आमदनी ३,००० रु० है। यहाँ का राजा भील है। वह मोदल में रहता है।

अमलधरा—गुजरात के महीकान्त में एक करद राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३६,००० बीघा, और जनसंख्या १३.००० है। ज्वार-बाजरा यहाँ की प्रधान उपज है। आमदनी २५०००) रु० है। यहाँ के ठाकुर साहब को ३१२) रु० बड़ौदा राज्य को देने पड़ते हैं।

अलवर—राज्य उत्तर में पंजाब के गुरगांव ज़िले से घिरा है। इसके पूर्व में भरतपुर राज्य और दक्षिण-पश्चिम में जैपुर राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल ३१५८ वर्गमील और जनसंख्या ७ लाख ५० हज़ार है। राज्य की आमदनी ३७$\frac{1}{2}$ लाख है। यहाँ के महाराजा श्री सवाई तेजसिंह जी बहादुर को १५ तोपों की सलामी मिलती है।

इस राज्य में ज्वार, बाजरा, तिलहन, तम्बाकू आदि की उपज के अतिरिक्त स्लेट, रंगीन बलुआ पत्थर, सङ्गमरमर, सङ्गमूसा, गेरू, लोहा, तांबा, सीसा और पोटाश भी बहुत है।

१८०३ ई० से इस राज्य का ब्रिटिश राज्य से सम्बन्ध है। इस राज्य को कर नहीं देना पड़ता है। लेकिन ब्रिटिश साम्राज्य के काम के लिये फौज रखनी पड़ती है और इस फौज का पूरा खर्च देना पड़ता है।

अलवा—यह बम्बई प्रान्त के रेवाकान्त में सनरखेड़ा मेवास का छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ६ वर्गमील है। राज्य की आमदनी ६०००) रु० है। ६७) रु० गायकवाड़ बड़ौदा को देना पड़ता है। यहाँ के शासक ठाकुर साहब कहलाते हैं।

अलमोध—मध्य प्रान्त के छिन्दवाड़ा ज़िले का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ५२ वर्गमील और जनसंख्या ३००० है। यह जागीर महादेव के मन्दिरों के निमित्त मिली हुई है। सरकारी लगान ३५) रु० है। और सरकार की ओर से यात्री टैक्स के बदले १७०) रु० मिलता है।

अलीपुरा—यह बुन्देलखंड का एक राज्य है। इसके उत्तर-पूर्व में हमीरपुर का ज़िला दक्षिण में गरौली और पश्चिम में झांसी का ज़िला है। इसका क्षेत्रफल लगभग ७३ वर्गमील है, इसमें २६ गाँव हैं। इसकी जनसंख्या १५,३१६ है। इसकी आमदनी ६०,०००) रु० है। अलीपुर नगर हरपालपुर रेलवे से ८ मील दूर है। इस राज्य के संस्थापक श्री अचलसिंह को यह जागीर पन्ना राज्य की ओर से मिली थी। जब इस प्रदेश पर अँग्रेज़ों का अधिकार हो गया तो उन्होंने इस राज्य को अचलसिंह के पुत्र श्री प्रतापसिंह के ही हाथ में रहने दिया। और एक सनद दे दी। यहाँ के राव रघुराजसिंह जू परिहार राजपूत हैं। इन्हें चेम्बर आफ प्रिन्सेज़ के लिये प्रतिनिधि चुनने के लिये मत (वोट) प्राप्त हैं।

अलीराजपुर—मध्य भारत के दक्षिणी-पश्चिमी कोने पर भील-एजेन्सी का एक राज्य है। यह राज्य गुजरात की रेवाकांत रियासतों से मिला हुआ है। इस राज्य का क्षेत्रफल ८३६ वर्गमील है। इसमें ३१२ गाँव हैं। जनसंख्या १ लाख है। राज्य की आमदनी ५ लाख से ऊपर है। अलीराजपुर नगर दोहद रेलवे से ४४ मील दूर है। यहाँ के राजा (सर प्रतापसिंह जी) चेम्बर आफ़ प्रिन्सेज़ के लिये अपना प्रतिनिधि चुन सकते हैं। इन्हें ८ तोपों की सलामी होती है।

आओचर—बम्बई प्रान्त का डांग राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल ८ वर्गमील और जनसंख्या ३०० है। यहाँ की आमदनी ३०० रुपया है, यहाँ भील राजा का शासन है।

आनन्दपुर—उत्तरी काठियावाड़ में एक छोटा राज्य है। इसमें ३३ गाँव शामिल हैं, इसकी आमदनी ३०,०००

रुपया है। ७१५) रुपया ब्रिटिश सरकार को और २०५) रुपया जूनागढ़ को देने पड़ते हैं।

आलमपुर—काठियावाड़ में गोहेलवाड़ का एक छोटा राज्य है। इस राज्य में केवल १ गाँव है। इसकी आमदनी ४०००) रुपया है। यह १२३०) रु० बड़ौदा को और १६२) रुपया जूनागढ़ को कर देता है।

इन्दौर—राज्य का क्षेत्रफल ६६०२ वर्ग मील है। इस राज्य की जन संख्या १३२५०८६ हैं। इस राज्य में ३७३४ गांव और नगर हैं। इस राज्य की आमदनी १,३५,००,००० रु० है इस राज्य की जलवायु कुछ गरम है। यहां साल भर में ३७ इंच पानी बरसता है। इस राज्य में ५,२५० पैदल, ३३०० घुड़ सवार और ३५० तोपखाने के सिपाही हैं। होलकर राजवंश के संस्थापक मल्हार राव का जन्म १६६३ ई० होल नामी गांव में हुआ था। इसी से इस राजवंश का नाम होलकर पड़ गया। अब से १४० वर्ष पहले यह राज्य अपनी शक्ति के शिखर पर था। उस समय यहां के महाराजा की शक्ति अँग्रेज़ों की शक्ति के टक्कर की थी। और हिन्दुस्तान के राजाओं में अत्यन्त शक्तिशाली थो। यदि मराहठों में फूट का बीज न फैला होता तो हिन्दुस्तान और इन्दौर का इतिहास ही दूसरा होता। इस समय भी शिक्षा और उन्नति विचारों में यह राज्य बहुत कुछ अग्रसर है।

होलकर महाराज को इन्दौर राज्य में २१ तोपों और ब्रिटिश भारत में १६ तोपों की सलामी दी जाती है। यह राज्य किसी प्रकार का कर नहीं देता है। यहां के महाराज को प्राण दंड देने का अधिकार है।

इटारिया गढालू—यह उत्तरी काठियावाड़ में एक छोटा राज्य है। इसमें केवल २ गाँव शामिल हैं। इसकी आबादी १००० और आमदनी ५००० रु० है। यह राज्य २५२ रु० ब्रिटिश सरकार को और ८३ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

इलोल—यह बम्बई के रेवा कान्त का एक राज्य है। यहां की जन संख्या ६००० और आमदनी २०,००० रु० है। कपास, गेहूँ, ज्वार, बाजरा, चना, उर्द यहां की प्रधान उपज हैं। यह राज्य १८६० रु० बड़ौदा को ४३० रु० ईदर को और २) अहमद नगर के लिये कर देता है।

इंचल करनजी—यह कोल्हापुर का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल २०१ वर्ग मील और जन-संख्या ६०,००० है। इसकी आमदनी ३ लाख रु० है। धान ज्वार, बाजरा गन्ना, तम्बाकू, कपास, मिर्च यहां की उपज हैं। इस राज्य में लोहा भी पाया जाता है। यह राज्य २०००) कोल्हापुर को कर देता है। यहां के ब्राह्मण राज्य दक्षिणी महाराष्ट्र के सरदारों में प्रथम श्रेणी के गिने जाते हैं।

ईदर—महीकान्त (गुजरात) का प्रधान राजपूती राज्य है। इसका क्षेत्रफल ४६६६ वर्ग मील है। इस राज्य में ८७५ गाँव और नगर हैं। इसकी जन-संख्या ३ लाख है। इस राज्य की आमदनी १० लाख रु० है। यह राज्य ३०,३४०) बड़ौदा को कर देता है। ज्वार, बाजरा, तिलहन, गन्ना, महुआ, आम, खिरनी यहाँ की प्रधान उपज है। यहां के महाराजा राठौर राजपूत हैं। इनको प्राण दंड देने का अधिकार है। इनके अधीन कई सरदार हैं जिन्हें हर तीन घुड़सवार रखने के बदले १०००) आमदनी का इलाका मिला हुआ है। इस प्रकार इस राज्य में ५६८ घुड़सवार और ५६८ पैदल सिपाही हैं। यहाँ के महाराजा को १५ तोपों की सलामी दी जाती है।

उचाद (Uchad)—बम्बई प्रान्त में रेवाकान्त एजेन्सी का यह एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ४½ वर्ग मील है। इस राज्य की सालाना आमदनी ६८५० रुपये हैं। यह राज्य ८८३ रुपये सालाना बड़ौदा राज्य को कर देता है।

उदयपुर (मेवाड़)—यह राजपूताना एजेन्सी का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १२,६२३ वर्गमील और जन-संख्या १५,६६,६१० है। इस राज्य की कुल सालाना आय लगभग ८०,६०,००० रुपये हैं। जागीरों की आमदनी अलग से है। यह राज्य २,००,००० रुपये सालाना ब्रिटिश सरकार को कर देता है। इस राज्य की सेना में ६२४० सवार १५१०० पैदल सैनिक ४६४ तोपें और १३३८ तोप चलाने वाले सैनिक हैं।

भारतीय राजपूत राजाओं में यहां का राजा सबसे उच्च उत्तम माना जाता है। यह लोग सूर्य वंश के ऊँचे घराने के हैं। राना को रामचन्द्र जी की बंशज कहा जाता है। इस राज्य की नींव १४४ ई० में कनक सेन ने डाली थी। यहां महाराजाधिराज को १६ तोपों की सलामी दी जाती है। यहाँ के वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस महाराजाधिराज महेन्द्र सर भूपाल सिंह जी बहादुर जी० सी० एस० आई० के० सी० आई० ई० हैं। आप १६३० में गद्दी पर बैठे।

उदयपुर—छोटा नागपुर उड़ीसा प्रान्त का यह एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १०५१ वर्ग मील है। इस

राज्य की जन-संख्या १७,७३८ है। राज्य की सालाना आमदनी ३,२८,१४०) है। यह राज्य ५३३) ब्रिटिश सरकार को सालाना कर चुकता है।

१८५२ ई० में इस राज्य का अधिकारी कोई न होने के कारण ब्रिटिश सरकार के आधीन हो गया। १८५७ में यहां के महाराज फिर यहां लौटकर आये और उन्होंने कुछ समय तक राज्य किया। १८५९ में यहां के महाराज को ब्रिटिश सरकार ने पकड़ा और अंडमान निर्वासित कर दिया। १८६० में यह राज्य सरगुजा महाराज के भाई को दे दी गई जिन्होंने ग़दर के समय ब्रिटिश सरकार की अच्छी सहायता की थी।

उमेता (Umeta)—बम्बई प्रान्त में रेवाकान्त एजेन्सी का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३६½ वर्गमील है। इस राज्य की सालाना आय २६,३००) है। यह राज्य ५०००) ब्रिटिश सरकार को और २,५५०) बड़ौदा सरकार को कर चुकाता है।

उमरापुर (Umrapur)—हालार काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक छोटा सा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ८ वर्गमील और जन-संख्या १८०४ है। इस राज्य की सालाना आमदनी १६,०००) है। यह राज्य ५१०) ब्रिटिश सरकार को कर देता है।

उमरी—ग्वालियर राज्य में मध्य भारत का एक राज्य है। इसमें २४ गांव हैं। यहां की जन-संख्या २,७४० है। इस राज्य की सालाना आय ७,०६०) है। यहां के शासक राजपूत हैं।

उँतरी (Untri)—झालावार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक देशी राज्य है। इसका क्षेत्रफल ६ वर्गमील और जन-संख्या ४३१ है। इस राज्य की सालाना आय १,६५०) है। यह राज्य ४६३) ब्रिटिश सरकार को और ४६) जूनागढ़ राज्य को सालाना चुकाता है।

ऐयाबी—काठियावाड़ के उन्द सर्विया का एक छोटा राज्य है। यह राज्य २१-२४ उत्तरी अक्षांश और ७१-४७ पूर्वी देशान्तर में स्थित है। इस राज्य में २ गाँव शामिल हैं। इसकी आमदनी ५,२००। रुपया है। यह राज्य श्रीमान् गायकवाड़ बड़ौदा को २८०) रुपया और जूनागढ़ के नवाब को ८) रुपया सालाना देता है।

ओर्छा—यह मध्य भारत की बुन्देलखंड एजेन्सी का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल २,००० वर्गमील और जन संख्या ३, ०५,००० है। इसकी आमदनी १०,००,००० से है। इस राज्य की फौज में २०० घुड़सवार, ४४०० पैदल और १०० तोपखाने के सिपाही हैं। ओर्छा राज्य बुन्देलखंड के राज्यों में सबसे पुराना और सबसे उच्च श्रेणी का है। इस राज्य ने ग़दर के समय अँगरेज़ों की बड़ी मदद की। इससे ३०००)रु० का कर जो यह राज्य ब्रिटिश सरकार को देता था वह) सदा के लिये माफ़ कर दिया गया। यहां के राजा को सवाई मेहनजू का पद मिला हुआ है। इनको ११ तोपों की सलामी दी जाती है।

औंध—बम्बई प्रान्त की सतारा एजेन्सी में एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ४४७ वर्गमील है। इसमें ७१ गाँव हैं। जनसंख्या ६०,००० है। गेहूँ, ज्वार, बाजरा, दाल, कपास और तेलहन यहाँ की प्रधान उपज है। घी भी बहुत तयार किया जाता है। राज्य की आमदनी २,००,००० रुपया है। यहाँ २८० सशस्त्र पुलिस और २० घुड़सवार हैं। यहाँ के शासक ब्राह्मण हैं और पन्थ प्रतिनिधि कहलाते हैं। वे दक्षिण के प्रथम श्रेणी के सरदारों में गिने जाते हैं।

कच्छ—बम्बई प्रान्त में गुजरात का एक बड़ा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ६५०० वर्गमील और जनसंख्या ६ लाख है। इस राज्य में ८६८ गाँव और नगर हैं। लोहा, कोयला, फिटकरी, शोरा, नमक, मकान बनाने का पत्थर यहां बहुत है। यहां ज्वार, बाजरा, उर्द बहुत होता है। इस राज्य की आमदनी २० लाख रुपया है। यहां के महाराजा मिरज़ा महाराव को १७ तोपों की सलामी दी जाती है। इस राज्य को ब्रिटिश फौज के लिये दो लाख रुपया देना पड़ता है। यह फौज कच्छ की राजधानी भुज नगर में रक्खी जाती है।

कगल—यह दक्षिणी महाराष्ट्र में कोल्हापुर के अधीन एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १२६ वर्गमील है। इसकी जनसंख्या ५०,००० और आमदनी ३ लाख रुपया है। यह राज्य २,००० रु० कोल्हापुर को कर देता है। यहां के राजा को ६ तोपों की सलामी दी जाती है।

कलसिया—यह सतलज के इस पार पंजाब का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १८८ वर्गमील है। इसमें १७६ गांव और नगर हैं। इस राज्य की जनसंख्या ५६,८४८ है। इस राज्य की आमदनी ४,००००० रु० है। गेहूँ, कपास, मक्का, ईख और जावित्री (Saffron) यहां की उपज है। यहां की फौज में २५० सिपाही, ५० घुड़सवार और ८ तोपखाने के सिपाही हैं। चुंगी न लेने के

बदले यहां के सिक्ख (जाट) राजा को ब्रिटिश सरकार की ओर से २८५० रु० मिलता है। यहां के वर्तमान नरेश राजा रविशेरसिंह हैं।

कच्छी बड़ौदा—मध्यभारत का एक राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल ३५ वर्गमील है और इसमें १६ गांव हैं। इसकी आमदनी ६६००० रु० है। यहां के ठाकुर ९६६० रु० धार राज्य को कर देते हैं। यहां के वर्तमान नरेश ठाकुर बेनी माधो सिंह राठौर राजपूत हैं।

कंजदा—यह काठियावाड़ का एक गांव वाला राज्य है। इसकी जनसंख्या ३००० है। इसकी आमदनी ३,००० रु० है। यह राज्य बड़ौदा को १२८ रु० कर देता है।

कटोरिया—यह काठियावाड़ में गोहेलवार का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १ वर्गमील है। इसमें एक ही गांव है। आम यहां बहुत होते हैं। इसकी जन संख्या ४०० और आमनी २००० रु० है। यह राज्य ११३ रु० बड़ौदा को और २८ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

कटोसन—यह गुजरात के महीकान्ता का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ७७१७ एकड़ है। यहां के वर्तमान शासक ठाकुर श्री कीर्ति सिंह जी तख्तसिंह जी हैं।

कठरोटा—यह दक्षिणी काठियावाड़ का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १ वर्गमील है। इसमें केवल एक गांव है। इसकी आय १२०० रु० है। यह राज्य बड़ौदा को ५२ रु० कर देता है।

कदना—यह बम्बई के रेवाकान्त (काठियावाड़) का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १३० वर्गमील है। इसकी जनसंख्या १५,००० है। इसकी आमदनी २०,००० रु० है। तेरहवीं सदी में भीमदेव ने इस राज्य की स्थापना की थी।

कपूरथला—यह पंजाब का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ५९९ वर्गमील और जनसंख्या ३,१७,००० है। इसकी आमदनी ३६००००० रु० है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को १,३१,००० रु० कर देता है। गेहूँ, मका, तम्बाकू, और गन्ना, यहां की प्रधान उपज है। सरदार जसासिंह ने अपनी तलवार के ज़ोर से १७८० ई० में इस राज्य को बनाया था। यहां के राजा ने ग़दर में अँग्रेज़ों की बड़ी मदद की। इससे इनको ८ लाख रु० आमदनी की जागीर अवध में दे दी गई। इनको ११ तोपों की सलामी दी जाती है।

कमधिया—यह दक्षिणी काठियावाड़ का एक छोटा सा राज्य है। इसमें केवल १ गांव है। इसकी आमदनी ७००० रु० और जनसंख्या ८०० है।

कम्बे—(खम्भात) प्रान्त में टेरा एजेन्सी का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३९२ वर्गमील है। इसमें ८५ गांव हैं। यहां की जनसंख्या लगभग एक लाख है। इसकी आमदनी १३ लाख रु० है। ज्वार, बाजरा, दाल, धान, गेहूँ, कपास-तम्बाकू और अफीम यहां की प्रधान उपज है। नमक निकालने, कपड़ा बुनने, कालीन बनाने और गोटा बनाने का काम अच्छा होता है। यहां के नवाब शिया मुसलमान हैं और ब्रिटिश सरकार को ९५० रुपया कर देते हैं। इनको ११ तोपों की सलामी दी जाती है। यहां के वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस नैमुद्दौला मुमताज़ुलमुल्क मोमिन खां बहादुर दिलावर जँग नवाब मिर्ज़ा हुसेन मावर खां साहब बहादुर हैं।

कमलपुर—यह काठियावाड़ के झालावार का एक राज्य है। इसमें १ गांव है। इसकी जनसंख्या ६०० है। इस राज्य की आमदनी ३,००० रु० है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को ७७६ रु० कर देता है।

करौली—राजपूताना में भरतपुर एजेन्सी का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १,२४२ वर्गमील है। इसकी जनसख्या १,५०,००० है। गेहूँ, जौ, चना, तम्बाकू, ज्वार, बाजरा, और धान, यहां की उपज है। यहां की आय ७,१०,००० रु० है। यहां के महाराजा यदुवंशी राजपूत हैं। १,७७० पैदल १६० घुड़सवार और ४० तोपखाने के सिपाही हैं। यहां के महाराजा को १७ तोपों की सलामी दी जाती है। यहां के वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस महाराज सर भूमपाल देव बहादुर, यादव कुल, चन्द्रभाल के० सी० एस० आई० हैं।

कवर्धा—यह मध्यप्रान्त के बिलासपुर ज़िले का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ८०५ वर्गमील और जनसंख्या ७३,००० और आमदनी ३,०२,६६७ रु० है। यह राज्य ३०,००० रु० ब्रिटिश सरकार को कर देता है। गेहूँ, कपास, चावल, तेलहन, यहां की प्रधान उपज है। यहां के वर्तमान नरेश ठाकुर धर्मराज सिंह हैं।

कसला पगिन मुवादू—यह रेवाकान्त के पांडु मेहवास में एक बाली राज्य है। इसका क्षेत्रफल १½ मील और आय १०० रु० है। यह राज्य ६० रु० बड़ौदा राज्य को कर देता है।

कहलूर—या बिलासपुर—यह शिमला का एक पहाड़ी

राज्य है। यहाँ का क्षेत्रफल ४४८ वर्गमील और जनसंख्या १ लाख है। गेहूँ, अफीम, अदरख यहां की प्रधान उपज है। इस राज्य की आमदनी १ लाख रु० है। यह राज्य ८००० रु० कर देता है। यहां के राजपूत राजा ने १८५७ के ग़दर के समय ब्रिटिश सरकार की बड़ी मदद की थी। यहां के राजा को ९ तोपों की सलामी दी जाती है।

कांकरेज—या तारा बम्बई की पालनपुर एजेन्सी में छोटे छोटे राज्यों का एक समूह है। इसका क्षेत्रफल ५२० वर्गमील और जनसंख्या ५०,००० है। इसकी आय ५०,००० रु० है। यह राज्य ५१३० रु० बड़ौदा राज्य को कर देता है।

कांकरेज में भिन्न भिन्न २६ राज्य हैं। इनके राजा राजपूत हैं जिन्होंने कोगी स्त्रियों से व्याह कर लिये हैं।

कांकसियाली—यह काठियावाड़ का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ७६ वर्गमील है। इसकी जनसंख्या ३०० है। इसकी आय १५०० रु० है। यह राज्य ८४ रु० ब्रिटिश सरकार को और २७ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

कांकेर—यह मध्य प्रान्त के रायपुर जिले में एक करद राज्य है। इसका क्षेत्रफल ६३९ वर्गमील जनसंख्या ७०,००० और आमदनी २०,००० रु० है। धान, कुटकी, कोदों, लाख और गोंद यहां की उपज है। यहां के राजा एक अत्यन्त पुराने राजवंश के हैं।

काठी—खान देश (बम्बई प्रान्त) में एक मेहवास राज्य है। इसका क्षेत्रफल १२७ वर्गमील, जनसंख्या १२,००० है। धान, उर्द, महुआ, लकड़ी, शहद और मोम यहां की उपज है। इसकी आमदनी २५,००० रु० है। यह राज्य १३० रु० ब्रिटिश सरकार को कर देता है।

काठीवाड़ा—मध्य भारत में भील एजेन्सी का एक छोटा राज्य है। पहले यहां भील राजा थे। इस समय यहां राजपूत राजा हैं। यहां का क्षेत्रफल ७० वर्गमील और इसकी जनसंख्या ६०९६ और आमदनी ४४,००० रु० है। यहां के वर्तमान नरेश ठाकुर राना ओंकार सिंह हैं।

कानेर—यह काठियावाड़ का एक राज्य है। इसकी जन संख्या ३०० है। इसकी आमदनी ३००० रु० है। यह राज्य १९५ रु० बड़ौदा राज्य को कर देता है।

कामता खूला—यह मध्य भारत की बुन्देलखंड एजेन्सी में एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ४ वर्गमील और जनसंख्या १६०० है। इसकी आमदनी ४००० रु० है। यहां के कायस्थ राजा को गोद लेने की सनद मिली हुई है।

काली बाडरी—यह मध्य भारत की भील एजेन्सी में धार का एक राज्य है। इसमें ५ गांव शामिल हैं। इसकी आमदनी २०००) रु० है। यहां का भूमिया राजा ५०० रु० कर देता है।

कालोरा—यह गुजरात के पांडु मेहवास का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १४ वर्गमील है। इसकी आमदनी १२,००० रु० है। यह राज्य १४६० रु० ब्रिटिश सरकार को और २०० रु० बड़ौदा को कर देता है।

काश्मीर और जम्मू—यह राज्य बहुत बड़ा है। इसका क्षेत्रफल ८४,२५८ वर्गमील और जन संख्या ३६,४५,००० है। इस देश का दृश्य बहुत ही सुन्दर है। बर्फीली चोटियां, पेड़ों से घिरे हुए पहाड़ी ढाल, शान्त, झीलें और नदियां बड़ी सुहावनी मालूम होती हैं। धान, गेहूँ, जौ, मटर, मक्का, अंगूर, और बादाम यहां की उपज है। यहां की भेड़ बकरियों की ऊन बड़ी मुलायम होती है। यहां के शाल, दुशाले दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं। कालीन, कम्बल और दूसरे ऊनी कपड़े भी अच्छे बनते हैं।

इस राज्य की आय लगभग १ करोड़ रु० है। यह राज्य १ बढ़िया घोड़ा, ढाई पसेरी पशम और बढ़िया ऊन और तीन जोड़े शाल ब्रिटिश सरकार को कर के रूप में देता है। यहां १९,००० फौज रहती है। यह राज्य महाराजा रंजीतसिंह के राज्य में शामिल था। वर्तमान काश्मीर के संस्थापक श्री गुलाब सिंह जी उन्हीं के यहां पहले साधारण सैनिक थे। धीरे धीरे वे अपनी योग्यता से बढ़ते गये और काश्मीर के गवर्नर बना दिये गये। महाराजा रंजीतसिंह के मरने के बाद अँग्रेज़ों और सिक्खों से जो पहली लड़ाई हुई उसमें अँग्रेज़ों ने ७५ लाख रु० के बदले में काश्मीर राज्य इस शर्त पर सौंप दिया कि दूसरी लड़ाई में वे तटस्थ रहें। यहां के महाराजा को २१ तोपों की सलामी दी जाती है। यहाँ की सालाना आमदनी २,७०,००,००० रु० है। यहां के वर्तमान शासक हिज़ हाईनेस महाराजा हरीसिंह जी बहादुर हैं।

किशनगढ़—राजपूताना का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ८५८ वर्गमील है। जन-संख्या ८५,७४४ है। राज्य की सालाना आय ७,५०,००० रुपये है। यहाँ के वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस उमदई राजहाय वलन्द मकान महाराजाधिराज दीक्षित यज्ञ नारायण सिंह बहादुर हैं।

कुम्हार सईन—यह शिमला का एक पहाड़ी राज्य है। इसका चेत्रफल ९० वर्गमील है। इसकी जनसंख्या १०,००० है। इसकी आमदनी १५,००० रु० है। यह राज्य २,००० रु० कर देता है। यहां के राना राजपूत हैं। पहले यह राज्य बशहर के आधीन था। १८१५ में यह स्वाधीन कर दिया गया।

कुन्हियर—यह भी शिमला का एक पहाड़ी राज्य है। इसका चेत्रफल ८ वर्गमील और जनसंख्या २,००० है। गन्ना यहां की प्रधान उपज है। यहां की आय ५,००० रु० है। यह राज्य १८० रु० कर देता है। यहां के राव (ठाकुर) कुन्हिया राजपूत हैं।

कुरून्दवाद—यह दक्षिणी महाराष्ट्र का एक राज्य है। इस राज्य की छोटी और बड़ी दो शाखायें हैं। बड़ी शाखा का चेत्रफल १८२ वर्गमील और छोटी का ११२ वर्गमील है। बड़ी की जन-संख्या ३६००० और छोटी की २६,००० है। बड़ी की आमदनी सवा लाख रु० और छोटी की एक लाख रु० है। यहाँ के राजा ब्राह्मण हैं और दक्षिण के प्रथम श्रेणी के सरदारों में गिने जाते हैं।

कुरवई—यह भापाल एजेन्सी का एक नवाबी राज्य है। इसका चेत्रफल १३९ वर्गमील और जन-संख्या २५,००० है। इसकी आमदनी १,००,००० रु० है। यहां के नवाब पठान हैं।

कुठार—यह शिमला का एक पहाड़ी राज्य है। इस का चेत्रफल ७ वर्गमील है। इसकी जन-संख्या ४,००० है। इसकी आय ६,००० रु० है। यह राज्य १,००० रु० कर देता है: यहां के राजपूत राना जम्मू से आये थे।

कुरा—यह काठियावाड़ के दक्षिण में एक राज्य है। इसका चेत्रफल १ वर्गमील और जन-संख्या ४०० है। इसकी आमदनी ४,००० रु० है।

कुद्दाना—यह गुजरात के रेवाकान्त का एक राज्य है। इसका चेत्रफल १३० वर्गमील और आय १५,००० रु० है।

कूच बिहार—यह बंगाल प्रान्त का एक राज्य है। इसका चेत्रफल १३१८ वर्गमील और जन-संख्या ६ लाख है। धान, तम्बाकू, जूट, यहाँ की प्रधान उपज है। यहां की सालाना आय ३४,२०,५११ रुपये है। यह राज्य ६७,७०० रु० ब्रिटिश सरकार को कर देता है। १६वीं सदी में इस राज्य की स्थापना हुई। १७७३ ई० में इस राज्य और ब्रिटिश सरकार के बीच में सन्धि हुई। यहां के महाराजा को १३ तोपों की सलामी दी जाती है। यहां के वर्तमान शासक हिज़ हाईनेस महाराजा जगदीपेन्द्र नारायण भूप बहादुर हैं।

केसरिया—यह काठियावाड़ के झालावार में एक छोटा राज्य है। इसका चेत्रफल ३ वर्गमील है। इसमें केवल एक गांव है। इसकी जन-संख्या २५० और आमदनी २,००० रु० है। यह राज्य २७८ रु० ब्रिटिश सरकार को कर देता है।

कोचीन—यह दक्षिण भारत का एक साधारण राज्य है। इसका चेत्रफल १३६१ वर्गमील और जनसंख्या ७,००,००० है। लकड़ी, पत्थर, दारचीनी, धान, नारियल, कपास, सुपारी, सन, गन्ना, अदरख, काली मिर्च, यहाँ की प्रधान उपज है। यहां लकड़ी, हाथीदांत और धातु पर बढ़िया कारीगरी का काम होता है। यहाँ हथियार भी बनाये जाते हैं। समुद्र के पानी से नमक तैयार किया जाता है, इसकी आमदनी १५ लाख है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को २ लाख रुपया कर देता है। यहां का राजवंश बहुत पुराना है। पहले यहाँ के राजा समस्त चेर-प्रदेश (जिसमें ट्रावनकोर, मालाबार भी शामिल थे) पर राज्य करते थे। १७९८ ई० में ब्रिटिश सरकार से इस राज्य का सम्बन्ध स्थापित हुआ।

कोठीडे—यह मध्य भारत की भोपावार एजेन्सी में एक छोटा राज्य है। इसका चेत्रफल ४,००० एकड़ है। इसकी जन-संख्या ३०० और आय ५०० रु० है।

कोटरा नयानी—यह काठियावार के हालार में एक छोटा राज्य है। इसका चेत्रफल ३ वर्गमील और जन-संख्या १५,०० है। इसकी आमदनी ८००० रु० है। यह गायकवार को ५४२ रु० और जूनागढ़ को १४५ रु० कर देता है।

कोटरा पीठा—यह काठियावाड़ का एक छोटा राज्य है। इसका चेत्रफल २५ वर्गमील और जन-संख्या ८,००० है। इसकी आय ७०,००० रु० है। यह राज्य ४,८५० रु० ब्रिटिश सरकार को और ७२८ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

कोटरा संगानी—यह काठियावार के हालार में एक छोटा राज्य है। इसका चेत्रफल ३७ वर्गमील और जन-संख्या ९,००० है। इस राज्य की आमदनी ८०,००० रु० है। यह राज्य ११,६१६ रु० ब्रिटिश सरकार और जूनागढ़ को कर देता है।

कोठरिया—यह काठियावाड़ का एक छोटा राज्य है।

इसका क्षेत्रफल ६ वर्गमील और जन-संख्या २५०० है। इसकी आमदनी १०,००० रु० है। यह राज्य ९४८ रु० ब्रिटिश सरकार को और २९८ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

कोठी (केटी)—यह पंजाब का एक पहाड़ी राज्य है। इसका क्षेत्रफल ४४ वर्गमील और जन-संख्या ८,७८५ है। इसकी आमदनी ८,००० रु० है। यहां के राना राजपूत हैं। गदर में सहायता देने के बदले इनको राना की उपाधि मिली थी। इनके पूर्वज पटना से यहां आये थे। यहां के वर्तमान शासक राना रघुवीरचन्द्र हैं।

कोठी—यह बघेलखण्ड का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १६९ वर्गमील और जन-संख्या २१,४२४ है। इसकी आमदनी ७०,००० रु० है। यहाँ के राजा राजपूत हैं। यहां के वर्तमान महाराज राजबहादुर कौशलेन्द्र प्रताप बहादुर सिंह हैं।

कोरिया—यह राज्य छोटा नागपुर में स्थित है। इस का क्षेत्रफल १,६४५ वर्गमील और जनसंख्या ९०,८८६ है। धान, मक्का, गेहूँ ज्वार, बाजरा, उर्द, तिलहन और कपास यहां की उपज है। इस राज्य की आमदनी ५,०६,४४६ रु० है। यह राज्य ४०० रु० ब्रिटिश सरकार को कर देता है। यहां के राजा चौहान राज रामानुज प्रताप सिंह देव हैं।

कोटा—राजपूताना का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३,७९७ वर्गमील है। इसकी जन-संख्या ६ लाख है। इसकी आमदनी ३० लाख रु० है। यह राज्य २,८४,७२० ब्रिटिशि सरकार को और १४,३९० रु० जैपुर राज्य को कर देता है। यहां की फौज में १५,००० सिपाही हैं। यहाँ के महारावल को १७ तोपों की सलामी दी जाती है।

कोंथल—यह पंजाब का एक पहाड़ी राज्य है। यहाँ का क्षेत्रफल ११६ वर्गमील और जन-संख्या ३०,००० है। इसकी आमदनी १,९०,००० रु० है। यहां के वर्तमान नरेश राजा महेन्द्रसेन हैं।

कोल्हापुर—दक्षिणी महाराष्ट्र का एक बड़ा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३,२१७ वर्गमील और जन-संख्या ९५,७१३ है। इसकी आय ३० लाख रुपया है। ज्वार बाजरा, गन्ना, तम्बाकू, कपास, धान यहां की प्रधान उपज है। यहां लोहा भी बहुत है। १६५९ ई० में शिवाजी महाराज ने इस प्रदेश और यहाँ के किलों को जीता था।

कोंदका—मध्य प्रान्त के रायपुर ज़िले का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १७४ वर्गमील, जन-संख्या ३५,००० है। गेहूँ, चना, कपास यहां की उपज है। यहां की आय २५,००० रु० है। यह राज्य ११,००० रु० कर देता है। यहाँ का राजा वैरागी है।

खम्भालिया—यह काठियावाड़ के गोहेलवार का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ९ वर्गमील और जन-संख्या १००० है। इसकी आमदनी ८००० रु० है। यह राज्य ४१० रु० ब्रिटिश सरकार को और ११८ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

खम्बलाओ—यह काठियावाड़ के झालावार का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १० वर्गमील और जन-संख्या १,५०० है। इसकी आमदनी ६,००० रु० है। यह राज्य ७३० रु० ब्रिटिश सरकार को और १३९ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

खरसवां—यह छोटा नागपुर में एक राज्य है। इस का क्षेत्रफल १५७ वर्गमील और जन-संख्या ४४,८०५ है। इस राज्य की आमदनी १,४२,९१४ रु० है। यह राज्य पहले मरहठों के अधीन था। फिर यह ब्रिटिश सरकार के हाथ में आ गया। यहाँ के वर्तमान शासक राजा श्रीरामचन्द्र सिंह देव हैं।

खरसी झालरिया—यह मध्य भारत की इन्दौर-एजेन्सी का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ११ वर्गमील और जनसंख्या १८,००० है। इसकी आमदनी १२,००० रु० है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को ६७८ रु० कर देता है।

खराल—यह गुजरात के महीकान्त का एक राज्य है। इसमें १२ गांव शामिल हैं। इसकी जन-संख्या ३००० और आमदनी २०,००० रु० है। यहां के मीर (जो नये मुसलमान हैं) ब्रिटिश सरकार को ७६० रु० कर देते हैं।

खांड पारा—यह उड़ीसा का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल २४ वर्गमील, जनसंख्या ७७,९२९ और आमदनी १,८४,१९१ रु० है। यह राज्य ४,२१० रु० कर देता है। यहां के वर्तमान शासक राजा हरीहर सिंह मर्द राज भरम्बर राव हैं।

खानिया धाना—यह मध्य भारत में बुन्देलखंड का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ८४ वर्गमील और जन-संख्या १४,००० है। इसकी आमदनी २५,००० रु० है।

खांडिया—यह काठियावाड़ के झालावार का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ५ वर्गमील और जन-संख्या ८०० है। इसकी आमदनी ३,००० रु० है। यह

राज्य ८६१ रुपया ब्रिटिश सरकार को और ८१ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

ख़िजदिया नगानिओ - यह काठियावाड़ के झालावार में एक छोटा राज्य है। इसमें केवल एक गांव है। इसकी आय १२०० रु० है। यह राज्य बड़ौदा को ५२ रु० कर देता है।

खिजरिया—यह गोहेलवार (काठियावाड़) में एक छोटा राज्य है। इसका चेत्रफल १ वर्गमील और जनसंख्या १००० है। इसकी आमदनी ३००० रु० है। यह राज्य ३८० रु० बड़ौदा को और ४७ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

खिलचीपुर—यह भूपाल एजेन्सी का एक एक छोटा राज्य है। इसका चेत्रफल २७३ वर्गमील और जनसंख्या ४५,५८३ है। इसकी आय २,६२,००० रु० है। यहां के राजा खिलची राजपूत हैं। इनको ६ तोपों की सलामी दी जाती है। यहां के बर्तमान नरेश राजा राव बहादुर दुर्जन साल सिंह के० सी० आई० ई० हैं।

खिरासरा—यह काठियावाड़ के हालार में एक छोटा राज्य है। इसमें १३ गांव है। इसकी जनसंख्या ४५०० है। इसकी आमदनी २०,००० रु० है। यह राज्य २३६६ रु० ब्रिटिश सरकार को ३५ रु० जूनागढ़ को कर देता है। यहां के बर्तमान शासक ठाकुर श्री सूर सिंह जी बाल सिंह जी हैं।

खिरीम नोंग ख्रेम—यह आसाम में खासी पहाड़ियों का एक छोटा राज्य है। इसकी जानसंख्या २५००० और आमदनी १०,००० रु० हैं। धान, ज्वार, बाजरा कपास, आलू, लाल मिर्च, नारंगी, सुपारी, पान, कोयला और लोहा यहाँ की प्रधान उपज है। एक स्येम या सरदार यहां शासन करते हैं।

खिआओदह—यहां ग्वालियर की गुना सब एजेन्सो में एक छोटा राज्य है। इसमें केवल ७ गांव हैं। इसकी जन संख्या १२०० है। इसकी आमदनी ४००० रु० है। यहाँ के ठाकुर ग्वालियर को कर देते हैं।

खेतड़ी—यह जैपुर में एक राज्य है। इसमें खेतड़ी, बबई, सिंघाना, झुनझुन और कोटपूतली के परगने शामिल हैं। इस राज्य की आमदनी ५,००,००० रु० है। यह राज्य ८०,००० रु० जैपुर राज्य को कर देता है। यहाँ के राजा ने १८०३ में मराहठों के विरुद्ध लार्ड लेक को सहायता की थी। इसके बदले कोटपुतली का परगना यहां के राजा को दे दिया गया था।

खैरागढ़—यह मध्यप्रान्त में रायपुर ज़िले का एक राज्य है। इसका चेत्रफल ९३१ वर्गमील और जनसंख्या लगभग २ लाख है। कपास, गेहूँ, चना यहां की प्रधान उपज है। राज्य की आमदनी ७,१६,२०० रु० है। यह राज्य ४७,००० रु० ब्रिटिश सरकार को कर देता है। यहां के राजा राजगोंडवंश के हैं और गढ़मंडला राजवंश के सम्बन्धी हैं। यहां के वर्तमान शासक राजा वीरेन्द्र बहादुर सिंह हैं।

गढ़—गुजरात के रेवाकान्त का एक छोटा राज्य है। इसका चेत्रफल १२८ वर्गमील है। इसमें १०३ गाँव हैं। इस राज्य की आमदनी ३०,००० रु० है। यह राज्य ४७५ रु० छोटा उदयपुर को कर देता है। यहाँ के राजा छोटा उदयपुर राजवंश की एक शाखा हैं।

गढ़ी—मालवा की भील एजेन्सी में ओहैन राज्य का एक इलाका है। इसमें तीन गाँव है। इसकी जनसंख्या ६०० वर्गमील है। इस राज्य की आमदनी ३००० रु० है। यदि पड़ोस में डाका पड़ जावे तो यहाँ का राजा इसकी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर लेता है।

गढ़वाल—(टेहरी) संयुक्त प्रान्त का पहाड़ी राज्य है। इसका चेत्रफल ४१८० वर्गमील है। इसमें २२४६ गांव हैं। इसकी जनसंख्या २ लाख और आमदनी १ लाख रुपया है। यहाँ के राजा चन्द्रवंशी चत्रिय हैं। इन्होंने गदर में अँग्रेज़ों की बड़ी मदद की। इससे इन्हें गोद लेने की सनद मिल गई।

गन्धोल—यह काठियावाड़ का एक छोटा राज्य है। इसमें एक गाँव है। इसकी जन संख्या २०० है। इसकी आमदनी २५०० रु० है।

गंगपुर—यह छोटा नागपुर का एक राज्य है। इसका चेत्रफल २४६२ वर्गमील और जनसंख्या ३,५६,६७२ है। लाख, टसर, राल, कत्था, कोयला, सोना, हीरा, धान, गन्ना, तेलहन और तम्बाकू यहाँ की उपज है। इसकी आमदनी ८०१४१०) रु० है। यहाँ का राजा ५०० रु० ब्रिटिश सरकार को कर देता है।

गरमली मोटी—दक्षिणी काठियावाड़ का एक गाँव वाला राज्य है। इसकी जन संख्या ४०० और आमदनी २५०० रु० है। यह राज्य १६६ रु० बड़ौदा को और २४ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

गरमली नानी—यह भी दक्षिणी काठियावाड़ का एक छोटा राज्य है। इसमें केवल एक गाँव है। इसकी

जनसंख्या ४५० और आमदनी १५०० रु० है। यह राज्य बड़ौदा को १८४ रु० कर देता है।

गबत—महीकान्त (बम्बई) का एक छोटा राज्य है। यहाँ की जनसंख्या १५०० है। राज्य की आमदनी ३,५०० रु० है। यह राज्य २५ रु० ईदर राज्य को कर देता है।

गधाली—यह दक्षिणी काठियावाड़ का एक छोटा राज्य है। इसमें केवल २ गाँव है। इसकी जनसंख्या ८०० और इसकी आमदनी ३००० रु० है। यह राज्य बड़ौदा को २७४ रु० और जूनागढ़ को २० रु० कर देता है।

गधका—काठियावाड़ एक छोटा राज्य है। इसमें ६ गांव हैं। इसकी जन संख्या १००० है। यह राज्य ४०० रु० ब्रिटिश सरकार को २०० रु० जूनागढ़ को कर देती हैं।

गधूला—यह काठियावाड़ की एक छोटी रियासत है। इसमें केवल १ गाँव है। इसकी जनसंख्या ४०० है। इसकी आय ३५०० रु० है। यह बड़ौदा को १६५ रु० और जूनागढ़ को २०० रु० कर देते हैं।

गरोल—यह रेवाकान्त (गुजरात) का एक राज्य है। यहाँ के ठाकुर ३० रु० बड़ौदा सरकार को कर देते हैं।

गढ़ौली—यह बुन्देलखंड का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल २५ वर्गमील है। इसमें १६ गाँव हैं। इसकी जन संख्या ५००० और आमदनी ३०,००० रु० है। यहाँ की फौज में ७५ सिपाही हैं।

गवरीदर—यह काठियावाड़ का एक छोटा राज्य है। इसमें ६ गाँव शामिल है। इसकी जन संख्या ३५०० है। इसकी आमदनी १५,००२ रु० हैं। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को १०१० रु० जूनागढ़ को ६१० रु० कर देता है।

ग्वालियर—मध्यभारत का एक प्रधान राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल २६,३६७ वर्गमील है। इसमें १६-३४६ गांव हैं। इसकी जन संख्या ३,५२,३०,०७० है इसकी आमदनी ढाई करोड़ रु० है।

ब्रिटिश सरकार की ओर से यहां ५००० पैदल घुड़सवार, ४४ तोपें हैं। यह राज्य इस फौज के लिये १८००,००० रु० देता है। इस राज्य की जलवायु स्वास्थ्य कर है। गेहूँ, चना, उर्द, ज्वार, बाजरा, धान मक्का, तेलहन, अफीम, लहसन, हलदी, कपास, तम्बाकू, गन्ना यहां की प्रधान उपज हैं। यहां कच्चा लोहा भी पाया जाता है। ग्वालियर महाराज को २१ तोपों की सलामी दी जाती है।

गिगा सरन—यह दक्षिणी काठियावाड़ का एक राज्य इसमें केवल एक गाँव है। इसकी जन संख्या ७०० और आमदनी ६००० रु० है।

गुन्द—यह पंजाब का एक पहाड़ी राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३ वर्गमील और जनसंख्या १२०० है। इसकी आमदनी १६०० रु० है। यहां का राजा कौन्थल के राजा को कर देता है।

गुन्दियालो—यह काठियावाड़ के झालावार ज़िले का एक छोटा राज्य है। इसमें २ गांव शामिल हैं। इसकी जन संख्या १५०० और आमदनी १५,००० रु० है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को १५०० रु० कर देता है।

गेंदी—यह झालावार (काठियावाड़) का एक छोटा राज्य है। इसमें २ गांव शामिल हैं। इसकी जनसंख्या १००० है। इसकी आमदनी ५००० रु० है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को १२०० रु० और १३६ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

गोन्दाल—यह काठियावाड़ का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १०२४ वर्गमील है। इस राज्य में १७४ गांव हैं। इसकी जन संख्या २०,८,४६ हैं। इस राज्य की आमदनी ७२,००,००० रु० है। यहाँ की जलवायु स्वास्थ्यकर है। कपास, ज्वार, बाजरा, यहां की प्रधान उपज है। यह राज्य १,१०,७२६ रु० ब्रिटिश सरकार, बड़ौदा, और जूनागढ़ को कर देता है। यहां के ठाकुर साहब की फौज में ६५६ पैदल, सिपाही, १२८ घुड़ सवार और १६ तोपें हैं। यहां के बर्तमान शासक हिज़हाईनेस श्री भगवतसिंह जी, जी० सी० एस० आई०, जी० सी० आई० ई० हैं।

गोलर्दा—गुजरात में रेवाकान्त का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १½ मील और आमदनी ५००० रु० है। यह राज्य ४२० रु० बड़ौदा को कर देता है।

गौरिहार—यह बुन्देल खंड का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १ वर्गमील है। इसमें १४ गांव शामिल हैं। इसकी जनसंख्या ६,७१३ है। इसकी आमदनी ५३,००० रु० है। यहां के रावबहादुर ने १८५७ में अँग्रेज़ों की बड़ी मदद की। इससे इन्हें १,००० रु० की पोशाक इनाम में मिली। यहां २४० पैदल, ३५ घुड़सवार और ३ तोपें हैं। यहां के वर्तमान शासक औधेन्द्र प्रताप सिंह हैं।

चरखा—यह दक्षिणी काठियावाड़ में एक छोटा राज्य है। इसमें केवल १ गांव है। इसकी आमदनी १५,००० रु० है। यह राज्य ५०३ रु० बड़ौदा को और ३८ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

चरखारी—यह बुन्देलखंड का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ८८० वर्गमील है। इसमें २८७ गांव हैं। इसकी आबादी १ लाख ४०, हज़ार है। इसकी आमदनी ६,३०,००० रु० है। यहां के राजा छत्रसाल के वंशज हैं। गदर के समय में यहां के राजा ने योरुपीय (गोरों) को बचाया था। उसके बदले में इन्हें २०,००० रु० सालाना की जागीर इनाम के रूप में दे दी गई। इनको ११ तोपों की सलामी मिलती है। वर्तमान नरेश हिज हाईनेस महाराजाधिराज सिपहदारुलमुल्क अरिमर्दन सिंह जू देव बहादुर हैं।

चिखली—यह छोटा राज्य बम्बई के खानदेश जिले में स्थित है। यह राज्य एक ओर ताप्ती, नदी और दूसरी ओर सतपुड़ा पहाड़ से घिरा हुआ है। इसकी जन संख्या १५०० है। आमदनी ६ हज़ार रु० है। यहां का शासक वरावा कहलाता है। प्रधान मेवासी सरदारों में से वह एक है।

चंग भकई—छोटा नागपुर का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ६०६ वर्गमील है। इसकी जन संख्या १५,००० है। इसकी आमदनी ४००० रु० है। यह राज्य ३००० रु० ब्रिटिश सरकार को कर देता है। यह एक पहाड़ी राज्य इसमें कोयला बहुत है। यहां के शासक (भैया) राजपूत हैं।

चम्रादू—यह गुजरात का एक छोटा गहवाल राज्य है। इस में केवल १ गांव है। इसकी आमदनी १०,००० रु० है। यह राज्य ७६५ रु० बड़ौदा और ६० रु० जूनागढ़ को कर देता है।

चचना—यह काठियावाड़ में झालावार, का एक छोटा राज्य है। इसमें केवल १ गांव है। इसकी आमदनी ३००० रु० है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को ३१८ रु० कर देता है।

चचात—यह गुजरात में पालनपुर एजेन्सी का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ४४० वर्गमील है। इसमें ११ गांव है। इसकी जन संख्या ६००० है। इसकी आमदनी ५०,००० रु० है। यहां के ठाकुर साहब झार्या राजपूत हैं और कच्छ के राव साहब के सम्बन्धी हैं।

चम्बा—यह पंजाब का एक पहाड़ी राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३१८० वर्गमील है। इसमें ३६५ गाँव हैं। इसकी जन संख्या १,५०,००० है। गेहूँ, जौ, धान, बाजरा, और लकड़ी यहां की प्रधान उपज है। यहां लोहा और तांबा भी पाया जाता है। चम्बा एक प्रचीन हिन्दू राज्य है। यह क्षत्रिय राज्य १८४६ ई० में ब्रिटिश अधिकार में आया। यहां के राजा को ११ तोपों की सलामी मिलती है। यहाँ के वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस राजा लक्ष्मणसिंह हैं। राज्य की सालाना आमदनी ८,८,७०,००० रुपये हैं।

चोटिया—यह उत्तरी काठियावाड़ का एक छोटा राज्य है। इसमें ३५ गाँव हैं, इसकी आय २५ हज़ार रुपया है। यह राज्य ६५० रु० ब्रिटिश सरकार को और २२० रु० जूनागढ़ को कर देता है।

चूरा—यह कांठियावाड़ का एक छोटा राज्य है। इसमें १४ गाँव शामिल हैं। इसकी जनसंख्या १५,००० है। इसकी आय १ लाख है। कपास, ज्वार, बाजरा यहाँ की प्रधान उपज है। यह राज्य ६३२४ रुपया ब्रिटिश सरकार को और ६७६ रुपया जूनागढ़ को कर देता है। यहाँ के ठाकुर झाला राजपूत हैं। १८०७ ई० में ब्रिटिश सरकार के साथ इस राज्य की सन्धि हुई। काठियावाड़ के राज्यों में चूरा तीसरी श्रेणी का राज्य गिना जाता है।

चूरेसबार—यह रेवाकान्त का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल २½ वर्गमील है। इसकी आय १२०० रुपया है। यह ३१० रुपया बड़ौदा को कर देता है।

चित्रवाओ—काठियावाड़ के गोहेलवन जिले का एक छोटा राज्य है। इसमें केवल १ गाँव है। इसकी आमदनी केवल २ हज़ार रुपया है। यह राज्य ४६० रुपया बड़ौदा को और ३८ रुपया जूनागढ़ को कर देता है।

चोबारी—उत्तरी काठियावाड़ का एक छोटा राज्य है। इसमें ३ गाँव शामिल हैं, इसकी आमदनी ६० हज़ार रुपया है। यह राज्य १५४ रुपया ब्रिटिश सरकार को और ४५ रुपया जूनागढ़ को कर देता है।

चोक—यह काठियावाड़ का एक छोटा राज्य है। इसमें २ गाँव शामिल हैं। इसकी आमदनी ७ हज़ार रु० है। यह राज्य ३१४ रु० बड़ौदा को और २३ रु० जूनागढ़ को देता है।

चोरंगला—यह रेवाकान्त का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १६ वर्गमील है। इसमें १७ गाँव हैं। इसकी आय ३ हज़ार रुपया है। यह बड़ौदा को ६५ रुपया कर देता है। इसके शासक राठौर राजपूत हैं।

चेरा—आसाम की खासी पहाड़ियों में एक छोटा राज्य है। यहां की जन-संख्या ६००० और आमदनी १५,००० रु० है। नारंगी, सुपारी, शहद, बांस और नीबू यहां की प्रधान उपज है। यहां के राजा को सियेम कहते हैं।

छलियर—रेवाकान्त (गुजरात) का एक छोटा

राज्य है। इसका क्षेत्रफल ११ वर्गमील है। इसमें २४ गांव हैं। इसकी आमदनी १५००० रु० है। यह राज्य ३४०० रु० बड़ौदा को कर देता है। यहां बहुत पुराने समय में ही चौहान राजपूतों का राज्य स्थापित हो गया।

छला—यह छोटा राज्य काठियावाड़ झालावाड़ में स्थित है इसमें केवल एक गांव है। इसकी आमदनी ३ हज़ार है। यह राज्य ९७० रु० ब्रिटिश सरकार को और ७८७ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

छतरपुर—यह राज्य मध्यभारत एजेन्सी बुन्देलखण्ड प्रदेश में स्थित है। इसका क्षेत्रफल ११६९ वर्गमील है। जन-संख्या लगभग २ लाख है। इसकी आमदनी ९,३२,००० रु० है। इस राज्य के संस्थापक ने छत्रसाल के वंशज को अलग कर के मरहठों के समय में अपना राज्य यहां स्थापित किया था। १८०४ ई० में इस राज्य और ब्रिटिश सरकार के बीच में सन्धि हुई थी। १८२७ ई० में यहां के शासक को राजा की पदवी मिली। यहां के वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस महाराजा भवानी सिंह बहादुर हैं। आप को ११ तोपों की सलामी दी जाती है।

छोटा उदयपुर—यह राज्य गुजरात के रेवाकान्त एजेन्सी में स्थित है। इसका क्षेत्रफल ८९० वर्गमील है। जनसंख्या १४४६४० लाख है। इसकी आमदनी २ लाख रुपया है। लकड़ी और अन्न यहां की प्रधान उपज है। यह राज्य १०१४०) बड़ौदा राज्य को कर देता है। यहां के शासक चौहान राजपूत हैं। मुसलमानों के आक्रमण के समय १२४४ ई० में उन्होंने अपने प्रान्त को छोड़कर गुजरात में प्रवेश किया और अपना राज्य स्थापित कर लिया। यहां के राजा को महारावल कहते हैं। उन्हें फांसी की सजा देने का अधिकार है। इनको ९ तोपों की सलामी मिलती है।

जमखंडी—यह कोल्हापुर एजेन्सी का एक राज्य है। इस का क्षेत्रफल ५२४ वर्ग मील है। इस में ५१ नगर और गांव हैं। इसकी जन-संख्या ११४,२८२ है। कपास, गेहूँ, उर्द और बाजरा यहां की प्रधान उपज है। इस राज्य की आमदनी ९,१६,००० रुपया है। यह राज्य २०,८४० रु० सरकार को कर देता है। यहाँ के पटवर्धन (ब्राह्मण शासक) दक्षिणी महाराष्ट्र में प्रथम श्रेणी के सरदारों में गिने जाते हैं। इन्हें प्राणदण्ड देने का अधिकार है। इनकी फौज़ में ८५२ पैदल सिपाही और ५७ घुड़ सवार हैं। यहां के वर्तमान महाराज राजा श्रीमन्त शङ्कर राव, परशुराम राव हैं।

जमुनिया—यह मध्य भारत की भील एजेन्सी का एक राज्य है। इस का क्षेत्रफल ४६५७५ बीघा है। इसकी आमदनी १६ हजार और जन-संख्या ४ हजार है।

जंजीरा—यह राज्य बम्बई प्रान्त के कोलावा ज़िले के दक्षिण में स्थित है। यहां के नवाब सुन्नी मुसलमान हैं। इस राज्य ने मरहठों का घोर विरोध किया। इस राज्य का क्षेत्रफल ३७९ वर्ग मील है। यहां की जन-संख्या १,११,००० है। इस राज्य की आमदनी ११ लाख रुपया है। यह आमदनी कृषि (मालगुजारी) जंगल, आबकारी और चुंगी से होती है। यहां के नवाब साहब को ९ तोपों की सलामी होती है। उन्हें ७ सौ सिपाही रखने का अधिकार है।

जरूदन—यह काठियावाड़ का एक राज्य है। इस का क्षेत्रफल २८३ वर्ग मील है। इसकी जन-संख्या ३० हज़ार है। इसकी आमदनी १ लाख ५० हज़ार रुपया है। यह राज्य १०,६६० रु० ब्रिटिश सरकार, बड़ौदा और जूनागढ़ को कर देता है। कपास, ज्वार, बाजरा यहां की प्रधान उपज है। यहाँ की फौज में ३३९ सिपाही हैं। काठियावाड़ में जरुदन तीसरी श्रेणी का एक राज्य गिना जाता है।

जसमपुर—यह छोटा नागपुर का एक राज्य है। इस का क्षेत्रफल १९६३ वर्ग मील है। इसकी जन-संख्या १ लाख है। आमदनी १५ हज़ार रुपया है। यहां के राजा जगदीशपुर में रहते हैं। और ब्रिटिश सरकार को ७७५ रु० कर देते हैं।

जवहर—यह बम्बई प्रान्त के थाना ज़िले के उत्तर में एक राज्य है। यह राज्य कोनकन मैदान के ऊपर वाले पठार पर स्थित है। इस का क्षेत्रफल ३१० वर्गमील है। इसकी जन-संख्या ५८ हज़ार है। इसकी आमदनी साढ़े पांच लाख रुपया है। मुसलमानों के आक्रमण के पहले यहां वर्ली राजा राज्य करते थे। इसके बाद कोली राजा हुआ। कहा जाता है कि कोली राज्य के संस्थापक ने वर्ली राजा से एक बैल के खाल के बराबर ज़मीन मांगी। राजा ने यह प्रार्थना स्वीकार कर ली। कोली ने बैल की खाल को काट कर इतनी पतली फज्जियां बनालीं कि उन से पूरा जवहर राज्य घिर गया। १३४३ ई० में दिल्ली के सम्राट ने यहाँ के कोल शासक को राजा की उपाधि दी।

जवहर के वर्तमान राजा चेम्बर आफ प्रिन्सेस के सदस्य हो सकते हैं। उन को ९ तोपों की सलामी दी जाती है।

जफराबाद—यह काठियावाड़ का एक राज्य है। इस का क्षेत्रफल ४८ वर्गमील है। इस में ६,४०५ गांव हैं। इसकी आमदनी ५०,००० रु० है। गेहूँ और कपास यहां की प्रधान उपज है। यह राज्य जंजीरा के हबशी (एबीसीनिया) सरदार के मातहत है।

जाखन—यह काठियावाड़ के झालावाड़ में एक छोटा राज्य है। इस में केवल एक गाँव शामिल है। इस की जन-संख्या ८०० है। इसकी आमदनी २ हज़ार रुपया है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को २४७ रु० और जूनागढ़ को ४६ रु० कर देता है।

जालिया अमिरागी—यह काठियावाड़ का एक छोटा राज्य है। इसमें केवल एक गाँव है। इसकी जन-संख्या ७०० और इसकी आमदनी २,५०० रु० है। यह राज्य बड़ौदा को १२८ रु० और जूनागढ़ को ८ रु० कर देता है।

जालिया दीवानी—यह काठियावाड़ का एक राज्य है। इसमें १० गाँव शामिल हैं। इसकी आमदनी १२,०००रु० है। यह राज्य १,१८१ रु० बड़ौदा को और ३७० रु० जूनागढ़ को कर देता है।

जालिया मानाजी—यह काठियावाड़ का एक छोटा राज्य है। इस में केवल एक गांव है। इसकी जन-संख्या २०० और आमदनी २,००० रु० है। यह राज्य ३१ रु० बड़ौदा को कर देता है।

जावरा—यह पच्छिमी मालवा एजेन्सी का एक राज्य है। इस का क्षेत्रफल ६०१ वर्गमील और जन-संख्या १० लाख है। इस राज्य की आमदनी १२ लाख रु० है। यह राज्य किसी प्रकार का कर नहीं देता। लेकिन यहाँ के नवाब गद्दी पर बैठने के समय २ लाख रुपया होल्कर सरकार को नजराना देते हैं। पहले पहल होल्कर महाराज ने यह जागीर अमीर खां (पठान) को दी थी। १८१८ ई० में ब्रिटिश सरकार ने इसे मंजूर कर लिया। कपास, अफीम यहाँ की प्रधान उपज है।

जारो—बुन्देलखण्ड का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ७५ वर्ग मील है। इस में ५७ गाँव हैं। यहाँ की जन-संख्या १० हजार और आमदनी ३९ हज़ार है। यहाँ के दीवान बुंदेला राजपूत हैं। इनके यहाँ ५० घुड़सवार और २ तोपें है।

जाठ—यह सतारा एजेन्सी का एक राज्य है। इस का क्षेत्रफल ८८४ वर्ग मील है। इस राज्य में १० गांव हैं। यहां की जन-संख्या ५० हज़ार और आमदनी डेढ़ लाख है। ज्वार, बाजरा, कपास, गेहूँ और चना यहां की प्रधान उपज हैं। यह राज्य ५० घुड़सवार रखने के लिए ४,८४० रु० ब्रिटिश सरकार को और ६,४०७ रु० औंध के पन्थ प्रतिनिधि को देता है। यहां के क्षत्रिय राजा देशमुख कहलाते हैं।

जिगनी—यह मध्य भारत में सेन्ट्रल इन्डिया एजेन्सी का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल २२ वर्गमील और जन-संख्या ३,४२७ है। इस राज्य की सालाना आय २५,००० रु० है। यहां के शासक बुंदेला राजपूत हैं और उनकी राव की पदवी है। यहाँ के शासकों को गोद लेने की सनद प्राप्त है।

जुबदल—यह पंजाब का एक पहाड़ी राज्य है। इस का क्षेत्रफल २५८ वर्ग मील और जन-संख्या २६,००० है। इसमें ४७२ गांव हैं। इसकी आमदनी ७५,००० रु० है। धान, ज्वार, बाजरा और अफीम यहां की प्रधान उपज है। १८३२ ई० में यह राज्य ईस्ट इण्डिया कं० के हाथ में आ गया था। लेकिन १८४० ई० में यह राज्य फिर यहां के राना को लौटा दिया गया।

ज़ुमखा (Zumkha)—रेवाकान्त एजेन्सी बम्बई प्रान्त का यह एक राज्य है। इस का क्षेत्रफल १ वर्गमील और सालाना आय ११०० रुपये है। यह राज्य ५१ रु० सालाना बड़ौदा राज्य को कर देता है। यहां के शासक राजपूत हैं।

जूनागढ़—यह राज्य काठियावाड़ के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में स्थित है। इस राज्य का क्षेत्रफल ३,३३७ वर्गमील है। इसकी जन-संख्या ५,५०,००० है। इसकी आमदनी १ करोड़ रु० है। इस राज्य की जल-वायु स्वास्थ्यकर है। ज्वार, बाजरा, गेहूँ, कपास, तिलहन, गन्ना, यहां की प्रधान उपज है। यह राज्य ६५,६०४ रु० ब्रिटिश सरकार और बड़ौदा को कर देता है। इस राज्य की स्थापना शेर खां बाबी ने की थी। १८०७ ई० में ब्रिटिश सरकार और इस राज्य से पहले पहल सन्धि हुई। यहां की फौज में २६८२ सिपाही हैं। यहां के नवाब को १५ तोपों की सलामी दी जाती है।

जूना पदार—यह गोहेलवार (काठियावाड़) में एक छोटा राज्य है। इस राज्य में केवल १ गांव है। इसकी जन-संख्या २५० है। इसकी आमदनी ६०० रु० है।

यह राज्य ४२ रु० बड़ौदा को और ८ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

जेसर—यह बम्बई के रेवाकान्त का एक छोटा राज्य है। इस का क्षेत्रफल सवा मील है। इसकी आमदनी ५०० रु० है। यह राज्य बड़ौदा को १५० रु० कर देता है।

जैतपुर बिलखा—यह काठियावाड़ का एक राज्य है। इस का क्षेत्रफल ३७४ वर्ग मील है। इसमें २ नगर और १४२ गांव हैं। इसकी जन-संख्या १ लाख और आमदनी १० लाख रु० है। यह राज्य ५०,२६२ रु० ब्रिटिश सरकार को ५१६४ रु० बड़ौदा को और ३,७६६ रु० जूनागढ़ को कर देता है। १७ जागीरदार यहां के राजा को कर देते हैं।

जैसलमेर—राजपूताना के बड़े राज्यों में से एक है। इस का क्षेत्रफल १६,०६८ वर्गमील है। इस राज्य के राजा यादव वंशी हैं। ११५८ ई० में जैसलमेर नगर की स्थापना हुई। १८१८ ई० में इस राज्य की अँग्रेजी सरकार से मित्रता पूर्ण सन्धि हुई। १८४४ ई० में जब सिन्ध प्रान्त जीता गया तब शाहगढ़, गरसिया और घोटरू के किले जैसलमेर को लौटा दिये गये। यह किले पहले जैसलमेर राज्य में ही शामिल थे। इस राज्य की जन-संख्या केवल ६७,६५२ है। इसकी आय लगभग ४ लाख रु० है।

जैपुर—राजपूताना का एक प्रसिद्ध राज्य है। इस का क्षेत्रफल १६,६८२ वर्गमील है। इसकी जनसंख्या २८,००,००० है। सालाना आय १ करोड़ २५लाख रु० है। इसकी जलवायु खुश्क और स्वास्थ्यकर है। बाजरा, मूङ्ग, मोठ, गेहूँ, जौ, कपास, तिल, तम्बाकू, गन्ना और अफीम यहाँ की प्रधान उपज हैं। यहाँ मालगुज़ारी से ८०,००,००० रु० और चुंगी से ८ लाख रुपये की आमदनी होती है। नमक से ७० लाख रु० की जो आमदनी होती है। वह छोटी छोटी जागीरों और धार्मिक कार्यों में बँट जाती है। यह राज्य ब्रिटिश राज्य को ४ लाख रु० कर देता है।

इस राज्य में ६,५६६ पैदलसिपाही ३,५७८ घुड़सवार ७१६ तोपखाने के सिपाही, ६५ बड़ी तोपें, २१६ छोटी तोपें, और २६ किले हैं। यहां के राजा को अपना सिक्का चलाने और प्राणदण्ड देने काअधिकार है। यहाँका राजवंश प्राचीन है। वे श्रीरामचन्द्र जी की सन्तान हैं। यहाँ के राजा को २१ तोपों की सलामी होती है।

जोबात—यह मध्य भारत की भील एजेन्सी का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १३२ वर्गमील और जनसंख्या २०,१५२ है। इसमें ६६ गांव हैं। इसकी आमदनी ७६,००० रु० है। यहां के राना राठौर राजपूत हैं। यहां के वर्तमान शासक राना भीमसिंह हैं।

जोधपुर या मारवाड़—यह राजपूताना का एक प्रधान राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३६,०२१ वर्गमील है। यहां की जनसंख्या २१,२६,००० है। 'यहां की आमदनी १,७२,००,००० रु० है। यह राज्य ५८,००० रुपया ब्रिटिश सरकार को कर देता है। और १,१५,००० रुपया जोधपुर में स्थित ब्रिटिश फौज के लिए देता है। यहां की फौज में ५,६५४ पैदल ३,४०६ सवार और ३२० तोपखाने के सिपाही हैं। यहां के महाराजा सूर्य्यवंशी राठौर हैं। इनको जोधपुर राज्य में १६ तोप और बाहर १७ तोपों की सलामी दी जाती है।

जोरल—यह गुजरात के संखेड़ा मेहवास का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ५ वर्ग मील है। इसकी आमदनी २,००० रु० है। यह राज्य ७० रु० बड़ौदा को कर देता है।

जोरंग—यह आसाम की खासी पहाड़ियों का एक छोटा राज्य है। इसकी जन-संख्या ८४० है। धान, लाल मिर्च और रबर यहां की प्रधान उपज है। यहीं साल के सर्वोत्तम बन भी हैं।

झमका—यह काठियावाड़ का एक छोटा राज्य है। इसमें केवल एक गांव है। इसकी जनसंख्या ८०० और इसकी आमदनी ४,००० रुपया है। यह राज्य बड़ौदा सरकार को १८५ रुपया कर देता है।

झमार—यह काठियावाड़ का एक छोटा राज्य है। इसमें केवल एक गांव है। इसकी जनसंख्या ७५० और आमदनी ४,५०० रुपया है। यहां के तालुकदार झाला राजपूत हैं। और ब्रिटिश सरकार को ४६४ रुपया कर देते हैं।

झम्पोदर—यह काठियावाड़ का एक राज्य है। इसमें केवल १ गांव है। इसकी जनसंख्या केवल ६०० और आमदनी ४,५०० रुपया है। यह राज्य १५३८ रुपया ब्रिटिश सरकार को कर देता है। यहां के तालुकेदार झाला राजपूत हैं।

झाबुआ—यह राज्य मध्य भारत की भोपावर एजेन्सी में स्थित है। इसका क्षेत्रफल १,३३६ वर्गमील और जनसंख्या १,४६,००० है। इसकी आमदनी ४,२८,००० रुपया है। यहां के राठौर राजा जोधपुर राजवंश के सम्बन्धी हैं। इनकी फौज में ५० घुड़सवार और २००

सिपाही हैं। इनको ११ तोपों की सलामी दी जाती है। यहां के वर्तमान नरेश राजा उदयसिंह हैं।

झालावाड़—यह राज्य राजपूताना एजेन्सी में स्थित है। इसका क्षेत्रफल ८१३ वर्गमील और जनसंख्या १,०८,००० है। यहां की आमदनी ७,५०,००० रुपया है। यह राज्य ८०,००० ब्रिटिश सरकार को कर देता है। इसकी फौज में पैदल, ४२५ घुड़सवार, २४७ तोपखाने के सिपाही हैं। यहां के राना झाला वंश के राजपूत हैं। १८३८ ई० में यह राज्य कोटा से अलग कर लिया गया था। यहां के राना को १५ तोपों की सलामी दी जाती है।

झिंझूवाड़ा—यह काठियावाड़ का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १६५ वर्गमील है, इसकी जनसंख्या १६,००० और आमदनी १,००,००० रुपया है। यह राज्य ११,०७३ रुपया ब्रिटिश सरकार को कर देता है।

झींद—यह पंजाब की तीन पुलकियान रियासतों में से एक है। इसका क्षेत्रफल १२६६ वर्गमील है। इसकी जनसंख्या ३,२५,००० है। इसकी आमदनी २४,००,००० रुपया है। सन् १७६३ ईस्वी में यह राज्य स्थापित हुआ। सन् १७६२ ईस्वी में दिल्ली के सम्राट ने इसे स्वीकार कर लिया। १८५७ के ग़दर में इस राज्य ने अङ्गरेज़ी सरकार की बड़ी मदद की। यहां के राजा सिक्ख जाट हैं। इनको १५ तोपों की सलामी दी जाती है। संगरूर इस राज्य की राजधानी है।

टप्पा (Tappa)—मध्य भारत में भोपाल एजेन्सी का यह एक राज्य है। इसमें कुल १३ गांव हैं। यहां के के शासकों के पूर्वज रूपसिंह १८२२ ईस्वी में महाराज दौलतराव सिंधिया से यह गांव पाए थे।

ट्रावनकोर—मद्रास प्रेसीडेन्सी में ट्रावनकोर एक राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल ७,६२५ वर्गमील और जन-संख्या ५३,६५,६३० है। इस राज्य की सालाना आमदनी २,४१,००,००० रुपया है। चावल, नारियल, मिर्च, सुपारी यहां की मुख्य उपज है। सागौन, आबनूस, खजूर और दूसरी काली लकड़ियों के यहां जंगल हैं।

इस राज्य के शासक क्षत्रिय हैं। मारुमक्कतायम रिवाज के अनुसार ज्येष्ठ पुत्र ही गद्दी का अधिकारी होता है। १८६२ में वहां के महाराजा को भतीजों को गोद लेने की सनद प्राप्त हुई है।

राज्य-सेना में ६० सवार, १,३६० पैदल, ४ तोपें और ३० तोप चलानेवाले सैनिक हैं। यह राज्य ८,००,००० रु० सालाना ब्रिटिश सरकार को कर देता है। यहां के महाराजाधिराज को १९ तोपों की सलामी दी जाती है।

टिगरिया (Tigaria)—उड़ीसा प्रान्त का यह एक देशी राज्य है। इसका क्षेत्रफल ४६ वर्गमील है, इस राज्य में ९५ गांव हैं और इसकी जनसंख्या २५,००० है। राज्य की मुख्य उपज धान, अनाज, तेलहन, गन्ना, तम्बाकू और कपास है। इस राज्य की सालाना आय ६०,००० रुपये हैं।

चार सौ साल बीते सूर तुंगसिंह नामक एक यात्री पुरी की तीर्थ यात्रा के लिये गया था। उसने वहां के निवासियों को मार भगाया। और राज्य की स्थापना की। यहां का शासक ८८० रुपया ब्रिटिश सरकार को कर देता है और इनके पास ३९३ सैनिक हैं। यहां के वर्तमान नरेश राजा श्री सुदर्शन क्षत्रिय बीरबर चमूपति सिंह हैं।

टोंक—राजपूताना एजेन्सी का एक राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल २,५४० वर्ग मील और जन-संख्या ३,३८,०८९ है। इस राज्य की सालाना आय २४,२५,००० रुपया है। यह राज्य किसी को किसी प्रकार का कर नहीं देता। इस राज्य की सेना में ५२६ सवार २,८८६ पैदल सिपाही, आठ रणक्षेत्र वाली तोपें और ४५ दूसरी तोपें तथा १७५ तोप चलाने वाले सैनिक हैं।

महाराज यशवन्त राव होल्कर की सेना का अमीर खां सेनापति था। १८०६ में महाराज होल्कर ने टोंक का राज्य अमीर खां को प्रदान किया। यहाँ के शासक की पदवी नवाब की है और उनको १७ तोपों की सलामी दी जाती है।

यहां के वर्तमान शासक हिज़ हाईनेस नवाब सैय्यद उद्दौला वज़ीरुल मुल्क, सौलत जंग, जी० सी० आई० ई० हैं।

टोडा टोडी (Toda Todi)—गोहेलवाड़, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक छोटा सा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १ वर्गमील और जनसंख्या ६१२ है। इस राज्य में केवल ३ गांव हैं। यहां की सालाना आमदनी ३,५०० रुपये हैं। यह राज्य १४७ रुपया ८ आने बड़ौदा राज्य को और ३० रुपया जूनागढ़ को कर देता है।

डूंगरपुर—यह राजपूताना एजेन्सी का एक राज्य है। इस का क्षेत्रफल १४६० वर्ग मील है। इस की जन-संख्या २,२८,००० लाख है। यहां की जलवायु बड़ी स्वास्थ्यकर है। गेहूँ, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, मक्का, धान, कपास, अफीम, लालमिर्च, हल्दी, सोंठ, तिलहन, गन्ना यहां की प्रधान उपज है। इस राज्य की आमदनी ९ लाख रु० है।

यह राज्य ब्रिटिश सरकार को ३, ५०० रु० कर देता है। यहाँ १,००० पैदल, ४०० घुड़सवार और ४ तोपें हैं। यहां के महारावल उदयपुर राजवंश से सम्बन्ध रखते हैं। इस राज्य में १६ प्रथम श्रेणी के और ३२ द्वितीय श्रेणी के ठाकुर हैं। यहां के महारावल को १५ तोपों की सलामी मिलती है।

ढेंकनाल—यह उड़ीसा का एक करद राज्य है। इस का क्षेत्रफल १,४६३ वर्गमील और जन-संख्या २,८५,००० है। यहां की आमदनी लगभग ७ लाख है। यह राज्य ५,००० रु० कर देता है। यहां के शासक को १८६६ में राजा की उपाधि मिली। यहां के वर्तमान शासक राजा शंकर प्रताप सिंह देव महेन्द्र बहादुर हैं।

ढोला—यह काठियावाड़ के गोहेलवार में एक छोटा राज्य है। इस में केवल एक गांव है। इसकी आमदनी केवल २,००० रुपया है। यह राज्य ३३७ रुपया बड़ौदा और ५६ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

ढोलखा—ये दक्षिण काठियावाड़ का एक छोटा राज्य है। इस में केवल एक गांव है। इसकी आय केवल २,५०० रु० है। यह बड़ौदा को १०३ रु० और जूनागढ़ को २३ रु० कर देता है।

तलचर (Talchur)—यह उड़ीसा राज्य का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३६६ वर्गमील और जन-संख्या ५६,००२ है। इस राज्य की सालाना आय ३,३६,३५७ रुपये हैं। राज्य की सेना में ६१५ सैनिक हैं।

महाराज अवध के पुत्र ने ५०० साल बीते इस राज्य को स्थापित किया था। यहां के शाशकों की उपाधि महेन्द्र बहादुर की है। यहां के वर्तमान नरेश राजा किशोरचन्द्र बिरार हरिचन्दन हैं।

ताराँव—यह बुंदेलखंड में मध्य भारत का एक छोटा राज्य है। इस का क्षेत्रफल १७ वर्गमील और जन-संख्या ३,३६७ है। इस राज्य की सालाना आय २१००० रु० हैं। यहां राज्य की सेना में २५० पैदल सैनिक हैं।

यहां के शासक ब्राह्मण हैं और कालिंजर के चौबे हैं। यहां के वर्तमान शासक ब्रजगोपाल चौबे हैं।

तारोच—पञ्जाब प्रान्त में शिमला पहाड़ियों का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ६७ वर्गमील और जन-संख्या ४,५६८ है। इस राज्य की सालाना आय १,३०,००० रुपया हैं। राज्य की सेना में ८० सैनिक हैं। यहां के शासक राजपूत हैं और ठाकुर कहलाते हैं। यहां के वर्तमान शासक राना सूरज सिंह हैं।

तावी—झालावार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इस का क्षेत्रफल १२ वर्ग मील तथा जन-संख्या ७७७ है। इस राज्य की सालाना आय २,७१७ रु० है। यह राज्य ३१० रुपये ब्रिटिश सरकार को और २५ रु० जूनागढ़ राज्य को कर देता है।

तालसाना—झालावार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का यह एक देशी राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल ४३ वर्ग मील है। इस में चार गाँव हैं। इस राज्य की सालाना आय २२,६२० रुपये और जन-संख्या ३,६६१ है। यह राज्य ६१३ रुपया ब्रिटिश सरकार को और १३६ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

तेरवाड़ा—पालनपुर, बम्बई प्रान्त का यह एक छोटा सा राज्य है। इस का क्षेत्रफल १२५ वर्ग मील और जन-संख्या ८८४६ है। इस राज्य की सालाना आय १२,४०० रु० है। यहां के शासक बिलोची मुसलमान हैं।

त्रिपुरा—यह राज्य बंगाल प्रान्त में स्थित है। इसका क्षेत्रफल ४,११६ वर्गमील और जनसंख्या ३,८२,८५० है। इस राज्य की सालाना आय ३६,४४,००० रुपये हैं। यहां के वर्तमान शासक हिज़ हाईनेस महाराजा मानिक वीर विक्रमकिशोर देव बरमन बहादुर हैं।

तोरी फतेहपुर (Tori Fatehpur)—बुंदेलखन्ड में मध्य भारत का एक देशी राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३६ वर्गमील और जनसंख्या ५,५८७ है। इस राज्य की सालाना आमदनी ३२,००० रुपया है।

यह अठभय्या (आठ भाई) राज्यों में से एक हैं। जब ओरछा घराने वालों ने बारगाँव राज्य को अपने आठ पुत्रों में बांटा गया था तो उन आठ में से एक यह राज्य भी बना था। यहां के शासक राजपूत हैं। यहां के वर्तमान शासक राव बहादुर दीवान अर्जुनसिंह हैं।

थारद और मूवाड़ा (Thard and Moowara)—पालनपुर, बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ६४० वर्गमील और जनसंख्या ६५,४६४ है। इस राज्य की सालाना आय ८५,००० रुपये हैं। राज्य की सेना में ५० सवार और ३० पैदल सिपाही हैं। यहां के शासक राजपूत हैं और ठाकुर कहलाते हैं।

दहिरा—काठियावाड़ का एक छोटा राज्य है। इस राज्य में ३ गांव हैं। इसकी आमदनी १२,००० रु० है।

दरिया खेरी—यह मध्य भारत में भूपाल एजेन्सी का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ६ वर्गमील है। इसकी आमदनी ५,००० रु० है। यहां के ठाकुर ग्वालियर सरकार को १,०७० रु० कर देते हैं।

दसरा—काठियावाड़ में झालावार का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल २६५ वर्गमील है। इसमें ७ गांव हैं। यहां की जनसंख्या ६०,००० है। यहां की आमदनी ८०,००० रु० है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को १२६६८ रु० कर देता है।

दतिया—मध्य भारत (बुन्देलखण्ड) का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ८३६ वर्गमील है। इस राज्य में ४५४ गांव हैं। इसकी जनसंख्या २,००,००० है। इसकी आमदनी १५,००,००० रु० है। यह राज्य १५,००० रु० सिन्धिया महाराज को कर देता है। यहां ३०४० पैदल ७०० घुड़सवार और ६७ तोपें हैं। यहां के रायसाहब ने ब्रिटिश सरकार से सन्धि की थी। इनको १५ तोपों की सलामी दी जाती है।

दरकूटि—यह पंजाब का एक पहाड़ी राज्य है। इसका क्षेत्रफल ५ वर्गमील और जनसंख्या ६०० है। यहां के राना की आय ६०० रु० है।

दसपल्ला—यह उड़ीसा प्रान्त का एक करद राज्य है। इसका क्षेत्रफल ५६८ वर्गमील और जनसंख्या ५०,००० है। यहां की आमदनी २०,०००रु० है। यह राज्य ६०० रु० कर देता है। कहते हैं कि अब से लगभग ६०० वर्ष पहले यहां के बौद्ध राजा ने इस राज्य को स्थापित किया था।

दतना—यह मध्यभारत में पश्चिमीय मालवा एजेंसी का एक राज्य है। इस राज्य के ठाकुर साहब को सिन्धिया महाराज की ओर से १६० रु० तनख्वाह मिलती है।

दाभा—यह बम्बई प्रान्त में महीकांठा का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ५,००० एकड़ और जनसंख्या २,००० है। इसकी आमदनी ३,५०० रु० है। यह राज्य १५०रु० बड़ौदा को और ५० रु० अमलयारा के ठाकुर को कर देता है। यहां का शासक मुसलमान हो गया है।

दाही—मध्यभारत में भील एजेन्सी का एक छोटा राज्य है। यहां के ठाकुर साहब होल्कर सरकार को ३००रु० कर देते हैं।

दान्ता—गुजरात में एक महीकांठा का एक राज्य है। इस राज्य में ७८ गांव हैं। इसकी जनसंख्या २०,००० है। इसकी आमदनी ४०,०००रु० है। यह राज्य ५१० रु० ईदर के राजा को और ५ रु० पालनपुर के राजा को कर देता है। ज्वार, बाजरा, मक्का, गेहूँ और गन्ना यहां की प्रधान उपज है। यहां के राना राजपूत हैं।

दारोद—यह काठियावाड़ में झालावार का एक राज्य है। इसमें केवल एक गांव है। इसकी आमदनी १५०० रु० है। यह राज्य ३६६ रु० ब्रिटिश सरकार को और ५० रु० जूनागढ़ को कर देता है।

दाथा—यह काठियावाड़ का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ५१ वर्गमील है। इसमें २६ गांव हैं। यहां की जनसंख्या १०,००० है। इसकी आमदनी २५,००० रु० है यह राज्य ५०११ रु० बड़ौदा और २११ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

दुजना—यह पंजाब का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ९१ वर्गमील है। इसमें २८ गांव हैं। इसकी जनसंख्या २१,००० है। इसकी आमदनी १,४१,००० रुपया है। यहां की फौज में १३० सिपाही हैं। यहां के नवाब अफगान हैं। आरम्भ में लार्ड लेक ने १८०६ ईस्वी में अब्दुल समद खां को यह जागीर केवल उनके जीवन भर के लिये उनकी सेवाओं के बदले दी थी। फिर गवर्नर जनरल ने यह जागीर सदा के लिये उनको और उनके वंशजों को दे दी। यहां के वर्तमान शासक नवाब मुहम्मद इक़तदार अलीखाँ बहादुर हैं।

दूधपुर—यह रेवकांठा (बम्बई प्रान्त) का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ½ मील और आमदनी ६०० रुपया है। यहां के ठाकुर बड़ौदा को ३० रु० कर देते हैं।

दूधरेज—झालावार (काठियावाड़) का एक छोटा राज्य है। इसमें केवल दो गाँव हैं। इसकी आय २५,००० रुपया है। यह राज्य १,१०० रुपया ब्रिटिश सरकार को ६७ रुपया जूनागढ़ को कर देता है।

देरदी जनबाई—यह काठियावाड़ का एक छोटा गांव है। इसकी आमदनी ३,००० रु० है।

देवालिया—यह काठियावाड़ के झालावार का एक छोटा राज्य है। इसमें २ गांव हैं, इसकी आमदनी ६००० रु० है। यह राज्य ४६७ रु० ब्रिटिश सरकार को और ५६ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

देवास—यह मध्य भारत का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल २२६६ वर्गमील है, इसमें ४२७ गांव और नगर हैं। ज्वार, बाजरा, चना, गेहूँ, अफीम, गन्ना और कपास यहां की प्रधान उपज है। इस राज्य की आमदनी

८,००,००० रु०है। यह राज्य ३४,६०० रु० कर देता है। इस राज्य में दो शासक हैं। इसी से एक को छोटी गद्दी और दूसरी को बड़ी गद्दी कहते हैं। यहां के राजपूत राजा धार राजवंश से सम्बन्ध रखते हैं।

देदन—यह काठियावाड़ में एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३० वर्गमील है। इसमें ११ गांव हैं। इसकी जनसंख्या ६,००० और आमदनी ४,००,००० रु० है। यह राज्य २६५६ रु० बड़ौदा राज्य को कर देता है।

देदर्द—यह काठियाड़ का एक छोटा राज्य है। इसमें केवल एक गांव है। इसकी आमदनी ५,००० रु० है। यह राज्य १०३ रु० रुकर देता है।

देवदार—यह गुजरात की पालनपुर एजेन्सी में एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ४४० वर्गमील है और जनसंख्या २८,००० है। इसकी आमदनी ३०,००० रु० है। यहां के ठाकुरसाहब ने ब्रिटिश सरकार से १८०७ ई० में सन्धि की थी।

धबलाधीर—यह मध्य भारत में भूपाल एजेंसी का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १० वर्गमील है, इसमें ३ गांव हैं, इसकी जनसंख्या १,२०० है। इसकी आमदनी ५,००० रु० है। यहां के ठाकुर ब्रिटिश सरकार को १४०० रु० कर देते हैं।

धवलाघोरी—यह भी भूपाल एजेंसी का एक छोटा राज्य है, इसमें केवल १ गांव है। इसकी आमदनी ६,००० रु० है। यहां का राजा ब्रिटिश सरकार को १०५० रु० कर देता है।

धनगांव—यह मध्य भारत का एक छोटा राज्य है। इस राज्य को १,४८० रु० सिन्धिया सरकार से और ५६ रु० होलकर सरकार से भरता मिलता है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को १००० रु० कर देता है।

धरासा—यह काठियावाड़ का एक राज्य है। इसमें २४ गाँव हैं, इसकी आमदनी ८०,००० रुपया है। यह ब्रिटिश सरकार को ३७०६ रुपया और जूनागढ़ को ६६५ रुपया कर देता है।

धरङ्गधरा—यह काठियावाड़ का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ११६७ वर्गमील है। इसमें १२६ गाँव हैं। इसकी जनसंख्या ८६,००० है। यहां की जलवायु गरम और स्वास्थ्यकर है। कपास ज्वार, बाजरा, गेहूँ यहां की प्रधान उपज है। यहां तांबे और पीतल के बर्तन, सूती कपड़े, मिट्टी के बर्तन और पत्थर की चक्की बनाने का काम होता है। नमक भी तैयार किया जाता है। इस राज्य की आमदनी २५ लाख रुपया है।

धर्मपुर—यह गुजरात में सूरत एजेन्सी का एक राज्य इसका क्षेत्रफल ७९४ वर्गमील और जनसंख्या सवा लाख है। इस राज्य में २७३ गांव हैं। यहां की जलवायु बड़ी अस्वास्थ्यकर है। धान, उर्द, चना, गन्ना, महुआ के फूल, सागौन, आबनूस और बांस यहां की प्रधान उपज है। इस राज्य की आमदनी ३ लाख रुपया है। यहां के (राजा श्री महाराना ७०,००० रु० कर देते हैं। इनको ६ तोपों की सलामी मिलती है।

धरी—यह रेवाकाण्ठा (बम्बई) का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल सवा तीन वर्गमील है। इसकी आमदनी ३,००० रु० है। यह राज्य ६५० रु० बड़ौदा को कर देता है।

धङ्गधरा—यह मध्यभारत में ग्वालियर एजेन्सी का एक राज्य है। इसमें ३२ गांव हैं, इसकी जनसंख्या ५,००० है। यहां के ठाकुरसाहब की आमदनी १०,०००रु० है।

धामी—यह पंजाब का एक पहाड़ी राज्य है और शिमला से १२ मील दूर है। इसका क्षेत्रफल २६ वर्गमील है। इसमें २१४ छोटे छोटे (घर) गांव हैं। इसकी जनसंख्या ४,००० है। इसकी आमदनी १०,००० रु० है। यह राज्य ७०० रु० कर देता है। जब हिन्दुस्तान के मैदान में मुहम्मद गोरी का हमला हुआ तब यहां के राना के वंशज रायपुर (अमृतसर ज़िले के) नगर से भागकर यहाँ चले आये और इस प्रदेश को जीतकर धामी राज्य स्थापित किया।

धार—यह मध्य भारत की भील या भूपाल एजेंसी का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १७४० वर्गमील है। इसकी जनसंख्या २ लाख है, इसकी आमदनी ८ लाख रु० है। यह राज्य मालवा भोज—फौज के लिये ११६५० रु० कर देता है। यहां की फौज में ८०० पैदल २७६ घुड़-सवार २ तोपें और २१ तोपखाने के सिपाही हैं। धार बहुत पुराना राज्य है, राजा भोज और सुप्रसिद्ध राजा विक्रमादित्य यहीं राज्य करते थे। वर्तमान नरेश इन्हीं राजा विक्रमादित्य के वंशज हैं। समय के हेर फेर से राजधानी उज्जैन से उठकर धार में चली आई। वर्तमान राज्य का पुनरुद्धार १७४६ ई० में हुआ। तभी पेशवा बाजीराव ने यह जागीर आनन्दराव को सौंप दी। १८५७ के गदर में यहां के राजा ने आजादी की लगन से उत्तेजित होकर विद्रोह का झंडा उठाया। इससे पहले तो यह राज्य

ज़ब्त कर लिया गया। आगे चलकर राज्य का विस्तार कम करके कुछ शर्तों के साथ यह राज्य फिर लौटा दिया गया। धार राज्य को कई राजपूत सरदारों से कर मिलता है। लेकिन उनको ब्रिटिश सरकार की ओर से रक्षा का वचन मिला हुआ है। मुलतान, कच्छी, बड़ौदा, धोत्रिया, बदवल, बरटतगढ़, कोड, कटोदिया, मंगलिया, धार सिखेड़ा, बैरसिया, मुरवदिया, पनाह, राजपूती जागीरें हैं। मोटा बरखेड़ा, छोटा बरखेड़ा, नीमखेड़ा, काली बाउरी, गढ़ी, जमनिया, राजगढ़ भील या भिलाल जागीरें हैं। भील सरदारों को कम अधिकार प्राप्त हैं। धार के राजा को १५ तोपों की सलामी दी जाती है।

धीधरमराय—यह मध्य भारत की भुसावल एजेन्सी का एक छोटा राज्य है। इसकी सब की जनसंख्या भील है।

धुरवाई—यह बुन्देलखण्ड में एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १५ वर्गमील है। इसकी जनसंख्या २,००० है। आमदनी १६,००० रुपया है, यहां के बुन्देल शासक दीवान कहते हैं। यहां के वर्तमान शासक दीवान जुगल प्रसाद सिंह हैं।

धुवातिया—यह मध्य भारत में मालवा एजेन्सी की एक ठकुराई है। यहां के ठाकुर को सिंधिया महाराज की ओर से ४०० रुपये और होलकर महाराज की ओर से ६०० रुपये तनख़्वाह मिलते हैं।

धूदे—यह बम्बई प्रान्त के खानदेश एजेन्सी में एक छोटा डांग राज्य है। इसकी जनसंख्या १,५०० आमदनी ८५ रुपया है।

धोतरिया वैसोला—यह मध्य भारत में धार की एक जागीर है। इसमें ६ गांव हैं, यहां से धार राज्य को २,५०० रुपया कर दिया जाता है। यहाँ का क्षेत्रफल २७ वर्गमील और जनसंख्या ३ ३०० है। राज्य की सालाना आय २४,००० रुपये है। यहां के वर्तमान शासक ठाकुर ओंकार सिंह हैं।

धोल—काठियावाड़ का एक राज्य है, इसका क्षेत्रफल १०० वर्गमील है। इसमें ६४ गाँव और एक नगर है। इसकी जनसंख्या ५५,००० है। गन्ना, ज्वार, बाजरा यहां की प्रधान उपज है। राज्य की आमदनी २,००,००० रुपया है। यह राज्य १०,२३१ रुपया बड़ौदा और जूनागढ़ को कर देता है। यहां के ठाकुर साहब को फाँसी की सज़ा देने का अधिकार है। वे काठियावाड़ के द्वितीय श्रेणी के सरदारों में गिने जाते हैं।

धोरासर—यह गुजरात में महीकांठा एजेन्सी का एक छोटा राज्य है। इस राज्य में १५ गांव हैं, २२,५०० एकड़ में खेती होती है। इसकी जनसंख्या १० हज़ार और आमदनी ३० हज़ार रुपया है। यह राज्य ४८८ रुपया ब्रिटिश सरकार को और ३५०० रुपया बड़ौदा को कर देता है, यहां के ठाकुर कोली जाति के हिन्दू हैं।

धौलपुर—यह मध्य भारत का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १२२१ वर्गमील है। इस राज्य में ४ नगर और ५३४ गाँव हैं। इसकी जनसंख्या २,६०,००० है। यहां की जलवायु बड़ी स्वास्थ्यकर है। बाजरा, मोठ, ज्वार, गेहूँ, जौर, धान और कपास यहां की प्रधान उपज है। इस राज्य की आमदनी १७,००००० रु० है। इस राज्य को अपने खर्चे से ३६५० पैदल सिपाही, ६०० घुड़सवार, ३२ तोपें और १०० तोप चलाने वाले सिपाही रखने पड़ते हैं। यहां के महाराजा राणा को १५ तोपों की सलामी मिलती है।

धौरा कुञ्जरा—इन्दौर एजेन्सी का एक छोटा राज्य है। श्रीनराल घाट और सिगवार के बीच में सड़कों की चौकसी रखने के बदले यहां के सरदार को ८० रु० मिलता है।

नालिया—यह संखेड़ा मेहवास का एक राज्य है। इस का क्षेत्रफल १ वर्गमील और आमदनी ८०० रुपया है। यहां के ठाकुर ६७ रु० बड़ौदा को कर देते हैं।

नन्दगांव—यह मध्य प्रान्त के रायपुर ज़िले में एक करद राज्य है। इस का क्षेत्रफल ८७१ वर्गमील और जन-संख्या १ लाख ७५ हजार है। धान, गेहूँ, चना, तिलहन और कपास यहां की उपज है। इस राज्य की आमदनी ५,१०,००० रुपया है। यह ४६ हजार रुपया ब्रिटिश सरकार को कर देता है। १७२३ ई० में नागपुर के महाराज ने अपने राज पुरोहित को यह जागीर पुण्य की थी १७६५ और १८१८ में यह जागीर और अधिक बढ़ा दी गई। यहां के राजा वैरागी सम्प्रदाय के हैं।

ननगांव—यह रेवाकाण्ठा के संखेड़ा मेहवास का एक छोटा राज्य है। इस का क्षेत्रफल ३ वर्ग मील और आमदनी २,५०० रु० है। यहां के ठाकुर १२०० रु० बड़ौदा को कर देते हैं।

ननसारी—यह मध्य प्रान्त के भण्डारा जिले में एक छोटा राज्य है। इसकी जन-संख्या ५ हज़ार है। यहां के राजा ब्राह्मण हैं। इनके पूर्वज भोंसला राज्य के दरबारी थे।

नरसिंह गढ़—यह मध्य भारत के भूपाल एजेन्सी

में एक राज्य है । इस का क्षेत्रफल ७३७ वर्ग मील और जन-संख्या सवा लाख है। इसकी आमदनी ७,४२,००० रु० है। यह ८५ हज़ार रुपया होल्कर सरकार को कर देता है। यहां ६८ घुड़सवार, ६२५ पैदल और २४ तोपखाने के सिपाही रहते हैं। यहां के राजा राजपूत हैं। इनको १२०२ रु० सिंधिया की ओर से और ५,१०० रुपया देवास की ओर से तनख्वाह मिलती है। इस राज्य के संस्थापक १६६० ई० में राज्य गढ़ के रावल के यहां मंत्री थे। १६८१ ई० में उन्होंने रावल को अपना राज्य बांटने के लिये विवश किया। इस प्रकार नरसिंह गढ़ एक अलग राज्य हो गया। यहां के राजा को १२ तोपों की सलामी दी जाती है।

नरसिंहपुर—यह उड़ीसा प्रान्त का एक राज्य हैं। इस का क्षेत्रफल २०७ वर्गमील और जन-संख्या ४ हज़ार हैं। इसकी आमदनी १,११,१०५ रु० है। यह राज्य १४५० रुपया ब्रिटिश सरकार को कर देता है। यहां की फौज में ५८३ सिपाही हैं। यहां के राजा राजपूत हैं। अब से ३०० वर्ष पहले इनके पूर्वजों ने इस राज्य को स्थापित किया था।

नसवादी—यह रेवाकाण्ठा के सिन्ध खेड़ा मेहवास का एक छोटा राज्य है। इस का क्षेत्रफल १६ वर्गमील, आमदनी १२ हज़ार है। यहां के ठाकुर १६६१ रुपया बड़ौदा को कर देता है।

नयलपुर—यह बम्बई के खान देश में एक छोटा भील राज्य है। इसकी जन-संख्या २०० है। इसकी आमदनी ८०० रु० है। लकड़ी यहां की प्रधान उपज है। यहां के राजा भील है।

नवा नगर—यह काठियावाड़ में एक प्रथम श्रेणी का राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३,७६६ वर्गमील है। इसकी जन-संख्या ४,१०,००० और आमदनी ६४ लाख रुपया है। यह राज्य १ लाख २० हज़ार ११० रुपया सब मिला कर ब्रिटिश सरकार, बड़ौदा और जूनागढ़ को कर देते हैं। इनकी फौज़ में २३०३ सिपाही हैं। यहां के राजपूत राजा जाम साहब कहलाते हैं। १५४० ई० में जाम रावल ने इस राज्य की स्थापना की थी। यहां के जाम साहब को ११ तोपों की सलामी दी जाती है।

नयागढ़—यह उड़ीसा प्रान्त का एक राज्य है। इस का क्षेत्रफल २५२ वर्गमील और जन-संख्या दो लाख है। धान, ज्वार बाजरा, कपास, गन्ना और तिलहन यहाँ की उपज है। इस राज्यकी आमदनी ४,२४,०००रुपया है। यह ५५२० रु० ब्रिटिश सरकार को कर देता है। अब से पाँच सौ वर्ष पहले रीवाँ महाराज के एक राजपूत दरबारी ने इस राज्य की स्थापना की थी।

नाल—यह रेवाकांठा के सन खेड़ा मेहवास का एक भील राज्य है। इसकी जन संख्या ४०० और आमदनी १,२०० रुपया है। लकड़ी यहां की प्रधान उपज है। यहां के राजा भील हैं।

नारूकोटा—यह गुजरात के पंच महल में एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १४३ वर्गमील और जन-संख्या ७ हज़ार है। इसकी आमदनी ८,००० रुपया है। यह राज ३००० रु० ब्रिटिश सरकार को कर देता है। पंच महल ज़िले का कलक्टर इस राज्य का प्रबन्ध करता है।

नाभा—यह पञ्जाब में सतलज नदी के इस पार वाला एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ६४७ वर्गमील और जन-संख्या लगभग ३ लाख है। इसकी आमदनी २८ लाख रुपया है। गेहूँ, गन्ना, कपास और तम्बाकू यहां की प्रधान उपज हैं। यहां की फौज में १,२५० पैदल, २५० घुड़सवार और ५० तोपखाने के सिपाही हैं। यहां के राजा जाटवंश के हैं। गदर के समय में यहां के राजा ने अँग्रेज़ों की बड़ी सहायता की इससे इन्हें १ लाख रुपये से अधिक आमदनी की जागीर मिल गई। यहां के राजा को १३ तोपों की सलामी दी जाती है। इन से पहले नाभा में बड़े उन्नत और राष्ट्रीय विचारों के राजा राज्य करते थे। लेकिन इन के विचार ब्रिटिश सरकार को खटकने लगे। इस लिये ये गद्दी से उतार दिये गये। और मद्रास प्रान्त के कोदई कनाल स्थान में रक्खे गये।

नागोद—(उचहरा) यह मध्य भारत की बघेलखंड एजेन्सी में एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ५०१ वर्ग मील और जन संख्या ८० हज़ार है। इसकी आमदनी २,३३,००० रुपया है। यहाँ के राजा ने गदर के समय में अँग्रेज़ों की बड़ी सहायता की। इसलिये बैरावोगढ़ की जो जमीन जब्त की गई थी वह नागौद के राजा को मिल गई। यहां के राजा को ६ तोपों की सलामी दी जाती है।

नाहर—यह एक काठियावाड़ के पाण्डु मेहवास एक राज्य है। इस का क्षेत्रफल ३ वर्गमील है। इसकी आमदनी ८०० रुपया है। यह राज्य २५ रु० बड़ौदा को कर देता है।

नीलगिरी—यह उड़ीसा का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल २८४ वर्गमील और जन-संख्या ६६ हज़ार है।

इसकी आमदनी १,८६,६०० रुपया है यह राज्य ३,६०० ब्रिटिश सरकार को कर देता है। यहां के फौज में २८ सिपाही रहते हैं।

नीलवाला—यह काठियावाड़ के गोहेलवार का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल २ वर्गमील और जन-संख्या ६०० है। इसमें केवल एक गांव है। इसकी आमदनी केवल ३,००० रु० है। यह राज्य ५११ रु० ब्रिटिश सरकार को और १५४ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

नीलखेड़ा—यह मध्य भारत के भोपावार एजेन्सी का एक छोटा राज्य है। यह राज्य विन्ध्याचल के पहाड़ियों के बीच में स्थित है। इस में जंगलों से घिरी हुई कई घाटियां हैं। इस राज्य की आमदनी ४७ हज़ार रुपया है। यह ५०० रु० धार राज्य को कर देता है। यहाँ के ठाकुर साहब को धार और सुलतानपुर के बीच में पड़ने वाली डकैतियों की जवाबदेही देनी पड़ती है। यहाँ का क्षेत्रफल १०७ वर्गमील और जन संख्या ८,२७६ है। यहां के वर्तमान शासक गङ्गासिंह भूमिया हैं।

नैगांव रिवाही—यह मध्य भारत के बुंदेलखण्ड में एक छटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १६ वर्गमील और जन-संख्या २,३५२ है। इसकी आमदनी १७,००० रु०है।

नोङ्ग ख्लास—यह आसाम पहाड़ के खासी पहाड़ियों का एक छोटा राज्य है। इसकी जन-संख्या ८,००० और आमदनी ३,५६७ रु० है। धान, आलू, मक्का, ज्वार, बाजरा, दारचीनी और कपास यहां की उपज है। यहां लोहा भी पाया जाता है। इस राज्य के शासक को सियेम कहते हैं।

नोङ्ग सोह फोह—यह खासी पहाड़ियों का एक छोटा राज्य है। इसकी जन संख्या ६०० और आमदनी १५० रु० है। आलू, धान और मक्का यहाँ की उपज है। इस राज्य के शासक को सियेम कहते हैं।

नोङ्ग स्पुङ्ग—यह आसाम में खासी पहाड़ियों का एक राज्य है। इसकी जन-संख्या १,६०० है। धान, ज्वार, बाजरा, आलू, शहद और मोम यहां की उपज है। यहाँ के कच्चे लोहे को गला कर लोग तरह तरह के हथियार बनाते हैं। यहां के सियेम को काम रूप के मज़दूरों से कमीशन मिलता है।

नोङ्ग स्तोइन—यह खासी पहाड़ियों का एक छोटा राज्य है। इसकी जन-संख्या ६,००० और आमदनी ५,००० रु० है। धान, ज्वार, बाजरा, तेजपात, रबर, लाख और मोम यहां की उपज है। इस राज्य में चूने का पत्थर और कोयला भी पाया जाता है। लोहे के औजार बनाने, कपड़ा बुनने और मिट्टी के बर्तन बनाने का काम अच्छा होता है। यहां के राजा को सियेम कहते हैं।

नोङ्ग तरमेन—यह आसाम की खासी पहाड़ियों का एक राज्य है। इसकी जन-संख्या ५०० और आमदनी ३०० रु० है। नारङ्गी, सुपारी, पान बहुत होता है। लेकिन चूने के पत्थर से यहां के सियेम (राजा) को सबसे अधिक आमदनी होती है।

पटना—यह मध्य प्रान्त का राज्य है। इसका क्षेत्र-फल २,५११ वर्गमील और जन-संख्या ५६,७०० है। राज्य की मुख्य उपज चावल, दाल, तेलहन, ईख और कपास है। इस राज्य की सालाना आमदनी १,२१४ रूपये है।

यहां के शासक अपने को महीपुरी के समीपवर्ती गढ़ सम्भर के राजपूत राजाओं के बंशज बताते हैं। बर्तमान नरेश महाराजा नारायणसिंह देव हैं।

पटरी—बम्बई प्रान्त में मालावार काठियाड़ का यह एक छोटा राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल ४० वर्गमील और जनसंख्या ३,८७७ है। इस राज्य की सालाना आय ६,००० रुपया है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को ५,२५५ रुपये सालाना कर देता है।

पटियाला—यह राज्य पंजाब प्रान्त में पंजाब सरकार के आधीन है। इस राज्य का क्षेत्रफल ५,६४८ वर्ग-मील और जन संख्या १६,२५,५२० है। यहां की सालाना आय १,५०१,८०० रुपये है। यहां के शासक १०० घोड़े ब्रिटिश सरकार के लिये कर के बदले में देते हैं। राज्य की सेना में २,७५० सवार, ६०० पैदल, ३१ रणक्षेत्र वाली तोपें और ७८ दूसरी तोपें हैं। सेना में २३८ तोप चलाने वाले मनुष्य हैं।

यहां के शासक फूल चौधरी के बंशज हैं। नाभा राज्य में फूल चौधरी ने अपने नाम का एक गांव बनाया था। महाराज झींड, और नाभा, तिलोक, फूल के बड़े पुत्र के बंशज हैं। पटियाला नरेश फूल के द्वितीय पुत्र राम के वंशज हैं। यह जाट जाति के सिक्ख हैं। इस राज्य ने सिक्ख युद्धों के समय और ग़दर के समय ब्रिटिश सरकार की सहायता रुपये और मनुष्यों से भरपूर की जिसके बदले में उनको भूमि और दूसरे इनाम मिले।

यहाँ के शासकों को १७ तोपों की सलामी दी जाती हैं।

पठारी—मध्य भारत में भोपाल एजेन्सी का एक

छोटा सा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३० वर्गमील और जन-संख्या २,६४० है। यहां की सालाना आय ५५,००० रु० है। यहां के शासक अफ़ग़ान हैं और भोपाल के छोटे घराने के हैं। इस राज्य की नींव दोस्त मुहम्मद ने डाली थी। यहां के वर्तमान शासक नवाब मुहम्मद रहीम खाँ हैं।

पन्ना—बुन्देलखण्ड एजेन्सी में मध्य भारत का एक राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल २,५६६ वर्गमील और जन-संख्या २,१२,१३० है। इस राज्य की सालाना आय ८,६६,००० रु० है। यह राज्य ६,६५० रु० ब्रिटिश सरकार को कर देता है। इस राज्य की सेना में २५० सवार, २,४४० पैदल और १६ तोप चलाने वाले आदमी हैं।

इस राज्य के शासक राजपूत हैं और वे महाराना छत्र-साल के वंशज हैं। १८५७ में यहां के राजा ने ब्रिटिश सरकार की सहायता की तो ब्रिटिश सरकार ने इनको गोद लेने की सनद प्रदान की। इस राज्य में हीरा पाया जाता है।

यहां के महाराज को १३ तोपों की सलामी दी जाती है। यहां के वर्तमान शासक कैप्टन हिज़ हाईनेस महाराजा महेन्द्र सर यादुवेन्द्र सिंह बहादुर के० सी० एस० आई०, के० सी० आई० ई० हैं।

परतापगढ़—राजपूताना में मेवाड़ एजेन्सी का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ८८६ वर्गमील और जनसंख्या ७,६५,३६५ है। इस राज्य की सालाना आमदनी ५,५३,८०० रुपये है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को ५६,८८० रुपये कर देता है। इस राज्य की सेना में २७५ सवार, ६५० पैदल, १२ तोपें और ४० तोप चलाने वाले हैं।

यहाँ के शासक महारावल हैं। ये उदयपुर के बड़े घराने से हैं। अपनी प्रजा को प्राणदण्ड देने का अधिकार है। महाराज को १५ तोपों की सलामी दी जाती है।

परोन—यह मध्यभारत में गूना सब एजेन्सी का एक राज्य है। इस राज्य में ३४ गाँव हैं। इस राज्य की जन-संख्या ७,३१८ है। राज्य की सालाना आय १२,००० रु० है।

यहां के शासक राजपूत हैं। इनको १,००० रुपया सालाना ब्रिटिश सरकार से मिलता है क्योंकि इन्होंने तांतिया टोपी को पकड़वाया था।

पलाली—यह बम्बई प्रान्त का झालावार काठियावाड़ का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ४ वर्गमील और जन-संख्या ६७१ है। इस राज्य में केवल २ गांव हैं। इस राज्य की सालाना आय ४८,०० रुपया है। यह राज्य ३५७ रुपये ब्रिटिश सरकार को और ४६ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

पलासनी—बम्बई प्रान्त का रेवाकान्त एजेन्सी का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १२ वर्गमील है और इस राज्य में १४ गांव हैं। इस राज्य की सालाना आमदनी ४,७५० रुपया है। यह राज्य २,१३१ रुपये बड़ौदा राज्य को कर देता है।

पँतल ओरी—बम्बई प्रान्त में रेवाकान्त एजेन्सी का एक छोटा सा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ५ वर्गमील है। यहां की सालाना आय २,००० रुपये है।

पहाड़ी बांका—मध्य भारत का बुन्देलखंड में एक छोटा सा राज्य है। यह आठ भय्या जागीर के नाम से प्रसिद्ध है। इसका क्षेत्रफल ४ वर्गमील और जनसंख्या १,०४६ है। यहां की सालाना आमदनी ५,००० रु० है। यह बार गांव की जागीर का एक भाग है। जब ओरछा के दीवान रायसिंह ने अपने आठ पुत्रों में जागीर बाँटी तो यह एक अलग राज्य हो गया। यहां के शासक बांका पियारजू के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनको गोद लेने की सनद प्राप्त है।

पहाड़ी सरगीरा—मध्य भारत में सम्भलपुर का एक राज्य है। यह सम्भलपुर नगर के १५ मील पश्चिम की ओर स्थित है। इसका क्षेत्रफल २० वर्गमील और जन-संख्या १,६६२ है। यहाँ की मुख्य उपज चावल और गन्ना है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को १४० रुपया सालाना कर देता है।

पा—काठियावाड़ के गोहेलवार का एक छोटा राज्य है। इसमें केवल एक गाँव है। इसकी जन संख्या ४०० है। इसकी आमदनी ३,००० रु० है। यह राज्य ३०७ रु० बड़ौदा को और १२ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

पाछे गाम—यह काठियावाड़ के गोहेलवार का एक राज्य है।

पाछं गाम—बम्बई प्रान्त में काठियाड़ के गोहेलवार का एक छोटा राज्य है। इस राज्य में केवल एक गाँव है। यहाँ की जन-संख्या ३,६५५ है। राज्य की सालाना आय ३७,००० रु० है। यह राज्य १,२२२ रु० बड़ौदा राज्य को और ६८० रु० जूनागढ़ राज्य को सालाना कर देता है।

पाटन—जैपुर राज्य में टाउरवती ज़िले में एक छोटा सा राज्य है। इसकी जन संख्या ११,८८६ है। यहां के शासक दिल्ली के तुअर राजाओं के वंशज हैं। जब ग़ोरियों ने दिल्ली जीता तो इनको निकाल बाहर किया। ये लोग आकर पाटन में बस गए। तब से ये लोग यहां शांति पूर्वक राज्य कर रहे हैं।

पांडू—बम्बई प्रान्त में पांडू मेहवास में एक छोटा सा राज्य है। इसका चेत्रफल १९$\frac{1}{2}$ वर्गमील है। यहाँ की सालाना आमदनी ५,२०० रु० हैं। यह राज्य ४,५०१ रु० बड़ौदा राज्य को कर देता है।

पानछोरा—गोहेलवार काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक छोटा सा राज्य है। इस राज्य में केवल एक गांव है। जिसकी जनसंख्या ५०४ है।

पाल—बम्बई प्रान्त का हालार, काठियावाड़ का पाल एक छोटा सा राज्य है। राजकोट से ७ मील पश्चिम की ओर यह राज्य स्थित है। इसका चेत्रफल २१ वर्गमील है और इसमें केवल ५ गाँव हैं। इसकी सालाना आमदनी १०,००० रु० है। यह राज्य १२५३ रु० बड़ौदा राज्य को और ३६४ रुपये जूनागढ़ को कर देता है। इसकी जनसंख्या १,२१४ है। यहाँ के शासक राजपूत हैं।

पालनपुर—यह बम्बई प्रान्त का पहलानपुर गुजरात एजेन्सी का एक राज्य है। इस राज्य का चेत्रफल १७७५ वर्गमील और जनसंख्या २,६६,००० है। इस राज्य की सालाना आय ११,३४,००० रु० हैं। यह राज्य ५३,७५० रुपये बड़ौदा राज्य को कर देता है। राज्य की सेना में २६४ सवार ६९७ पैदल सिपाही हैं।

इस राज्य के शासक पठान हैं और मुग़ल सम्राट् हुमायूं के समय ये लोग बिहार प्रान्त के शासक थे। अकबर सम्राट ने १५९७ में इनको दीवान की पदवी और गोद लेने की सनद प्रदान की। यहाँ के शासकों को अपनी प्रजा को दंड देने का अधिकार प्राप्त है। ११ तोपों की सलामी यहाँ के नवाब को दी जाती है।

पाललहारा—यह उड़ीसा प्रान्त का एक राज्य है। इसका चेत्रफल ४५२ वर्गमील और जनसंख्या २,७६४ है। इस राज्य में १९९ गाँव हैं। इस राज्य की सालाना आय ८२,७०९ रुपये है। यहाँ की सेना में ५७ सैनिक हैं। यहाँ के शासकों ने १८५७ के गदर में ब्रिटिश सरकार की सहायता की थी तो ब्रिटिश सरकार ने इनको राजा बहादुर की उपाधि प्रदान की।

पालदेव—मध्य भारत का बुन्देलखंड में पालदेव छोटा सा राज्य है। इसका चेत्रफल ५३ वर्गमील और जनसंख्या ८,४५७ है। इस राज्य की सालाना आय ३०,००० रुपये है। यहाँ की सेना में २५० पैदल सिपाही हैं। यहां के शासक कालिंजर चौबे हैं। यहां के वर्तमान शासक शिव प्रसाद चौबे हैं।

पालीयाद—बम्बई प्रान्त में झालावार गुजरात का एक छोटा सा राज्य है। इसका चेत्रफल २७७ वर्गमील और जनसंख्या ९६,६२४ है। इस राज्य में १७ गांव हैं। इस राज्य की सालाना आमदनी ४,१०० रुपये है। यह राज्य ९०७ रुपये ब्रिटिश राज्य को और ३०६ रुपये जूनागढ़ राज्य को सालाना कर देता है।

पालीटाना—बम्बई प्रान्त में गोहेलवाड़ काठियावाड़ का एक राज्य है। इसका चेत्रफल ३७० वर्गमील और जन-संख्या ५९,००० है। इस राज्य की मुख्य उपज कपास, ईख और अनाज है। इस राज्य की सालाना आय ५,७०,००० रुपया है। यह राज्य १०,३६४ रुपये बड़ौदा और जूनागढ़ को कर देता है। यहां की सेना में ४५५ सैनिक हैं।

यह काठियावाड़ में द्वितीय श्रेणी का राज्य है। भोनागढ़ और काठी के ठाकुर इसी राज्य के वंशज हैं। यहां के शासक राजपूत हैं और उन को अपनी प्रजा को दण्ड देने तथा गोद लेने की सनद प्राप्त है।

पाहरा—मध्य भारत में बुंदेलखंड का एक राज्य है। इसका चेत्रफल ५३ वर्गमील और जन-संख्या ८,४५७ है। इस राज्य की सालाना आय ३९,००० रुपये हैं। यहां के वर्तमान शासक लक्ष्मी प्रसाद चौबे हैं।

पुनादरा—बम्बई प्रान्त का महीकान्त एजेंसी का एक देशी राज्य है। इस राज्य का चेत्रफल १२$\frac{1}{2}$ वर्गमील और जन-संख्या ३,७६७ है। इस राज्य में ११ गांव हैं। राज्य की सालाना आमदनी १५,७०० रुपये है। यह राज्य ३७५ रुपये बड़ौदा राज्य को कर देता है। राज्य की मुख्य उपज गेहूँ, चावल और बाजरा है।

यहां के शासक मुसलमान हैं।

पुदूकहाई—यह मद्रास प्रान्त का एक देशी राज्य है। इस राज्य का चेत्रफल ११७९ वर्गमील और जन-संख्या ४,०२,६९४ है। यहाँ की मुख्य उपज चावल और अनाज है। इस राज्य की सालाना आमदनी २०,५०,००० रुपया है। राज्य की सेना में १२६ पैदल, २१ सवार, ३,२०० मिलीशिया सिपाही हैं। यहाँ के शासक स्वतंत्रता पूर्वक अपना राज्य करते हैं और इनको गोद लेने की सनद प्राप्त है।

पेथापुर—यह बम्बई प्रान्त में माहीकान्था एजेंस का एक राज्य है। यहाँ की जन-संख्या ७,०८१ है। इस राज्य की मुख्य उपज गेहूँ, बाजरा और दाल है। इस

राज्य की सालाना आमदनी १७,२५० रुपया है। यह राज्य ८६३० रुपया सालाना बड़ौदा राज्य को कर देता है।

यहाँ के शासक अन्हिलवाड़ा पाटन के हिन्दू हैं। १२६८ ई० में अल्लाउद्दीन ने इनको बर्बाद किया था। यहां के राजा राजपूत हैं।

पोइछा—बम्बई प्रान्त में रेवाकांठा एजेंसी का यह एक छोटा सा राज्य है। इस का क्षेत्रफल ३ वर्गमील है। इस राज्य की सालाना आमदनी २,४५० रुपया है। यह राज्य १,५०१ रुपया बड़ौदा राज्य को कर देता है।

पोल—बम्बई प्रान्त में गुजरात माहीकांठा एजेंसी में एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ४२ वर्गमील और जन-संख्या ६,६२६ है। इस राज्य की आमदनी २८,००० रुपया है। यहां की मुख्य उपज बाजरा, गेहूँ, चना और मक्का है।

यहां के शासक कन्नौज के अन्तिम राठौर राजा जैचन्द के वंशज हैं। जैचन्द के दो पुत्र शिवजी और स्वनजी थे। ज्येष्ठ पुत्र ने मारवाड़ की बुनियाद डाली और छोटे ने ईदर राज्य की नींव १२५७ में डाली।

पोरबन्दर—बम्बई प्रान्त में काठियावाड़ के दक्षिण में यह राज्य स्थित है। यह अरब सागर के तट पर एक लम्बी पट्टी है जो कहीं भी २४ मील से अधिक चौड़ी नहीं है।

इस राज्य का क्षेत्रफल ६४२ वर्गमील और जन-संख्या १,१६,००० है। इस राज्य की सालाना आमदनी ४०,००,००० रुपया है। यह राज्य ४८,५०४ रु० सालाना कर ब्रिटिश सरकार, बड़ौदा राज्य और जूनागढ़ राज्य को देता है।

फलटान या फ़ालटन—बम्बई प्रान्त में यह सतारा एजेन्सी का एक राज्य है। राज्य का क्षेत्रफल ३६ वर्गमील और जन-संख्या ५६,१२४ है। यहां की सालाना आमदनी १,२६,७२० रु० है। राज्य की मुख्य उपज बाजरा, चना, नमक और लकड़ी है। यह राज्य ६,६०० रुपया सालाना ब्रिटिश सरकार को कर देता है।

फालटन के शासक राजपूत हैं। यहां के राजे दकेन के प्रथम श्रेणी के हैं। और इन को गोद लेने की सनद प्राप्त है।

फरीदकोट—सतलज के इस पार का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ६१८ वर्गमील है। इसमें १६८ गांव हैं। इसकी जन-संख्या १ लाख से ऊपर है। इसकी आमदनी ५ लाख रुपया है। इस राज्य में ६०० पैदल सिपाही, २०० घुड़सवार और ७३ तोपें हैं। अकबर के समय में इस राज्य की स्थापना हुई। सिक्खों की लड़ाई के समय यहाँ के राजा ने अँगरेज़ों की बड़ी मदद की। गदर के समय १८५७ में भी उसने अँग्रेज़ों का साथ दिया। इस से यहां के राज्य का विस्तार बढ़ गया। यहां के राजा जाट हैं। इनको ११ तोपों की सलामी दी जाती है।

बजना—काठियावाड़ का एक करद राज्य है। इस राज्य में १६ गाँव हैं। जनसंख्या १६,००० है। आमदनी ६०,००० रुपया है। ७,६८० रुपया ब्रिटिश सरकार को कर दिया जाता है। १८०७ में यहाँ एक नवाब और ईस्ट इंडिया कम्पनी के बीच में सम्बन्ध स्थापित हो गया।

बख्तगढ़—मध्य भारत में भील-एजेन्सी का एक छोटा राज्य है, इस राज्य में ३५ गाँव हैं। आय ५०,००० रुपया है। १६५०२ रु० धार राज्य को कर देने पड़ते हैं।

बालसीनोर—रेवाकांठा (गुजरात) का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १८६ वर्गमील है। इसमें ६८ गाँव हैं। जनसंख्या ५०,००० है। आय १,२०,००० रुपया है। ११,६८० रुपया ब्रिटिश सरकार को और ३,६०० रुपया बड़ौदा राज्य को कर देने पड़ते हैं। यहाँ का मुसलमान शासक बाबी कहलाता है। बाबी का अर्थ है ड्योढ़ीवान। आरम्भ में यहाँ का राजा मुग़ल दरबार में यही काम करता था। इसलिये बाबी की उपाधि अब तक चली आती है। यहाँ के शासक को बिना पोलिटिकल एजेंट की आज्ञा लिये फाँसी की सज़ा देने का अधिकार है। उसको ६ तोपों की सलामी मिलती है।

बल्सैन—पंजाब का एक छोटा पहाड़ी राज्य है। इसका क्षेत्रफल ५७ वर्गमील है। इसमें १५२ गांव हैं। जनसंख्या ६,००० है। राज्य की आमदनी १०,००० रुपया है। १०८० रुपया ब्रिटिश सरकार को कर देना पड़ता है। यहाँ के राना राजपूत हैं।

बंसदा—गुजरात में सूरत एजेंसी का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३८४ वर्गमील है। इस राज्य में ८७ गांव हैं। जनसंख्या ४०,००० है, आय २ लाख रुपया है। यहाँ की जलवायु अच्छी नहीं है लेकिन धान, चना और दाल खूब होती है। सूती फीता, चटाई, पङ्खा, टोकरी और कम्बल बुनने का काम होता है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को १,६५० रुपया कर देता है। यहाँ की फौज में १५० सिपाही और १२ तोपें हैं। पहले मरहठों ने यहाँ के राजा को जीत कर, कर वसूल करना आरम्भ कर दिया था। १८०२

में बसीन की सन्धि के बाद यह कर ब्रिटिश सरकार को मिलने लगा। यहाँ के राजा को फाँसी देने का अधिकार है। उनको ९ तोपों की सलामी मिलती है।

बन्तवा—यह एक काठियावाड़ के दक्षिण में राज्य है। इसका क्षेत्रफल २२१ वर्गमील है। जनसंख्या ४०,००० और आमदनी ५ लाख है। यह राज्य बृटिश सरकार को २९,७४० रुपये कर्ज़ देता है। कपास और गन्ना यहाँ की प्रधान उपज है। इस राज्य में खद्दर और गाढ़ा बहुत बुना जाता है। यहाँ के नवाब जूनागढ़ के नवाब के सम्बन्धी हैं। १७४० में यह जागीर जूनागढ़ के नवाब की ओर से मिली थी। १८०७ ई० में पहले पहल बृटिश सरकार से इस राज्य का सम्बन्ध स्थापित हुआ था। यहाँ के नवाब को बाबी कहते हैं।

बरौंदा—यह बुन्देलखण्ड में छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल २३८ वर्गमील है, इसमें ६६ गाँव हैं। जनसंख्या लगभग ७ हजार है। आमदनी लगभग ३० हज़ार है। यहाँ के राजपूत राजा को १८०७ ई० में बृटिश सरकार ने भी मंजूर कर लिया था। बृटिश सरकार की ओर से यहां के राजा को गोद लेने को सनद मिली हुई है।

बरिया—यह गुजरात प्रान्त में रेवाकान्त का एक करद राज्य है। इसका क्षेत्रफल १३०० वर्गमील और जनसंख्या ७० हज़ार है। राज्य की आमदनी लगभग २ लाख है। यहाँ की जलवायु नम और बड़ी रोगग्रस्त रहती है। ज्वार, बाजरा, दाल, तेलहन और लकड़ी यहाँ की प्रधान उपज है। यह राज्य बृटिश सरकार को ९,३३० रुपया कर देता है। यहाँ का राजा चौहान राजपूत है। १२४४ ई० में इन राजाओं ने चम्पानेर नगर पर अधिकार जमा लिया और वहाँ एक किला बनाया। १८३० ई० में इस राज्य का बृटिश राज्य के साथ सम्बन्ध स्थापित हो गया। यहाँ के शासक को महारावल कहते हैं। इनको ९ तोपों की सलामी दी जाती है।

बरमारा—गुजरात प्रान्त के महीकान्त प्रदेश में यह एक छोटा राज्य है। इसकी जनसंख्या लगभग ५ हज़ार है। राज्य की आमदनी लगभग २,००० रु० है। ६०० रुपया बड़ौदा सरकार को कर दिया जाता है।

बड़ौदा—बड़ौदा राज्य का सम्बन्ध सीधे बृटिश सरकार से है। इसका क्षेत्रफल ८,५७० वर्गमील और जनसंख्या २५ लाख है। इस राज्य के भिन्न २ भागों में भिन्न २ प्रकार का तापक्रम पाया जाता है। वर्ष भर में लगभग ४३ इञ्च पानी बरसता है इस राज्य की आमदनी लगभग १½ करोड़ है। १८२० ई० में जब दावां जी गायकवाड़ ने बालापुर की लड़ाई में अपूर्व बीरता दिखलाई तभी से गायकवाड़ का उत्थान हुआ। मराठों की ओर से इनको शमशेर बहादुर की उपाधि मिली। दिल्ली दरबार में इनका बड़ा नाम हुआ। अनिवार्य शिक्षा, कारबार की उन्नति, उन्नत विचारों और गश्ती पुस्तकालयों के लिये बड़ौदा राज्य भारतवर्ष भर में प्रसिद्ध है। गायकवाड़ महाराज भारत के उन दूरदर्शी राजाओं में से हैं जिन्होंने बृटेन से एक बार सन्धि करके फिर उनके विरुद्ध कभी तलवार नहीं उठाई। गायकवाड़ महाराज को २१ तोपों की सलामी दी जाती है।

बरवानी—यह मध्य भारत की भील एजेंसी का एक राज्य है। यह राज्य नर्मदा नदी के बायें किनारे पर स्थित है। इसका क्षेत्रफल १,३६२ वर्गमील और जनसंख्या ६० हज़ार है। यहाँ के जंगलों में अच्छी लकड़ी मिलती है। जंगल से इस राज्य को १५ हज़ार रु० की आमदनी होती है। यहाँ के राजपूत राजा उदयपूर वंश के सम्बन्धी हैं। इनको ९ तोपों की सलामी दी जाती है।

बसहा—पंजाब के पहाड़ी राज्यों में से एक है। इसका क्षेत्रफल ३,३२० वर्गमील है। जनसंख्या ७० हज़ार है। राज्य को ४० हज़ार रुपये की आमदनी होती है। यह राज्य ३,९४० रुपया कर देता है। १८४९ ई० में यह राज्य यहाँ के राजा को मिला।

बसोदा—यह भूपाल एजेन्सी का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल २२ वर्गमील और जनसंख्या ८,००० है। इसकी आमदनी १५,००० रुपया है। पहले यह राजा सिन्धिया महाराज को कर देता था। आजकल यह किसी को कर नहीं देता है। यहाँ के नवाब पठान हैं।

बस्तर—मध्य प्रदेश के चाँदा जिले में एक करद राज्य है। इसका क्षेत्रफल १३,०६२ वर्गमील है। और जनसंख्या २० हजार है। धान, तेलहन, दाल, कोसा, लाख और गन्ना यहां की प्रधान उपज है। इस राज्य की आमदनी १ लाख है। यहां का राजपूत राजा ३०५० रुपया बृटिश सरकार को कर देता है।

बवेशी—गुजरात के महीकान्त का एक करद राज्य है। इसकी जनसंख्या ४० हज़ार और ५० हजार है। ३,३०१ रुपया यह बड़ौदा राज्य को कर देता है।

बघात—शिमला के पास पंजाब का एक संरक्षित

राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३६ वर्गमील और जनसंख्या ६,००० है। इस राज्य में १७८ गांव हैं, इसकी आमदनी ८,००० रुपया है। १,६१० रुपया कर देने पड़ते हैं।

बगली—मध्य भारत की इन्दौर एजेंसी में एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३०० वर्गमील. जनसंख्या १५,००० और आमदनी ८०,००० रुपया है।

बभई—बम्बई प्रान्त में गुजरात की पालनपुर एजेंसी का एक छोटा राज्य है। इसके उत्तर में देउदर, पूर्व और दक्षिण में तेरवारा और पश्चिम में सुई ग्राम और थराद है। इस राज्य का क्षेत्रफल ८० वर्गमील है। इसमें २३ गांव हैं। जनसंख्या ८,००० है इसमें अधिकतर कोली हैं। राज्य की आमदनी १२,००० रु० है।

इस राज्य में कोली ठाकुर राज्य करते हैं। १८२० ई० में इस राज्य और ब्रिटिश राज्य का पहले पहल सम्बन्ध स्थापित हुआ और इसका कर माफ कर दिया गया।

बलेरा—उत्तरी काठियावाड़ में एक छोटा राज्य है। इस राज्य में ६ गाँव हैं, आमदनी ६०,००० रुपया है।

बगसरा—यह दक्षिणी काठियावाड़ का एक छोटा राज्य है। इस राज्य में १५ गाँव हैं। आमदनी १०,००० रु० है। २,२५० रु० बड़ौदा और १२४० रु० जूनागढ़ को कर दिया जाता है।

बघाल—शिमला के पड़ोस में पंजाब की एक संरक्षित रियासत है। इसका क्षेत्रफल १२४ वर्गमील जनसंख्या २०,००० और आमदनी ६०,००० रुपया है। यहाँ का राजा ३,६०० रु० कर देता है। और ५० सिपाही और एक तोप रखता है। उसको अपने राज्य में होकर निकलने वाली सभी सड़कें अच्छी हालत में रखनी पड़ती हैं।

बहावलपुर—(भावलपुर) पंजाब प्रान्त का एक मुसलमानी राज्य है। इसके उत्तर-पूर्व में सिरसा दक्षिण-पूर्व में बीकानेर और जैसलमेर, दक्षिण-पश्चिम में सिन्ध प्रान्त, उत्तर-पश्चिम में सिन्ध, सतलज नदियाँ हैं।

इस राज्य का क्षेत्रफल १५,००० वर्गमील है। इसमें ६,८८० वर्गमील रेगिस्तान है। सारे राज्य में ६२२ गाँव हैं। जनसंख्या ६,००,००० है। गेहूँ, कपास यहाँ की प्रधान उपज है। यहाँ लुंगी, सरफी और रेशमी कपड़े अच्छे बनते हैं। राज्य की आमदनी १६ लाख है। यहाँ के नवाब सिन्ध की ओर से आये। दुर्रानी साम्राज्य के छिन्न भिन्न होने के समय वे स्वाधीन हो गये। १८३० ई० में ब्रिटिश सरकार और इस राज्य के बीच में सम्बन्ध स्थापित हो गया। यहां के नवाब को १७ तोपों की सलामी मिलती है।

बांसवाड़ा—राजपूताना की मेवाड़ एजेन्सी में एक राज्य है। इसके उत्तर में डूँगरपुर, पूर्व में प्रतापगढ़, दक्षिण में मध्यभारत के राज्य और पच्छिम में रेवाकान्त राज्य स्थित हैं। इसका क्षेत्रफल १,३०० वर्गमील है। इसकी जनसंख्या १,७२,००० और आमदनी ३ लाख रु० है। यह राज्य बृटिश सरकार को ३८ हज़ार रु० कर देता है। यहां के महाराजा डूँगरपुर राजवंश से सम्बन्ध रखते हैं।

बावनी—यह बुन्देलखण्ड का एक राज्य है। यह सब ओर से बृटिश राज्य से घिरा हुआ है। इसका क्षेत्रफल १२७ वर्गमील और जनसंख्या बीस हज़ार मील है। इसकी आमदनी १ लाख से ऊपर है। बुन्देलखण्ड में केवल यही एक मुसलमानी राज्य है। यहां का शासक निज़ाम का सम्बन्धी है। पेशवा ने इनको ५२ गांवों की जागीर दे दी थी। १८०३ ई० में बृटिश सरकार ने इसको मंजूर कर लिया।

बारंबा—यह उड़ीसा का एक करद राज्य है। इसका क्षेत्रफल १३७ वर्गमील और जनसंख्या तीस हजार है। राज्य की आमदनी ३० हजार है। १४०० रुपया बृटिश सरकार को कर के रूप में दिया जाता है। यहां क्षत्रिय राजा राज करते हैं।

बावरा—यह बम्बई प्रान्त में कोल्हापुर का एक करद राज्य है। इसका क्षेत्रफल ८३ वर्गमील, जनसंख्या ४०,००० और आमदनी ६० हज़ार है। यह राज्य ३,४२० रुपया कोल्हापुर राज्य को कर देता है। यहां के ब्राह्मण राजा को पन्थ ऊमाल कहते हैं।

बामनबोर—उत्तरी काठियावाड़ में एक छोटा राज्य है। इसमें ४ गांव हैं। ३ हज़ार रुपया आय है और ७६ रुपया ब्रिटिश सरकार को कर देना पड़ता है।

बामरा—सम्भलपुर ज़िले में एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १९८८ वर्गमील है। जनसंख्या एक लाख है। इस राज्य में साल का बन है। लोहा, लाख, रेशम, शहद, राल, धान, दाल, तिलहन, गन्ना और कपास यहां की प्रधान उपज है। राज्य की आय २०,००० रुपया है। ३५० रु० ब्रिटिश सरकार को कर देने पड़ते हैं।

पहले यह राज्य सरगूजा राज्य के आधीन था। पन्द्रहवीं सदी में सम्भलपुर के राजा ने इसे गढ़जात राज्यों में

मिला लिया। इस समय यहां के राजा गंगावंशी राजपूत हैं।

बिहट—यह बुन्देलखण्ड में एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १६ वर्गमील और जनसंख्या ५ हज़ार है। यहां की आमदनी १५ हज़ार रुपया है। यहां के जागीरदार बुन्देले हिन्दू हैं।

बिभोरा—यह बम्बई प्रान्त में रेवाकान्त का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १¼ वर्गमील है। इसकी आमदनी लगभग २ हज़ार रुपया है। यहां के ठाकुर साहब बड़ौदा सरकार को ५० रुपया कर देते हैं।

बिजा—यह पंजाब का एक पहाड़ी राज्य है। इसका क्षेत्रफल ४ वर्गमील और जनसंख्या १½ हज़ार है। इसकी आमदनी लगभग १½ हज़ार रुपया है। यहां के ठाकुर साहब ब्रिटिश सरकार को १८० रुपया कर देते हैं, लेकिन यहां की जमीन में ही कसौली छावनी है। उसके बदले में ब्रिटिश सरकार इन्हें हर साल १०० रुपया मोआवज़ा देती है।

बिजावर—यह बुन्देलखण्ड का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ९७३ वर्गमील है। इसमें २९८ गांव हैं। इसकी जनसंख्या १ लाख १६ हज़ार है, इसकी आमदनी ३ लाख २४ हज़ार रुपया है। मकई इस राज्य की प्रधान उपज है। लेकिन यहां लोहिया पत्थर और हीरा भी पाया जाता है। बिजावर नगर हरपालपुर रेलवे स्टेशन से ५७ मील दूर है। यहां के महाराजा सवाई सर सावन्त सिंह बहादुर बुन्देला राजपूत हैं। यह नरेन्द्र मण्डल (चैम्बर आफ़ प्रिन्सेस) के भी सदस्य हैं। गदर की सेवाओं की उपलक्ष में इन्हें ब्रिटिश सरकार की ओर से ११ तोपों की सलामी दी जाती है।

बिजना—बुन्देलखण्ड में एक हस्तभाई राज्य है। इसका क्षेत्रफल २७ वर्गमील, जनसंख्या ३ हज़ार, आमदनी १० हज़ार रुपया है।

बिलरी—उत्तरी काठियावाड़ का एक छोटा राज्य है। इस राज्य में केवल एक गांव है। इसकी आमदनी ३ हज़ार रुपया है।

बीकानेर—राजपूताना का एक प्रधान राज्य है। इसका क्षेत्रफल २२,३४० वर्गमील है। इसमें १७५० गांव हैं। इसकी जनसंख्या ५ लाख २० हज़ार है। यह एक अत्यन्त खुश्क प्रदेश है। बाजरा, मोठ, तरबूज, ककड़ी, यहां की प्रधान उपज है। यहां चूना, नमक और लाल पत्थर भी मिलता है। कम्बल, ऊनी कपड़े, हाथी दांत की चूड़ियां और सोने चांदी के ज़ेवर बनाने का काम अच्छा होता है। इस राज्य की आमदनी १५ लाख रुपया है। पन्द्रहवीं सदी में बीकाराय ने इस राज्य की स्थापना की थी। १८१८ ई० में ब्रिटिश सरकार से सम्बन्ध स्थापित हो गया। वर्तमान नरेश भारत के अत्यन्त उन्नतिशील नरेशों में से हैं। ब्रिटिश सरकार भी आपका बड़ा मान करती है। आपको १७ तोपों की सलामी मिलती है।

बूंदी—यह राजपूताना में टोंक एजेन्सी का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल २३०० वर्गमील है। इसकी जनसंख्या ३ लाख और आमदनी ८ लाख रुपया है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को १ लाख २० हज़ार रुपया कर देता है। यहां का राजा चौहान राजपूत है। १८०४ ईस्वी में यहां के राजा ने होल्कर महाराज के विरुद्ध ब्रिटिश सरकार को भारी मदद दी थी। इनको १७ तोपों की सलामी मिलती है।

बेरी—यह बुन्देलखण्ड का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३० वर्गमील और जनसंख्या ५ हज़ार है। आमदनी २५,००० रु० है। शासक पुवार (पंवार) राजपूत हैं।

बोनाई—यह छोटा नागपुर में एक करद राज्य है। इसका क्षेत्रफल १,३४६ वर्गमील और जनसंख्या ३ हज़ार है। इसकी आमदनी १०,००० रु० है। धान, तेलहन और दाल यहां की प्रधान उपज है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को २०० रु० कर देता है। यहां के शासक कदम्बवंशी राजपूत हैं। कहा जाता है यह लङ्का से आकर यहां बस गये।

बोद—उड़ीसा का एक करद राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल २०६४ वर्गमील है। इसकी जनसंख्या १ लाख ५० हज़ार और आमदनी ३० हज़ार है। ८०० रु० ब्रिटिश सरकार को कर दिया जाता है। यहां के राजा सूर्यवंशी राजपूत हैं। इस राज्य की स्थापना अब से १,००० वर्ष पहले हुई थी।

बोदानो नेस—काठियावाड़ का एक छोटा राज्य है। इसमें केवल १ गांव है, इसकी आमदनी १,५०० रु० है। यह राज्य १०० रु० बड़ौदा को और ९ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

बोलुन्दा—यह बम्बई प्रान्त में महीकान्त एजेन्सी का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ५,२०० बीघा है। इसकी जनसंख्या १,००० और आमदनी ८०० रु० है। यह राज्य ईदर राज्य को १४० रु० कर देता है।

भदौरा—यह मध्यप्रान्त के ग्वालियर राज्य में एक छोटा राज्य है। जूना नगर से यह १२ मील दूर है। इस राज्य में १० गाँव हैं। इसकी जन-संख्या ४ हज़ार और आमदनी १० हज़ार रु० है। यहां के ठाकुर साहब सिन्धिया के महाराज साहब को १,१५० रुपया कर देते हैं। पड़ोस में लूटमार और डकैती को दबाने के लिए वर्तमान शासक के पूर्वजों को वर्तमान ग्वालियर राज्य की ओर से आज्ञा मिली थी।

भदली—यह उत्तरी काठियावाड़ में एक छोटा राज्य है। इस राज्य में १५ गांव हैं। इसकी आमदनी ३० हज़ार रु० है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को १,१०४ रुपया और जूनागढ़ को २५६ रु० कर देता है।

भदवाना—यह काठियावाड़ के झालावाड़ राज्य में एक छोटा राज्य है। इसमें २ गांव शामिल हैं। इसकी आमदनी ६ हजार है। यह ब्रिटिश सरकार को १,००० रु० और जूनागढ़ को ८३ रुपया कर देता है।

भज्जी—यह पंजाब का एक पहाड़ी राज्य है। इसका क्षेत्रफल ९६ वर्गमील, जनसंख्या १५,५०० है। इस राज्य की आमदनी ७१ हजार रु० है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को १,४४० रु० कर देता है। यहां के राजा के पूर्वजों ने अपने भुजबल से इस प्रदेश को जीता था। १८१५ ई० में ब्रिटिश सरकार ने यह जीत स्वीकार कर ली।

भलाला—यह काठियावाड़ में झालावाड़ का एक छोटा राज्य है। इस राज्य में केवल १ गांव है। आमदनी ३ हज़ार रु० है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को ४७४ रुपया कर देता है।

भलगांव बुलधोई—यह दक्षिणी काठियावाड़ का एक छोटा राज्य है। इसमें दो गांव शामिल हैं। इसकी आमदनी ३,००० रु० है। यह ब्रिटिश सरकार को २०४ रु० और जूनागढ़ को ५८ रु० कर देता है।

भलगमरा—यह काठियाड़ के झालावाड़ जिले में एक छोटा राज्य है। इस राज्य में ३ गांव शामिल हैं। इस राज्य की आमदनी १५ हज़ार रु० है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को १४०० रु० और जूनागढ़ को १०५ रु० कर देता है।

भलूसना—यह राज्य गुजरात की महीकांत एजेन्सी में स्थित है। इसका क्षेत्रफल ५९ वर्गमील और जन-संख्या ५ हज़ार है। इसकी आमदनी ५ हज़ार रुपया है। गेहूँ, ज्वार, बाजरा, ईख, और मक्का यहां की प्रधान उपज है। यह राज्य ईदर राज्य को ११६० रु० कर देता है। यहां के ठाकुर साहब कोचुवान कोलि जाति के हिन्दू हैं।

भंडरिया—काठियावाड़ का एक छोटा राज्य है। इस राज्य में एक गांव शामिल है। इसकी आमदनी ५०,००० रु० है। यह राज्य ३०० रु० बड़ौदा और १५ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

भरेजा—यह काठियावाड़ के झालावाड़ जिले में एक गांव का राज्य है। इसकी आमदनी ३ हजार रुपया है। यह ब्रिटिश सरकार को ९४ रु० कर देता है और अहमदाबाद के हिसाब में लकड़ी देता है।

भरतपुर—यह राजपूताना का एक पुराना राज्य है। इसका क्षेत्रफल १,९७४ वर्गमील है और जन-संख्या ५ लाख है। इसकी आमदनी ३३ लाख रु० है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को किसी प्रकार का कर नहीं देता है। लेकिन यह राज्य अपने खर्च से ब्रिटिश सरकार के काम के लिए १०,२१० सिपाहियों की फौज रखता है। इस प्रदेश में १०२६ ई० में जाट लोग बसे हुए थे। औरंगज़ेब के मरने के बाद यहां के राजा ने अपना राज्य स्थापित कर लिया। १८०३ ई० में ब्रिटिश सरकार से सम्बन्ध स्थापित हो गया। भरतपुर राज्य में बहुत कुछ ब्रज भूमि है। यहां के राजा को १७ तोपों की सलामी लगती है।

भरूतपुरा—यह मध्यभारत की भील एजेन्सी का एक छोटा राज्य है। इस राज्य में ४ गांव शामिल हैं। इसकी जन-संख्या ८० हज़ार और आमदनी ५ हज़ार रु० है। यह राज्य ३१० रु० धार राज्य को कर देता है।

भथान—यह काठियावाड़ के झालावाड़ जिले में एक छोटा राज्य है। इसमें केवल एक गांव शामिल है। इसकी आमदनी केवल ४,००० रुपया है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को ६४० रु० और जूनागढ़ को ६० रु० कर देता है।

भावनगर—यह काठियावाड़ एजेन्सी का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल २,९६१ वर्गमील है। इसमें ६५९ गांव शामिल हैं। इसकी जन-संख्या ५ लाख से ऊपर है। इसकी आमदनी १,४७,७६,२७३ रु० है। समुद्र-तट के पास इस राज्य की जलवायु बड़ी अच्छी है। भीतरी भागों की जलवायु कुछ खुश्क है। ज्वार, बाजरा, गेहूँ, नमक और कपास यहां की प्रधान उपज है। तेल पेरने, तांबे और पीतल के बर्तन बनाने और कपड़ा बुनने का कार्य अच्छा होता है। यहां के ठाकुर साहब राजपूत हैं। उनको फांसी की सज़ा देने का अधिकार है। उन्हें ११ तोपों की सलामी दी जाती है।

भादरवा—यह रेवाकान्त (बम्बई प्रान्त) का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल २७ वर्गमील, जन-संख्या १०

हज़ार, आमदनी ५० हज़ार है। यह राज्य बड़ौदा सरकार को २६,०७० रुपया कर देता है। यहां के राजा को राणा कहते हैं।

भिमोरा—यह उत्तरी काठियावाड़ में एक छोटा राज्य है। इस राज्य में १२ गांव शामिल हैं। इसकी आमदनी १० हज़ार रुपया है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को ३१० रु० और जूनागढ़ को ६० रु० कर देता है।

भूपाल—मालवा में एक बड़ा राज्य है, इसका क्षेत्रफल ६,६२४ वर्गमील और जन-संख्या ७,२६,६५५ है। इस राज्य में ३,००६ गांव हैं। इसकी आमदनी ८० लाख रु० है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को २ लाख रुपया कर देता है। औरङ्गज़ेब के समय में दोस्त महम्मद नामी एक अफ़गान ने इस राज्य को स्थापित किया था। यहां के नवाब को १६ तोपों की सलामी मिलती है।

भूटान—पूर्वी हिमालय में एक स्वाधीन राज्य है। इसका क्षेत्रफल १८ हज़ार मील और जन-संख्या ३ लाख है। यहां के बनों में देवदार बलूट और दूसरे तरह के पेड़ मिलते हैं। दारचीनी भी होती है। कुछ लोग मोटे कम्बल और सूती कपड़े बनाते हैं, यहां की फौज में लगभग ६,००० सिपाही हैं।

भोइका—यह काठियावाड़ में झालावाड़ ज़िले का एक छोटा राज्य है। इसमें तीन गांव शामिल हैं। इसकी आमदनी १५,००० रुपया है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को १,७६० रुपया और जूनागढ़ को २७६ रुपया कर देता है।

भोर—यह बम्बई प्रान्त का सतारा एजेन्सी का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ६१० वर्गमील और जन-संख्या १½ लाख है, इस राज्य में ४८६ गांव हैं। यहां की आमदनी ५,७०,००० रुपया है। धान और नगली यहां की प्रधान उपज है। यह राज्य ४,६८४ रुपया ब्रिटिश सरकार को कर देता है। यहां के जागीरदार ब्राह्मण जाति के हैं।

मकराई—यह होशंगाबाद के ज़िले में एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल २१५ मील और जन-संख्या १७,००० है। इसकी आमदनी २५,००० रुपया है। यहां के गोंड राजा को किसी प्रकार का कर नहीं देना पड़ता है।

मकसूदनगढ़—यह भूपाल एजेन्सी का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ८१ वर्गमील है जन-संख्या १५,००० और आमदनी ३१००० रु० है। अफ़ीम, गेहूँ, ज्वार, बाजरा यहां की उपज है। यहांके राजा राजपूत हैं।

मलेर कोटला—यह पंजाब का एक नवाबी राज्य है। इसका क्षेत्रफल १६५ वर्गमील और जन-संख्या ८३,०७७ है। कपास, गन्ना, अफ़ीम, तम्बाकू, लहसुन, गेहूँ यहां की प्रधान उपज है। इसकी आय ८,५०,००० रुपया है। यहां की फौज में ७६ घुड़सवार, २०० पैदल और १६ तोपखाने के सिपाही हैं। यहां के नवाब को ११ तोपों की सलामी दी जाती है।

मजपुर—यह काठियावाड़ के झालावाड़ का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३ वर्गमील और जन-संख्या ६०० है। इस राज्य की आमदनी ४,००० रुपया है। यह ६०३ रुपया ब्रिटिश सरकार को कर देता है।

मंडी—यह पंजाब की जालन्धर कमिश्नरी में एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ११३६ वर्गमील और जन-संख्या २,०७,४६५ है। इसकी आमदनी १२,२८,००० रुपया है। यह राज्य १ लाख रुपया कर देता है। मंडी का राजवंश सुकेत के राजवंश की एक शाखा है। यहां के राजपूत राजा सेन कहलाते हैं। यहां की फौज में ७०० सिपाही और २५ घुड़सवार हैं। यहां के महाराज को ११ तोपों की सलामी दी जाती है।

मंडवा—यह बम्बई के संखेड़ा मेहवास का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १६ वर्गमील और आमदनी ४०,००० रुपया है। यह राज्य १,६६० रुपया बड़ौदा को कर देता है।

मंगल—यह पंजाब का एक पहाड़ी राज्य है। इसका क्षेत्रफल १२ वर्गमील और जन-संख्या १,२४८ है। इसकी आमदनी ६४,००० रुपया है। यह राज्य ७० रुपया ब्रिटिश सरकार को कर देता है। यहां के राना राजपूत हैं, इनके पूर्वज मारवाड़ से आये थे।

मधन—यह पंजाब का एक छोटा राज्य है। यह कांथल के आधीन है, इसका क्षेत्रफल १३ वर्गमील और जन-संख्या ४३१५ है। इसकी आमदनी २,००० रुपया है, यहां के राजा राजपूत हैं। इनके पूर्वज पहले पहल बिलासपुर से आये थे।

मगोरी—यह बम्बई के रेवाकान्त का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १२,३६२ एकड़ है, इसकी जन-संख्या ३,२०० और आमदनी ६,००० रुपया है। यहां के ठाकुर राठौर राजपूत हैं। वे ईदर राज्य को ६० रुपया कर देते हैं।

महलोग—यह शिमला का एक पहाड़ी राज्य है। इसका क्षेत्रफल ४८ वर्गमील और जन-संख्या १,०००

है। इसकी आमदनी १२,००० रुपया है। यह राज्य १,४५० रुपया ब्रिटिश सरकार को कर देता है। यहां के ठाकुर साहब के यहां ७५ सिपाही रहते हैं।

महरम—खासी पहाड़ियों का एक छोटा राज्य है। इसकी जन-संख्या ८,००० और आमदनी १,००० रुपया है। काली मिर्च, तेजपात, धान, गन्ना, तम्बाकू, आलू, मक्का, अदरख दारचीनी यहां की उपज है, पत्थर और लोहा भी है। यहां के राजा सेम कहलाते हैं।

महुवा—काठियाड़ के हालार का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ७६ वर्गमील और जन-संख्या ३०० है, इसकी आमदनी २,००० रुपया है। यह राज्य १२० रुपया ब्रिटिश सरकार को और ३८ रुपया जूनागढ़ को कर देता है।

मनीपुर—आसाम के पूर्व में एक पहाड़ी राज्य है। इसका क्षेत्रफल ८,६२० वर्गमील और जन-संख्या ४,४५,००० है। इसकी आमदनी ८०,००० रु० है। यहां ५,३४६ पैदल ४०० घुड़ सवार, ५०१ तोपखाने के सिपाही हैं। इनके अतिरिक्त यहां ७०० कूकी फिरके के सिपाही हैं। यहां के राजा के पूर्वज नागा बहारियों से आये थे। १७१४ ई० में गरीब नेवाज नाम का पहला नागा राजा हुआ। वह हिन्दू हो गया। १८७६ की नागा लड़ाई में यहां के राजा ने ब्रिटिश सरकार की बड़ी सहायता की।

मन्सा—गुजरात के मही कान्त का एक राज्य है। इसकी जन-संख्या १२,००० और आमदनी ५०,००० रु० है। यह राज्य ११,७५० रु० बड़ौदा को कर देता है। यहां के ठाकुर राजपूत हैं।

मालिया—यह काठियावाड़ की हालार एजेन्सी का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १०३ वर्गमील और जन-संख्या १२,००० है। इसकी आमदनी ७०,००० रु० है। यह राज्य १,३६७ रु० बड़ौदा और जूनागढ़ को कर देता है। ज्वार, बाजरा, गेहूँ, कपास, गन्ना यहां की उपज है। यहां के ठाकुर राजपूत हैं और कच्छ राजवंश के सम्बन्धी हैं। यह राज्य काठियावाड़ के चौथी श्रेणी के राज्यों में गिना जाता है।

मलपुर—यह गुजरात के मही कान्त का एक राज्य है। इसकी जन-संख्या ११,००० और आय १२,००० रु० है। यह राज्य ४३० रु० ब्रिटिश सरकार को ३६२ रु० ईदर के राव को और २८० रु० बड़ौदा को कर देता है। यहां के रावल राजपूत हैं। इनका ईदर राजवंश की एक शाखा है।

मनत्राओ—यह काठियावाड़ के सोरठ प्रदेश में एक राज्य है। यह अमरेली से २० मील दक्षिण है। इसका क्षेत्रफल ५ वर्गमील और जन संख्या ६०० है। इसकी आय २,००० रु० है। यह १४६ रु० बड़ौदा को और २४ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

माओदोन—यह आसाम में खासी पहाड़ियों का एक राज्य है। इसकी जन-संख्या ४०० है। ज्वार, बाजरा, तेज-पात, शरीफा, नारंगी, सुपारी और मिर्च यहाँ की उपज है। यहाँ चूने का पत्थर और कोयला भी निकलता है। यहां के शासक को सरदार कहते हैं।

माओइओंग—आसाम की खासी पहाड़ियों का एक राज्य है। इसकी जन-संख्या १८०० और आमदनी ५०० रु० है। धान, ज्वार, बाजरा, कपास, शहद, मोम, यहाँ की उपज है। यहाँ ने का पत्थर भी निकाला जाता है। यहाँ के शासक सेम कहलाते हैं।

माओसान राम—यह आसाम की खासी पहाड़ियों में एक छोटा राज्य है। इसकी जन-संख्या १२०० और आमदनी ४०० रु० है। ज्वार, बाजरा, आलू, हलदी, अदरख, शहद यहां की उपज है। यहां चूने का पत्थर, कोयला और लोहा भी पाया जाता है। यहां के शासक सियेम कहलाते हैं।

मरिआओ,—यह खासी पहाड़ियों का एक राज्य है। इसकी जन-संख्या ४००० और आमदनी २०० रु० है। धान, ज्वार, बाजरा, मक्का, और गन्ना यहां की उपज है। यहां के शासक सियेम कहलाते हैं।

मठवर—यह मध्य भारत की भोपावर एजेन्सी में एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १२६ वर्गमील और जन-संख्या ३,००० है। यहां के ठाकुर किसी प्रकार का कर नहीं देते हैं। सालाना आय १४ हज़ार रुपया है।

मटरा टिम्बा—यह काठियावाड़ के झालावार का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ६ वर्गमील और जन-संख्या ५०० है। इसकी आमदनी १,५०० है। यह राज्य २६० रु० ब्रिटिश सरकार को और १७२ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

मिटगनी—यह काठियावाड़ के हालार प्रदेश का एक राज्य है और राजकोट से १५ मील दक्षिण की ओर स्थित है। इसका क्षेत्रफल ३४ वर्गमील और जन-संख्या ४,००० है। इसकी आय २५,००० रु० है। यह ३,४१२ रु० ब्रिटिश सरकार को कर देता है।

मिराज (बड़ी गद्दी)—यह बम्बई प्रान्त के दक्षिणी महाराष्ट्र का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३४२ वर्गमील है। इसकी जनसंख्या ६४,००० और आमदनी ६,२५,००० रु० है। यह राज्य १२,५५८ रु० ब्रिटिश सरकार को कर देता है और ५५४ सिपाहियों की फौज रखता है। मेवाड़ के राजा ब्राह्मण हैं। पहले यह जागीर उनको पेशवा की ओर से मिली थी। यहां के राजा दक्षिणी महाराष्ट्र के प्रथम श्रेणी के सरदारों में गिने जाते हैं। इन्हें प्राणदंड देने का अधिकार है।

मिराज (छोटी गद्दी)—यह दक्षिणी महाराष्ट्र का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १६७ वर्गमील और जन-संख्या ४०,७०० है। इसकी आमदनी २ लाख ८६ हजार रु० है। यह राज्य ७३८६ रु० ब्रिटिश सरकार को कर देता है। यहाँ सिपाहियों की फौज रहती है। यहां के राजा ब्राह्मण हैं। इन्हें प्राणदंड देने का अधिकार है।

मिलीम—यह आसाम की खासी पहाड़ियों में एक राज्य है। इसकी जन-संख्या १३,००० और आमदनी ३,००० रुपया है। धान, आलू, ज्वार, बाजरा, मक्का, अदरख, गन्ना और दारचीनी यहाँ की उपज है। यहाँ लोहा भी पाया जाता है। यहाँ के शासक को सियेम कहते हैं।

मुधोल—यह दक्षिणी महाराष्ट्र का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३६२ वर्गमील और जन-संख्या ५५,००० है, इसकी आय ३ लाख रुपया है। यह राज्य २,६७२ रुपया कर देता है। यहाँ ४४४ सिपाहियों की फौज रहती है। यहाँ के सरदार भोंसला क्षत्रिय हैं और शिवाजी के वंशज हैं। यह दक्षिणी महाराष्ट्र में प्रथम श्रेणी के सरदारों में हैं। इन्हें प्राणदण्ड देने का अधिकार है।

मुहम्मदगढ़—यह भोपाल एजेन्सी में एक नवाबी राज्य है। इसका क्षेत्रफल २६ वर्गमील और जन-संख्या २,६५८ है। इसकी आमदनी १६,००० रुपया है। यहाँ के नवाब पठान हैं। यह किसी प्रकार का कर नहीं देते हैं।

मुलाजिलपुरा—यह गुजरात के महीकान्त का एक राज्य है इसकी जन-संख्या २५० है, यह बड़ौदा राज्य को २२ रुपया कर देता है।

मूली—यह झालावार का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १३३ वर्गमील और जन-संख्या २०,००० है। इसकी आमदनी डेढ़ लाख रुपया है। यह ६३५४ रुपया ब्रिटिश सरकार और जूनागढ़ को कर देता है। यहाँ के ठाकुर परमार राजपूत हैं। इनकी फौज में २२२ सिपाही हैं।

मैहर—यह बघेलखंड का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ४०७ वर्गमील और जन-संख्या ६६,००० है। इसकी आमदनी ४,०८,००० रुपया है। पहले यह राज्य रींवा के आधीन था। फिर इसे पन्ना के राजा ने जीत कर ठाकुर दुर्जनसिंह को दे दिया। १८२६ ई० में ठाकुर दुर्जनसिंह की मृत्यु हो गई। राज्य के बटवारे के सम्बन्ध में झगड़ा हो गया। इससे ब्रिटिश सरकार ने बीच में पड़कर एक भाग (मैहर) एक लड़के (विशुन सिंह) के दूसरा (विजेराघोगढ़) दूसरे लड़के (प्रागदास) को दे दिया। १८५७ में ग़दर में प्रागदास ने बागियों का साथ दिया, इससे उसका राज्य छिन गया। यहाँ के राजा जोगी सम्प्रदाय के हैं। यहाँ के महाराज को ६ तोपों की सलामी दी जाती है।

मेमदपुर—यह गुजरात के महीकान्त का एक राज्य है। इसकी जन-संख्या ७०० और आमदनी १,८०० रु० है। यह राज्य १८० रुपया बड़ौदा को कर देता है।

मेवर्ली—यह बम्बई प्रान्त के रेवाकान्त में पांडु, सेहवास का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ५ वर्गमील और आमदनी ३,००० रुपया है। यह राज्य १,५०० रुपया बड़ौदा को कर देता है।

मेवासा—यह काठियावाड़ के झालावार में एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल २४ वर्गमील और जनसंख्या १,२०० है। इसकी आमदनी ८,००० रुपया है। यह राज्य ४४५ रुपया ब्रिटिश सरकार को और ११८ रुपया बड़ौदा को कर देता है।

मैसूर—यह दक्षिण भारत में एक बड़ा राज्य है। इसका क्षेत्रफल २६,४८३ वर्गमील और जन-संख्या ६५,५३,०२० है। धान, गेहूँ, चना, ज्वार, बाजरा, तेलहन, कपास, तम्बाकू, काली मिर्च और आलू यहां की उपज है। चन्दन के पेड़ बड़े मूल्यवान् हैं। शहतूत के पेड़ों की अधिकता होने से यहाँ रेशम भी बहुत तैयार किया जाता है। इस राज्य में कोलार की खानें भारतवर्ष भर में सर्वप्रसिद्ध हैं। सस्ती बिजली मिल जाने के कारण यहां कई प्रकार के कारबार खुल गये हैं। मैसूर एक प्राचीन राज्य है, यहीं सुग्रीव का राज्य था, हनुमान जी इनके सेनापति थे। १६१० ई० में मैसूर के वोदिया राजा ने श्रृङ्गापट्टम (श्री रङ्गपट्टम्) के किले को जीतकर वर्तमान मैसूर राज्य की नींव डाली। यहां के राजा यदुवंशी हैं, इनके पूर्वज १३६६ ई० में द्वारका (काठियावाड़) से आये थे। १७३४ ई० में हैदरअली ने राजा को गद्दी से उतार कर

अपना राज्य स्थापित कर लिया। उसका बेटा टीपू सुलतान १७९९ ई० में श्रृङ्गापट्टम की लड़ाई में मारा गया। इसके बाद पुराना राजवंश यहां की गद्दी पर बिठाया गया, लेकिन इसके बाद यहां ब्रिटिश आधिपत्य हो गया। १८३१ ई० में यहां का राजा गद्दी से उतार दिया गया। १८८१ ई० में मैसूर का राज्य मैसूर के राजा को सौंप दिया गया। इसके कुछ ही वर्ष बाद मैसूर राज्य में कला-कौशल और शिक्षा में इतनी उन्नति हुई कि यह भारत के प्रथम श्रेणी के ५ राज्यों में गिना जाता है। यहां के महाराजा को २१ तोपों की सलामी दी जाती है। राज्य की सालाना आय ३,८६,४३,००० रुपया है।

मोर्वी—यह काठियावाड़ का एक राज्य है। इसका चेत्रफल ८०० वर्गमील और जनसंख्या १,३०,००० है। ज्वार, बाजरा, कपास और गन्ना यहां की उपज है। इसकी आय ९ लाख रुपया है। यह राज्य ६१,५६० रुपया ब्रिटिश सरकार, बड़ौदा और जूनागढ़ को कर देता है। यहां ४१७ सिपाहियों की फौज रहती है। यहां के ठाकुर राजपूत हैं। इन्हें फांसी के मुकदमे फैसल करने का अधिकार है। यहां की आय ४ लाख रुपया है।

मोटा कोटानी—यह महीकान्त का एक राज्य है। इसकी जन-संख्या ६०० और आय १,००० रुपया है।

मोहनपुर—यह गुजरात के महीकांठा का एक छोटा राज्य है। इसकी जन-संख्या १५,००० है। इसकी आमदनी २५,००० रुपया है। यह राज्य ४७५० रुपया बड़ौदा को २२५० रुपया ईदर को और ८ रुपया ब्रिटिश सरकार को कर देता है। यहां के ठाकुर राजपूत हैं।

मोका पगिनू मुवादू—यह गुजरात के पांडु, मेहवास का एक राज्य है। इसका चेत्रफल ½ वर्गमील है। इसकी आमदनी ३०० रुपया है। यह १२५ रुपया बड़ौदा को कर देता है।

मोनवेल—यह काठियावाड़ के सोराठ प्रान्त का एक राज्य है। इसका चेत्रफल २१ वर्गमील और जनसंख्या ३,००० है। इसकी आमदनी २५,००० रुपया है। यह राज्य ३१२ रुपया बड़ौदा को कर देता है।

मोरचोपना—यह काठियावाड़ में गोहेलवार का एक राज्य है। इसका चेत्रफल ८८ वर्गमील और जन-संख्या ८०० है। इसकी आमदनी ८०० रुपया है। यह १५४ रुपया बड़ौदा को और ९ रुपया जूनागढ़ को कर देता है।

रतानमाल—यह मध्य भारत का एक छोटा राज्य है। इस राज्य का चेत्रफल ३२ वर्गमील और जन-संख्या २,१८३ है। इस राज्य की सालाना आय, २५,००० रुपये है। यहाँ के वर्तमान शासक ठाकुर 'दशरथसिंह हैं।

रतनापुर धामानका—गोहेलवाड़, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त में यह एक छोटा सा राज्य है। इसमें केवल ३ गाँव हैं। यहां की जन-संख्या ९२१ है, इस राज्य की सालाना आय ५,८५० रुपये है। यह राज्य ७५३ रुपये बड़ौदा राज्य और १५० रु० जूनागढ़ को सालाना कर देता है।

रातेश—यह एक पंजाब प्रान्त का छोटा सा राज्य है। इसका चेत्रफल ३ वर्गमील तथा जन-संख्या ५०० है। इस राज्य की सालाना आय ७०० रुपये है, यहाँ के शासक ठाकुर कहलाते हैं।

रतलाम—पश्चिमी मालवा में मध्य भारत का एक राज्य है। इसका चेत्रफल ६९३ वर्गमील और जन-संख्या १,०७,३२१ है। इस राज्य की सालाना आय १० लाख रुपये है। यह राज्य ६६,००० रुपया सालाना ब्रिटिश सरकार को कर देता है। इस राज्य की सेना में १३६ सवार, १९८ पैदल, ५ तोपें और १२ तोप चलाने वाले सैनिक हैं।

यहाँ के शासक राठौर हैं और यह राज्य पश्चिमीय भारतीय राज्यों में प्रथम श्रेणी में गिना जाता है। यहाँ के महाराज को १३ तोपों की सलामी दी जाती है।

राजगढ़—मध्य भारत में डाईमिल एजेन्सी का ठाकुरों का राज्य है। इस राज्य में २ गांव हैं और यहां की जन-संख्या १,०५२ है।

यहाँ के शासक या भूमिया के पास एक क़िला और २ गाँव हैं। इनको ब्रिटिश सरकार की ओर से सनद प्राप्त है। यहाँ का चेत्रफल ३६ वर्गमील और सालाना आमदनी १०,००० रुपया है।

राजकोट—हालार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का यह एक राज्य है। इसका चेत्रफल २८३ वर्गमील और जन-संख्या ७५,५४० है। यहां की मुख्य उपज कपास और गन्ना है। इस राज्य की सालाना आय १५,५०,००० रु० है। यह राज्य २१,३२० रुपये ब्रिटिश सरकार और जूनागढ़ को कर देता है। राज्य की सेना में ३३६ सैनिक हैं।

यह राज्य नवानगर की एक शाखा है और काठियावाड़ का द्वितीय श्रेणी का राज्य है। यहाँ के शासकों को अपनी प्रजा को प्राणदण्ड देने का अधिकार है।

राजगढ़—मध्य भारत के मालवा प्रदेश में भोपाल एजेन्सी का एक राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल ६१२ वर्गमील और जन-संख्या १,३४,८६१ है। इस राज्य की सालाना आय ६,५०,००० रुपया है। यह राज्य ८५,१७२ रुपये सिंधिया को और १,००० रुपये झालावार को कर देता है।

यहाँ के शासक राजपूत हैं वे अपने को राजा भोज तथा महाराज विक्रमादित्य के वंशज बताते हैं। रावत मोतीसिंह ने मुसलमानों का धर्म स्वीकार कर लियाथा। और उनको ब्रिटिश सरकार द्वारा नवाब की पदवी मिली थी। १८८० में उनकी मृत्यु के पश्चात् बख्तियार सिंह गद्दी पर बैठे। १८८२ में उनकी भी मृत्यु हो गई और उनके पुत्र बाल बहादुर सिंह गद्दी पर बैठे। जब इनके बाबा (मोती सिंह) मुसलमान हुए थे तो ये बिलकुल बालक थे। इसलिये इनके जाति वालों ने इन्हें फिर अपने धर्म में ले लिया।

इस राज्य की सेना में २४० सवार ३६० पैदल ४ रणस्थल तोपें और ८ दूसरी तोपें तथा १२ तोप चलाने वाले सैनिक हैं। महाराज को ११ तोपों की सलामी दी जाती है।

राजपुर—झालावार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का यह एक छोटा सा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १५ वर्गमील है और इसमें २ गाँव हैं। इस राज्य की जन-संख्या १६७४ है और सालाना आय १४,००० रुपये है। यह राज्य २४१० रुपया ब्रिटिश सरकार को और १८६ रुपया जूनागढ़ को कर देता है।

राजपुर—बम्बई प्रान्त में रेवाकांठा एजेन्सी का एक छोटा सा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १½ वर्गमील और सालाना आय २६० रुपये है। यह राज्य ५१ रुपये सालाना बड़ौदा राज्य को कर देता है।

राजपुरा—हालार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक छोटा सा राज्य है। यह राजकोट के १४ मील दक्षिण पूर्व स्थित है। इसका क्षेत्रफल १ वर्गमील है और इसमें ७ गाँव हैं। इसकी जन-संख्या २०६४ है और सालाना आय १२,००० रुपया है। यह राज्य २६२० रुपये भारत सरकार को और २४० रुपये जूनागढ़ को कर देता है।

राजपाड़ा—गोहेलवार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का यह एक छोटा सा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १ वर्ग-मील है और इसमें केवल एक ही गांव है। इस राज्य की जन-संख्या ६१० है और सालाना आय २,५२० रुपये है। यह राज्य २५६ रुपया बड़ौदा को और १८ रुपये जूनागढ़ को सालाना कर देता है।

राजपिप्पला—बम्बई प्रान्त में रेवाकान्त एजेन्सी का एक देशी राज्य है। यहां का क्षेत्रफल १५१७ वर्गमील और जन-संख्या २,०६,११४ है। इस राज्य में २१२ गांव हैं। इस राज्य की सालाना आय ३०,००,००० रुपया है। यह राज्य ६५,००० बड़ौदा राज्य को कर देता है। यहां की सेना में ५५६ सैनिक हैं।

यहां के शासक अपने को उज्जैन घराने से बताते हैं। भोनागढ़ घराना इसी की एक शाखा है। यह घराना राज-पिप्पला में १,४७० से राज्य कर रहा है। यहां के शासकों को प्राणदण्ड देने का अधिकार है और इनको ११ तोपों की सलामी दी जाती है।

राघूगढ़—यह मध्य भारत का एक राज्य है। इस राज्य में १२० गांव हैं। और यहां की जन-संख्या १६,६२० है। इस राज्य की सालाना आय २४,००० रुपया है। यहां के शासक राजपूत हैं।

रायगढ़—यह राज्य मध्य भारत सम्भलपुर में स्थित है। इसका क्षेत्रफल १,४८६ वर्गमील और जन-संख्या २,७७,५६६ है। इस राज्य की सालाना आय ५,६०,१०४ रुपया है। यह राज्य ४०० रुपये सालाना कर ब्रिटिश सरकार को देता है।

यहां के शासक गोंड हैं। इनके पूर्वज दरयास सिंह ने मरहठों की सहायता की थी तो उसे राजा की पदवी मिली थी। यहां के वर्तमान शासक चक्रधर सिंह हैं।

राधनपुर—बम्बई प्रान्त में पालनपुर एजेन्सी का एक देशी राज्य है। यहां का क्षेत्रफल १,१५० वर्गमील और जन-संख्या ६८,१२६ है। इस राज्य की उपज कपास, गेहूँ, चना, जौ, बाजरा, ज्वार, उर्द, मूङ्ग, अरहर इत्यादि हैं। राज्य की सालाना आय ६,००,००० रुपये है। राज्य की सेना में २४८ सवार और ३६२ पैदल सैनिक हैं।

यहां के नवाब बीबी वंश के हैं। बोबी वंश वाले भारत में हुमायूँ मुग़ल सम्राट के समय में आये थे। औरङ्गज़ेब के बाद यह लोग राधनपुर में आ बसे और अपना राज्य स्थापित किया। इनको अपनी प्रजा को प्राण दण्ड देने का अधिकार प्राप्त है। यहां के नवाब को ११ तोपों की सलामी दी जाती है।

रामास—बम्बई प्रान्त में माहीकांठा एजेन्सी का एक छोटा सा राज्य है। इसका क्षेत्रफल २,५६२ एकड़

और जन-संख्या १,७४५ है। इस राज्य की सालाना आय २,४४० रुपया है। यह राज्य १९८ रुपया बड़ौदा राज्य को सालाना कर देता है। यहां के शासक मुसलमान हैं।

रामबराई—आसाम प्रान्त में खासी पहाड़ी का यह एक राज्य है। यहां की जन-संख्या २,२०२ है और राज्य की सालाना आय ४४० रुपया है। राज्य की मुख्य उपज, चावल, बाजरा, अदरख आदि हैं। यहाँ के शासक "सीम" कहलाते हैं।

रामद्रुग—बम्बई प्रान्त में दक्षिणी मरहठा एजेन्सी का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १४० वर्गमील और जन-संख्या २९,५७० है। यहाँ की सालाना आय १,२३,६०० रुपया है राज्य की सेना में ४४७ सैनिक हैं।

यहाँ के शासक ब्राह्मण हैं। और दकन में प्रथम श्रेणी के सर्दार माने जाते हैं। इनको प्राणदंड देने का अधिकार तथा गोद लेने की सनद प्राप्त है।

राजपुर अली—भोपावर एजेन्सी में नर्मदा नदी और विन्ध्याचल के बीच में मध्य भारत का यह एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ८३७ वर्गमील और जन-संख्या २९,००० है। इस राज्य की सालाना आय ९५,००० रुपया है। यह राज्य ११,००० रुपये ब्रिटिश सरकार और धार राज्य को कर देता है। राज्य में २ तोपें और ९ सवार हैं।

यहाँ के शासक राजपूत हैं और उनका सम्बन्ध उदयपुर घराने से है। महाराज को ९ तोपों की सलामी दी जाती है।

रामानका—गोहिल, काठियावड़ में बम्बई प्रान्त का यह एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल २ वर्गमील और जन-संख्या ५०९ है। इस राज्य की सालाना आय १,५०० रुपया है। यह राज्य ५७० रुपये बड़ौदा राज्य को और १० रुपया जूनागढ़ को कर देता है।

रानीगाम—गोहिलवार में बम्बई का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३ वर्गमील और जन-संख्या ७३९ है। इस राज्य की सालाना आय २५,५६० रु० है। यह राज्य ७१४ रुपये बड़ौदा राज्य को कर देता है।

रानपुर—यह राज्य उड़ीसा प्रान्त में स्थित है इसका क्षेत्रफल २०३ वर्गमील तथा जन-संख्या ३६,५३९ है। इस राज्य की सालाना आय ३०,००० रुपया है। यह १४०० रुपये ब्रिटिश सरकार को सालाना कर देता है।

रायका—यह बम्बई प्रान्त में रेवाकांठा एजेन्सी का एक छोटा देशी राज्य है। इसका क्षेत्रफल १½ वर्गमील है। इस राज्य की सालाना आय १,७०० रुपये है। यह राज्य १,२०० रुपया बड़ौदा राज्य को कर देता है।

रायरा खोल—सम्भलपुर ज़िले में मध्य भारत का यह एक छोटा सा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ८३३ वर्गमील और जन-संख्या ३५,७१० है। यहां की उपज चावल, दाल, तेलहन, गन्ना और कपास है। इस राज्य की सालाना आमदनी १,०३,०७२ रुपया है। यह राज्य ५८० रुपये ब्रिटिश सरकार को कर देता है। यहां के शासक राजपूत हैं।

राय संकली—झालावार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का यह एक छोटा सा राज्य है। इस राज्य में केवल २ गाँव हैं और क्षेत्रफल ६ वर्गमील है। यहाँ की जनसंख्या ७२१ है। राज्य की सालाना आय ६,००० रुपया है, यह राज्य ५५६ रुपया ब्रिटिश सरकार को और ३८० रुपया जूनागढ़ को कर देता है।

रामपुरा—बम्बई प्रान्त में रेवाकांठा एजेन्सी का एक छोटा सा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ४½ वर्गमील है। इस राज्य की सालाना आय ५,५८० रुपया है। यह राज्य १४२२ रुपया बड़ौदा राज्य को कर देता है।

रानासाम—बम्बई प्रान्त में माहीकांठा एजेन्सी का एक राज्य है। यहाँ का क्षेत्रफल १६,६१२ एकड़ तथा जन-संख्या ४,८४० है। इस राज्य की सालाना आय १५,००० रुपये है। यह राज्य ३७० रुपये बड़ौदा राज्य को, ७५० रुपये ईदर राज्य को और ३ रुपये ब्रिटिश सरकार को सालाना कर देता है।

यहां के शासक राजपूत हैं और उनकी उपाधि ठाकुर की है।

रांधिया—गोहिलवार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक छोटा सा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३ वर्गमील तथा जनसंख्या ५३९ है। इस राज्य की सालाना आय २५,००० रुपया है।

रामपैदा—झालावार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक छोटा सा राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल ५ वर्गमील है और राज्य में केवल एक गाँव है। यहां की जनसंख्या ४२३ है। राज्य की सालाना आमदनी १०३० रुपया है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को ७५ रुपया सालाना कर देता है।

रामपुर—रोहेलखण्ड में संयुक्त प्रान्त का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ८९९ वर्गमील तथा जन-

संख्या ४,६४,६१६ है। इस राज्य की सालाना आय ४५,१६,६८५ रुपया है।

राज्य की सेना में ५७० सवार १,०३० पैदल, २८ तोपें और ३०० तोप चलाने वाले सैनिक हैं।

यह राज्य सत्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में रोहेला अफ़ग़ानों द्वारा स्थापित किया गया था, ग़दर के समय में यहां के नवाब ने ब्रिटिश सरकार की सहायता की थी और उसके बदले भूमि और दूसरे इनाम पाए थे। यहां के नवाब को प्राणदण्ड देने का अधिकार प्राप्त है और उनको १५ तोपों की सलामी दी जाती है।

रींवा—बुन्देलखन्ड एजेन्सी में मध्य भारत का एक मुख्य राज्य है। इसका क्षेत्रफल १३,००० वर्गमील और जनसंख्या १५,८७,४४५ है। इस राज्य की सालाना आय ६०,००,००० रुपया है। राज्य की सेना में ३७१ सवार, ५६४ पैदल, ६ रणक्षेत्र की तोपें और ७७ तोप चलाने वाले हैं।

इस राज्य की नीव लगभग ५८० ईस्वी के गुजरात निवासी वियाग देव ने डाली थी। ग़दर के समय यहां के महाराज ने ब्रिटिश सरकार की बड़ी सहायता की, उसके बदले में ब्रिटिश सरकार ने उनको भूमि और नाईट ग्रैंड कमांडर आफ दि स्टार आफ् इन्डिया की पदवी प्रदान की। आपको गोद लेने की भी सनद प्राप्त है और १६ तोपों की सलामी दी जाती है।

रूपाल—माहीकांठा एजेन्सी में बम्बई प्रान्त का एक देशी राज्य है। इस राज्य में ११ गांव हैं, इसकी जनसंख्या ३,४६७ है और सालाना आय, ३,५०० रुपये है। यह राज्य १,१६४ रु० ८ आ० बड़ौदा राज्य को और ३६२ रुपये ईडर राज्य को कर देता है। यहाँ के शासकों की उपाधि ठाकुरों की है।

रेनगन—बम्बई प्रान्त की रेवाकांठा एजेन्सी का यह एक छोटा सा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ४ वर्गमील है इस राज्य की सालाना आय १,०४० रुपये है। यह राज्य ४६१ रुपये बड़ौदा राज्य को कर देता है।

रोहीसाला—गोहिलवार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक छोटा सा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १ वर्गमील और जन-संख्या ३५४ है। इस राज्य की सालाना आय ३,१०० रुपये है। यह राज्य १०३ रुपये बड़ौदा राज्य को और ८० रुपये जूनागढ़ राज्य को सालाना कर देता है।

लकापदार—काठियावाड़ के झालावार में एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ५ वर्गमील और जन-संख्या ५०० है। इसकी आय ४,००० रुपया है। यह राज्य १५४ रुपया बड़ौदा सरकार को और २४ रुपया जूनागढ़ को कर देता है।

लखतर—यह काठियावाड़ का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल २४७ बर्गमील और जनसंख्या २५,००० है। कपास, ज्वार, बाजरा यहां की प्रधान उपज है। इसकी आय ७५,००० रुपया है। यह राज्य ७,३५१ रुपया ब्रिटिश सरकार और जूनागढ़ को कर देता है। यहां के ठाकुर राजपूत हैं।

लवा—राजपूताना का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १८ वर्गमील और जन-संख्या २,८०० है। यहां के राजा जैपुर राज-वंश के सम्बन्धी हैं।

लालियाद—यह काठियावाड़ में झालावाड़ का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ४ वर्गमील और जन-संख्या ८०० है। इसकी आय ३,००० रु० है। यह ३६५ रु० ब्रिटिश सरकार को कर देता है।

लॉग्रिन—यह आसाम में खासी पहाड़ियों का एक राज्य है। इसकी जन-संख्या १,२०० है। यहां की आय २,००० रु० है। धान, ज्वार, बाजरा, लाल मिर्च, हल्दी नींबू यहां की उपज है। यहाँ के शासक बोर कहलाते हैं।

लाठी—यह काठियावाड़ के गोहेलवार का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ४८ वर्गमील है। इसकी जन-संख्या ७,००० और आमदनी १५,००० रु० है। यह राज्य २,००७ रु० बड़ौदा और जूनागढ़ को कर देता है। यहाँ के ठाकुर राजपूत हैं। काठियावाड़ के राज्यों में यह द्वितीय श्रेणी का राज्य गिना जाता है।

लिखी—यह बम्बई के माहीकांठा का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १,६०० एकड़ और जन-संख्या १,५०० है। इसकी आमदनी १,६०० रु० है। यहाँ के ठाकुर मुखबन कोली हैं।

लिभ—यह काठियावाड़ के गोहेलवार में एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ७ वर्गमील और जन-संख्या २,००० है। इसकी आमदनी ३०,००० रु० है। यह राज्य ६३४ रु० बड़ौदा को और २७८ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

लिमरी—यह काठियावाड़ के झालावार में एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३२४ वर्गमील है। इसकी जनसंख्या ४५,००० रु० और आय ३ लाख है। यह राज्य

४५,३५५ रु० ब्रिटिश सरकार और जूनागढ़ को कर देता है। लिमरी के ठाकुर राजपूत हैं। उनकी फौज में १६० सिपाही हैं यह राज्य काठियावाड़ के द्वितीय श्रेणी के राज्यों में गिना जाता है।

लितार गोतरा—यह बम्बई के रेवाकान्त का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १$\frac{3}{4}$ वर्गमील और आमदनी ७०० रु० है। यह राज्य २०० रु० बड़ौदा को कर देता है।

लुघासी—बुन्देलखंड का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ४५ वर्गमील है। इसकी जन-ससंख्या ७,००० और आमदनी ३१,००० रु० है। गदर में अँग्रेज़ों की सहायता करने के बदले यहां के राव बहादुर को २,००० रु० वार्षिक आमदनी की एक जागीर इनाम में मिली थी।

लुनपारा—गुजरात के रेवाकान्त का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३८८ वर्गमील और जन-संख्या ८०,००० है। लकड़ी और अनाज यहां की उपज है। इस राज्य की आमदनी २ लाख रुपया है। यह राज्य १८,००० रु० ब्रिटिश सरकार और बड़ौदा को कर देता है। यहां के ठाकुर राजपूत हैं। इनके पूर्वज १४३४ ई० में यहां आकर बस गये थे। इनको ९ तोपों की सलामी दी जाती है।

लोधिका—यह काठियावाड़ के हालार प्रान्त का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १५ वर्गमील और जन-संख्या ५,००० है। इसकी आमदनी ३०,००० रु० है। यह राज्य १,२८७ रु० ब्रिटिश सरकार को और ४०५ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

लोहारू—यह पंजाब की हिसार कमिश्नरी में एक नवाबी राज्य है। इसका क्षेत्रफल २२६ वर्गमील और जन-संख्या २२,३३८ है। यहां की आमदनी १,१९,००० रु० है। पहले यहां का मुग़ल सरदार अलवर राज्य में नौकर था। उसने १८१४ में लार्ड लेक की फौजी सहायता की तभी से उसे यह इलाका इनाम में मिल गया। उसे २०० घुड़सवारों का एक रिसाला ब्रिटिश सरकार के लिये रखना पड़ता है। यहां के महाराज को ९ तोपों की सलामी दी जाती है।

वस्सावाद—काठियावाड़, बम्बई प्रान्त का यह एक देशी राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल ६४ वर्गमील और जन-संख्या ३,८३३ है। इस राज्य की सालाना आमदनी २०,००० रुपया है। यह राज्य ७६६ रुपया ब्रिटिश सरकार को कर देता है।

वराही—पालनपुर, बम्बई प्रान्त में एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३३० वर्गमील और जन-संख्या २१,३७६ हैं। इस राज्य की मुख्य उपज ज्वार, बाजरा, चना, मटर, जौ, गेहूँ और कपास है। इस राज्य की सालाना आय ४०,००० रुपये है।

इस राज्य के मालिक ईसा ने स्थापित किया था। यहां के शासक मुसलमान जाट हैं।

वरभा—आसाम प्रान्त में खासी पहाड़ियों का एक राज्य है। इसकी जन-संख्या ४५५ है। इस राज्य की सालाना आय १,८२० रुपये है। इस राज्य की मुख्य उपज धान, तेजपात काली मिर्च और नींबू है। यहाँ शासकों की पदवी सीन की है।

वाओ—पालनपुर, बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३,०८० वर्गमील है। इस राज्य की जन-संख्या २७,७३५ है। राज्य की सालाना आमदनी ३०,००० रुपये है। बाजरा, अरहर, उर्द, मूंग यहाँ की मुख्य उपज है। राज्य की सेना में ५० सैनिक हैं।

यहाँ के शासक राजपूत हैं। और दिल्ली के चौहान राजपूत पृथ्वीराज के वंशज हैं।

वाओरी धारवाल—गोहिलवार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ४ वर्गमील है। इस राज्य की जन-संख्या २,२१७ है। इस राज्य की सालाना आमदनी १०,०५० रु० है। यह राज्य १२९६ रुपये बड़ौदा को और २३४ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

वाओरी वाछनी—गोहिलवार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का यह एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ७१ वर्गमील और जन-संख्या २७५ है। इस राज्य की सालाना आमदनी ३,००० रुपये है। यह राज्य २९८ रु० बड़ौदा राज्य को ५६ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

वारगाम—बम्बई प्रान्त में माहीकांठा एजेन्सी का एक राज्य है। इस राज्य में १९ गांव हैं और यहां की जन-संख्या ३,४४६ है। इस राज्य की सालाना आमदनी ९ ५०० रुपये है।

यहां के शासक राजपूत हैं और ठाकुर कहलाते हैं।

वांकनेर—झालावार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ४१७ वर्गमील और जन-संख्या ४४,२८० है। इसकी सालाना आय ७,२५,३०० रु० है। इस राज्य की मुख्य उपज कपास, गन्ना, ज्वार, बाजरा, जौ, चना और नमक है। राज्य की सेना में

२४२ सैनिक हैं। यह राज्य १८,८७६ रु० ब्रिटिश सरकार और जूनागढ़ को कर देता है।

यहां के शासक राजपूत हैं और द्वितीय श्रेणी के गिने जाते हैं। इनकी पदवी राजा साहब की है। राजासाहब को अपनी प्रजा को प्राणदंड तथा जीव दान का अधिकार प्राप्त है।

वजिरिया—बम्बई प्रान्त में रेवाकान्त एजेन्सी का एक राज्य है। इस राज्य का चेत्रफल २१ वर्गमील है। राज्य की सालाना आय ३२,८४० रुपया है। यह राज्य ५,००७ रुपया बड़ौदा राज्य को कर देता है।

वाकतापुर—बम्बई प्रान्त में रेवाकान्त एजेन्सी का एक छोटा सा राज्य है। इस राज्य का चेत्रफल १¾ वर्गमील और सालाना आय ६६० रुपया है। यह राज्य १२७ रु० बड़ौदा को सालाना कर देता है।

वादल—गोहिलवार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इस का चेत्रफल २ वर्गमील और जन-संख्या ५४५ है। इस राज्य में केवल एक गांव है। और इस राज्य की सालाना आमदनी २,५५० रुपया है। यह राज्य १५४ रुपया बड़ौदा राज्य को कर देता है।

वादाली—हालार, काठियावाड़ का एक देशी राज्य है। इस का चेत्रफल २ वर्गमील और जन-संख्या ५६० है। इस राज्य में केवल एक गाँव है। इस राज्य की सालाना आय २,००० रुपया है। यह राज्य २४६ रु० बृटिश सरकार को और ७८ रु० जूनागढ़ राज्य को देता है।

वाधवान—झालावार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का यह एक राज्य है। इस का चेत्रफल २३७ वर्गमील और जन-संख्या ४२,५०० है। इस राज्य की सालाना आय ४,००,००० रुपया है। यह राज्य २८,६६१ रुपया ८ आने बृटिश सरकार और जूनागढ़ को सालाना कर देता है। इस राज्य की सेना में ४३८ सैनिक हैं।

यहां के शासक राजपूत हैं और उन की पदवी ठाकुर साहब की है। यह राज्य गुजरात प्रान्त में द्वितीय श्रेणी का गिना जाता है। यहाँ के ठाकुर साहब को अपनी प्रजा को प्राण दण्ड देने का अधिकार प्राप्त है।

वागवारी—काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का यह एक छोटा सा राज्य है। इस राज्य का चेत्रफल ३ वर्गमील और जन-संख्या ८६ है। इस राज्य की सालाना आमदनी १,२०० रुपया है। यह राज्य १३५ रु० बड़ौदा राज्य को और १६ रुपया जूनागढ़ को कर देता है।

वानमाला—बम्बई प्रान्त में रेवाकान्त एजेन्सी का यह एक राज्य है। इस का चेत्रफल १० वर्गमील और जन-संख्या ५,००० है। यह राज्य १३० रुपया ४ आना बड़ौदा राज्य को कर देता है। यहाँ के शासकों को ठाकुर कहते हैं।

वाना—झालावार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक देशी राज्य है। इस राज्य का चेत्रफल २४ वर्गमील और जन-संख्या ३,४६४ है। इस राज्य की सालाना आय २२,३१० रुपया है। यह राज्य ३,७१५ रु० बृटिश सरकार को और २७८ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

वानोद—झालावार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इसका चेत्रफल ५८ वर्गमील और जन-संख्या ६,७६६ है। इस राज्य की सालाना आय १२,१०० रुपया है। यह राज्य १६५३ रु० बृटिश सरकार को कर देता है।

वानला—झालावार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का यह एक राज्य है। इस राज्य का चेत्रफल ३ वर्गमील और जन-संख्या ६२५ है। इस राज्य में केवल एक गाँव है। इस राज्य की सालाना आय २,६७० रुपया है। यह राज्य २६६ रुपया सालाना ब्रिटिश सरकार को कर देता है।

वानगादरा—गोहिलवार काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक छोटा सा राज्य है। इस राज्य में केवल एक गांव है। इस राज्य की सालाना आमदनी २,००० रुपया है। यह राज्य ७६ रु० बड़ौदा राज्य को और २५ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

वारनोली मोती—बम्बई प्रान्त में रेवाकान्त एजेन्सी का एक राज्य है। इस का चेत्रफल १ वर्गमील और सालाना आमदनी ४१० रुपया है। यह राज्य १०१ रुपया बड़ौदा राज्य को कर देता है। यहाँ के शासक राठौर हैं।

बारनोली नानी—रेवाकान्त एजेन्सी में बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इस का चेत्रफल एक वर्गमील और सालाना आमदनी ३०० रुपया है। यह राज्य २५ रुपया सालाना बड़ौदा राज्य को कर देता है।

बारनोल माल—बम्बई प्रान्त में रेवाकान्त एजेंसी का एक राज्य है। इसका चेत्रफल ३½ वर्गमील और सालाना आमदनी ७०० रुपया है। इस राज्य में केवल ५ गाँव हैं। यह राज्य ८५ रुपया बड़ौदा राज्य को कर देता है।

वारोद—झालावार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इस राज्य का चेत्रफल १४ वर्ग-

मील है और राज्य की जन-संख्या १२६० है। इस राज्य की सालाना आय २१,००० रुपया है। यह राज्य १२५१ रु० बड़ौदा राज्य को और २७८ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

वारोद द्वितीय—गोहिलवार काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इस का क्षेत्रफल २ वर्गमील और जन-संख्या ८७७ है। इस राज्य की सालाना आय २२०० रुपया है। यह राज्य ६४० रु० बड़ौदा राज्य को और १६२ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

वारसारो—माहीकांठा एजेंसी बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इस राज्य में ६ गाँव हैं। इस राज्य की जन-संख्या ४०५१ है। और सालाना आमदनी १२,०८० रु० है। यह राज्य १,२८२ रु० ८ आना बड़ौदा राज्य को कर देता है। इस राज्य के शासक चऔरा राजपूत हैं।

वाला—गोहिलवार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल १४० वर्गमील और जन-संख्या १७,०१६ है। इस राज्य की सालाना आमदनी १,३५,००० रुपया है। यह राज्य ६,२०२ रुपया बड़ौदा और जूनागढ़ राज्य को सालाना कर देता है। इस राज्य की सेना में १४६ सैनिक हैं।

यहाँ के शासक राजपूत हैं और उनको ठाकुर कहते हैं। ये काठियावाड़ में त्रितीय श्रेणी के गिने जाते हैं।

वालासना—बम्बई प्रान्त में माहीकांठा एजेंसी का एक राज्य है। इस राज्य में १० गाँव हैं। इस राज्य की सालाना आय ७,२४० रुपया है। यह राज्य २८० रुपया बड़ौदा राज्य को सालाना कर देता है। यहाँ के शासक राजपूत हैं।

वासन सेवादा—रेवाकांठा एजेन्सी बम्बई का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ५½ वर्गमील और सालाना आमदनी ५,१७० रुपया है। यह राज्य बड़ौदा राज्य को १,१५० रुपया सालाना देता है। यहां के शासक राठौर कालू बवा कहलाते हैं।

वासन वीरपुर—रेवाकांठा एजेन्सी बम्बई का एक राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल १२½ वर्गमील और सालाना आय १०,००० रुपया है। यह राज्य बड़ौदा राज्य को ४३२ रुपया सालाना कर देता है।

वासना—माहीकांठा एजेन्सी बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इस राज्य में ५३६७ एकड़ भूमि में खेती होती है। इस राज्य की सालाना आय १२,००० रुपया है। यह राज्य बड़ौदा राज्य को ३१०८ रुपया ८ आना सालाना कर देता है। यहां के शासक राठौर राजपूत हैं। और ज्येष्ठ पुत्र राजगद्दी पर बैठता है।

विछावद—दक्षिण काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक छोटा सा राज्य है। इस राज्य में केवल एक गांव है। इस राज्य की सालाना आमदनी ३५०० रुपया है।

विनचूर—नासिक ज़िले में बम्बई, प्रान्त का राज्य है। इस राज्य में ५० गांव हैं, इस राज्य की जन-संख्या ३०,००० है और राज्य की सालाना आय ७३,००० रुपये है। यहां के शासक को एक प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट का अधिकार है।

विशालगढ़—कोल्हापुर एजेन्सी में बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल २३५ वर्गमील और जन-संख्या ३१,०६४ है। इस राज्य की सालाना आमदनी १,२६,००० रुपया है। यह राज्य ५,६८० रुपया कोल्हापुर को कर चुकाता है। इस राज्य की सेना में ६१ सैनिक हैं। यहां के शासक ब्राह्मण हैं और उनकी पदवी प्रतिनिधि की है।

विथालगढ़—झालावार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल २३ वर्गमील और जन-संख्या १६१६ है। इस राज्य की सालाना आय १५,००० रुपया है।

वीरपुर—हालार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल २६ वर्गमील है। इस राज्य की जन-संख्या ५३३८ है और सालाना आमदनी ३५,४६० रुपये है। यह राज्य ४११८ रुपये सालाना ब्रिटिश सरकार को और जूनागढ़ राज्य को कर देता है।

इस राज्य के सेना में ४६ सैनिक हैं। यहां के शासक राजपूत हैं और ठाकुर कहलाते हैं। यह काठियावाड़ प्रान्त में चतुर्थ श्रेणी के राजा हैं।

वीरवा—हालार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ७६ वर्गमील है, इस राज्य की जन-संख्या १७६ है। और सालाना आय १००० रुपया है। यह राज्य १४६ रुपया ब्रिटिश सरकार को और ४४ रुपया जूनागढ़ राज्य को देता है।

वेजानोनेस—गोहिलवार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल २६ वर्गमील और जन-संख्या १५७ है, इस राज्य की सालाना आय ४६० रुपया है। यह राज्य ३१ रुपया सालाना बड़ौदा राज्य को कर देता है।

वेकरो—सूरत, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ८ वर्गमील और जन-संख्या ७७४ है। इस राज्य की सालाना आमदनी ४००० रु० है। यह राज्य ५० रु० सालाना बड़ौदा राज्य को कर देता है।

वोहोरा—रेवाकांठा एजेन्सी बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३$\frac{1}{2}$ वर्गमील है। इस राज्य में चार गांव हैं और सालाना आय ६५०० रुपया है। यह राज्य ८५२ रुपया बड़ौदा राज्य को कर देता है।

शाहपुर—काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक छोटा सा राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल १० वर्गमील और जन-संख्या १२३७ है। इस राज्य में केवल चार गांव हैं और राज्य की सालाना आमदनी ६५०० रुपया है। यह राज्य ४६४ रु० ब्रिटिश सरकार को और १४६ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

शाहपुरा—राजपूताना एजेन्सी में एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ४०५ वर्गमील और जन-संख्या ५४,२३३ है। इस राज्य की सालाना आमदनी ४,०८,३१५ रुपया है। यह राज्य १०,००० रुपया ब्रिटिश सरकार को कर देता है। राज्य की सेना में १६० सवार, ३३५ पैदल, १२ तोपें और २० तोप चलाने वाले सैनिक हैं।

यहां के राजा उदयपुर महाराज के ८० गांव के जागीरदार हैं जिसकी आमदनी ३५,००० रुपया है। इसीलिये यहां के महाराज उदयपुर महाराज को ३००० रुपया सालाना देते हैं। यहां के शासक उदयपुर घराने के हैं। इस राज्य की नींव सूरजमल ने डाली थी, जो राना के छोटे पुत्र थे।

शानोर—रेवाकांठा एजेन्सी में बम्बई प्रान्त का एक छोटा सा राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल ११$\frac{3}{4}$ वर्गमील और सालाना आमदनी १०,१३० रुपया है। इस राज्य में केवल ६ गांव हैं, यह राज्य १३५० रुपया बड़ौदा राज्य को कर देता है।

शिरोदा—गोहिलवार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ७२ वर्गमील और जन-संख्या २४१ है। इस राज्य की सालाना आय ६०० रुपया है। यह राज्य १२० रुपया ८ आना बड़ौदा राज्य को और १२ रुपया जूनागढ़ को कर देता है।

शिकम—पूर्वी हिमालय प्रदेश का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल २८१८ वर्गमील और जनसंख्या १,०६,६५१ है। राज्य की सालाना आय ५,२०,४२२ रुपया है।

यहां के राजा के पूर्वज लासा के समीप से आकर गंडक नदी पर आ बसे। १७९२ में यहां गोरखों का आक्रमण हुआ किन्तु चीनी सेना ने निकाल बाहर किया। नैपाल युद्ध के बाद ब्रिटिश सरकार ने जितना उसे नैपाल राज्य से मिला था सब शिकम को दे दिया। १८३५ में यहां के राजा ने दारजिलिङ्ग अँग्रेज़ों को दे दिया। उसके बदले में राजा को ३००० रुपया सालाना ब्रिटिश सरकार से मिलता है।

शेला—आसाम प्रान्त में खासी पहाड़ी का एक राज्य है यहां की जन-संख्या ६०३२ है और सालाना आय ७०० रुपया है। राज्य की मुख्य उपज शंतरा, अनन्नास, पान, सुपारी इत्यादि हैं।

इस राज्य का शासन चार प्रजा के निर्वाचित सदस्यों के हाथ है वह दादर कहते हैं।

सकती—यह बिलासपुर ज़िले में मध्य भारत का राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल ११५ वर्गमील और जन-संख्या २२,८१९ है। यहां की मुख्य उपज गेहूँ, चावल, तेलहन और कपास है। इस राज्य की सालाना आमदनी १६,८०० रुपया है।

सचीन—बम्बई प्रान्त में सूरत एजेन्सी गुजरात का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ४९ वर्गमील और जन-संख्या १८,९०३ है। इस राज्य की सालाना आमदनी १,७९,८६० रुपया है। यहां के नवाब हबशी अथवा अबीसीनियन हैं। यह लोग दाँदा राजपुर के सिदिस कहलाते हैं। यह लोग अहमद नगर और बीजापुर राज्यों के सामुद्रिक सेनाओं के ऐडमिरल थे। यहां के नवाब को प्राणदण्ड देने का अधिकार है और गोद लेने की सनद प्राप्त है। यहां के नवाब को ९ तोपों की सलामी दी जाती है।

सतलासना—माहीकांठा एजेन्सी में बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इसकी जन-संख्या ३२८१ है और सालाना आमदनी ४५०० रुपया है। राज्य की मुख्य उपज गेहूँ, बाजरा, जौ, गन्ना इत्यादि है। यह राज्य १६०० रुपया बड़ौदा राज्य को और ७३० रुपया ईदर राज्य को कर देता है।

यहां के शासक ठाकुर कहलाते हैं और ज्येष्ठ पुत्र राज्य का मालिक होता है।

सतम्ब—माहीकांठा एजेन्सी में बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल ५००० एकड़ और जन-संख्या ५३६० है। इस राज्य की सालाना आय

८,२५० रुपया है। यह राज्य ४०१ रुपया बड़ौदा राज्य को, ५६१ रु० बालासिनोर राज्य को, और १२७ रुपया लूनवाड़ा राज्य को सालाना कर देता है।

यहाँ के शासक ठाकुर कहलाते हैं। इनको गोद लेने की सनद प्राप्त है। राज्य का मालिक ज्येष्ठ पुत्र ही होता है।

सतनोनेस—गोहिलवार, काठियाड़ में बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ६७ वर्गमील और जन-संख्या ४११ है। इस राज्य की आय ६५० रुपया है। यह राज्य १०० रुपया ८ आना बड़ौदा को और ६ रुपये जूनागढ़ को सालाना देता है।

सँगरी—शिमला पहाड़ी में पंजाब प्रान्त का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १६ वर्गमील और जन-संख्या ३,४६७ है। इस राज्य की सालाना आमदनी ७,००० रुपया है, यहां के शासक राजपूत हैं।

संतलपुर और चद्‌चत—पालनपुर, गुजरात में बम्बई प्रान्त में ये राज्य स्थित हैं। इनका क्षेत्रफल ४४० वर्गमील और जन-संख्या २७,४६६ है। इस राज्य की सालाना आय ३५,००० रुपया है। यहाँ के शासक जरेजा राजपूत हैं।

सतोदर वाओरी—हालार, काठियावाड़ में बम्बई का एक छोटा सा राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल १३ वर्गमील और जन-संख्या २४४७ है, इस राज्य में केवल ४ गांव हैं। राज्य की सालाना आय १२,००० रुपया है। यह राज्य १४६६ रुपये ब्रिटिश सरकार को और ४६१ रुपया जूनागढ़ को सालाना कर देता है।

सनोरसरा—झालावार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक छोटा सा राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल १३ वर्गमील और जन-संख्या ११४० है। इस राज्य में केवल ३ गांव हैं, और सालाना आमदनी ४०३० रुपया है। यह राज्य १८६ रुपया ब्रिटिश सरकार को और ५० रुपया जूनागढ़ को सालाना कर देता है।

सनला—गोहिलवार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक छोटा सा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ५१ वर्गमील और जन-संख्या ५०० है। इस राज्य की सालाना आय २७०० रुपया है। यह राज्य ३०७ रुपया बड़ौदा राज्य को और १५ रुपया जूनागढ़ को सालाना कर देता है।

संदूर—मद्रास प्रान्त का एक राज्य है, इसका क्षेत्रफल १६४ वर्गमील और जन-संख्या १०,५३२ है। इस राज्य की सालाना आमदनी ४५,००० रुपया है।

मालाजी राव घोरपे मरहठा सरदार जो बीजापुर की सेना के नायक थे उन्होंने इस राज्य की नींव डाली। इस राज्य के शासकों को गोद लेने की सनद प्राप्त है।

समला—झालावार, काठियावाड़ प्रदेश में बम्बई प्रान्त का एक छोटा सा राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल १३ वर्गमील और जन-संख्या १३३० है। इस राज्य की सालाना आय ७६२० रुपया है। यह राज्य ब्रिटिश सरकार को ६६० रुपया और जूनागढ़ को १०४ रुपया कर देता है।

समथर—बुंदेलखण्ड में मध्य भारत का एक राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल १७८ वर्गमील और जन-संख्या ३३,३०७ है। इस राज्य की सालाना आय २,५०,००० रुपया है। इस राज्य में ३०० सवार, २००० पैदल, ३५ तोपें और १५० तोप चलाने वाले सैनिक हैं।

यह राज्य पहले दतिया राज्य का एक भाग था। यहां के शासकों को गोद लेने की सनद प्राप्त है। यहां के महाराज को ११ तोपों की सलामी दी जाती है।

समधैला—गोहिलवार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक छोटा सा राज्य है। यहां का क्षेत्रफल १ वर्गमील और जन-संख्या ६५७ है। इस राज्य में केवल एक गाँव है। इस राज्य की सालाना आमदनी ८००० रुपया है। यह राज्य ५१० रुपया बड़ौदा राज्य को और ८ रुपया जूनागढ़ को कर देता है।

समधैला चबरिया—गोहिलवार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल ६२वर्ग-मील और जन-संख्या १११४ है। इस राज्य की सालाना आय ६५०० रुपया है। यह राज्य १८६१ रुपया बड़ौदा राज्य को और ३८६ रुपया जूनागढ़ को कर देता है।

समधैला चरण—गोहिलवार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक छोटा सा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ६ वर्ग मील और जन-संख्या १३५ है। इस राज्य की सालाना आय ८०० रुपया है।

संत—बम्बई प्रान्त में रेवाकांठा एजेन्सी का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३६४ वर्गमील है। इसकी जन-संख्या ८३,५३८ और सालाना आमदनी ४,१३,५१२ रुपया है। यहां के शासक ५३८४ रुपया ६ आना १० पाई ब्रिटिश सरकार को कर देते हैं। राज्य की सेना में २०३ सिपाही हैं।

यहां के शासक अपने को उज्जैन महाराज विक्रमादित्य का वंशज बताते हैं। इस राज्य की संथ ने १५२५ ई०

में स्थापित किया था। इनको प्राणदण्ड देने का अधिकार अपनी प्रजा के ऊपर प्राप्त है। यहां के शासकों को गोद लेने की सनद प्राप्त है और ज्येष्ठ पुत्र राज्य का अधिकार होता है। इस राज्य के शासक को ९ तोपों की सलामी दी जाती है।

सरगुजा—छोटा नागपुर बिहार का सबसे बड़ा राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल ६०५५ वर्गमील और जन-संख्या ५,०१,९३९ है, इस राज्य की सालाना आय ८,९०,८३५ रुपया है।

यहां के शासक १८१८ ई० तक मरहठों के आधीन रहे। १८१८ ई० में माधो जी भोंसला ने इसे ब्रिटिश सरकार को सौंप दिया। महाराज की उपाधि यहां के शासकों को १८२६ में प्राप्त हुई।

सुरगना—खानदेश में बम्बई प्रान्त का एक भिल राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३६० वर्गमील और जन-संख्या १४,२०५ है। इस राज्य की सालाना आमदनी १,१४,६९० रुपया है। यहां के शासकों की उपाधि देशमुख की है।

सरनगढ़—सम्भलपुर ज़िले में मध्य प्रान्त का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ४५० वर्गमील और जन-संख्या १,२८,९६७ है। इस राज्य की सालाना आय २,७७,७८२ रुपया है। यह राज्य १३५० रुपया ब्रिटिश सरकार को कर देता है।

यहां के शासक जाति के गोंड हैं और अपने को जगदेव सा का वंशज बताते हैं। इन लोगों की उपाधि राजाकी है।

संगली—यह बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल ११३६ वर्गमील और जन-संख्या २,५८,४४२ है। इस राज्य की आमदनी १५,९५,५८४ रुपया सालाना है।

इस राज्य के शासक कोनकन ब्राह्मण हैं। हरीभत इस राज्य के संस्थापक पेशवा के सेनापति थे। यहां के शासकों की गणना प्रथम श्रेणी में की जाती है और इनको प्राणदण्ड देने की आज्ञा है। इनको गोद लेने की सनद प्राप्त है।

संजेली—रेवाकाँठा एजेन्सी में बम्बबई प्रान्त का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३३½ वर्गमील और जन-संख्या ३७५१ है। इस राज्य की सालाना आमदनी ७०० रुपया है। यहां के शासकों की पदवी ठाकुर की है।

सरोला—बुंदेलखण्ड में मध्यभारत का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ३५ वर्गमील और जन-संख्या ६०२२ है। इस राज्य की सालाना आमदनी ९२,००० रुपया है। ४० सवार, २०० पैदल और ४ तोपें हैं।

सावानूर—धारवार, बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ७३ वर्गमील और जन-संख्या २०,३२० है। इस राज्य की सालाना आय २,१२,००० रुपया है। इस राज्य की मुख्य उपज कपास, धान, कुलथी, मूंग, नारियल, रेंडी, गेहूँ, चना, केला और गन्ना आदि हैं।

यहां के शासक अफ़ग़ान हैं। १६८० ई० में यह राज्य सम्राट् औरङ्गज़ेब ने इस वंश वालों को जागीर रूप में दिया था। यहां के शासक नवाब कहलाते हैं।

सावन्त वाड़ी—बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल ९३० वर्गमील और जन-संख्या २,३१,००० है। इस राज्य की सालाना आय ६,४२,६४९ रुपया है।

यहां पर चालोक्य राजों का छठवीं से आठवीं शताब्दी तक राज्य रहा। दसवीं शताब्दी में यहां यादव लोगों का राज्य रहा और चौदहवीं सदी में विजयनगर राज्य का यह एक राज्य बन गया किन्तु पन्द्रहवीं शताब्दी में बहमनी राज्य का इसपर अधिकार होगया। १६२७ ई० में खीम सावन्त भोंसला ने सावन्तवारी को मुसलमानों की परतंत्रता से छुड़ाया। यहां के राजाओं को ९ तोपों की सलामी दी जाती है।

साहुका—झालावार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक छोटा सा राज्य है। इसका क्षेत्रफल ६ वर्गमील और जनसंख्या ९२० है। इस राज्य में केवल एक गांव है। इस राज्य की सालाना आय २६९० रुपया है। यह राज्य ५१९ रुपया ब्रिटिश सरकार को और ६५ रुपया जूनागढ़ राज्य को कर देता है।

सिरोही—राजपूताना एजेन्सी का एक राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल १९६४ वर्गमील है और जन-संख्या २,१६,५२८ है। इस राज्य की सालाना आमदनी १०,०५,००० रु० है। यह राज्य ६८८० रुपया कर रूप में देता है।

यहां के शासक देवरा राजपूत हैं और दिल्ली महाराज के वंशज हैं। यहां के शासकों की उपाधि राव की है और उनके पास गोद लेने की सनद भी है। इनको १५ तोपों की सलामी दी जाती है।

सिलाना—काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल ४ वर्गमील और जन-संख्या ६९२ है। इस राज्य की सालाना आमदनी ३००० रु० है। यह राज्य १०० रु० सालाना बड़ौदा राज्य को कर देता है।

सिहोरा—रेवाकाँठा एजेन्सी का बम्बई प्रान्त में एक छोटा सा राज्य है। इसकी सालाना आय १४,००० रुपया है। यह राज्य ४८०० रुपया बड़ौदा राज्य को कर देता है। यहां की मुख्य उपज कपास, चावल, बाजरा और चना है। यहां के शासक क्षत्रिय हैं।

सिंहपुर—खानदेश, बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। यहां की जनसंख्या ५४६ है। राज्य की उपज शहद, मोम, महुआ और लकड़ी है, यहां के शासक जाति के भिल हैं।

सिसाँग चाँडली—हालार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक छोटा राज्य है। इस राज्य में केवल २ गांव हैं और क्षेत्रफल १ वर्गमील तथा जन-संख्या १७१२ है। इसकी सालाना आय ७,५०० रु० है। यह राज्य ७२७ रु० ब्रिटिश सरकार को और २२६ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

सिरमौर—पंजाब प्रान्त का हिमालय प्रदेश का यह एक राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल ११४१ वर्गमील और जन-संख्या १,४८,५६८ है। राज्य की सालाना आमदनी १२,००,००० रु० है।

इस राज्य की सेना में ५५ सवार, ३०० पैदल, १० तोपें और २० तोप चलाने वाले सैनिक हैं।

कहा जाता है कि यहाँ के प्राचीन शासकों में अन्तिम राजा बाढ़ में बह गया। उसी समय जैसलमेर राजघराने का अगरसेन रावल यहाँ गंगा स्नान करने आया था। उसने राज्य खाली देख उस पर १,०६५ में अपना अधिकार जमाया। वर्तमान शासक अब उन्हीं के वंशज हैं। यहां के शासक को ११ तोपों की सलामी दी जाती है।

सीतामऊ—यह मध्य भारत का एक देशी राज्य है। इस का क्षेत्रफल २०२ वर्गमील और जन-संख्या ३०,८३६ है। राज्य की सालाना आय २,७१,००० रुपया है। यह महाराज सिंधिया को ५५,००० रु० कर देता है। राज्य की सेना में ४० सवार और १०० पैदल सिपाही हैं।

पहले यह रतलाम राज्य का एक भाग था, महाराज रामसिंह की मृत्यु के पश्चात् एक अलग राज्य हो गया और इसके राजा महाराज रामसिंह के द्वितीय पुत्र रामदास हुए। यहाँ के शासक राठौर राजपूत हैं और उनको ११ तोपों की सलामी दी जाती है।

सिंधिया पुरा—रेवाकान्त एजेन्सी का बम्बई प्रान्त में यह एक राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल ४ वर्गमील है। राज्य की सालाना आय २,००० रुपया है। यह राज्य ५७ रुपया बड़ौदा राज्य को कर देता है।

सुईगाम—पालनपुर, गुजरात में बम्बई प्रान्त का एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल २२० वर्गमील और जनसंख्या ११,५२१ है। इस राज्य की सालाना आय १०,००० रुपया है।

यहाँ के शासक राजपूत हैं और ठाकुर कहलाते हैं। इनको गोद लेने की सनद प्राप्त नहीं है।

सूकेत—यह पंजाब की पहाड़ियों का एक राज्य है। इस का क्षेत्रफल २८७ वर्गमील है। राज्य की जन-संख्या ५१,००० और सालाना आमदनी २,७३,००० रुपया है। राज्य की सेना में ४० सवार और ३६५ पैदल सिपाही हैं।

यहाँ के शासक राजपूत है और उनकी पदवी राजा की है। गोद लेने की सनद इनको प्राप्त नहीं है। इनको ११ तोपों की सलामी दी जाती है।

सुदरमा धंधुलपुर—झालावार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का एक छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १३५ वर्गमील और जन-संख्या ७,४३१ है। इस राज्य की सालाना आमदनी २०,५२० रु० है। यह राज्य २,३८१ रु० ब्रिटिश सरकार को और ७४३ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

सुदासना—महीकांठा एजेंसी में बम्बई प्रान्त का यह एक राज्य है। इस की जन-संख्या ५,६६१ है। इस राज्य की सालाना आय ६,६१० रुपया है। यह राज्य १,०३६ रु० बड़ौदा को और ३६१ रु० ईदर राज्य को कर देता है।

यहाँ के शासक राजपूत हैं और उनकी पदवी ठाकुर की है। इन को गोद लेने की सनद प्राप्त नहीं है। ज्येष्ठ पुत्र राज्य का अधिकारी होता है।

सेजकपुर—झालावार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त यह एक राज्य है। इस राज्य में केवल चार गांव हैं और इसका क्षेत्रफल २८ वर्गमील है। इस राज्य की जन-संख्या १,७३१ है। और सालाना आमदनी ५,३२० रुपया है। यह राज्य ३१६ रुपया ८ आना ब्रिटिश सरकार को और ११६ रु० जूनागढ़ को कर देता है।

सेवदिवादार—गोहिलवार, काठियावाड़ में बम्बई प्रान्त का यह एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल १ वर्गमील और जन संख्या २४६ है। इस राज्य में केवल एक गांव है। राज्य की सालाना आमदनी ६७० रुपया है। यह राज्य ४६४रु० ब्रिटिश सरकार को १४६रु० जूनागढ़ को कर देता है।

सैलाना—यह मध्य भारत का एक राज्य है। इस का क्षेत्रफल २६७ वर्गमील और जन-संख्या ३५,२२३ है।

सिर

प्रान्त का एक
हैं और क्षेत्रफ
इसकी सालान
ब्रिटिश सरकार

सिरमौर-
एक राज्य है।
और जन-संख्या
दनी १२,००,००

इस राज्य क
तोपें और २० तो

कहा जाता
राजा बाढ़ में
का अ

को